VIDYA UNIVERSITY PRESS

TOUCH n PASS

सर्वश्रेष्ठ परीक्षा पथ-प्रदर्शक

B.A.
तृतीय वर्ष
(डिग्री कोर्स)
सेमेस्टर-V

इतिहास

आधुनिक विश्व का इतिहास (1453 ई0 से 1815 ई0 तक)

SYLLABUS

UNIT-I

Political and Religious structure of Europe in the early 15th Century.

UNIT-II

Renaissance : Its Causes, Feature and Impact.

UNIT-III

Reformation Movement in Europe and Role of Martin Luther.

UNIT-IV

Religious warfare : The Thirty Years War.

UNIT-V

Glorious Revolution and Development of Cabinet system in England.

UNIT-VI

Industrial Revolution in 18th Century, American Revolution.

UNIT-VII

French Revolution : Causes, Significance and Impact on World.

UNIT-VIII

Napoleon Bonaparte : Reforms, Continental System and His Foreign Policy.

TOUCH n PASS

VIDYA
UNIVERSITY PRESS ®

पंजीकृत कार्यालय
विद्या एम्पायर, बागपत रोड,
मेरठ, उत्तर प्रदेश (NCR) 250 002
www.vidyauniversitypress.com

© प्रकाशक

लेखन एवं सम्पादन
शोध एवं अनुसन्धान प्रकोष्ठ

मुद्रक
विद्या यूनिवर्सिटी प्रेस

TOUCH 'n' PASS

विषय-सूची

UNIT-I	: पंद्रहवीं शताब्दी के पूर्व में यूरोप	...3
UNIT-II	: पुनर्जागरण	...19
UNIT-III	: यूरोप में सुधारात्मक आन्दोलन	...33
UNIT-IV	: धार्मिक संघर्ष	...54
UNIT-V	: गौरवशाली क्रांति एवं विकास	...73
UNIT-VI	: औद्योगिक क्रांति और अमेरिकी क्रांति	...104
UNIT-VII	: फ्रांसीसी क्रांति : कारण, महत्त्व एवं प्रभाव	...126
UNIT-VIII	: नेपोलियन बोनापार्ट	...148

UNIT-I

पंद्रहवीं शताब्दी के पूर्व में यूरोप
Europe in the Early 15th Century

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. 15वीं और 16वीं शताब्दी के दौरान यूरोप में राजनीतिक परिवर्तन क्या थे?
What were the political changes in Europe during the 15th and 16th centuries?

उत्तर 15वीं और 16वीं शताब्दी में राजतंत्रों द्वारा शक्ति का सुदृढ़ीकरण और मजबूत राष्ट्र-राज्यों का गठन देखा गया। पहले खंडित क्षेत्र केंद्रीकृत प्राधिकार के तहत एकजुट होने लगे, जिससे स्पेन, इंग्लैंड, फ्रांस और पुर्तगाल जैसे स्वतंत्र देशों का उदय हुआ।

प्र.2. 14वीं सदी के यूरोप में राजनीतिक परिवर्तन का क्या कारण था?
What was the cause of political change in Europe in the 14th century?

उत्तर सौ साल के युद्ध ने इंग्लैंड और फ्रांस दोनों के संसाधनों को खत्म कर दिया और उनके राजाओं की शक्ति में गिरावट आई। इस संकट के कारण राष्ट्रवाद और मानवतावाद जैसी नई राजनीतिक विचारधाराओं का भी उदय हुआ। इन विचारधाराओं ने मौजूदा राजनीतिक व्यवस्था को चुनौती दी और पुनर्जागरण का मार्ग प्रशस्त किया।

प्र.3. यूरोप में मुख्य धर्म कौन-सा है?
What is the main religion in Europe?

उत्तर वर्तमान में यूरोपीय संस्कृति पर हावी होने वाले प्रमुख धर्म ईसाई धर्म, इस्लाम और यहूदी धर्म हैं। हालाँकि यूरोप मुख्य रूप से ईसाई है, यह परिभाषा इस बात पर निर्भर करती है कि किस माप का उपयोग किया जाता है।

प्र.4. यूरोप राजनीतिक रूप से कैसे बदल रहा था?
How was Europe changing politically?

उत्तर पश्चिमी यूरोप में, मजबूत राजशाही सरकारों के तत्त्वावधान में राष्ट्र-राज्यों का उदय हुआ, जिसने स्थानीय प्रतिरक्षा को तोड़ दिया और यूरोपीय रिपब्लिक क्रिस्टियाना की एकता को नष्ट कर दिया। मध्यकालीन सरकार का स्थान केंद्रीकृत नौकरशाही ने ले लिया। अंतर्निहित आर्थिक परिवर्तनों ने सामाजिक स्थिरता को प्रभावित किया।

प्र.5. यूरोप में सभ्यता कब शुरू हुई?
When did civilization begin in Europe?

उत्तर पहली दो यूरोपीय संस्कृतियाँ ऑरिग्नेशियाई (लगभग 60,000–24,000 ईसा पूर्व) और ग्रेवेटियन (लगभग 30,000–15,000 ईसा पूर्व) हैं। ये संस्कृतियाँ क्रमश: होमो सेपियन्स द्वारा यूरोप में लाई गई पहली उपकरण प्रौद्योगिकी और उनके नए वातावरण में उनके पहले महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक अनुकूलन को संदर्भित करती हैं।

प्र.6. यूरोप की खोज किसने और कब की थी?
Who and when did discover Europe?

उत्तर पुर्तगाली खोजकर्त्ता वास्को डी गामा अटलांटिक महासागर के रास्ते भारत पहुँचने वाला पहला यूरोपीय बन गया, जब वह मालाबार तट पर कालीकट पहुँचा। वास्को डी गामा जुलाई, 1497 में पुर्तगाल के लिस्बन से रवाना हुआ, उसने केप ऑफ गुड होप का चक्कर लगाया और अफ्रीका के पूर्वी तट पर मालिंदी में लंगर डाला।

TOUCH 'n' PASS

प्र.7. 15वीं सदी से पहले यूरोप को क्या कहा जाता था?
What was Europe called before the 15th century?

उत्तर यूरोप के इतिहास को पारंपरिक रूप से चार समय अवधियों में विभाजित किया गया है—प्रागैतिहासिक यूरोप (लगभग 800 ईसा पूर्व से पहले), शास्त्रीय पुरातनता (800 ईसा पूर्व से 500 ईसवी तक), मध्य युग (500 ईसवी से 1500 ईसवी तक), और आधुनिक युग ईसवी पूर्व से 1500).।

प्र.8. 14वीं सदी के यूरोप में जीवन कैसा था?
What was life in 14th century Europe?

उत्तर सीमित आहार और थोड़े आराम के साथ जीवन कठोर था। किसान और कुलीन दोनों वर्गों में महिलाएँ पुरुषों के अधीन थीं और उनसे घर के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने की अपेक्षा की जाती थी। बच्चों की एक वर्ष की आयु के बाद जीवित रहने की दर 50% थी और वे बारह वर्ष की आयु के आसपास पारिवारिक जीवन में योगदान देना शुरू कर देते थे।

प्र.9. 18वीं शताब्दी में भारत की राजनीतिक स्थिति क्या थी?
What was the political condition of India in 18th century?

उत्तर 1707 ई० में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात मुगल साम्राज्य का पतन आरंभ हो गया। 1739 ई० एवं 1747 ई० में क्रमश: नादिरशाह 811, 18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य के एवं अहमद शाह अब्दाली के आक्रमणों ने पतन के बाद स्वतंत्र हुए राज्यों ने मुगलों की केंद्रीय सत्ता को कमजोर कर दिया।

प्र.10. 17वीं और 18वीं शताब्दी में भारत में भू-राजस्व का 25% क्या कर था?
What was 25% of the land revenue in India in 17th and 18th centuries?

उत्तर चौथ (संस्कृत से: चतुर्थ, रोमनकृत: कैटुरथा, शाब्दिक अर्थ एक चौथाई) भारतीय उपमहाद्वीप में मराठा साम्राज्य द्वारा 18वीं शताब्दी की शुरुआत से लगाया गया एक नियमित कर या श्रद्धांजलि थी। यह एक वार्षिक कर था जो नाममात्र के मुगल शासन के अधीन भूमि पर राजस्व या उपज पर नाममात्र 25% लगाया जाता था, इसलिए इसे यह नाम दिया गया।

प्र.11. यूरोप में मध्य युग कब से कब तक रहा?
How long did the middle era last in Europe?

उत्तर मध्ययुगीन युग, जिसे अक्सर मध्य युग या अंधकार युग कहा जाता है, रोमन सम्राट द्वारा पूरे यूरोप में शक्ति के बड़े नुकसान के बाद 476 ईसवी के आसपास शुरू हुआ। मध्य युग लगभग 1,000 वर्षों तक रहा जो 1400 और 1450 के बीच समाप्त हुआ।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. यूरोपीय निरंकुश राष्ट्रीय राज्य की प्रस्तावना एवं विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
Explain the introduction and characteristics of European Autocratic Nation states.

उत्तर

प्रस्तावना
(Introduction)

राष्ट्रीय राज्यों का उत्कर्ष आधुनिक युग की एक बहुत बड़ी विशेषता है। आधुनिक सन्दर्भ में राष्ट्रीयता यूरोप की ही देन है, किन्तु यूरोप में यह राष्ट्रीयता लम्बे संघर्ष (मध्यकालीन प्रवृत्तियों) के फलस्वरूप प्राप्त हुई। यूरोपीय मध्ययुग में सर्वत्र सामन्तवाद का वर्चस्व था। सामन्त, राजा की ही तरह अनेक शक्तियों का उपयोग करते हुए स्वयं को लगभग स्वतंत्र मानते थे। किन्तु पन्द्रहवीं शताब्दी में इस व्यवस्था के विरूद्ध घोर प्रतिक्रिया हुई। इसका एक प्रमुख कारण था, पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी में राष्ट्रीयता की भावना का उदय हुआ। देश-प्रेम एवं देश-भक्ति की भावना ने मध्य युग का अन्त कर आधुनिक युग की घोषणा की। इसने सामंतकाल की अत्यधिक अव्यवस्था व अराजकता को समाप्त कर दिया। सामन्तवाद को नष्ट करने के साथ-साथ राष्ट्र-राज्यों ने आर्थिक विकास में बड़ा योगदान दिया।

उत्पादन के लिए सुधरे हुए तरीकों का इस्तेमाल हुआ और तरीकों में सुधार हुए। राष्ट्रीय राज्यों के उदय के कारण राष्ट्रीय सीमाएँ और अधिक तर्कसंगत हो गयीं। राष्ट्रीय राज्य एक संस्कृति के व्यक्तियों को संगठित करने में बहुत सहायक सिद्ध हुए। अपने राष्ट्र के प्रति निष्ठा का विकास हुआ।

TOUCH 'n' PASS

1589 ई० से 1715 ई० के मध्य नये एवं सबल राजतंत्रीय राष्ट्रीय राज्यों का उत्थान तेजी से हो रहा था। इंग्लैण्ड, फ्रांस, स्पेन, आदि पश्चिमी यूरोपीय राष्ट्रों में राजनीतिक संगठन, राष्ट्रीय एकता, देशभक्ति तथा सुदृढ़ राजतंत्रों की प्रगति हो रही थी। परन्तु मध्य, दक्षिण एवं पूर्वी यूरोप के राज्य अभी भी उतने संगठित एवं सशक्त न हो पाए जितने पश्चिमी यूरोप के राष्ट्र। ये राष्ट्र राजनीतिक अनैक्यता, अराजकता तथा अविकसित व्यवस्थाओं के कारण असम्बद्ध राज्य बने हुए थे।

निरंकुशवाद की विशेषताएँ
(Characteristics of Absolutism)

1. राजा ही सर्वोच्च होता है। वह सेना तथा अन्य बड़े-बड़े अफसरों की सहायता से शासन कार्य चलाता है। किन्तु उस पर किसी का अंकुश नहीं होता है। राजा ही अन्तिम रूप से कानून का निर्माण करने वाला होता है।
2. सेना निरंकुश राज्य की मूलभूत विशेषता है।
3. नौकरी-पेशा वर्ग की स्थापना शासकों द्वारा की गयी। इस वर्ग में दो प्रकार के पद थे—(क) प्रशासनिक, (ख) सैनिक, कुछ देशों में नौकरी पेशा वर्ग के सदस्य कुलीन न होकर साधारण जनता में से भी लिए जाते थे, ताकि वे राजा का विरोध न कर सकें।
4. निरंकुशवाद की एक विशेषता वाणिज्यवाद भी थी, वाणिज्यवाद एक प्रकार का आर्थिक युद्ध था, जिसमें एक राज्य स्वयं आत्मनिर्भर होकर, दूसरे देशों को अपने ऊपर आर्थिक रूप से निर्भर होने के लिए प्रेरित करता था।

प्र.2. निरंकुश राष्ट्रीय राज्यों के उदय कारणों का उल्लेख कीजिए।
Mention the emerging reasons for autocratic national states?

उत्तर

यूरोपीय नवीन निरंकुश राजतंत्रों के उदय के कारण
(Reasons for the Emergence of New European Autocratic Monarchies)

यूरोप में नवीन निरंकुश राज्यों के उदय के कई प्रत्यक्ष एवं परोक्ष कारण हैं, किन्तु तीन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। पहला सामन्तवाद का पतन, दूसरा धार्मिक उथल पुथल एवं चर्च की शक्ति का ह्रास और तीसरा व्यापारिक उन्नति एवं नये मध्यम वर्ग का उदय।

मध्ययुगीन यूरोप की व्यवस्था सामन्तों पर टिकी थी। सामन्तों ने धीरे-धीरे शक्ति में वृद्धि करते हुए राजाओं जैसा व्यवहार आरम्भ कर दिया। ये सामन्त अपने निवास को दुर्गीकृत करते हुए नियमित सेना के सहारे कृषकों का शोषण करते हुए विलासिता का जीवन व्यतीत कर रहे थे। यूरोप की इस सामन्तवादी व्यवस्था से कृषकों एवं श्रमिकों की स्थिति अत्यन्त दयनीय होती जा रही थी। सामन्तों के निरन्तर युद्धों एवं लगान की बढ़ती मात्रा से प्रजा का जीवन कष्टमय था। इन सामन्तों ने राजाओं की शक्ति को भी सीमित कर रखा था। किन्तु यूरोप में नवीन विचारों के प्रस्फुटन, बारूदों एवं तोपों के प्रयोग तथा सैन्य क्षेत्र में प्रगति ने राजाओं को सामन्तों को नष्ट करने के लिये प्रेरित किया तथा प्रजा एवं किसानों ने अपनी हीन स्थिति का कारण सामन्तों का मानते हुए राजाओं का सहयोग किया। यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों अथवा देशों में सामन्तवाद का पतन अलग-अलग समय पर हुआ, किन्तु निःसन्देह सामन्तों के पतन ने राजाओं की शक्ति में अभूतपूर्व वृद्धि की।

चौदहवीं सदी में यूरोप में बारूद के आविष्कार एवं तद्जनित बारूद के प्रयोग के नये साधनों (बन्दूकों, तोपों एवं गोलों के निर्माण) ने युद्ध प्रणाली में आमूल परिवर्तन कर दिया। इन नवीन साधनों ने ही सामन्तों की शक्ति क्षीण करते हुए उनके दुर्गों को व्यर्थ सिद्ध किया। तोपों एवं बन्दूकों के गोलों के सामने सामन्तों के दुर्ग धराशायी हो गये और सामन्तों का पतन सुनिश्चित हो गया। सामन्तों के पतन ने राजाओं की शक्ति को बढ़ाया अब इन राजाओं ने अपनी बढ़ी सैनिक शक्ति एवं मध्यम वर्ग के सहयोग के बल पर सुदृढ़ एवं केन्द्रित तथा सार्वभौम सरकारें कायम कर लीं।

व्यापारिक क्रांति ने निरंकुश राजतंत्र के उदय में महती भूमिका निभाई। वाणिज्यवादी नीतियों के उपयोग ने राजाओं को प्रचुर धनराशि प्रदान की, जिसका प्रयोग वे सेना को संगठित करने तथा अपनी राजनीतिक सत्ता के विस्तार के लिए कर सकते थे। व्यापार के विस्तार ने भी सुदृढ़ सरकार की अनिवार्यता को बढ़ावा दिया। व्यापार-वाणिज्य की उन्नति के साथ-साथ मध्यम वर्ग की सामाजिक-आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती गयी एवं मध्यम वर्ग ने अपने व्यापार-वाणिज्य के उत्थान तथा सुरक्षा हेतु सबल राजतंत्र की स्थापना में बड़ा सक्रिय सहयोग दिया। मध्यम वर्ग ने सामन्तों के विरूद्ध राजतंत्रों की बड़ी सेवाएँ की एवं राष्ट्रीयता की भावना का सृजन किया। इसके बदले में राजाओं ने व्यापार-वाणिज्य को संरक्षण प्रदान किया।

मध्ययुगीन धर्मयुद्धों ने सामन्त-तन्त्र को दुर्बल कर राजाओं की शक्ति को बढ़ाया। कुछ यूरोपीय देशों में आन्दोलन ने राजकीय सत्ता के विकास में सहयोग किया। इसने कैथोलिक चर्च की एकता को भंग किया शासकों के ऊपर पोप की प्रमुखता को समाप्त कर दिया और राष्ट्रीयता की भावना को बल दिया।

TOUCH 'n' PASS

प्र.3. हाउस ऑफ लॉर्ड्स तथा हाउस ऑफ कॉमन्स की स्थापना किस प्रकार हुई? उल्लेख कीजिए।
How did the House of Lords and House of commons form? Mention it.

उत्तर

हाउस ऑफ लॉर्ड्स तथा हाउस ऑफ कॉमन्स की स्थापना
(Establishment of House of Lords and House of Commons)

अपर चैम्बर तथा लोअर चैम्बर (Upper Chamber and Lower Chamber)

1341 में अपर चैम्बर (आभिजात्य वर्ग तथा पादरी वर्ग) तथा लोअर चैम्बर (नाइट्स तथा बर्जेज़) का गठन किया गया। 1376 में लोअर चैम्बर (तदन्तर हाउस ऑफ कॉमन्स) के प्रिसाइडिंग ऑफिसर (तदन्तर स्पीकर) सर पीटर डी ला मारे ने शाही व्यय का हिसाब माँगा था और शासक की सैनिक नीति की आलोचना की थी, 1430 में लोअर चैम्बर के लिए सम्पत्ति विषयक न्यूनतम योग्यता के आधार पर सदस्यों के चुनाव हेतु नागरिकों को मताधिकार (सीमित मताधिकार) प्रदान किया गया। 1535-42 में वेल्स पर ब्रिटिश अधिकार हो जाने के बाद वेल्स के प्रतिनिधि भी पार्लियामेन्ट में आने लगे।

हाउस ऑफ लॉर्ड्स तथा हाउस ऑफ कॉमन्स
(House of Lords and House of Commans)

1544 के बाद पार्लियामेन्ट के दोनों सदनों को क्रमश: हाउस ऑफ लॉर्ड्स तथा हाउस ऑफ कॉमन्स कहा जाने लगा। पैलेस ऑफ वेस्ट मिनिस्टर में हाउस ऑफ लॉर्ड्स तथा सेन्ट स्टीफेन्स चौपल में हाउस ऑफ कॉमन्स बनाए गए। किसी भी सदन का कोई भी सदस्य संसद में बिल प्रस्तुत कर सकता था। शासक द्वारा अनुमोदित बिलों को प्राय: प्रिवी काउन्सिल के सदस्य पार्लियामेन्ट में रखते थे। किसी बिल को कानून बनाए जाने के लिए पहले उसका दोनों सदनों में बहुमत द्वारा अनुमोदन आवश्यक था और इसके बाद अन्त में उसे शासक के पास भेज दिया जाता था जिससे उसका अनुमोदन कर उसे कानून बनाने अथवा अपने निषेधाधिकार (वीटो पॉवर) का प्रयोग कर उसे रद्द करने का अधिकार था। 16वीं तथा 17वीं शताब्दी में कई बार शासकों ने अपने निषेधाधिकार का प्रयोग कर बिलों को रद्द किया था।

प्र.4. इंग्लैण्ड में शासक तथा पार्लियामेंट के मध्य अधिकारों के लिए संघर्ष में जेम्स प्रथम के शासनकाल का उल्लेख कीजिए।
Mention the reign of James I in the struggle for rights between the emperor and parliament in England.

उत्तर

शासक तथा पार्लियामेंट के मध्य अधिकारों के लिए संघर्ष
(Struggle for Rights between the Ruler or Emperor and Parliament)

जेम्स प्रथम का शासनकाल (Regin of James-I)

एलिज़ाबेथ प्रथम ने स्वयं शक्तिशाली होते हुए भी पार्लियामेन्ट की महत्ता व उपयोगिता को स्वीकार किया था। ट्यूडर काल में पार्लियामेन्ट ने भी शासक की सर्वोच्चता को स्वीकार करने में संकोच नहीं किया था, महारानी एलिज़ाबेथ प्रथम की मृत्यु के बाद जेम्स प्रथम के सिंहासनारूढ़ होते ही संसद तथा शासक के मध्य सर्वोच्चता के लिए संघर्ष प्रारम्भ हो गया। जेम्स प्रथम राजत्व के दैविक सिद्धान्त में विश्वास करता था और उसकी दृष्टि में राजा की आलोचना करने, उसका विरोध करने अथवा उसकी नीतियों को नियन्त्रित करने का किसी को अधिकार नहीं था। प्रतिनिधि सभाओं की उपयोगिता पर उसका कोई विश्वास नहीं था। जेम्स प्रथम के शासनकाल में इंग्लैण्ड के राष्ट्रीय चर्च का स्वरूप प्रोटेस्टेंट हो गया था जिससे एक ओर जहाँ इंग्लैण्ड में अल्पसंख्यक रोमन कैथोलिक कुपित थे वहीं दूसरी ओर प्रोटेस्टेंट का एक वर्ग (प्यूरटिन्स) इसलिए कुपित था कि चर्च का स्वरूप पूरी तरह प्रोटेस्टेंटों क्यों नहीं हुआ था। जेम्स प्रथम ने प्यूरिटन्स को आंग्ल-चर्च विरोधी घोषित कर राज्य की ओर से उन्हें दी जाने वाली सुविधाएँ समाप्त कर दीं। पार्लियामेन्ट में प्रोटेस्टेंट्स का बहुमत था जिन्होंने जेम्स के इस निर्णय का विरोध किया। 1618 में यूरोप में 30 वर्षीय युद्ध प्रारम्भ हुआ जिसको कि रोमन कैथोलिकों व प्रोटेस्टेंटों (लूथरवादी तथा काल्विनवादी) के मध्य धार्मिक संघर्ष की पराकाष्ठा के रूप में देख सकते हैं। इस युद्ध के दौरान जेम्स प्रथम आर्थिक लाभ की सम्भावना देखकर अपने बेटे चार्ल्स का विवाह स्पेन की रोमन कैथोलिक मतावलम्बी राजकुमारी मारिया अन्ना से करना चाहता था जिसका कि बहुसंख्यक प्रोटेस्टेंट सदस्यीय ब्रिटिश पार्लियामेन्ट ने खुलकर विरोध किया। इसके जवाब में जेम्स ने फरवरी, 1622 में पार्लियामेन्ट को भंग कर दिया। विवाह की आकांक्षा हेतु राजकुमार चार्ल्स की स्पेन यात्रा के बावजूद यह विवाह नहीं हो सका। इस समाचार को पार्लियामेन्ट ने अपनी जीत माना। 1624 में जेम्स प्रथम को वित्तीय समस्याओं के समाधान हेतु फिर पार्लियामेन्ट की बैठक बुलानी पड़ी। अपने

EXAMX PASS

शासनकाल (1603-1625) के दौरान जेम्स प्रथम को लगातार पार्लियामेन्ट की आलोचना अथवा उसके विरोध का सामना करना पड़ा। 1625 में जब जेम्स प्रथम की मृत्यु हुई तो उसने अपने उत्तराधिकारी चार्ल्स प्रथम के लिए विरासत में शासक और पार्लियामेन्ट के मध्य शाश्वत संघर्ष और पारस्परिक अविश्वास छोड़ा था।

प्र.5. इंग्लैण्ड के गणतन्त्र युग (1649-1660) को संक्षेप में लिखिए।
Write briefly about the Republic era (1649-1660) of England.

उत्तर

गणतन्त्र युग (1649–1660)
Republic Era (1649-1660)

आयरलैण्ड व स्कॉटलैण्ड में चार्ल्स द्वितीय को चार्ल्स प्रथम का उत्तराधिकारी घोषित किया गया, परन्तु क्रॉमवेल के कुशल सैन्य नेतृत्व में राजतन्त्र के समर्थकों की पराजय के बाद उसे अपनी जान बचाने के लिए इंग्लैण्ड छोड़कर यूरोप के अन्य देशों में दर-दर भटकना पड़ा। पार्लियामेन्ट से अपने विरोधियों को हटाकर 1649 से 1653 तक क्रॉमवेल ने इस 'रम्प पार्लियामेन्ट' शासन का दायित्व 'काउन्सिल ऑफ स्टेट' को सौंपा जिसके सदस्य के रूप में उसने पार्लियामेन्ट का नेतृत्व किया। अब इंग्लैण्ड को कॉमनवेल्थ (इंग्लैण्ड, स्कॉटलैण्ड तथा आयरलैण्ड) बना दिया गया। 'रम्प पार्लियामेन्ट' के युग में ही सदस्यों को 'मेम्बर ऑफ पार्लियामेन्ट' कहा जाने लगा था। पार्लियामेन्ट के सदस्य चार्ल्स प्रथम के पतन को अपनी सफलता मानकर अनुशासनहीनता व उद्दण्डता की सीमा लांघने लगे थे जो कि क्रॉमवेल को स्वीकार्य नहीं था। 20 अप्रैल, 1653 को उसने पार्लियामेन्ट पर सैनिक आक्रमण करके अपने विरोधियों को वहाँ से निकाल बाहर किया और 'रम्प पार्लियामेन्ट' को भंग कर दिया। अब क्रॉमवेल ने मनोनीत सदस्यों की अल्पजीवी, एक सदनीय 'बेयरबोन्स पार्लियामेन्ट' का गठन किया। बाद में 16 दिसम्बर, 1653 को उसके सहयोगी नेताओं ने उसे 'लॉर्ड प्रोटेक्टर ऑफ कॉमनवेल्थ ऑफ इंग्लैण्ड, स्कॉटलैण्ड एण्ड आयरलैण्ड' के रूप में शासन करने के लिए आमन्त्रित किया।

क्रॉमवेल ने 1653 से लेकर मृत्यु पर्यन्त (3 सितम्बर, 1658) तक 'लॉर्ड प्रोटेक्टर ऑफ कॉमनवेल्थ ऑफ इंग्लैण्ड, स्कॉटलैण्ड एण्ड आयरलैण्ड' के रूप में शासन किया। यद्यपि गणतन्त्र युग (1649-1660) को हम सैनिक तानाशाही का युग मानते हैं, पर इसी अवधि में पार्लियामेन्ट के भविष्य का निर्धारण भी हुआ था। निम्न सदन अर्थात् 'हाउस ऑफ कॉमन्स' में निर्वाचित सदस्य होते थे जबकि उच्च सदन अर्थात् 'हाउस ऑफ लॉर्ड्स के सदस्य 'लॉर्ड्स स्प्रिचुअल' तथा 'लॉर्ड्स टैम्पोरल' (अधिकांश पीयर्स) होते थे जिनकी नियुक्ति प्रधानमन्त्री द्वारा अथवा 'हाउस ऑफ लॉर्ड्स अपॉइन्टमेन्ट कमीशन' की सलाह पर शासक द्वारा की जाती थी। 3 सितम्बर, 1658 को ओलिवर क्रॉमवेल की मृत्यु के बाद सम्पूर्ण व्यवस्था चरमरा गई। उसकी मृत्यु के बाद उसके पुत्र रिचर्ड क्रॉमवेल ने लगभग आठ महीने तक 'लॉर्ड प्रोटेक्टर ऑफ कॉमनवेल्थ ऑफ इंग्लैण्ड, स्कॉटलैण्ड एण्ड आयरलैण्ड' के रूप में शासन का संचालन किया, परन्तु मई, 1659 को उसे अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा और इसके साथ ही 'लॉर्ड प्रोटेक्टर' का पद भी समाप्त हो गया। इसके बाद जॉर्ज मौंक ने 'लौंग पार्लियामेन्ट' को पुनर्जीवित किया और उसकी देखरेख में 1660 में नवीन संसद में वह आवश्यक संवैधानिक परिवर्तन किए गए जिससे कि राजतन्त्र को पुनर्स्थापित किया जा सके और निर्वासित चार्ल्स द्वितीय को सिंहासनारूढ़ किया जा सके। 1660 में चार्ल्स द्वितीय के सिंहासनारूढ़ होने के बाद इस परम्परागत सिद्धान्त को पुनः स्वीकार किया गया कि सरकार को राजा, हाउस ऑफ लॉर्ड्स तथा हाउस ऑफ कॉमन्स, इन तीनों के द्वारा संचालित किया जाना चाहिए।

प्र.6. मध्यकालीन यूरोप में धर्म और संस्कृति का परिचय संक्षेप में दीजिए।
Give a brief introduction of religion and culture in medieval Europe.

उत्तर

मध्यकालीन यूरोप में धर्म और संस्कृति का परिचय
(Introduction of Religion and Culture in Medieval Europe)

ग्यारहवीं शताब्दी सी ई तक आते-आते ईसाई पूजा पद्धतियों की जड़ें एशिया और अफ्रीका के कई भागों में होने के बावजूद, यूरोप 'ईसाई जगत' के समानार्थक था और ईसाई धर्म के अधिकार क्षेत्र का पर्याय बन गया था। उस समय ईसाई जगत स्वयं यूरोप की अवधारणा की तुलना में मध्ययुगीन यूरोप के अधिकांश लोगों के लिए एक परिचित अवधारणा थी। 'यूरोप' की सीमाएँ (आखिरकार यह कहाँ शुरू हुईं और कहाँ समाप्त होती थीं?) यह 12वीं-13वीं शताब्दियों में यूरोप की ईसाई जगत के साथ पहचान और भी घनिष्ठ हो गई, खासतौर पर जब समय-समय पर पोप द्वारा धर्मयुद्धों (Crusades) को अनुमोदित किया गया।

धर्मयुद्ध 'ईसा मसीह के क्रॉस चिन्ह' के मातहत ऐसे सैन्य अभियान थे जो 'पवित्र भूमियों' (जेरुसलम और आसपास के स्थान) के साथ-साथ यूरोप में भी धर्मविरोधी और विधर्मियों के खिलाफ लड़े गये थे। धर्मयुद्ध धार्मिक दायित्व की आड़ में अपनी शक्ति और

TOUCH 'n PASS

सम्पदा बढ़ाने के लिए यूरोपीय कुलीन वर्ग के आक्रामक प्रयास थे। लेकिन पोप की अनुमति द्वारा यह अति-क्रूर अभियान आरम्भ किये गये थे।

पोप के प्रभाव क्षेत्र, पेपेसी (Papacy), का मध्ययुग के दौरान, संपत्तियों और क्षेत्रीय-वैधानिक अधिकार क्षेत्रों के विशाल साम्राज्य के रूप में रोम से बाहर विस्तार हुआ। यूरोप का नागरिक प्रशासन अपनी वैधता के लिए ईसाई चर्चों और पोप की सहमति पर निर्भर था। इसी प्रकार पोप और उनके अधीनस्थ शाही समर्थन और उनके अनुग्रह पर निर्भर थे। ईसाई न्यू टेस्टामेन्ट में कहा गया है कि सांसारिक/लौकिक सत्ता (सामाजिक और राजनीतिक संबंधों में) और आध्यात्मिक सत्ता दो तलवारों द्वारा दर्शाये जाते हैं और दोनों तलवारों पर राजकुमार या सम्राट का अधिकार था। मध्ययुगीन यूरोप में जहाँ कहीं भी नागरिक नेताओं और अधिकृत ईसाई अधिकारियों के बीच दरारें पैदा हुईं, वे गंभीर राजनीतिक सकंट के रूप में सामने आए। ईसाई धर्मशास्त्रियों और विधिवक्ताओं ने पवित्र युद्ध के सिद्धान्त विकसित किये और हिंसा को तर्क-संगत ठहराने वाली परिस्थितियों पर वाद-विवाद किया, चाहे वह गैर-ईसाई या साथी ईसाईयों के खिलाफ हों।

समाज का ईसाईकरण लोगों द्वारा समान तरीके से ईसाई ईश्वर (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के तीन रूपों में) की पूजा करने की प्रक्रिया से कहीं अधिक था। ईसाईयत ने यूरोप में कई सैकड़ों अलग-अलग राज्यों और क्षेत्रों में वितरित विभिन्न प्रकार के लोगों के सामाजिक मूल्यों और मानदंडों का निर्धारण किया। आज जब हम शानदार मध्ययुगीन चर्च की वास्तुकला का अवलोकन करते हैं और यूरोपीय महलों के साथ-साथ चर्चों को सुशोभित करने वाले धार्मिक विषयों के भित्ति चित्रों, चित्रकारी और प्रतिमाओं की प्रशंसा करते हैं, तो यह निष्कर्ष निकालने की ओर झुकाव रहता है कि यूरोपीय संस्कृति ने ईसा मसीह और संतों की भक्ति को उदाहरण के रूप में पेश किया जिसे चर्च ने प्रत्येक ईसाई के कर्त्तव्य के रूप में सिखाया। मध्ययुगीन यूरोप की अधिकांश कला चर्चों में की गई और चर्च सामान्य जन के लिए खुले थे।

हेनरी एडम्स (1838-1918) ने *द एजुकेशन ऑफ हेनरी एडम्स* में मध्ययुगीन यूरोपीय लोगों में अविवाहित मैरी, यीशु मसीह की माँ, के प्रति श्रद्धा-भाव की तुलना आधुनिक लोगों में तकनीक (उदाहरण के लिए, बिजली उत्पन्न करने के लिए डायनमों का इस्तेमाल), वैज्ञानिक प्रगति और आर्थिक उत्पादन के प्रति जुनून से की है। एडम्स यह दिखाना चाहते थे कि मध्यकालीन यूरोपीय पुरुष और महिलाएँ अविवाहित मैरी की शक्ति के प्रति आश्वस्त थे और चर्च में अनुष्ठानों, गिरिजाघरों और चर्च में अन्य ताम-झामों पर विवाद नहीं करते थे, इसी प्रकार जैसे कि आधुनिक लोग प्रौद्योगिकी और आर्थिक उपलब्धि के महत्त्व और परम् लक्ष्य के बारे में आश्वस्त हैं। हालाँकि कई विद्वानों ने इस अवधारणा को चुनौती दी है कि मध्यकालीन यूरोपीय लोग अपने रोमन पूर्ववर्तियों या 1600 सी० ई० के बाद उनके उत्तराधिकारियों से अधिक धार्मिक और ईसाई थे।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. निरंकुश राष्ट्रीय राज्यों में इंग्लैण्ड एवं स्पेन के उत्थान एवं पतन के कारणों की समीक्षा कीजिए।

Review the reasons for the rise and fall of England and Spain as autocratic national states.

उत्तर

प्रमुख यूरोपीय निरंकुश राष्ट्रीय राज्य
(Main Autocratic national States in Europe)

इंग्लैण्ड (England)

इंग्लिश चैनल द्वारा विभाजित यूरोप महाद्वीप से अलग द्वीप समूह को हम ग्रेट ब्रिटेन कहते हैं। वास्तव में यहाँ दो बड़े द्वीप हैं—एक द्वीप जो दूसरे बड़े द्वीप से अलग है, उसे हम आयरलैण्ड कहते हैं तथा दूसरा बड़ा द्वीप जिस पर वेल्स, स्कॉटलैण्ड एवं इंग्लैण्ड तीन अलग-अलग राज्य थे। इनकी भाषाएँ, परम्पराएँ और शासन तन्त्र भी अलग थे। इनमें इंग्लैण्ड सबसे सक्षम और सम्भावना सम्पन्न देश था।

राष्ट्रीय एकता स्थापित करने वाला पहला राज्य इंग्लैण्ड था। इंग्लैण्ड में राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रीय सरकार की स्थापना का कार्य पश्चिमी यूरोप के अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक तेजी से हुआ। सन् 1337 से 1453 तक फ्रांस और इंग्लैण्ड के बीच हुए दीर्घकालीन सामन्तीय एवं राजवंशीय युद्धों (शतवर्षीय युद्ध) के परिणाम बड़े महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए। शतवर्षीय युद्ध की समाप्ति के तुरन्त बाद ही इंग्लैण्ड में व्यापक सामंतीय युद्ध का प्रारम्भ हुआ। इसमें प्राय: सभी सामन्तों ने भाग लिया। यह सामन्तीय युद्ध 'गुलाबों का युद्ध' (1455-1485) कहलाता है, जिसमें यार्क राजवंश (श्वेत गुलाब) एवं लंकास्टर राजवंश (लाल गुलाब) के

TOUCH 'n PASS

परस्पर विरोधी सामन्तों एवं समर्थकों के बीच दीर्घकालीन ध्वंसात्मक युद्ध हुआ। यह युद्ध 1485 में बासवर्थ में रिचर्ड-III की पराजय एवं मृत्यु तथा हेनरी ट्यूडर की विजय से समाप्त हुआ।

हेनरी ट्यूडर (हेनरी सप्तम्) के सिंहासन पर बैठने के साथ ही एक नये राजवंश 'ट्यूडर वंश' (1485-1603 ई०) का उदय हुआ। इसी वंश को इंग्लैण्ड में राष्ट्रीय राज्य के रूप में निर्मित करने का श्रेय दिया जाता है। इंग्लैण्ड के इतिहास में एक नये युग की शुरूआत हुई। गद्दी पर बैठने के बाद हेनरी सप्तम ने गृह कलह को समाप्त करने एवं शान्ति व्यवस्था की स्थापना हेतु यार्क वंश की उत्तराधिकारी राजकुमारी एलिजाबेथ के साथ विवाह कर लिया, इस विवाह से देश में शान्ति, सुरक्षा एवं सुदृढ़ शासन व्यवस्था की स्थापना हुई। हेनरी सप्तम् (1485-1509 ई०) ने सर्वप्रथम देश में शान्ति-व्यवस्था एवं सुरक्षा की स्थापना के उद्देश्य से शक्तिशाली राजतंत्र स्थापित करने की चेष्टा की। गुलाबों के युद्ध के परिणामस्वरूप हेनरी सप्तम् को दो बड़े लाभ हुए—

1. इस युद्ध के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड में अनेक शक्तिशाली तथा प्रभावशाली सामन्तगण मारे गये या अशक्त हो गये। अत: राजा ने उनके अधिकारों को कुचल दिया एवं उनकी जागीरें जब्त कर लीं।
2. इस युद्ध ने एक नये वर्ग अर्थात् मध्यवर्ग को जन्म दिया, जिसने अपने हितों के लिए राजा का साथ दिया। इसी जन समर्थन के आधार पर ट्यूडर राजाओं ने सोलहवीं शताब्दी में निरंकुश राजतन्त्र स्थापित किया। उसने विभिन्न अधिनियमों के द्वारा सामन्तों का दमन किया, उनसे सैन्य अधिकार छीन लिये तथा सामन्तों के स्थान पर मध्य वर्ग के लोगों को ऊँचे पदों पर नियुक्त किया। इस प्रकार उसने इंग्लैण्ड में सामन्त तन्त्र को हमेशा के लिए समाप्त करके निरंकुशता को परिपुष्ट किया।

हेनरी सप्तम ने 1520 में अपनी पुत्री मारग्रेट का विवाह स्कॉटलैण्ड के राजा जेम्स-चतुर्थ से कर दिया। इस विवाह का सुदूरगामी प्रभाव एक सदी बाद दिखा, जब 1603 में स्कॉटलैण्ड एवं इंग्लैण्ड का एकीकरण हो गया व इंग्लैण्ड में स्टुअर्ट राजवंश का शासन आरम्भ हुआ।

हेनरी सप्तम् के बाद हेनरी अष्टम् (1509-1547 ई०) के शासनकाल में इंग्लैण्ड में धर्म सुधार आन्दोलन हुआ, जिसके महत्त्वपूर्ण संवैधानिक एवं धार्मिक प्रभाव पड़े। इस आन्दोलन ने राजा और पार्लियामेन्ट को देश के धार्मिक जीवन पर नियन्त्रण का अधिकार दे दिया। इसके कुछ वर्षों बाद मठों एवं समर्पित पूजागृहों के विसर्जन ने राजा को धन एवं समर्थन दोनों ही प्रदान किये। ट्यूडर वंश की अन्तिम शासिका ने भी राजा की शक्ति में वृद्धि की। एलिजाबेथ का शासन काल इंग्लैण्ड के लिये स्वर्ण युग था क्योंकि उसके समय में ही इंग्लैण्ड में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक उन्नति हुई। जनता सुखी और सम्पन्न थी। इंग्लैण्ड को विदेशी युद्धों से शान्ति मिली और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार वाणिज्य से इंग्लैण्ड आर्थिक रूप से समृद्ध हुआ। उसने इंग्लैण्ड को समुद्रों का स्वामी और संसार का सबसे प्रमुख व्यापारिक राष्ट्र बनाने में सहायता दी।

सोलहवीं शताब्दी में राष्ट्रीय शक्तियों के प्रादुर्भाव और विकास में सबसे अधिक और स्पष्ट सफलता इंग्लैण्ड के ट्यूडर वंश को मिली। एलिजाबेथ ने पार्लियामेट में कहा था—"यद्यपि ईश्वर ने मुझे इतना ऊँचा उठाया है फिर भी मैं इसे अपना गौरव मानती हूँ कि मैंने आपके स्नेह के सहारे शासन किया है। इसीलिये मैं इस बात से इतनी खुश नहीं हूँ कि ईश्वर ने मुझे रानी बनाया है। मुझे तो इसकी खुशी है कि मैं एक कृतज्ञ प्रजा की रानी हूँ।" इसी रास्ते पर संभल कर चलते शासक अपने को दृढ़ बनाये रख सकते थे।

ट्यूडर शासकों के शासनकाल में संसद सशक्त राजाओं के प्रभाव में रही। ट्यूडर काल में इंग्लैण्ड की व्यापारिक प्रगति तो हुई ही, दुनिया के देशों में उसका महत्त्व भी बढ़ा। अंग्रेजों को अपने देश पर गर्व था और ट्यूडर लोग दुनिया में इंग्लैण्ड की शक्ति और गौरव के प्रतीक थे। ट्यूडर शासनकाल में राजाओं ने बड़ी बुद्धिमत्ता एवं समन्वय की दृष्टि अपनाते हुए पोप से स्वतन्त्र होकर संसद की सहायता से अनेक महत्त्वपूर्ण सुधार किये। इन्होंने संसद से टकराव की जगह संसद की सहायता से तत्त्कालीन आवश्यकताओं के अनुरूप शासन में सुधार किया। ट्यूडर सम्राटों ने संसद के द्वारा जनता पर शासन किया तथा जनता को अपने पक्ष में रखा, परन्तु स्टुअर्ट वंश (1603-1719) के शासकों में यह सूझ-बूझ नहीं थी। फलत: राजा एवं संसद के मध्य संघर्ष एवं टकराव हुआ। मेरियट के मतानुसार, 'ट्यूडर सम्राटों के सुदृढ़ एवं अनुशासनपूर्ण प्रशासन के काल में इंग्लैण्ड की संसद को विश्राम और शक्ति संचय का अवसर प्राप्त हुआ। इसी के बल पर सत्रहवीं सदी में सम्राट के विरुद्ध अधिकार व सत्ता प्राप्त करने के लिये वैधानिक संघर्ष करने में संसद समर्थ हुई।' परन्तु स्टुअर्ट शासनकाल (1603-1688 ई०) के अन्तिम शासक जेम्स द्वितीय के समय इंग्लैण्ड में रक्तहीन गौरवपूर्ण क्रांति (1688 ई०) हुई। जिसमें पार्लियामेन्ट की जीत हुई तथा वह अंग्रेज शासकों पर सर्वोच्च बन गयी। इस प्रकार लोकतंत्र ने निरंकुशता पर विजय पाना आरम्भ कर दिया।

स्पेन (Spain)

पिरेनीज पहाड़ के दक्षिण में भूमध्य सागर, अटलांटिक सागर और पुर्तगाल से घिरा पठारी इलाका स्पेन है। स्पेन आधुनिक काल के प्रारम्भ में यूरोप के सबसे शक्तिशाली एवं उन्नत देशों में से एक था। स्पेन का अतीत स्वर्णिम रहा, किन्तु यह अल्पकालीन ही

रहा, क्योंकि स्पेन की महानता के भौतिक स्रोत उस देश में नहीं थे। दीर्घकालीन एकीकरण के प्रयासों के पश्चात् सोलहवीं सदी के प्रारम्भ में स्पेन में राष्ट्रीय राजतंत्र का उत्कर्ष सम्भव हुआ।

अरबों की जब शक्ति बढ़ी तो उत्तरी अफ्रीका विजय करते-करते वे स्पेन आये फिर फ्रांस की ओर बढ़ गये। फ्रांस से तो उन्हें जल्दी खदेड़ दिया गया, किन्तु स्पेन में वे सदियों तक बने रहे। अरबों ने स्पेन में खूबसूरत नगर बसाए, मस्जिद बनवाई तथा इस्लाम का प्रसार किया। कालान्तर में इनकी शक्ति क्षीण होती गयी, फलत: स्पेन में इनका प्रभाव समाप्त हो गया। पन्द्रहवीं शताब्दी में स्पेन में चार विभाजित क्षेत्र दिखाई देते हैं। फ्रांसीसी सीमा के निकट नेवारे, पुर्तगाल की तरफ कास्तील, दक्षिण पूर्व में अरागान तथा दक्षिण में ग्रेनेडा। इन चार क्षेत्रों में कास्तील एवं अरागान प्रमुख राज्य थे, जबकि ग्रेनेडा में मुस्लिम मूरों का अधिकार था। इन चारों क्षेत्रों में शासन, परम्परा एवं सांस्कृतिक भिन्नता का चिह्न स्पष्ट था। पुनर्जागरण के साथ यूरोप में भावात्मक स्तर पर राष्ट्रीयता की चेतना पनप रही थी, जिससे स्पेन भी अछूता नहीं था। पन्द्रहवीं शताब्दी में स्पेन के दो प्रमुख राज्यों कास्तील एवं अरागान के मध्य वैवाहिक सम्बन्ध (1469) ने स्पेन में राष्ट्रीय राज्य के उदय का मार्ग प्रशस्त किया। कास्तील की उत्तराधिकारी ईसाबेला एवं अरागान के उत्तराधिकारी फर्डिनेंड के वैवाहिक सम्बन्ध से कास्तील एवं अरागान का एकीकरण हो गया। 1492 में फर्डिनेंड एवं ईसाबेला की संयुक्त सेनाओं ने मूरों को पूर्णरूपेण परास्त करते हुए ग्रेनेडा पर अधिकार स्थापित कर लिया। ग्रेनेडा पर अधिकार के फलस्वरूप स्पेन को पूर्ण धार्मिक एवं राष्ट्रीय एकता प्राप्त हुई।

फर्डिनेंड एवं ईसाबेला की गृह नीति स्पष्टत: दो तत्त्वों पर निर्भर थी—पहली राज्य के समस्त राजनीतिक अधिकारों को अपने अधीन केन्द्रित करना तथा दूसरा सम्पूर्ण राज्य में धार्मिक एकता स्थापित करना। इन्होंने राजपद की गरिमा वृद्धि हेतु एक शक्तिशाली केन्द्रीय शासन स्थापित किया, उदण्ड एवं स्वतन्त्र सामन्तों को दबाकर राज्य में शान्ति एवं सुव्यवस्था स्थापित की एवं लुटेरों का दमन कर व्यापार व वाणिज्य तथा आवागमन के साधनों का विकास किया। फर्डिनेंड एवं ईसाबेला ने एक निरंकुश राज्य की स्थापना के लिये बड़े सामन्तों की शक्ति घटा दी, कास्तील की प्रतिनिधि सभा की महत्ता सीमित कर दी गयी, अमीरों के पेंशन एवं अनुदान समाप्त कर दिये तथा शक्ति से सभी वर्गों से कर वसूल किया जाने लगा। व्यापार एवं वाणिज्य को राजकीय संरक्षण दिया गया, जिससे मध्यम वर्ग राजतन्त्र का समर्थक हो गया।

फर्डिनेंड एवं ईसाबेला ने धार्मिक एकता के आधार पर सम्पूर्ण राज्य में राजनीतिक एकता स्थापित करने की नीति अपनाई। उन्होंने रोमन कैथोलिक चर्च एवं पोप के प्रति अगाध श्रद्धा एवं निष्ठा दिखाई जिससे पोप ने इनको 'कैथोलिक सम्राट' की उपाधि प्रदान की। वस्तुत: राजशक्ति की वृद्धि एवं पुष्टि हेतु इन्होंने चर्च को अपना मुख्य अस्त्र बनाया। राज्य के धर्म विरोधियों का पता लगाने, उन्हें दण्ड देने, नास्तिकता का दमने करने, कैथोलिक धर्म की रक्षा करने तथा राजा की शक्ति की वृद्धि हेतु 1480 में इन्क्वीजीशन (Inquisition) नामक धार्मिक न्यायालय की स्थापना की, जिससे मूरों एवं यहूदियों का समूल नाश सम्भव हो सका।

यूरोप के मध्य स्पेन को महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाने के लिये फर्डिनेंड ने अपनी पुत्रियों के विवाह का सफल उपयोग किया, इसने अपनी बड़ी पुत्री जोआना का विवाह पवित्र रोमन साम्राज्य के युवराज फिलिप से कर दिया, दूसरी पुत्री मेरिया की शादी पुर्तगाल के शासक से कर दी तथा छोटी पुत्री कैथरिन की शादी इंग्लैण्ड के युवराज आर्थर एवं आर्थर की मृत्यु के पश्चात् हेनरी अष्टम से कर दी। इस वैवाहिक सम्बन्ध से स्पेन का सम्बन्ध आस्ट्रिया, इंग्लैण्ड एवं पुर्तगाल से मधुर हो गया तथा देश के गौरव में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

स्पेन के एकीकरण व राष्ट्रीयकरण के मार्ग में अन्तिम महत्त्वपूर्ण कदम सन् 1512 ई० में उठाया गया, जब स्पेन ने फ्रांस को परास्त कर नेवारे पर अधिकार स्थापित कर लिया। ईसाबेला और फर्डिनेन्ड के संयुक्त प्रयासों के परिणामस्वरूप आधुनिक एवं शक्तिशाली स्पेन राष्ट्र का निर्माण संभव हुआ। किन्तु आने वाले समय में स्पेन के राजा अपनी राजवंशी महत्त्वाकांक्षाओं में फँस गये, जिसने अगली दो शताब्दियों तक थका देने वाले संघर्षों में स्पेन को व्यस्त रखा।

फर्डिनेंड एवं ईसाबेला ने यूरोपीय राजनीति में अपनी महत्त्वपूर्ण स्थिति बनाने के लिए अपना ध्यान वैदेशिक तथा औपनिवेशिक विस्तार की ओर आकृष्ट किया। कोलम्बस की खोज ने अमेरिका में वृहत्तर स्पेनिश साम्राज्य स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया। शीघ्र ही अमेरिका के अधिकांश भाग पर स्पेन का प्रभुत्व स्थापित हो गया। इन प्रदेशों में सोने-चाँदी की बहुलता थी। इस प्रकार स्पेन को एक ऐसा कल्पवृक्ष प्राप्त हुआ जिसने उसको आधुनिक काल के प्रारम्भ में यूरोप के सबसे शक्तिशाली एवं उन्नत देशों की श्रेणी में ला खड़ा करने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

फर्डिनेन्ड एवं ईसाबेला ने राज्य के समस्त राजनीतिक अधिकारों को करने तथा समस्त राज्य में धार्मिक एकता स्थापित करने की नीति अपनायी। उन्होंने राजपद की गौरव वृद्धि के लिए एक शक्तिशाली केन्द्रित शासन स्थापित किया। उदण्ड स्वतन्त्र सामन्तों को दबाकर राज्य में शान्ति एवं सुव्यवस्था स्थापित की एवं लुटेरों का दमन कर व्यापार वाणिज्य तथा आवागमन के साधनों में वृद्धि की।

14वीं एवं 15वीं शताब्दी में तुर्कों के बढ़ते प्रभाव से आक्रान्त ईसाई जगत में जहाँ पूर्व में मुसलमानों का प्रभाव बढ़ता जा रहा था और साम्राज्य की राजधानी वियना भी सुरक्षित नहीं थी, वहाँ पश्चिम में स्पेन के सैनिकों ने मुसलमानों के सदियों पुराने प्रभाव का

अन्त कर दिया और ईसाई प्रभाव की पुनर्स्थापना की। कोई भी अन्य वस्तु स्पेनिस राजतन्त्र के लिए इससे बढ़कर गौरव और उन्नति नहीं ला सकती थी। पोप अलेक्जेण्डर षष्ठ ने फर्डिनेन्ड एवं ईसाबेला को कैथोलिक राजाओं की उपाधि प्रदान की।

फर्डिनेंड की मृत्यु के बाद उसकी बड़ी पुत्री का पुत्र चार्ल्स प्रथम (1516-1556 ई०) के नाम से स्पेन की गद्दी पर बैठा। 1519 ई० में चार्ल्स-I पवित्र रोमन साम्राज्य का सम्राट चुना गया। पवित्र सम्राट के रूप में वह चार्ल्स पंचम कहलाया। उसने स्पेन के अतिरिक्त पवित्र रोमन साम्राज्य, नीदरलैण्ड्स, बर्गडी, नेपल्स, सिसली, सार्डीनिया, सम्पूर्ण स्पेनिश अमेरिका, फिलिपाइन्स और अफ्रीका के कुछ भागों पर शासन किया। नि:सन्देह उसने दुनिया के सबसे बड़े भू-भाग पर शासन किया। चार्ल्स के शासनकाल में स्पेन अपने गौरव की पराकष्ठा पर पहुँचा। किन्तु यह पराकष्ठा स्थायी नहीं रह सकी।

चार्ल्स पंचम को सौभाग्य से जो दैत्याकार राज्य उत्तराधिकार में प्राप्त हुआ वह फूलों की सेज नहीं अपितु कांटों से भरा ताज था, यद्यपि उसमें समस्याओं से जूझने की क्षमता एवं इच्छा दोनों थी, किन्तु जीवन भर जूझने के बावजूद वह अपनी समस्याओं को घटा नहीं सका। अन्तत: उसने साम्राज्य का विभाजन कर स्वयं गद्दी छोड़ दी। उसने स्पेन, नीदरलैण्ड, इटालियन राज्य एवं अमेरिकी साम्राज्य अपने पुत्र फिलिप तथा मध्य यूरोप का क्षेत्र अपने अनुज फर्डिनेंड को दे दिया। फिलिप की मृत्यु के बाद स्पेन लगातार पतनोन्मुख होता गया। फिलिपि-चतुर्थ के नि:सन्तान मरने से स्पेन की गद्दी पर छिड़े उत्तराधिकार का लाभ फ्रांस के सम्राट लुई चौदहवें ने उठाया। उसने अपने वंश के आजू को स्पेन का शासक बनाया। इस प्रकार स्पेन में भी बूर्बो वंश की स्थापना हुई एवं स्पेन में चार्ल्स एवं फिलिप का राज वंश समाप्त हो गया।

स्पेन जिस तेजी से यूरोप के आसमान में चमका उसी तेजी से वह यूरोप से विलीन भी हो गया। वास्तविकता यह है कि स्पेन में महानता का आधार ही नहीं बना। किसी देश की वास्तविक महानता वहाँ की स्थायी आर्थिक उपलब्धियों पर निर्भर करती है। प्रकृति ने ही स्पेन को गरीब बनाया, किन्तु वहाँ के निवासियों ने भी अपने कर्म से इस कमी को पूरी करने का प्रयास नहीं किया। ऐसा लगता है कि सोलहवीं शताब्दी में स्पेन यूरोप का सबसे शक्तिशाली देश हो गया, किन्तु अचानक प्राप्त महानता के बोझ से ऐसा दबा कि इस भार से कभी भी मुक्त न हो सका और आज भी यूरोप का कमजोर एवं पिछड़ा देश बना हुआ है।

प्र.2. बूर्बो वंश के अधीन फ्रांस के उत्थान पर प्रकाश डालिए।

Throw light on the emergence of France under the Bourbon dynasty.

उत्तर

फ्रांस (France)

फ्रांस यूरोप का ऐसा प्रथम देश था, जिसमें सबसे पहले राजनीतिक एकता स्थापित हुई। फ्रांस के दो प्रसिद्ध राजवंशों वैलय राजवंश (1422-1589) एवं बूर्बो राजवंश (1589-1793) ने फ्रांस को एक राष्ट्रीय राज्य के रूप में परिवर्तित किया।

वैलय राजवंश के प्रमुख शासकों लुई ग्यारहवें, बारहवें एवं फ्रांसिस ने फ्रांस में निरंकुश राजसत्ता की स्थापना का सुदृढ़ प्रयास किया। इन शासकों ने विशेषत: लुई ग्यारहवें ने व्यावहारिक बुद्धि, कुशलता तथा सफल कूटनीति द्वारा सामंतों की शक्तियों एवं जागीरों को छीन लिया। साथ ही, उसने सामन्तीय न्यायालयों को समाप्त कर राजकीय न्यायालयों की प्रभुता कायम की। उसने चर्च पर भी अंकुश लगाया। लुई ने कई ऐसे कदम उठाये जिनमें फ्रांस शक्तिशाली बना। इन कदमों में उद्योग धन्धों के विकास हेतु संरक्षण प्रदान करना, जहाजों का निर्माण, बन्दरगाहों को विकसित करना, समस्त राज्य में एक सी मुद्रा, नाप-तौल कानून इत्यादि व्यवस्थाएँ शामिल थीं। फ्रांस के इतिहास में लुई ग्यारहवें का शासनकाल एक युगान्तकारी घटना समझी जाती है, क्योंकि उसने फ्रांसीसी राज्य की सीमाएँ विस्तृत की एवं निरंकुश राजतंत्र तथा सुदृढ़ राष्ट्र की नींव डाली। जब लुई की मृत्यु हुई तब फ्रांस का मानचित्र बहुत कुछ वैसा ही था, जैसा आज दिखायी पड़ता है। सोलहवीं शताब्दी में धार्मिक युद्ध से उत्पन्न अव्यवस्था ने निरंकुश राजतंत्र को और अधिक मान्यता, समर्थन एवं बल प्रदान किया।

फ्रांसिस की मृत्यु के पश्चात् (1559-89) के तीस वर्षों में यूरोप में धर्म सुधार आन्दोलनों के परिणाम स्वरूप हो रहे धार्मिक परिवर्तन से फ्रांस की राष्ट्रीय एकता पर संकटों का बादल घिर आया। यूरोप में व्याप्त इस धार्मिक अशान्ति से फ्रांस अपने को बचा नहीं सका। फ्रांस के मध्यमवर्ग में प्रोटेस्टेण्टों जिन्हें वहाँ ह्यूगनाट कहा जाता था, का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा था और धीरे-धीरे इनकी संख्या एवं शक्ति में अत्यधिक वृद्धि हो गयी, जिससे फ्रांस में धार्मिक युद्धों ने गृह युद्ध का रूप धारण कर लिया। फ्रांसिस की मृत्यु के पश्चात् 1559 से 1989 के बीच यह गृह कलह अपने चरम पर पहुँच गया तथा फ्रांस में तीन हेनरी (फ्रांस का राजा हेनरी-III, गीजा का ड्यूक हेनरी एवं नेवारे का युवराज हेनरी) के मध्य शक्ति प्राप्त करने अथवा बनाये रखने का प्रयास किया जा रहा था, जहाँ गीजा का हेनरी कैथोलिकों का समर्थक एवं नेता था। वहीं प्रोटेस्टेन्टों का समर्थक एवं नेता नेवारे का हेनरी था। राजा हेनरी ने अपनी शक्ति को बनाये रखने के लिये समय-समय पर दोनों हेनरियों की सहायता लेता रहा। अन्तत: नेवारे के हेनरी

TOUCH 'n PASS

को राजा हेनरी की मृत्यु 1589 के बाद फ्रांस की गद्दी मिली। नेवारे का हेनरी फ्रांस के प्रसिद्ध बूर्बो राजवंश का संस्थापक एवं फ्रांस के प्रसिद्ध राजा हेनरी चतुर्थ के रूप में विख्यात हुआ।

नेवारे का हेनरी जब हेनरी-चतुर्थ के नाम से फ्रांस की गद्दी पर बैठा तो अन्य कोई विकल्प न होने के कारण उसे स्वीकार तो किया गया, किन्तु उसकी स्थिति बहुत डांवाडोल थी। उसे एक बुरा प्रोटेस्टेंट समझा जा रहा था क्योंकि वह कैथोलिक हो गया था। उसे एक बुरा कैथोलिक समझा जा रहा था क्योंकि वह प्रोटेस्टेंट लोगों के प्रति सहिष्णु था। किन्तु अपनी नुकीली दाढ़ी, चमकती आँखों, फुर्ती एवं तत्काल निर्णय लेने की आदत से वह शीघ्र ही लोकप्रिय होने लगा और जल्दी ही उसे गुड किंग हेनरी कहा जाने लगा।

हेनरी चतुर्थ (1589-1610) का उल्लेख फ्रांसीसी राजाओं के इतिहास में महान राजा के रूप में ही नहीं, बल्कि लोकप्रिय राजा के रूप में भी होता है। उसने एक नये राजवंश की शुरूआत की जो दो सौ वर्षों तक फ्रांस पर शासन करता रहा। वह बूर्बो वंश का संस्थापक था, जिसने फ्रांस को ही नहीं यूरोप को भी सबसे शक्तिशाली राजा प्रदान किये। उसके सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यों में एक था, राजाओं की शक्ति की प्रभुता को पुन: स्थापित करना।

हेनरी चतुर्थ के बाद 1617 ई० में बालिग होने पर उसके पुत्र लुई तेरहवें ने राज्य की बागडोर अपने हाथ में ले ली। लुई तेरहवें में प्रशासकीय क्षमता एवं योग्यता का अभाव था, किन्तु सौभाग्य से उसे कार्डिनल रिशलू नामक एक असाधारण व्यक्ति की अमूल्य सेवाएँ प्राप्त थीं, जिसे उसने 1624 ई० में प्रधानमंत्री बनाया। वह मृत्युपर्यन्त (1642 ई०) इस पद पर बना रहा। उसने लुई के सामने यह शपथ ली कि—"मुझे जो भी अधिकार दिये जायेंगे उनका उपयोग मैं ह्यूगनटों और सामन्तों का दमन करने, प्रजा को अनुशासित एवं कर्त्तव्यपरायण बनाने और राजपरिवारों में उचित स्थान दिलाने में करूँगा।" योग्य और ओजस्वी रिशलू के अपनी सरकार के सम्बन्ध में दो लक्ष्य थे—

1. राजा को फ्रांस में सम्प्रभु बनाना।
2. फ्रांस को यूरोप में सर्वश्रेष्ठ बनाना।

रिशलू ने ऐसी तमाम सामन्तों की गढ़ियों को बर्बाद कर दिया जो राष्ट्र के लिए आवश्यक नहीं थी तथा चालबाजों को गुप्तचरों द्वारा ठिकाने लगा दिया। राजा की शक्ति का विरोध करने वाला दूसरा वर्ग काल्विनवादी प्रोटेस्टेंटो का था, जिन्हें 'ह्यूगनाट' कहा जाता था। रिशलू ने ह्यूगनाटों को दबा दिया। रिशलू ने एस्टेट्स जनरल की बैठकें बुलाने से इंकार कर दिया। इस बात से राजा मनमाना काम करने को स्वतंत्र हो गया। राजा कानून बनाने और उन्हें लागू करने लगा। वह कर लगाने और उन्हें खर्च करने लगा। इस तरह रिशलू निरंकुश राजतंत्र का प्रमुख निर्माता था।

रिशलू की मृत्यु के बाद अगले राजा लुई चौदहवें (1643-1715 ई०) की अल्प-वयस्कता के समय, कार्डिनल मेजारिन ने सन् 1661 तक फ्रांस का कार्यभार संभाला। उसने रिशलू की नीतियों को जारी रखा और जन विरोध (फ्रोंदे) के बावजूद लुई के निरंकुश राजतंत्र को दृढ़ किया। उसने विरोध को दबा दिया तथा राजनीतिक एवं वित्तीय मामलों में न्यायिक संस्था पार्लेमा के हस्तक्षेप के अधिकार को छीन लिया। इस तरह राजतंत्र शक्तिशाली हो गया। रिशलू एवं मेजारिन के कार्यों ने ही लुई चौदहवें के निरंकुश राजतंत्र को सम्भव बनाया।

संक्षेप में यह कह सकते हैं कि फ्रांस में राष्ट्रीय एकता का विकास इंग्लैण्ड के राष्ट्रीय विकास से भिन्न तरीके से हुआ। फ्रांस की भौगोलिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि इस पर आसानी से आक्रमण न हो सके, क्योंकि यह चारों ओर से समुद्र द्वारा उस तरह सुरक्षित नहीं था, जैसे इंग्लैण्ड। इसी कारण शक्ति एवं अधिकार एक व्यक्ति को सौंपे गये न कि पार्लियामेंट को, जिससे शक्तिशाली राजा आपातकाल में तत्काल कार्यवाही कर सके। फ्रांस में राष्ट्रीय राज्य के उदय में बाधक सामन्तवर्ग एवं धार्मिक कलह थी। किन्तु राजा एवं उनके मन्त्रियों सल्ली, रिशलू, मेजारिन और कोल्बर्ट ने फ्रांस को एक निरंकुश राष्ट्रीय राज्य के रूप में परिवर्तित कर दिया।

लुई 16वें (1774-1793 ई०) के समय फ्रांसीसी क्रांति ने फ्रांस में निरंकुशता का अन्त किया। परन्तु तब तक फ्रांस एक शक्तिशाली राष्ट्र-राज्य बन चुका था।

प्र.3. मध्ययुगीन यूरोप में महिलाओं को किस प्रकार औपचारिक ज्ञान के सृजन में भाग लेने से बाहर रखा गया और किन तरीकों से उनकी इसमें भागीदारी थी? विवेचना कीजिए।

Critically examine how women were kept out of creation of formal knowledge in medieval Europe and in which ways did they participate in it.

TOUCH 'n PASS

उत्तर मध्यकालीन पादरियों और चर्च की सामाजिक शिक्षाओं की आलोचना (Criticism of Social Preachings of Medieval Priests and Church)

इस इकाई में मध्ययुगीन यूरोप में चर्च की सामाजिक और सांस्कृतिक शक्ति पर जोर दिया गया है, लेकिन यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि ईसाई पादरी वर्ग की सत्ता पर वाद-विवाद हुआ और यह वार्तालाप के द्वारा निर्मित हुई। एक समाज की संस्कृति प्रमुख लोगों और उसकी संस्थाओं द्वारा उस संस्कृति को जैसा प्रस्तुत किया जाता है, उस तरह की आदर्श दर्पण छवि नहीं होती है। बल्कि, संस्कृति प्रभावशाली और अधीनस्थ सामाजिक समूहों के मूल्यों में एक दरार या विकृत दर्पण की तरह होती है। दोनों, अभिजात्य और जनसामान्य यूरोपीय लोगों द्वारा पादरी वर्ग की आलोचना मध्यकालीन यूरोपीय संस्कृति का एक सुस्पष्ट भाग था। यह इतालवी जियोवन्नी बोकासियो (Giovanni Boccaccio) द्वारा रचित व्यंगपूर्ण कहानियों (विशेषकर द डिकेमरॉन) और इंग्लैंडवासी जियोफ्रे चौसर (Geoffrey Chaucer) द्वारा लिखित द कैन्टरबरी टेल्स, विश्वविद्यालय के छात्रों के गीतों और घुमक्कड़ विद्वानों और लोक-गायकों की कविताओं में देखा जा सकता है। मध्ययुगीन काल से उत्तरजीवी गीतों और कविताओं का एक महत्त्वपूर्ण संग्रह चक्र, कार्मिना बुराना (Carmina Burana, बेनेडिक्टब्यूर्न, एक जर्मन मठ, के गीत), यूरोपीय पादरी वर्ग और जन सामान्य लोगों के बीच पादरी वर्ग के मूल्यों के इर्द-गिर्द तनावों और उनके जटिल संबंधों को प्रकट करता है। लोकगीत और कथाएँ लालची या आलसी पादरियों के बारे में मध्यकालीन लोकप्रिय (कृषक) मान्यताओं को व्यक्त करती हैं।

गोलियार्ड कवियों के दृश्यरूप (12वीं-14वीं शताब्दी सी०ई०) Visual forms of Goliard Poets (12th to 14th Century C.E.)

गोलियार्डस गिरिजाघर के स्कूलों और विश्वविद्यालयों के छात्र थे, जो पुजारी बनने या उच्चतर पादरी कार्यालय में कार्य पाने की (या उनके परिवारों की अपेक्षा थी) उम्मीद करते थे। लेकिन उनके पास अक्सर प्रेरणा की कमी थी या वह वास्तविक पादरी बनने के लिए सम्मान खो चुके थे। गोलियार्डों ने पादरी वर्ग का मजाक उड़ाया और जितना संभव हो सका उतना अपवित्र होने की कोशिश की; उनके कार्य गाने, खान-पान और जुआ खेलने इत्यादि पर केन्द्रित थे।

उनमें जो लोग पादरियों के सहायक और प्रशिक्षु बन गये, उन्होंने छद्म ईसाई समारोहों का आयोजन किया और 'मूर्खों के भोजों' (feasts of fools) का संचालन किया। तेहरवीं शताब्दी में पेरिस विश्वविद्यालय के रेक्टर उन अधिकारियों में से थे जिन्होंने गोलियाड्र्स का व्यवहार खतरनाक और विध्वंसकारी पाया।

गोलियाड्र्स का निंदनीय व्यवहार और मजाक उड़ाने वाली किसानों की लोकोक्तियाँ ज्यादातर आमोदजनक थीं और शायद उन्होंने चर्च की शक्ति के लिए कभी भी गंभीर खतरा उत्पन्न नहीं किया।

जॉन हस, जॉन वाइक्लिफ और अन्य लोगों ने 14वीं और 15वीं शताब्दियों के दौरान पादरियों की पवित्र शक्ति और पोप की सत्ता पर संदेह व्यक्त किये और इनमें से कुछ आलोचकों ने चर्च के खिलाफ विद्रोहों को संगठित किया, लेकिन हर घोषित हस्साइट या वाइक्लिफाइट के बदले हजारों ऐसे ईसाई थे जो पादरी वर्ग और उनकी भूमिकाओं के प्रति सम्मान रखते थे। यह लोग कुछ 'बुरे' पादरियों के बावजूद पादरी वर्ग की भूमिका को कम नहीं आँकते थे।

इतिहासकार अभी भी इस बात से असहमत हैं कि मार्टिन लूथर द्वारा प्रारंभ की गई चर्च संस्थान के 'अनुचित व्यवहार' की आलोचना (1517-1521) जिसने प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार की उथल-पुथल को जन्म दिया, जो यूरोप के कई भागों में गृहयुद्ध के रूप में भड़का, उसका मध्ययुगीन पादरीवाद विरोधी विचारों के साथ कोई संबंध था। इतिहासकार प्रश्न चिह्न लगाते हैं कि क्या मध्ययुगीन शताब्दियों (लगभग 1300-1600) के अंत के दौरान पादरी वर्ग के विरुद्ध भावना वास्तव में बढ़ रही थी और क्या पादरी वर्ग के खिलाफ विरोध 'समाज की श्रेणियों' के अन्तर्गत संरचनात्मक परिवर्तनों को प्रकट करता है जो शहरों में एक नये प्रकार के 'पैसे वाले' बुर्जुआ वर्ग (bourgeoisie) के उद्भव से संबंधित था।

स्पष्ट रूप से मध्ययुगीन यूरोप में 'बौद्धिक' गतिविधियों पर वास्तव में चर्च का एकाधिकार नहीं था। 1300 से 1600 के बीच पुनर्जागरण (इतालवी: रेनासिमेन्टो [Renascimento]; 'पुनर्जन्म') के रूप में पहचाने जाने वाली सांस्कृतिक घटना की कई इतिहासकारों ने चर्च की शिक्षाओं और मूल्यों से मानसिक मुक्ति के आन्दोलन के रूप में व्याख्या की है। माना जाता है कि यह एक नया मानव केन्द्रित दृष्टिकोण था, हालाँकि कई पुनर्जागरण काल के मानवतावादियों ने चर्च के प्रति अपनी पवित्र आस्था और सम्मान दिखाने में कसर नहीं छोड़ी। कुछ मानवतावादी स्वयं चर्च से संबंधित थे या उन्हें चर्च द्वारा संरक्षण दिया गया था। पुनर्जागरण काल की एक पुस्तक, जियोवन्नी विलानी की फ्लोरेन्टाइन क्रॉनिकल (Florentine Chronicle; चौदहवीं शताब्दी में लिखी गई), यह इंगित करती है कि फ्लोरन्स (इटली) में 1330 के दशक में प्राथमिक स्कूलों में पढ़ने वाले 35% से 40% बच्चे लड़के थे और इनमें से अधिकांश शिक्षा पादरी वर्ग के प्रत्यक्ष प्रशासन से बाहर थी। छात्र ज्यादातर लड़के और नवयुवक थे

जो कम्पनियों और बैंकों के लेखानुभागों में कार्यरत हुए, जिन्होंने व्यवसायिक पत्रों की प्रतियाँ लिखी या बनाई और जिन्होंने नगरपालिका सरकार के साथ-साथ चर्च प्रशासन में भी 'लिपिक' के रूप में काम किया।

उत्तर मध्ययुगीन शताब्दियों में यूरोपीय समाज और संस्कृति में एक और उल्लेखनीय परिवर्तन लेसाइजेशन (laicization) से संबंधित था जिसका अर्थ है वह प्रक्रिया जिसके द्वारा धार्मिक अधिकारियों के द्वारा किये गये कार्यों को गैर-धार्मिक (सामान्य) जनों को हस्तान्तरित किया जाता था। ईसाई धर्म की प्राथमिक शताब्दियों से ही चर्च ने अपने प्रशासन और अनुरक्षण में सामान्य जन को कुछ भूमिकाएँ निभाने की जैसे—संपत्ति प्रबन्धन करने की अनुमति दी। चर्च द्वारा निर्देशित गतिविधियों में उन्होंने सामान्यजनों को संलग्न करके इसके द्वारा आम ईसाईयों में धार्मिक विश्वास को प्रोत्साहित किया और मध्यकालीन शताब्दियों में चर्च ने कुछ सामाजिक कल्याणकारियों को सामान्य ईसाई जनों के साथ साझा किया। जर्मनी में कोल्न (कोलोन), 1500 में लगभग 30,000 निवासियों का एक धार्मिक केन्द्र था जिसमें 19 चर्च, 100 छोटे गिरिजाघर (चैपल), 22 मठ और 12 धार्मिक छात्रावास थे। इस समय कोलनट (Kolnat) में तीन से चार हजार पादरी थे, लेकिन यहाँ तक कि 'धार्मिक' संस्थान जैसे कि हॉस्टल, अस्पताल, तीर्थस्थल, आदि भ्रातासंघ (brotherhoods) और भगिनीसंघ (sisterhoods) जैसी संस्थाओं द्वारा चलाये जा रहे थे, जिनके संचालन में सामान्य जन की भागीदारी थी। कुछ इतिहासकारों ने तर्क दिया है कि समस्त यूरोप में विभिन्न सामाजिक कल्याण संस्थाओं में सामान्य जनों की अधिकाधिक भागीदारी से आवश्यक रूप से यह साबित नहीं होता कि सामाजिक कल्याण गतिविधियों को धर्मनिरपेक्ष बनाया जा रहा था (secularized) या गैर-चर्च तत्त्वों द्वारा अधिग्रहित किया जा रहा था। इसके बजाय, यह तर्क दिया जाता है कि संस्थाओं में धर्मनिरपेक्षीकरण (लेसाइजेशन; laicization) से यह पता चलता है कि ईसाई सामाजिक उत्तरदायित्व (दान-पुण्य, बीमारों की देखभाल आदि) की भावना अधिक से अधिक ईसाई समाज में हर किसी के सरोकार के रूप में देखी जा रही थी। अन्त में, मध्यकालीन यूरोपीय संस्कृति को समझना उन तरीकों को समझे बिना असंभव है कि ईसाई धर्म ने किस प्रकार मध्यकालीन लोगों के दृष्टिकोण का गठन किया और कैसे लोगों ने (चाहे पादरी वर्ग के हों या सामान्य जन) चर्च के साथ अपने संबंध बनाये रखे। प्राचीन रोमन काल के अन्त में चर्च की संस्थागत शक्ति ईसाईकरण की प्रक्रिया के साथ पूरे यूरोपीय क्षेत्रों में फैल गई। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं था कि व्यवहार में 'नागरिक सत्ता' 'आध्यात्मिक सत्ता' के अधीनस्थ थी, न ही चर्च ने मूर्तिपूजक समाजों पर ईसाई मूल्यों को लादा। मूर्तिपूजक यूरोप की पूजा शैलियों और आदतों को ईसाई व्यवहार में अपनाया गया था, हालाँकि उन्हें ईसाई धर्मशास्त्र (धर्म के औपचारिक सिद्धान्त) में इतना अधिक नहीं अपनाया गया था। विधर्मियों के मुकदमे और धर्मयुद्ध चर्च द्वारा उठाए गए दंडात्मक उपायों में शामिल थे जिन्होंने यूरोपीय सामाजिक व्यवहार को प्रभावित किया, जबकि अवकाश दिवस और त्योहारों का पालन, पवित्र धार्मिक स्थलों का रखरखाव, 'पुरोहिताई संबंधी देखरेख' (pastoral care) की संस्थाएँ और औपचारिक शिक्षा प्रणाली ईसाईकरण के अधिक रचनात्मक माध्यम थे। यूरोप में 'एक धर्म में विश्वास के समाज' की नीति गैर-ईसाई तत्त्वों को पूरी तरह से हाशिए पर नहीं डाल सकती थी, हालाँकि स्पेनिश कैथोलिक रिकॉनक्विस्टा (Reconquista) के उदाहरण से यह स्पष्ट है कि जिन गैर-ईसाइयों ने धर्मान्तरण से इन्कार किया, उन्हें कैसे निष्काषित किया जा सकता था या उन्हें लगभग नष्ट किया जा सकता था। चर्च मध्य युग के पश्चात् राजतन्त्र के साथ कई शताब्दियों तक यूरोपीय 'सामन्ती' व्यवस्था का एक आधार स्तम्भ था। ईसाई धर्म यूरोपीय संस्कृति के क्षेत्र में, चाहे वह कुलीन वर्ग की थी या सामान्य जन की, सर्वव्यापी था।

प्र.4. ईसा मसीह के पंथ को रोमन शासकों द्वारा खतरा क्यों माना गया है? स्पष्ट कीजिए तथा 'रहस्यवादी धर्म' और ईसाई धर्म के उदय का वर्णन कीजिए।

Why did the sect of Zesus Christ assume a danger by Roman Emperors? Clarify it and describe the emergence of 'mysterious religion' and christianism.

उत्तर

ईसा पंथ से रोमन शासन को खतरा: उत्पीड़न से प्रोत्साहन तक
(Danger from Christianism to Roman Emperors : Harassment to Encouragement)

सभी ईसाई चर्चों या संप्रदायों के ईसाई अधिकारियों के अनुसार, नजारत के यीशु के माता- पिता (जोसफ और मैरी) का सामान्य परिवार में पालन-पोषण हुआ था। जब उन्हें दिव्य रहस्योद्घाटन हुआ, उन्होंने समस्त यहूदी क्षेत्र में उपदेश दिये, जबकि कुछ अन्य यहूदियों के द्वारा उन्हें नकली मसीहा करार दिया गया और रोमन अधिकारियों ने उन्हें सार्वजनिक व्यवस्था के लिए खतरा मानकर जेरूसलम में प्राणदंड दिया। हम ईसा मसीह की कहानी पर विश्वास करें या ना करें, हम ईसाई बाइबिल न्यू टेस्टामेन्ट के माध्यम से जो पहले ग्रीक में रचा गया था, परन्तु तत्पश्चात् लैटिन, सीरिएक, आर्मेनियन और अन्य भाषाओं में लिखी गई - ईसाई

धर्म के उदय के बारे में अन्तर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं और इसी प्रकार हम चर्च फादरों के बारे में और उनके द्वारा संकलित कार्यों द्वारा जैसे, टर्टूलियन, साईपेरियन, ओरिगेन, ऑगस्टीन, जेरोम, एम्बरोस, बेसिल, एथनेसियस, एंथनी, जॉन क्रिसोस्तम, अफराहट और एंटिओक के आइजैक जैसे व्यक्तियों की कृतियों से इस विषय के बारे में जान सकते हैं। उस समय की अनुकरणीय अग्रणी ईसाई महिलाओं द्वारा और उनके बारे में वर्णित ग्रन्थ भी हमें प्राप्त होते हैं। अन्य उपयोगी स्रोत प्रारंभिक सन्तों, पवित्र पुरुषों और स्त्रियों के जीवन की कहानियाँ हैं, जो अपने कार्यों या अवज्ञा के लिए प्रशंसनीय हैं।

ईसाई संत अपने धर्म पर मिटने वाले हुतात्मा (मार्टिस ग्रीक में 'गवाह') थे। उनके बारे में कहानियों ने ईसाई धर्म के व्यवहार की सीख प्रदान की और इसकी आत्म परिभाषा को आकार दिया। वास्तव में संतों की इन गाथाओं ने ईसाई अस्मिता को स्वरूप प्रदान किया। जैसा कि इनसे आशा की जाती है यह स्रोत ईसाइयों का पक्ष लेते हैं और बुतपरस्तों या विधर्मियों की आलोचना करते हैं। वे मानवता की मुक्ति के लिए हुतात्माओं की साधुता और कष्ट भोगने की प्रक्रिया को ईश्वरीय योजना के रूप में दर्शाते हैं (पाँचवीं शताब्दी सी ई तक आते-आते लैटिन शब्द पेगन का मतलब गैर-ईसाई से था)। इस समय के धर्मनिरपेक्ष या गैर-ईसाई स्रोत टकराव और पीड़ा के अन्य कारणों को प्रकट करते हैं: ईसाइयों ने रोमन रीति-रिवाजों और सामाजिक मानदंडों-जैसे सम्राटों का मंगलगान करने वाले शाही पंथों को अस्वीकार किया और कानून का विरोध किया।

बाइबिल के यीशु मसीह (नजारत के) के जीवन, मृत्यु और पुन: जी उठने के वर्णन और साथ ही साथ गैर-ईसाई रोमन इतिहासकार जैसे टाइटस फ्लेवियस जोसेफस (37-100 सी ई) के वृत्तांतों से ईसा मसीह पंथ को रोमन राज्य द्वारा संदिग्ध मानने का एक स्पष्ट कारण प्रकट होता है; इसके अनुसार कुछ यहूदी जो प्राचीन यहूदी राज्य (जुडिया या इजराइल) के रोमन अधिग्रहण से नाराज थे, उन्होंने यीशु का मसीहा के रूप में अभिवादन कर 'अभिषेक' किया और यह माना कि वह यहूदियों और शायद अन्य लोगों पर सार्वभौमिक शांति के युग में शासन करेगा। न्यू टेस्टामेन्ट अपने आप में यह स्पष्ट नहीं करता कि यीशु वास्तव में राजनीतिक शासन के मामलें में अपनी यहूदी मातृभूमि के लिए क्या चाहते थे। यहूदी आजादी के लिए हुतात्मा यीशु मसीहा के रूप में मृत्यु दंड पाये यीशु की अपूर्व कथा ने जुडिया और पड़ोसी क्षेत्र में जो रोमन नियंत्रण में थे, उनके लिए चुनौतियाँ प्रस्तुत की। रोमन अधिकारियों ने उन्हें अपमानजनक ढंग से सामान्य चोरों के साथ सूली पर चढ़ाया और नकली और ढ़ोंगी 'यहूदियों के राजा' के रूप में उनका उपहास उड़ाया। इसके बहुत कम प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि उनकी शिक्षाओं को वहन करने वाले संदेशवाहक-प्रचारक, धर्मदूत और चर्च के संस्थापक-पहली शताब्दी सी ई के उत्तरार्द्ध में यहूदी राजनीतिक और सैन्य उपद्रव में प्रमुख भूमिका निभा रहे थे। रोमन यहूदी ईसा मसीह के सर्वप्रथम अनुयाईयों में से थे, परन्तु बहुत से यहूदियों ने ईसा मसीह को एक नकली मसीहा के तौर पर देखा। हालांकि यह स्पष्ट है कि यीशु की कहानी ने पूरे साम्राज्य में गैर-यहूदियों को आकर्षित किया। ईसाई बाइबिल की मुख्य पुस्तकों में धर्मदूतों द्वारा दिया गया इस तरह का विवरण शामिल था जिसमें एक मनुष्य, जिसके पास एक मानवीय माँ थी और जो मनुष्य और ईश्वर दोनों का पुत्र था, जो एक धार्मिक शिक्षक था, जिन्हें मरते हुए देखा गया और पुनर्जीवित होते हुए भी देखा गया और स्वर्ग में रहने वाले अपने पिता की ओर जाते हुए देखा गया। जूडावाद (यहूदी) और उभरते हुई ईसाई धर्म दोनों ने मूर्तिपूजा और किसी भी प्रकार के बहुदेववाद के बारे में कठोरता अपनाई। उभरते ईसाई धर्म और स्थापित यहूदी धर्म के बीच कई विभिन्नताओं के बावजूद, दोनों ने केवल एक सर्वशक्तिमान ईश्वर को मान्यता दी-मूसा और इब्राहीम के साथ-साथ ईसा मसीह और लगभग सभी पंथों के ईसाईयों ने समय के साथ यहूदियों के 'ओल्ड टेस्टामेन्ट' को अपने धर्म की नींव के रूप में स्वीकार किया। सदियों से ईसाईयों और यहूदियों के बीच कभी-कभी तनावपूर्ण और हिसंक सम्बन्ध सामान्य विचारों और विश्वासों के साझा भंडार की सहायता से सामान्य भी होते रहे।

तीसरी और चौथी शताब्दी सी ई के दौरान ईसाई समुदायों के विकास ने रोमन अधिकारियों को उन पर अधिक ध्यान देने, अन्य समुदायों के साथ उनके संबंधों और ईसाइयों के शासन के प्रति रवैये पर अधिक निगरानी रखने के लिए प्रेरित किया। सम्राट कॉन्सटेंटाइन जिन्होंने पूर्वी भाग से साम्राज्य पर शासन किया था, ने 313 सी ई में ईसाइयों पर पहले के शासकों द्वारा लगाए गए कानूनी प्रतिबन्धों और उत्पीड़न को हटा दिया। कॉन्सटेंटाइन ने अपने जीवन के अन्तिम काल में ही ईसाई धर्म को अपनाया और उन्होंने ईसाई धर्म को साम्राज्य का आधिकारिक धर्म नहीं बनाया। बल्कि उन्होंने रोमन क्षेत्रों में ईसाई धर्म को अन्य धार्मिक विश्वासों और पंथों के साथ सह-अस्तित्व में स्वीकृत किया। कॉन्सटेंटाइन ने ईसाई धर्म को अधिक व्यवस्थित करने के लिए चर्च-समितियों को भी प्रायोजित करवाया, जैसे 325 सी ई में नाइसिया (एशिया माइनर) में ईसाई समुदायों में फैल गए ईसाई धर्मशास्त्र और चर्च प्रशासन के विवादों को सुलझाने के लिए एक समिति का आयोजन किया गया। चूँकि कॉन्सटेंटाइन ने अपने आप को ईसाई घोषित किये बगैर ऐसा किया था तो हम यह मान सकते हैं कि उनका मुख्य उद्देश्य 'सार्वजनिक व्यवस्था' को बनाए रखना रहा होगा जो उनका शाही कर्त्तव्य था। सम्राट थियोडोसियस ने 380 सी ई में ईसाई धर्म को रोमन साम्राज्य का राज्य

धर्म बनाया और पाँचवी शताब्दी के मध्य तक गैर-ईसाइयों के रोमन साम्राज्य के प्रशासन में शामिल होने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। कई इतिहासकारों ने 300 सी ई के अंत और 400 सी ई के प्रारंभ में रोमन और पूर्वी ईसाइयों और अन्य विश्वासों और पंथों का अनुसरण करने वाले लोगों, जिसमें बहुत से रोमन प्रजा के लोग शामिल थे जो ईसा मसीह को ईश्वर के पुत्र के रूप में और अन्य देवताओं को भी पूजते थे, के बीच बढ़ती असहिष्णुता के प्रमाणों का हवाला दिया है। लगभग 350 सी ई से पहले जाहिर तौर पर कई अंशकालिक ईसाई भी थे। यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि उस समय से पहले के कुछ रोमन या शासक या आम लोग, किसी व्यक्ति के एक से अधिक पंथ में भाग लेने को नैतिक या राजनीतिक समस्या के रूप में नहीं मानते थे, जब तक कि वे लोग नागरिक अधिकारियों और कानून का सम्मान करते थे।

'रहस्यवादी धर्म' और ईसाई धर्म का उदय
(Emergence of Mysterious religion and Christianism)

रोमन ईसाई धर्म के उद्भव और इसके विशिष्ट रूपों को समझाने की कोशिश में, कुछ विद्वानों ने ईसाई पंथ और रहस्यवादी धर्मों के बीच विशेष संबंध पर जोर दिया है, जैसे कि एल्युसीनियन रहस्यवाद और मिथ्रावाद। ग्रीक शब्द मिस्टीस (mystes) का अर्थ था वह व्यक्ति जिसे गुप्त रहस्य बताए गए हो, विशेष रूप से एक पंथ की सदस्यता के लिए दीक्षित करना या विशेष अनुष्ठान करके सम्मिलित करना। कई पुराने पंथ थे—जैसे कि साइबेल, महान् मातृ देवी की पूजा, जिसने पूर्व की ओर से रोमन साम्राज्य में प्रवेश किया था। इस पंथ में प्रजनन क्षमता और बहुलता से अच्छी फसल सुनिश्चित करने के लिए अनुष्ठानों में सामूहिक या लोकप्रिय अनुपालन या सहभागिता की जाती थी। कुछ प्राचीन प्रजनन पंथों में एक महान् नदी की बाढ़ या शीत ऋतु की संक्रांति के बाद सूर्य की 'वापसी' का स्वागत करने के लिए पशु बलि या अनुष्ठान शामिल थे। ग्रीक में पवित्र स्थलों पर एल्यूसीनियन रहस्यों का अभ्यास किया जाता था और संभवत: ग्रीक सभ्यता' से पूर्व के समय में पर्सेफोन के हेड्स (पाताल-लोक) में अवतरण वर्ष के आठ महीनों तक मानव संसार में उसकी वापसी (वसंत और गर्मियों के मौसम) का उत्सव मनाया जाता था। यह पंथ सभी के लिए खुला नहीं था, यह सिर्फ उनके लिए खुला था जो दीक्षित थे और जिन्होंने विस्तृत सदस्यता समारोहों में भाग लिया था। इसी तरह मिथ्रावाद, जो पश्चिम एशिया में उत्पन्न हुआ प्रतीत होता है और जिसमें वैदिक संस्कृति के तत्त्व (वेद में मित्र का वर्णन प्रकाश के देवता के रूप में किया किया गया है) शामिल थे, सूर्य की आराधना से संबंधित था और जिसमें बैलों का बलिदान शामिल था। दीक्षित लोग भूमिगत कक्षों या इमारतों में गुफा के आकार के कमरों (मिथाई) और पूजा करने वालों के सह भोज के लिए स्थापित बेंचों वाली जगह में एकत्र होते थे। मिआवाद में आनुष्ठानिक शुद्धि के समारोह शामिल थे और इसमें पुनर्जन्म या मृत्यु के बाद जीवन का वादा किया जाता था। रोमन जगत में सैनिक विशेष रूप से इस पंथ के पक्षधर थे। सीरिया, फिलीस्तीन और आर्मीनिया से लेकर हंगरी, जर्मनी और इंग्लैंड तक रोमन काल के सैकड़ों मिथ्राई खंडहर मिलते हैं।

एल्यूसीनियन रहस्य ग्रीस में एल्युसिस पर आधारित डेमिटर और पर्सेफोन के पंथ से संबंधित हैं। इस पंथ में पर्सिफोन के उसकी माँ डेमिटर से अपहरण और फिर उनके पुनर्मिलन के रूप में मनाया जाता था। मिथ्रावाद का नामकरण ईरान और आर्मीनियाई लोगों के देवता मिथ्रा के नाम पर किया गया था। जिसका संभवत: साझा वैदिक आधार था (मित्र की ऋग्वेद में प्रंशसा की गई है)। मिथ्रावाद की कला/मूर्तिशास्त्र तीन परिदृश्यों में देवता को दर्शाती है: एक चट्टान से एक बच्चे के रूप में प्रकट होते हुए, एक व्यस्क की वीर मुद्रा में सूर्य को देखते हुए, सांड को मारते हुए और पत्थर में तीर मारते हुए जिससे पानी फूटता है। क्योंकि कोई भी मिथ्राई धर्म पुस्तक या पवित्र ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है, मिथ्रावाद का धर्मशास्त्र कल्पित है। स्पष्ट रूप से पंथ में अमरता या रूपान्तरण का कुछ वादा प्रमुख था। पंथ के सदस्यों की सात अवस्थाएँ या पद-स्थितियाँ थी, प्रत्येक अवस्था में अलग-अलग रहस्य प्रकट होते थे।

रोम के शहर में सान क्लेमेन्ट और सान प्रिस्का के ईसाई बेसीलिकस (केथड्रेल) के नीचे मिथ्राका है। यह मिथ्रावाद के चार शताब्दियों के उनके अस्तित्व के दौरान तीन सौ साल तक ईसाई धर्म के साथ उनके सह-अस्तित्व के दौरान उनके आपसी घनिष्ट संबंध का सुझाव देता है या तो कुछ मिथ्रावादियों ने ईसाई धर्म को भी अपनाया या ईसाइयों ने मिथ्रावाद को अपने 'सच्चे' धार्मिक विश्वास की हास्यानुकृति या नकल के रूप में या फिर इन दोनों के रूपों में देखा। प्रारंभिक ईसाई ग्रंथ और उनके विवरण मिथ्रावादियों के बारे में शिकायतों से भरे हुए हैं। हालाँकि एक दृष्टिकोण से प्रारंभिक ईसाई धर्म मिथ्रावाद से बहुत अलग प्रतीत नहीं होता। ईसाइयों की धार्मिक दीक्षाओं में (चर्च में शामिल होने का संकेत देने के लिए बच्चों या व्यवस्कों का बैपटिज्म), शुद्धि अनुष्ठानों और परम् संस्कारों (sacraments; पवित्र जल के साथ एक पादरी द्वारा आशीर्वाद देना, स्वर्ग में जगह के लिए 'अन्तिम संस्कार') में केवल चर्च के 'सदस्यों' अथवा समागम को अनुमति थी। समागमों में पवित्र कहानियों के बारे में बताना

TOUCH 'n' PASS

(चर्च के उपदेश) और सामूहिक भोज का उत्सव करना इसमें शामिल थे। ईसाई यूकेरिस्ट (पवित्र समागम; 'holy communion'), मनाते थे जो उन्हें ईसा मसीह का उनके प्रेरित धर्मदूतों के साथ खाए गए अन्तिम भोज (Last Supper) की याद दिलाता था।

रोमन साम्राज्य में मिश्रावाद और ईसाई धर्म एक साथ विकसित हुए और प्रतिद्वन्दिता के माध्यम से इन्होंने एक दूसरे को संगठित होने में मदद की। रहस्यवादी धर्मों ने प्रारंभिक ईसाईयों को अनुष्ठानों और अपनेपन का एहसास कराने वाले समारोहों के विषय में सिखाया। हालांकि, मिश्रावाद की कोई उत्तरजीवी या प्रत्यक्ष पवित्र पुस्तक या शास्त्र नहीं है, यह मुमकिन है कि ईसाई धर्म ने रूपान्तरण और दिव्य रहस्यों में मनुष्यों की भागीदारी के बारे में मिश्रा-वादी धर्म के विचार अपनाये। उनकी प्रतिद्वन्दिता के अन्तिम चरण में ईसाइयों ने पाँचवीं शताब्दी सी ई के दौरान मिश्रावाद और अन्य रहस्यवादी धर्मों को विधर्मी (heresy; पाप-पूर्ण और दंडनीय त्रुटि के रूप में) मानते हुए उनका उन्मूलन कर दिया।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. विश्व इतिहास में थीम्स में ''द थ्री ऑर्डर्स'' का फोकस किस ऐतिहासिक काल पर है?
(क) प्राचीन मिस्र (ख) मध्यकालीन यूरोप (ग) शास्त्रीय भारत (घ) सामंती जापान

उत्तर (ख) मध्यकालीन यूरोप

प्र.2. मध्ययुगीन यूरोप में तीन आदेशों को किन तीन मुख्य समूहों में वर्गीकृत किया गया था?
(क) पादरी, कुलीन, किसान (ख) पुजारी, राजा, व्यापारी
(ग) भिक्षु, शूरवीर, सर्फ (घ) दास, व्यापारी, सम्राट

उत्तर (क) पादरी, कुलीन, किसान

प्र.3. मध्यकाल में सामंती समाज में सबसे बड़ी जनसंख्या किस समूह की थी?
(क) पादरी (ख) बड़प्पन (ग) सर्फ (घ) व्यापारी

उत्तर (ग) सर्फ

प्र.4. मध्ययुगीन यूरोप में सामंतों और जागीरदारों के बीच पारस्परिक संबंधों पर आधारित राजनीतिक व्यवस्था को कहा जाता है–
(क) लोकतंत्र (ख) पूँजीवाद (ग) सामंतवाद (घ) समाजवाद

उत्तर (ग) सामंतवाद

प्र.5. किस धार्मिक संस्था ने मध्ययुगीन यूरोपीय समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और प्रथम क्रम के साथ निकटता से जुड़ा था?
(क) मस्जिद (ख) चर्च (ग) आराधनालय (घ) मंदिर

उत्तर (ख) चर्च

प्र.6. शूरवीरों से वफादारी, बहादुरी और शिष्टाचार पर जोर देते हुए जिस आचार संहिता का पालन करने की अपेक्षा की जाती थी, उसे इस रूप में जाना जाता है–
(क) शिष्टता (ख) हम्मूराबी का कोड (ग) मैग्ना कार्टा (घ) जागीरदारी

उत्तर (क) शिष्टता

प्र.7. मध्ययुगीन यूरोप में कौन-सी आर्थिक व्यवस्था हावी थी, जिसमें वफादारी और सैन्य सेवा के लिए भूमि का आदान-प्रदान किया जाता था?
(क) पूँजीवाद (ख) समाजवाद (ग) सामंतवाद (घ) व्यापारिकता

उत्तर (ग) सामंतवाद

प्र.8. निम्नलिखित में से कौन मध्ययुगीन यूरोप में कुलीनों की सामाजिक स्थिति का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(क) वे समाज के धार्मिक नेता और विद्वान थे।
(ख) वे व्यापार और वाणिज्य में लगे धनी व्यापारी थे।

TOUCH 'n' PASS

(ग) वे किसान थे जो पादरी और कुलीनों के स्वामित्व वाली भूमि पर काम करते थे।
(घ) वे विशेषाधिकार और शक्ति वाले वंशानुगत भूमि-स्वामी वर्ग थे।

उत्तर (घ) वे विशेषाधिकार और शक्ति वाले वंशानुगत भूमि-स्वामी वर्ग थे।

प्र.9. किस तकनीकी नवाचार ने कृषि में क्रांति लाकर मध्ययुगीन यूरोप की सामाजिक संरचना को बहुत प्रभावित किया?
(क) प्रिंटिंग प्रेस (ख) भाप इंजन (ग) चरखा (घ) हल

उत्तर (घ) हल

प्र.10. मध्ययुगीन यूरोप में प्रचलित आर्थिक व्यवस्था, जहाँ सैन्य सुरक्षा और वफादारी के लिए भूमि और वस्तुओं का आदान-प्रदान किया जाता था, कहलाती है–
(क) पूँजीवाद (ख) समाजवाद (ग) सामंतवाद (घ) व्यापारिकता

उत्तर (ग) सामंतवाद

प्र.11. 14वीं शताब्दरी में यूरोप में आई विनाशकारी महामारी, जिसके परिणामस्वरूप जनसंख्या में उल्लेखनीय गिरावट आई और मध्ययुगीन समाज पर प्रभाव पड़ा, को इस नाम से जाना जाता था–
(क) औद्योगिक क्रांति (ख) द ब्लैक डेथ (ग) ज्ञानोदय का युग (घ) पुनर्जागरण

उत्तर (ग) ज्ञानोदय का युग

प्र.12. 1215 में हस्ताक्षरित किस दस्तावेज ने अंग्रेजी सम्राट की शक्ति को सीमित कर दिया और संवैधानिक सरकार के विचार में योगदान दिया?
(क) मैग्ना कार्टा (ख) स्वतंत्रता की घोषणा (ग) अधिकारों का विधेयक (घ) मेफ्लावर कॉम्पैक्ट

उत्तर (क) मैग्ना कार्टा

प्र.13. ब्लैक डेथ के समय लिखी गई जियोवन्नी बोकाशियो की प्रसिद्ध पुस्तक "द डिकैमेरॉन" इसका उदाहरण है–
(क) धार्मिक ग्रंथ (ख) ऐतिहासिक कालक्रम
(ग) साहित्यिक मानवतावाद (घ) आर्थिक ग्रंथ

उत्तर (ग) साहित्यिक मानवतावाद

प्र.14. मध्यकालीन यूरोप में एक प्रभावशाली व्यापारिक नेटवर्क, हैन्सियाटिक लीग, मुख्य रूप से इस पर केंद्रित था–
(क) समुद्री व्यापार (ख) सिल्क रोड व्यापार (ग) ट्रांस-सहारन व्यापार (घ) कोलंबियन एक्सचेंज

उत्तर (क) समुद्री व्यापार

प्र.15. "द थ्री ऑर्डर्स" में, मध्ययुगीन यूरोपीय समाज में व्यक्तियों की सामाजिक भूमिकाएँ और व्यवसाय कैसे निर्धारित किए गए थे?
(क) व्यक्तिगत कौशल और प्रतिभा द्वारा (ख) जन्म और विरासत में मिली स्थिति से
(ग) धार्मिक संबद्धता द्वारा (घ) सैन्य कौशल से

उत्तर (ख) जन्म और विरासत में मिली स्थिति से

❑

TOUCH 'n PASS

UNIT-II

पुनर्जागरण
Renaissance

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. पुनर्जागरण का क्या अर्थ है?

What is the meaning of renaissance?

उत्तर पुनर्जागरण (Renaissance in Europe) का शाब्दिक अर्थ होता है, "फिर से जागना"। 14वीं और 17वीं सदी के बीच यूरोप में जो सांस्कृतिक व धार्मिक प्रगति, आन्दोलन तथा युद्ध हुए उन्हें ही पुनर्जागरण कहा जाता है। इसके फलस्वरूप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नवीन चेतना आई।

प्र.2. पुनर्जागरण काल का दूसरा नाम क्या है?

What is the second name of renaissance?

उत्तर प्राचीन यूनानी साहित्य में जीवन के प्रति एक विशेष रुचि झलकती है क्योंकि यूनानी लोग उस संसार में गहरी रुचि रखते थे, जिसमें वे लोग जी रहे थे। पुनर्जागरण काल में जो विद्वान मानव एवं प्रकृति की रुचियों का विवेचन करके उसमें रुचि लेने लगे थे, उन्हें 'मानववादी' के नाम से पुकारा जाता है।

प्र.3. यूरोप में पुनर्जागरण के क्या कारण थे?

What were the causes of renaissance in Europe?

उत्तर अन्त में, इतिहासकारों ने यूरोप में पुनर्जागरण के कई कारणों की पहचान की है, जिनमें शामिल हैं—विभिन्न संस्कृतियों के बीच बढ़ी हुई बातचीत, प्राचीन ग्रीक और रोमन ग्रंथों की दोबारा खोज, मानवतावाद का उदय, विभिन्न कलात्मक और तकनीकी नवाचार और संघर्ष और मृत्यु के प्रभाव।

प्र.4. पुनर्जागरण के कारण समाज में किसका प्रभाव कम हो गया?

Whose influence decreased in the society due to renaissance?

उत्तर पुनर्जागरण किसी एक व्यक्ति, स्थान, विचारधारा अथवा आन्दोलन के कारण सम्भव नहीं हो पाया था। इसके उदय एवं विकास में असंख्य व्यक्तियों के सामूहिक ज्ञान एवं विविध देशों की विभिन्न परिस्थितियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

प्र.5. इटली तथा इंग्लैण्ड के पुनर्जागरण में अन्तर बताइए।

Differentiate between Italian and English renaissance.

उत्तर इटली तथा इंग्लैण्ड के पुनर्जागरण के नेताओं में पर्याप्त अन्तर है। इटली के नेताओं ने धर्मशास्त्र में रुचि नहीं ली। उन्होंने इसे समाप्त होने वाले युग का अन्धविश्वास समझकर ठुकरा दिया तथा मैकियावेली जैसे राजनीतिक चिन्तक ने (जिसकी **'दप्रिंस'** नामक पुस्तक 1509 ई० में प्रकाशित हुई) किसी काल्पनिक आदर्श राज्य का सपना नहीं देखा वरन् युद्ध और कपट के जिन साधनों से सत्ता प्राप्त की जा सकती है तथा प्राप्त सत्ता की रक्षा की जा सकती है, उसका अत्यन्त व्यावहारिक अध्ययन किया, किन्तु इंग्लैण्ड में आलोचना के प्रमुख विषय चर्च के भ्रष्टाचार, अन्धविश्वास तथा राज्य की क्रूरता थे। अत: पुनर्जागरण ने जो कार्य इटली में नहीं किया उसे इंग्लैण्ड में किया। इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण ने धर्म-सुधार का रास्ता तैयार किया।

प्र.6. पुनर्जागरण क्या है, इसके महत्त्व बताइए?

What is renaissance? Describe its importance.

उत्तर 14वीं और 17वीं सदी के बीच यूरोप में जो सांस्कृतिक व धार्मिक प्रगति, आंदोलन तथा युद्ध हुए उन्हें ही पुनर्जागरण कहा जाता है। इसके फलस्वरूप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नवीन चेतना आई। यह आन्दोलन केवल पुराने ज्ञान के उद्धार तक ही सीमित नहीं था, बल्कि इस युग में कला, साहित्य और विज्ञान के क्षेत्र में नवीन प्रयोग हुए।

TOUCH 'n' PASS

प्र.7. पुनर्जागरण के परिणाम क्या हैं?
What are the results of renaissance?

उत्तर पुनर्जागरण काल का एक प्रमुख परिणाम मध्यम वर्ग का उदय और उसकी शक्ति में हुई वृद्धि थी। नये-नये देशों तथा समुद्री मार्गों की खोज की। समुद्री मार्गों का प्रयोग करने से विदेशी व्यापार में असाधारण वृद्धि हुई।

प्र.8. पुनर्जागरण की शुरुआत कब हुई?
When did the renaissance begin?

उत्तर इस आन्दोलन का समय 14वीं शताब्दी से लेकर 17वीं शताब्दी तक माना जाता है।

प्र.9. पुनर्जागरण का अंत कैसे हुआ?
How did the renaissance end?

उत्तर एकीकृत ऐतिहासिक काल के रूप में पुनर्जागरण 1527 में रोम के पतन के साथ समाप्त हुआ। ईसाई आस्था और शास्त्रीय मानवतावाद के बीच तनाव के कारण 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में व्यवहारवाद का जन्म हुआ।

प्र.10. पुनर्जागरण ने दुनिया को कैसे प्रभावित किया?
How did the renaissance affect the world.

उत्तर पुनर्जागरण ने अन्धविश्वासों में डूबे यूरोपीय समाज को व्यावहारिक तथा उपयोगी जीवन प्रदान किया। समाज में ज्ञान के नवीन प्रकाश का उदय हुआ, जिसने लोगों के विचार-भावनाएँ और सोचने-विचारने का ढंग बदला। इस काल में मध्यकालीन सामन्तवादी पद्धति का अन्त हो गया।

प्र.11. पुनर्जागरण किस युग का है?
From which era renaissance is concerned?

उत्तर पुनर्जागरण मध्य युग के बाद यूरोपीय सांस्कृतिक, कलात्मक, राजनीतिक और आर्थिक 'पुनर्जन्म' का एक उत्कट काल था। आम तौर पर इसे 14वीं शताब्दी से 17वीं शताब्दी तक के रूप में वर्णित किया जाता है, पुनर्जागरण ने शास्त्रीय दर्शन, साहित्य और कला की पुनर्खोज को बढ़ावा दिया।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. पुनर्जागरण की प्रगति के कारणों का उल्लेख कीजिए।
Mention the causes for the progress of renaissance.

उत्तर

पुनर्जागरण की प्रगति के कारण
(Causes for the Progress of Renaissance)

एक दृष्टिकोण से 'पुनर्जागरण' शब्द अत्यन्त भ्रामक है क्योंकि इससे ऐसा प्रतीत होता है कि मध्य काल में बौद्धिकता थी ही नहीं, जो कि असत्य है। इसी प्रकार यह मानना कि पुनर्जागरण एकाएक 1453 ई० में हो गया सम्भव नहीं है। पुनर्जागरण वास्तव में मध्य काल में ही प्रारम्भ हो गया। व्यक्तियों की विचारधारा में चौदहवीं शताब्दी में ही परिवर्तन होने लगा था। पन्द्रहवीं शताब्दी में तो यूनानी साहित्य के अध्ययन के उत्साह ने इस आन्दोलन को एक विशिष्ट दिशा प्रदान की और इसके महत्त्वपूर्ण परिणामों का कारण यह था कि इस विकास के कारण लोग इस बात को समझने लगे थे कि यूनानी साहित्य का उनके समाज के लिए क्या महत्त्व है। पुनर्जागरण की प्रगति के निम्नलिखित कारण थे—

1. **आविष्कारों एवं खोज का प्रभाव** (Effect of Inventions and Discoveries)—इस पुनर्जागरण की प्रगति में तत्कालीन आविष्कारों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इस काल में हुए विभिन्न आविष्कार व नवीन खोजें इस प्रकार थीं—
   (i) **छापाखाना** (Press)—1453 ई० से पूर्व आविष्कारों के अभाव में पुनर्जागरण इतना सफल नहीं हो सका था जितना कि तत्पश्चात् हुआ। इन आविष्कारों में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आविष्कार छापाखाने का था। 1460 ई० में गुटेनबर्ग (Guttenburg) नामक व्यक्ति ने सर्वप्रथम इसको जर्मनी में बनाया था। 1476 ई० में कैक्सटन (Caxton) ने इंग्लैण्ड में छापेखाने के प्रयोग को प्रचलित किया। छापेखाने से विद्या-प्रसार में अत्यन्त सहायता मिली क्योंकि इससे पुस्तकों का अभाव दूर हो गया। इससे पूर्व पुस्तकों को हाथ से ही लिखना पड़ता था। अत: पुस्तकों की संख्या बहुत कम ही रहती थी तथा उनका मूल्य बहुत अधिक होता था।

TOUCH 'n PASS

(ii) **कागज** (Paper)—आधुनिक युग से पूर्व जानवरों की खालों तथा पेड़ की छालों का प्रयोग लिखने के लिए करना पड़ता था, किन्तु अब एक प्रकार की विशिष्ट घास की खोज की गई जिससे कागज बनाया जाने लगा जो कि खाल की तुलना में अत्यन्त सस्ती थी। अत: छापेखाने एवं कागज के आविष्कार ने पुनर्जागरण के प्रचार एवं प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

(iii) **बारूद** (Gunpowder)—यद्यपि बारूद का प्रचलन यूरोप में पहले से ही था, किन्तु इस समय बारूद का प्रयोग तोप तथा बन्दूक के द्वारा होने लगा, जिससे इंग्लैण्ड के राजाओं ने शक्तिशाली सेना तैयार कर सामन्तों की शक्ति का दमन किया तथा देश में राजनीतिक चेतना का प्रसार किया।

(iv) **कुतुबनुमा** (Mariner's Compass)—कुतुबनुमा का आविष्कारक इटली का प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो था जिसकी सहायता से एशिया के निवासियों ने दूर-दूर देशों की यात्रा एवं व्यापार किया। अब इस कुतुबनुमा का प्रयोग यूरोप में भी प्रारम्भ हो गया जिसने सामुद्रिक यात्रा को सरल बना दिया जिससे व्यापार के अतिरिक्त नवीन विचारों का आदान-प्रदान भी सम्भव हो सका।

2. **नवीन भौगोलिक खोजें** (New Geographical Discoveries)—मार्कोपोलो द्वारा कुतुबनुमा के आविष्कार तथा उसकी यात्राओं के विषय में जानकर अनेक व्यक्तियों में यात्रा करने का उत्साह संचारित हुआ। कोलम्बस, वास्कोडिगामा आदि ने दूर-दूर तक यात्राएँ कर अनुभव प्राप्त किया तथा नवीन ज्ञान एवं विचारों के प्रसारण में सहायता दी।

3. **अरबी अंक** (Arabic Numerals)—यूरोप में पहले रोमन अंकों (I, II, III, IV, V) का प्रयोग होता था, किन्तु अरबों के सम्पर्क में आने से अब अरबी अंकों (1, 2, 3, 4, 5) का प्रयोग हाने लगा जिससे गुणा-भाग आदि करना सरल हो गया।

उपर्युक्त समस्त कारणों के अतिरिक्त इंग्लैण्ड में मध्य युग में कुछ ऐसी घटनाएँ हुईं जिसके कारण जनता ने मध्यकालीन विचारों को त्यागकर आधुनिक विचारधारा को स्वीकार किया। ये प्रभावशाली घटनाएँ—अकाल, सौ वर्षीय युद्ध, किसानों का विद्रोह तथा गुलाब के फूलों का युद्ध—थीं। इन घटनाओं ने इंग्लैण्ड में जमींदारी प्रथा, सामन्तीय व्यवस्था तथा अन्य मध्ययुगीन कुप्रथाओं को समाप्त करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया तथा पुनर्जागरण के रास्ते को साफ किया।

प्र.2. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए—
Write short note on the following :

1. मार्कोपोलो (Marcopolo)
2. हेनरी और डियाज (Henry and Diaz)
3. कोलम्बस (Columbus)

उत्तर

1. मार्कोपोलो (Marcopolo)

आधुनिक युग के नाविकों को समुद्री यात्राओं के लिए मध्ययुगीन यात्री मार्कोपोलो के यात्रा-वृत्तान्तों ने बहुत प्रेरित किया। मार्कोपोलो इटली का निवासी था जो विभिन्न देशों से व्यापार करता था। मार्कोपोलो ने चीन, जापान तथा पूर्वी द्वीपसमूहों की यात्रा की थी। मार्कोपोलो ने अपनी यात्रा 1271 ई० में इटली के वेनिस नगर से प्रारम्भ की। वह थलमार्ग से गोबी मरुस्थल होता हुआ चीन पहुँचा। चीन से वह जापान तथा पूर्वी द्वीपसमूह होते हुए समुद्री मार्ग से इटली लौटा। वेनिस पहुँचकर उसने अपना यात्रा-वृत्तान्त लिखा। उसके यात्रा-वृत्तान्तों को पढ़कर अनेक यूरोपवासियों ने भी, पूर्वी द्वीपसमूह की यात्रा कर धर्म प्रचार व धन कमाने की योजना बनायी। इससे समुद्री यात्राओं को बहुत प्रोत्साहन मिला।

2. हेनरी व डियाज (Henry and Diaz)

मार्कोपोलो के पश्चात् पुर्तगाल के राजकुमार हेनरी ने भी समुद्री यात्राएँ कीं। उसने अपनी सामुद्रिक यात्राओं के द्वारा पश्चिमी अफ्रीका के तटीय मार्ग का पता लगाया। उसके जहाजों ने समुद्र में दक्षिण की ओर दो हजार मील की यात्रा की थी। हेनरी ने पश्चिम अफ्रीका के तटीय मार्ग का पता लगाया। उसके जहाजों ने समुद्र में दक्षिण की ओर दो हजार मील की यात्रा की थी। हेनरी ने पश्चिम अफ्रीका के तट पर दो टापुओं पर अधिकार करके उन्हें पुर्तगाल का उपनिवेश बनाया। हेनरी ने अफ्रीका के अन्य प्रदेशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध भी कायम किए। इस प्रकार हेनरी ने समुद्री यात्रा के साथ-साथ उपनिवेश स्थापित करने की प्रणाली को प्रारम्भ किया। राजकुमार हेनरी ने 1442 ई० में अपने यात्रा वृत्तान्तों को लिखा, जिन्हें पढ़कर अन्य नाविक भी समुद्री यात्रा के

TOUCH 'n' PASS

लिए प्रेरित हुए। हेनरी की यात्राओं के विषय में जानकर पुर्तगाल के ही एक अन्य नाविक वारथोलोम्यु डियाज ने 1486 ई० में पूरे पश्चिम अफ्रीका के तट की यात्रा की। दक्षिण अफ्रीका के अन्तरीप तक पहुँचने में उसने सफलता प्राप्त की। उसने इस अन्तरीप का नाम 'उत्तमाशा अन्तरीप' रखा।

3. कोलम्बस (Columbus)

पुर्तगाल के नाविकों की सफलताओं व कुतुबनुमा के आविष्कार ने स्पेन के नाविकों को भी समुद्री यात्राओं के लिए प्रेरित किया। स्पेन के राजा फर्डिनेण्ड व रानी ईसाबेला ने भी अपने देश के नाविकों को समुद्री यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित किया। स्पेन के एक साहसी नाविक ने भारत के लिए जल मार्ग का पता लगाने के लिए 1492 ई० में जल यात्रा प्रारम्भ की। उसकी इस यात्रा में राजा फर्डिनेण्ड व रानी ईसाबेला ने उसकी बहुत सहायता की। उस समय तक यह प्रमाणित हो चुका था कि दुनिया गोल है, अत: कोलम्बस ने पश्चिम की ओर से सीधे भारत की यात्रा प्रारम्भ की। कोलम्बस ने तीन जहाजों के साथ यात्रा प्रारम्भ की व 33 दिन की समुद्री यात्रा के पश्चात् वह एक नयी धरती पर पहुँचने में सफल रहा। कोलम्बस का विचार था कि वह भारत खोजने में सफल हो गया है, किन्तु वास्तव में वह 'नई दुनिया' ही थी, भारत नहीं। कोलम्बस द्वारा नई दुनिया की खोज के कुछ समय पश्चात् ही इटली का एक नाविक अमेरिगो भी नयी दुनिया पहुँचा। उसी के नाम पर इस नयी दुनिया का नाम 'अमेरिका' (America) पड़ा।
कोलम्बस व अमेरिगो की यात्राओं व खोज से प्रेरित होकर अन्य यूरोपीय नाविकों ने भी समुद्री यात्राएँ कीं। इंग्लैण्ड के राजा हेनरी-VII ने 1497 ई० में इटली के ही एक नाविक जान कावेट (John Covet) को आर्थिक व राजनीतिक सहायता प्रदान कर पश्चिम समुद्र की ओर भेजा। जॉन कावेट उत्तरी अटलाण्टिक महासागर को पार करके लेब्रोडोर के समुद्रतट के किनारे-किनारे अपना जहाज ले गया। इस प्रकार वह कनाडा के समुद्रतट पर पहुँचने में सफल रहा।

प्र.3. पुनर्जागरण से संबंधित जोहन्नेस केपलर के विचारों का उल्लेख कीजिए।
Explain the thoughts of Johannes Kepler related to Renaissance.

उत्तर

जोहन्नेस केपलर (Johannes Kepler : 1571-1640)

केपलर को विश्व के महानतम् खगोलशास्त्रियों में से एक माना जाता है। वह विश्व का पहला वैज्ञानिक था; जिसने सौर-मण्डल की गति के तीन आधारभूत नियमों का प्रतिपादन किया। उसके इस कार्य ने उसे विश्व प्रसिद्ध बना दिया।
केपलर का जन्म 27 दिसम्बर, 1571 ई. को जर्मनी में वील (Weil) नामक स्थान पर हुआ था। उसके पिता एक छोटी-सी सराय के रखवाले थे। केपलर की अपने पिता के व्यवसाय में कोई रुचि नहीं थी तथा वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता था। अध्ययन में उसकी रुचि को देखते हुए उसके पिता ने उसे टयूबिन्गिन विश्वविद्यालय (Tubingen University) भेज दिया। विश्वविद्यालय में केपलर ने अध्यात्मवाद (Theology) की शिक्षा प्राप्त की।
विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के दौरान ही एक प्रोफेसर ने निकोलस कोपर्निकस (Nicolaus Copernicus) के खगोलीय सिद्धान्त की व्याख्या की, जिसको केपलर ने सुना। कोपर्निकस ने अपना सिद्धान्त 1543 ई. में प्रतिपादित किया था। जिसके द्वारा उसने टाल्मी (Ptolemy) के सिद्धान्त को गलत बताया। टाल्मी ने यह प्रतिपादित किया था कि खगोल मण्डल का केन्द्र पृथ्वी है तथा अन्य ग्रह उसके चारों ओर घूमते हैं। कोपर्निकस ने प्रतिपादित किया कि सूर्य केन्द्र है जिसके चारों ओर पृथ्वी सहित अन्य ग्रह घूमते हैं। इस सिद्धान्त को हेलिओसेण्ट्रिक सिद्धान्त (Heliocentric Theory) कहा जाता है। केपलर कोपर्निकस के सिद्धान्त से अत्यधिक प्रभावित हुआ व उसने इसी दिशा में कार्य करना प्रारम्भ किया। शीघ्र ही उसने सौरमण्डल की गति सम्बन्धी तीन प्रमुख सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। केपलर द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त निम्नवत् थे—

1. उसका प्रथम सिद्धान्त लॉ ऑफ ऑरबिट्स (Law of Orbits) कहलाता है। इसके अनुसार सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर गोलाई में नहीं वरन् अण्डाकार रूप में घूमते हैं।
2. दूसरा नियम लॉ ऑफ एरियास (Law of Areas) कहलाता है। इसके अनुसार किसी भी ग्रह की गति उसकी सूर्य से दूरी पर निर्भर करती है। जब कोई ग्रह सूर्य के निकट होता है तो उसकी गति तीव्र व दूर होने पर गति धीरे होती जाती है।
3. तीसरा नियम लॉ ऑफ पीरियड्स (Law of Periods) कहलाता है। इसके अनुसार किसी भी ग्रह द्वारा सूर्य की परिक्रमा करने में लगे समय का वर्ग उसकी सूर्य से औसत दूरी के त्रिघात (Cube) के अनुपात में होता है।

केपलर को अपने द्वारा प्रतिपादित उपर्युक्त नियमों के कारण अत्यधिक प्रसिद्धि मिली। इसी कारण प्रसिद्ध खगोलशास्त्री टाइको ब्राहे (Tycho Brahe) ने उसे 1589 ई. में अपना सहायक नियुक्त किया। 1601 ई. में ब्राहे की मृत्यु हो जाने पर उसे संम्राट

रूडोल्फ प्रथम (Rudolph-I) का अवैतनिक खगोलशास्त्री नियुक्त किया गया। केपलर ने भौतिकशास्त्र में भी महत्त्वपूर्ण शोध कार्य किया। केपलर का भौतिक शास्त्र में प्रमुख कार्य पृथ्वी चुम्बकीय क्षेत्र के विषय में था। केपलर गैलीलियो का समकालीन था, तथा दोनों समय-समय पर एक-दूसरे को अपने कार्यों से परिचित कराते थे।

केपलर का सम्पूर्ण जीवन अत्यन्त निर्धनता में व्यतीत हुआ। 15 नवम्बर, 1640 ई. को दक्षिण जर्मनी के रीगेन्सवर्ग (Regensburg) नामक स्थान पर उसकी मृत्यु हुई।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. यूरोप में पुनर्जागरण की प्रगति पर एक निबन्ध लिखिए।

Write an essay on the progress of renaissance in Europe.

उत्तर

यूरोप में पुनर्जागरण
(Renaissance in Europe)

यूरोप में पुनर्जागरण इटली से प्रारम्भ हुआ जो कि एक धनी देश था। तत्पश्चात् इसकी लहर यूरोप में तीव्रता से फैली। इटली तथा इंग्लैण्ड में इसका विशेष रूप से प्रभाव पड़ा, जो कि इस प्रकार है—

(I) इटली में पुनर्जागरण (Renaissance in Italy)

क्रूर तुर्कों द्वारा कुस्तुन्तुनियाँ पर अधिकार करने तथा यूनानियों पर अमानुषिक अत्याचारों के परिणामस्वरूप कुस्तुन्तुनियाँ से बहुत से व्यक्ति भागने पर विवश हुए। ये लोग भागकर इटली में बसने लगे, जहाँ इनका सम्मान किया गया क्योंकि कुस्तुन्तुनियाँ यूनानियों का शिक्षा का केन्द्र था वहाँ का साहित्य, कला, ज्योतिष विद्या, आध्यात्मिक ज्ञान यूरोप में सम्मान की दृष्टि से देखे जाते थे। इटली, यूरोप का एक धनी देश था, अत: यूनानियों को वहाँ बसने तथा अपने विचारों का प्रचार करने में सहायता मिली। लैटिन तथा यूनानी भाषा के अनेक विद्यालय खोले गए तथा यूनानियों की अनेक पुस्तकों जिनमें अरस्तू (Aristotle) तथा अनेक यूनानी कवियों की रचनाएँ सम्मिलित थीं का अनुवाद पहले ही लैटिन भाषा में किया जा चुका था।

दान्ते (Dante, 1265-1321 ई०) इटली का एक प्रसिद्ध कवि था, जिसकी यूनानी एवं लैटिन साहित्य में विशेष रुचि थी। अपनी विश्व-प्रसिद्ध कविता **'डिवाइन कामेडी'** (Divine Comedy) में उसने यूनानी साहित्य के प्रति श्रद्धा व्यक्त की है।

पेट्रार्क (Petrarch, 1304-1374 ई०) इटली का एक प्रसिद्ध विद्वान था। उसने सम्पूर्ण इटली, फ्रांस तथा अनेक देशों की यात्राएँ कर यूनानी तथा लैटिन पुस्तकों की हस्तलिपियाँ एकत्रित कीं और उनकी अनेक प्रतियाँ तैयार करवायीं।

बोकासियो (Boccacio, 1313-1375 ई०), यह पेट्रार्क का शिष्य था। इसने यूनानी भाषा की प्रमुख पुस्तकें **'इलियड'** तथा **'ओडेसी'** (Illiad and Odessey) को खोजकर उनका अनुवाद किया। इसके अतिरिक्त उसने **डेकामेरन** (Decameron) नामक पुस्तक की रचना की जिससे चॉसर (Chaucer) भी अत्यधिक प्रभावित हुआ था और उसकी विचारधारा इसी पुस्तक पर आधारित थी। इन विद्वानों के कार्यों ने इटली में जनता को आकर्षित किया था। इसी समय यूनानी विद्वानों के भी इटली में आकर बसने से यूनानी तथा लैटिन साहित्य की प्रगति में तीव्रता आ गई। इस प्रकार इटली यूरोप में शिक्षा का केन्द्र बन गया।

इटली में दो राज्यों में विशेष रूप से उन्नति हुई थी। ये राज्य थे—**फ्लोरेंस** तथा **रोम**। कुस्तुन्तुनियाँ से भागे हुए यूनानियों ने फ्लोरेंस में बड़ी संख्या में बसना प्रारम्भ किया था। यूनानियों के प्रयत्न से वहाँ विद्यालयों की स्थापना की गई। **क्रिसोलोर्स** (Chrysolores) ने फ्लोरेंस विश्वविद्यालय में यूनानी साहित्य पर व्याख्यान देने प्रारम्भ किए तथा अन्य विश्वविद्यालयों में भी यूनानी भाषा की शिक्षा दी। क्रिसोलोर्स ने यूनानी भाषा का व्याकरण भी तैयार किया जिससे यूनानी भाषा का अध्ययन सुगम हो गया। **मेडिसी** (Medici) वंश के शासकों ने भी यूनानी भाषा की उन्नति के लिए प्रयत्न किए तथा फ्लोरेंस में एक विशाल पुस्तकालय की स्थापना करवायी। लोरेन्जो-डी-मेडिसी (Lorenzo-de-Medici) ने अनेक यूनानी विद्वानों को आश्रय दिया तथा दो सौ से अधिक पुस्तकें मेडिसी पुस्तकालय में एकत्रित कीं। लिओनार्डो अत्यन्त विद्या-प्रेमी था, प्रतिवर्ष वह साठ हजार पौंड पुस्तकों पर व्यय करता था। इस प्रकार उसके प्रयत्नों से फ्लोरेंस शिक्षा का एक महान् केन्द्र बन गया।

फ्लोरेंस के अतिरिक्त रोम भी इस समय शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र बन गया था। फ्लोरेंस के समान रोम में अभी अनेक यूनानी विद्वानों ने आकर शरण ली थी। रोम में इन विद्वानों को पोप निकोलस पंचम ने संरक्षणता प्रदान की। फ्लोरेंस के समान रोम में भी

TOUCH 'n PASS

पुस्तकालय की स्थापना की गई जिसका श्रेय तत्कालीन पोप को है। इस पुस्तकालय का नाम वेटिकन (Vatican) रखा गया। लिओ दसवाँ भी विद्या-प्रेमी था। उसने रोम के विश्वविद्यालय में सौ अध्यापकों की नियुक्ति की। वह रोम को विश्व की राजधानी मानता था, क्योंकि उसका विचार था कि साहित्यिक क्षेत्र में कोई भी नगर विश्व में रोम की तुलना में नहीं है।

इटली तथा यूनानी विद्वानों की विद्वता उनकी राजकीय एवं पोप से संरक्षण एवं उनके प्रयत्नों के परिणामस्वरूप पुनर्जागरण की लहर तीव्र गति से फैली। इसी कारण इटली में प्रचलित था कि 'यूनान का पतन नहीं हुआ वरन् उसका इटली में देशान्तरण हो गया है।' यहाँ पर यह जानना आवश्यक है कि सर्वप्रथम पुनर्जागरण इटली में ही क्यों हुआ? इसके निम्नलिखित प्रमुख कारण थे—

1. वैदेशिक व्यापार के कारण इटली एक समृद्ध देश था। अत: धनी व्यापारियों ने विद्वानों एवं कलाकारों को आश्रय दिया, जिससे पुनर्जागरण में सहायता मिली।
2. व्यापार बढ़ने से शहरों का विकास हुआ, जहाँ शिक्षा व ज्ञान प्राप्त करने की बेहतर सुविधाएँ थीं।
3. नगरों के विकास के कारण अनेक व्यापारी वहाँ आते थे। इसके अतिरिक्त धर्मयुद्धों से लौटने वाले सैनिक भी इन शहरों में आकर रुकते थे जिनसे विचारों का आदान-प्रदान सम्भव हुआ।
4. शक्तिशाली एवं धनी व्यापारी वर्ग ने सामन्तों को महत्त्व देना बन्द कर दिया।
5. इटली में समृद्धि होने से वहाँ धीरे-धीरे मध्य वर्ग का उदय हुआ। मध्य वर्ग के विचारशील होने के कारण पुनर्जागरण में सहायता मिली।
6. इटली विश्व प्रसिद्ध रोमन सभ्यता का देश था। इटली के निवासी पुन: इटली को उसी स्थिति में देखना चाहते थे।
7. पोप इटली में ही रहता था। अत: उससे मिलने विश्व के प्रमुख व्यक्ति आते थे, जिनमें अनेक विद्वान भी थे, अत: उनके विचारों का जनता पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।

(II) इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण (Renaissance in England)

यद्यपि इटली में हुए पुनर्जागरण का प्रभाव इंग्लैण्ड में एडवर्ड चतुर्थ के राज्यकाल में प्रकट होने लगा था, परन्तु हेनरी सप्तम के समय में पुनर्जागरण ने अपनी जड़ों को मजबूत बनाया। इंग्लैण्ड में उस समय दो प्रसिद्ध विश्वविद्यालय, ऑक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज थे। ये विश्वविद्यालय ही इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण के केन्द्र बने। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के कुछ छात्र इटली अध्ययन हेतु गए। 1465 ई० में **विलियम सैलिंग** प्रथम व्यक्ति था जिसने यूनानी लिपि का अध्ययन किया। **सैलिंग का शिष्य थॉमस लिनेकर** भी इटली गया तथा यूनानी भाषा के अध्ययन के साथ-साथ उसने ज्ञान की प्रत्येक शाखा का अध्ययन किया। उसने अपनी विशिष्ट रुचि औषधि-विज्ञान में प्रदर्शित की तथा चिकित्सक बनकर वह वापस इंग्लैण्ड आया। शीघ्र ही लिनेकर ट्यूडर शासकों का राजकीय चिकित्सक नियुक्त हो गया। लिनेकर ने लन्दन में चिकित्सकों का एक विद्यालय (Royal College of Physicians) स्थापित किया। इसके अतिरिक्त यूनानी साहित्य के विद्वान **ग्रोसिन** तथा **लाइनाक्रे** भी इटली गए तथा लौटकर विश्वविद्यालयों में यूनानी साहित्य पर व्याख्यान दिए। इनके अतिरिक्त कुछ विद्वान जिन्होंने पुनर्जागरण के लिए कार्य किया। इस प्रकार थे—**जॉन कोलेट** (John Colet) लन्दन के अमीर व्यापारी का पुत्र था। अध्ययन करने के लिए वह इटली गया तथा महान् आलोचक बनकर 1497 ई० में इंग्लैण्ड लौटा। वह सेण्टपॉल विद्यालय में अध्यापक बन गया तथा पोप एवं पादरियों की कटु आलोचना की। उसने अपने व्याख्यानों में परम्परागत विचारों के मूल में जाने का प्रयास किया। उसने अनेक विद्यालयों की भी स्थापना की जिनसे नवीन् विचारों के प्रसारण में सहायता मिली। **इरैस्मस** (Erasmus) **एक फ्रांसीसी विद्वान** था तथा अपने समय के प्रकाण्ड पण्डितों में से एक था। इरैस्मस ने भी इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण को गति प्रदान की। इरैस्मस ब्रह्मज्ञान (Divinity) के विद्वान के रूप में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में कार्यरत था। उसके व्याख्यानों ने जनता में क्रान्ति उत्पन्न कर दी। छापेखाने के द्वारा सम्पूर्ण यूरोप में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला वह प्रथम व्यक्ति था। उसने एक पुस्तक **'प्रेज ऑफ फौली'** (Praise of Folly) की रचना की जिसमें उसने चर्च की बुराइयों का वर्णन किया। अपनी एक अन्य रचना **'ग्रीक टेस्टामेण्ट'** (Greek Testament) में भी इरैस्मस ने पोप तथा चर्च की आलोचना की तथा धार्मिक रूढ़िवादिता पर गहरा आघात किया।

इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण को सर्वाधिक शक्ति प्रदान करने वाला व्यक्ति टॉमस मूर था। टॉमस मूर, कॉलेट तथा इरैस्मस का मित्र था। टॉमस मूर ने राजनीति के क्षेत्र में मुक्त आलोचना की, नयी चेतना का प्रयोग किया तथा 1516 ई० में प्रकाशित अपनी कृति 'Utopia' (काल्पनिक आदर्श राज्य) में एक ऐसे समाज का चित्र खींचा जिसमें सम्पत्ति का अच्छा फैलाव था, प्रत्येक व्यक्ति

TOUCH 'n PASS

शिक्षित था, कोई निर्धन अथवा पीड़ित न था। कोई क्रूर मालिक न था। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार ईश्वर की आराधना का अधिकार था यह पुस्तक इंग्लैण्ड के धनी वर्ग एवं चर्च पर व्यंग्य था। जनता पर इस पुस्तक का व्यापक प्रभाव पड़ा। इस पुस्तक ने जनता को तत्कालीन इंग्लैण्ड में व्याप्त बुराईयों के विषय में सोचने पर बाध्य किया तथा आधुनिक युग के समाज का आदर्श प्रस्तुत किया। रैम्जे म्योर के शब्दों में, "यूटोपिया एक पवित्र प्रजातन्त्र है जहाँ व्यवहारत: न तो कोई सरकार है, न कर-व्यवस्था है और न कोई अपराध ही होता है।"

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के समान ही कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के विद्वानों ने भी पुनर्जागरण का प्रसार किया। इन विद्वानों ने, जिनमें रिचर्ड क्रोक, थामस स्माइट, चेके तथा गजा प्रमुख हैं, अनेक पुस्तकों की रचनाएँ की तथा अन्य साहित्यिक कार्य कर पुनर्जागरण को शक्ति प्रदान की।

इन विद्वानों के अतिरिक्त पुनर्जागरण की सफलता का श्रेय **ट्यूडर शासकों** को भी है। हेनरी सप्तम, हेनरी अष्टम ने अपना सम्पूर्ण सहयोग पुनर्जागरण की प्रगति के लिए दिया। महारानी एलिजाबेथ के शासनकाल में पुनर्जागरण अपनी सफलता की चरम सीमा तक पहुँच गया। उसके शासनकाल में विशिष्ट सांस्कृतिक उन्नति इस बात का द्योतक है।

प्र.2. पुनर्जागरण के प्रभावों एवं महत्त्व का वर्णन कीजिए।
Describe the impacts and importance of the renaissance.

उत्तर

पुनर्जागरण के प्रभाव
(Impacts of the Renaissance)

प्राय: यह माना जाता है कि पुनर्जागरण एक साहित्यिक क्रान्ति था, परन्तु यह उचित नहीं है। पुनर्जागरण ने जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया। मानव जीवन की श्रेष्ठता एवं उसका महत्त्व बढ़ गया। लोग आशावादी होने लगे। भौतिक सुखों एवं मनोरंजनों को भी मानव जीवन के लिए परम आवश्यक माना गया। तत्कालीन कला एवं साहित्य ने मानव जीवन की कठिनाइयों तथा उनको दूर करने के उपायों को प्रस्तुत किया। संक्षेप में, पुनर्जागरण के परिणामों को निम्नवत् इंगित किया जा सकता है—

1. **वाणिज्यवादी क्रान्ति** (Commercial Revolution)—पुनर्जागरण का महत्त्वपूर्ण परिणाम वाणिज्यवादी क्रान्ति के रूप में सामने आया। मध्य युग में सामन्तों ने कृषि को ही अर्थव्यवस्था का आधार मान लिया था। अत: स्थानीय उद्योग-धन्धे आवश्यकतानुसार सीमित उत्पादन ही करते थे। आदान-प्रदान का आधार भी वस्तु विनिमय था, किन्तु यह स्थिति अधिक समय तक यथावत् नहीं बनी रही। पुनर्जागरण काल में हुए नवीन परिवर्तनों ने व्यापारिक विचारधारा को ही परिवर्तित कर दिया। 16वीं शताब्दी के अन्त तक यूरोप के अनेक देशों एवं संयुक्त अमेरिका के कतिपय भागों में सोने व चाँदी की खानों का पता चल जाने से आदान-प्रदान के आधार मुद्रा विनिमय को अधिक प्रोत्साहन मिलना प्रारम्भ हो गया। मध्ययुगीन वस्तु विनिमय प्रथा अब व्यापार में बाधक मानी जाने लगी। इस स्थिति में व्यापार एवं उद्योग को नियमित करके सोना एवं चाँदी प्राप्त करने की विचारधारा वाले एक वर्ग का उद्‌भव हुआ। इसे इतिहास में वाणिज्यवादी वर्ग एवं उनकी विचारधारा को वाणिज्यवादी विचारधारा के नाम से जाना जाता है। वाणिज्यवादियों ने नारा दिया 'अधिक सोना, अधिक धन एवं अधिक शक्ति।' अपने उक्त उद्‌देश्यों की पूर्ति के लिए वाणिज्यवादियों ने विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित करने की बात कही। निर्यात में वृद्धि एवं आयात में कमी की नीति का मार्ग बताया। कृषि को कच्चे माल का स्रोत मानने पर बल दिया। उनकी इस नीति का इंग्लैण्ड, फ्रांस, स्पेन एवं जर्मनी में अवलम्बन किया गया। फलत: इन देशों के व्यापार एवं वाणिज्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई। यह स्पष्ट हो गया कि मुद्रा केवल विनिमय का माध्यम ही नहीं है अपितु धन-संचय का साधन भी है। "इस प्रकार जो व्यापारिक एवं व्यावसायिक परिवर्तन सामने आए उन्हें ही इतिहास में व्यावसायिक/व्यापारिक क्रान्ति (Commercial Revolution) के नाम से जाना जाता है।"
2. **पूँजीवाद के सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन** (Social and Economic changes of capitalism)—16वीं शताब्दी में यूरोप में पूँजीवाद का जन्म एवं विकास एक ऐसी महत्त्वपूर्ण घटना थी जिसने आधुनिक युग को पूर्णत: प्रभावित किया। पूँजीवादी व्यवस्था के परिणामस्वरूप 16वीं सदी में यूरोप के सामाजिक एवं आर्थिक स्वरूप में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। यूरोप में पूँजीवादी कृषि का आरम्भ हुआ। अब सामन्तों ने आधुनिक कृषि पद्धति को स्वीकार किया। सामन्तों द्वारा ही प्रताड़ित अर्द्धदास कृषक सामन्तों के नियन्त्रण से मुक्त हुए तथा मध्यम वर्ग का उत्थान हुआ। अब

TOUCH 'n PASS

समाज दो वर्गों में विभक्त हो गया। प्रथम, धन-सम्पन्न एवं द्वितीय, निर्धन। पूँजीवाद के विकास ने एक ओर औपनिवेशिक पद्धति को तो जन्म दिया, परन्तु साथ ही दास व्यापार का प्रारम्भ भी हो गया जो कि मानव इतिहास को पूँजीवाद की सर्वाधिक घृणित देन है। पूँजीपति वर्ग एवं मजदूर वर्ग में पारस्परिक संघर्ष ने कालान्तर में समाजवाद को जन्म दिया। राष्ट्रीय व्यापार तथा उद्योग-धन्धों के विकास के लिए अब राज्यों की ओर से विधान प्रस्तुत किए जाने लगे। व्यापारियों के हितों की सुरक्षा के लिए राज्यों द्वारा नियम बनाए जाने लगे। अब पूँजीपति वर्ग राज्य की ओर संरक्षण प्राप्त करने के उद्देश्य से आकर्षित हुए। दूसरी ओर श्रमिक वर्ग भी अपने संरक्षण के लिए राज्य से माँग करने लगा। व्यापार के द्रुतगति से विकास ने यूरोपीय देशों में उपनिवेशों की स्थापना को लेकर भयंकर संघर्ष आरम्भ कर दिया।

3. **साहित्य एवं विज्ञान पर प्रभाव** (Impact on Literature and Science)—मध्यकालीन जनता को विज्ञान तथा राजनीतिक सिद्धान्तों का विशेष ज्ञान था। पुनर्जागरण के समय अनेक विद्वानों के कारण साहित्य में वृद्धि हुई। अनेक पुस्तकें साहित्य एवं विज्ञान पर लिखे जाने तथा पढ़ने का विचार जनता में जाग्रत हुआ तथा अनेक वैज्ञानिक उपकरणों का आविष्कार हुआ।
4. **बौद्धिक प्रभाव** (Intellectual Effect)—इस आन्दोलन का सर्वाधिक प्रभाव जनसाधारण पर पड़ा। जनता में तर्कवादिता ने जन्म लिया। बिना किसी आधार एवं प्रमाण के अब जनता किसी बात को स्वीकार नहीं करती थी। अन्धविश्वास तथा रूढ़िवादिता का अन्त होने लगा।
5. **राष्ट्रीयता की भावना** (National Feeling)—यूनानी एवं लैटिन भाषाओं से प्रभावित होकर प्रत्येक राष्ट्र एवं उसके समाज में स्वयं को उन्नत करने की भावना जाग्रत हुई। यूनानियों के समान अपनी भाषा को विकसित करने का प्रयास प्रत्येक राष्ट्र चाहने लगा। इंग्लैण्ड के लेखकों ने भी पुनर्जागरण से प्रेरित होकर अनेक रचनाएँ कीं तथा जातीयता एवं राष्ट्रीयता की भावना को प्रोत्साहित किया।
6. **इतिहास पर प्रभाव** (Effects on History)—गोथों तथा हूणों के आक्रमणों ने प्राचीन तथा मध्यकालीन इतिहास के मध्य एक खाई बना दी थी। पुनर्जागरण के प्रभाव से जनता में पुनः इतिहास लिखने तथा पढ़ने की भावना उत्पन्न हुई। इस प्रकार पुनर्जागरण ने उपयुक्त खाई को पाट दिया। इतिहासकारों ने पुनः वैज्ञानिक ढंग से इतिहास-लेखन का कार्य किया।
7. **नवीन उपनिवेशों की स्थापना** (Establishment of New Colonies)—पुनर्जागरण के प्रभाव से लोग साहसी हो गए तथा दूर-देशों की समुद्री यात्रा अनेक नाविकों ने की। पुर्तगाल में समुद्री यात्रा के प्रोत्साहन हेतु एक 'नाविक विद्यालय' की स्थापना की गई। विभिन्न नाविकों द्वारा अपनी समुद्री यात्रा के समय नए-नए प्रदेशों की खोज की गई। इन नाविकों में कोलम्बस, वास्कोडिगामा, जॉन कैवर, मैगलेन प्रमुख हैं।
8. **कला पर प्रभाव** (Rebirth of Art)—पुनर्जागरण से जहाँ एक ओर साहित्यिक क्रान्ति हुई, दूसरी ओर कला के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण विकास हुआ। इसका प्रभाव सर्वप्रथम इटली में तथा तत्पश्चात् यूरोप के अन्य राष्ट्रों पर पड़ा। लोगों का ध्यान पुनर्जागरण के पश्चात्, लैटिन और यूनानी कला तथा भवन-निर्माण की ओर आकर्षित हुआ। उससे प्रभावित होकर यूरोप के अन्य राष्ट्रों ने भी यूनानी कला के नमूने देखकर नवीन कलाकृतियों का निर्माण किया। उस समय का प्रसिद्ध कलाकार **माइकल ऐंजलो** (Michelangelo) था, जिसने मोसेज तथा डेविड की मूर्तियों का निर्माण किया जो कला की दृष्टि से उच्च श्रेणी की मानी जाती हैं। माइकल ऐंजलो ने चित्रकला में भी प्रसिद्धि प्राप्त की। उसने **'लास्ट जजमेण्ट'** नामक चित्र बनाया। माइकल ऐंजलो के अतिरिक्त लिओनार्डो दा विन्सी, सीटियन आदि प्रसिद्ध चित्रकार उस समय हुए। स्थापत्य चित्रकला के अतिरिक्त संगीत कला में भी विशिष्ट उन्नति हुई।
9. **धर्म-सुधार आन्दोलन का प्रारम्भ** (Innovation of religious Reformation)—पुनर्जागरण के धार्मिक क्षेत्र में भी गम्भीर प्रभाव हुए। तर्क तथा आलोचनात्मक दृष्टिकोण से जनता के समक्ष पोप तथा चर्च की अनियमितताएँ तथा बुराइयाँ स्पष्ट हो गईं। विद्वानों ने पोप तथा चर्च पर अपनी लेखनी से प्रहार किया तथा धार्मिक आन्दोलन के मार्ग को साफ बनाया। इसी कारण कहा जाता है—"पुनर्जागरण के विद्वानों ने धार्मिक आन्दोलन रूपी आँधी को जन्म दिया जिसे बाद में धार्मिक आन्दोलन के पिता लूथर ने शक्ति प्रदान की।"

TOUCH 'n' PASS

पुनर्जागरण का महत्त्व
(Importance of Renaissance)

इस प्रकार पुनर्जागरण होना यूरोप की एक महान् घटना थी। पुनर्जागरण का विद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा सम्पूर्ण समाज पर स्वास्थ्यप्रद प्रभाव पड़ा। कोलेट ने 'सेंट पॉल्ज स्कूल' को एक नवीन शिक्षण प्रणाली के आदर्श के रूप में स्थापित किया और उसका प्रभाव पुरानी संस्थाओं पर भी पड़ा। ऑक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों में नए कॉलेज खोले गए। उच्च वर्ग में शिक्षा-संस्कृति का प्रचलन हो गया। हेनरी अष्टम के दरबार में भी अनेक विद्वान थे। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप पन्द्रहवीं सदी के अन्तिम पच्चीस वर्षों में काव्य के महान् पुष्प खिले। एक ऐसे युग का प्रादुर्भाव हुआ जिसमें पृथ्वी के नए क्षेत्र, चेतना के नवीन आयाम एक साथ उद्घटित हुए। वास्तव में यह एक महान् युग का प्रारम्भ था और उस सुप्रभात में जीवन स्वर्गीय वरदान ही था।

यद्यपि पुनर्जागरण ने उपर्युक्त समस्त लाभ तत्कालीन समाज को दिए, किन्तु इसका दूसरा पहलू भी था। पुनर्जागरण के सभी परिणाम अच्छे न थे। हर परिवर्तन समाज को उच्चता की ओर ले जाने वाला नहीं था। इटली में तो यह काल राजनीति, धर्म, आचरण संहिता और व्यक्तिगत चरित्र सभी में अन्तर्विरोधों का आभास देता है। सारे समाज और प्रत्येक व्यक्ति में जहाँ आधुनिक भावनाओं का प्रभाव था वहाँ मध्यकालीन परम्पराएँ भी उस पर अपना प्रभाव बनाए हुए थीं। पुनर्जागरण ने लोगों के मन में यह भावना उत्पन्न की कि वे नैतिकता के प्रतिरोध को दूर कर दें। **मैकियावेली का 'राजकुमार'** (The Prince) पुनर्जागरण का ही प्रतीक है जहाँ वह शासक के लिए नैतिकता के आदेशों का पालन करना आवश्यक नहीं कहता है।' किन्तु उपर्युक्त सभी दुर्गुणों के पश्चात् भी पुनर्जागरण के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता।

प्र.3. पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताओं का विस्तार से वर्णन कीजिए।
Describe the salient features of renaissance in detail.

उत्तर

पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएँ
(Salient Features of Renaissance)

पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थीं—

1. **मानववाद** (Humanism)—इतिहासकार हेज के अनुसार, 'नवजागरण की प्रस्तुति मानवतावाद द्वारा हुई।' 'मानववाद' का तात्पर्य उन्नत ज्ञान से लिया जाता है। दूसरे शब्दों में, मानववाद वह धारणा थी जिसने एक ओर तो प्राचीन साहित्य में ही सभी गुण, मानवता. माधुर्य, सौन्दर्य एवं जीवन का वास्तविक सार देखा, वहीं दूसरी ओर आध्यात्मिकता, वैराग्य एवं धर्मशास्त्रों की सार्थकता से स्पष्ट इन्कार कर दिया। इस धारणा को स्वीकार करने वाले मानववादी कहलाए। प्राचीन यूनानी सभ्यता एवं संस्कृति का पक्षपाती पैट्रार्क (Petrarch) मानववाद का पिता (Father of the Humanism) कहा जाता है। माइकेल ऐंजेलो, दोनातेलो, मैकियावेली, फेचिनोपोलिशियन, पेरुजिनो, लियोनार्डो द विंची, ल्यूका देला रोबिया, फ्रा फिलिप्पो लिप्पी, सैंड्रो बातिचेली, दान्ते एवं अलबर्टी आदि पुनर्जागरण काल के अन्य प्रमुख मानववादी थे। इन मानववादियों ने तत्कालीन समाज की प्रमुख समस्याओं पर कड़ा प्रहार किया। मध्ययुगीन विचारधारा में धर्म एवं धर्म की आड़ पर अन्धविश्वासों एवं रूढ़ियों का बाहुल्य था, जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष होने के कारण शिक्षा का केन्द्र बिन्दु धर्म ग्रन्थों का अध्ययन था। ऐसी स्थिति में स्वतन्त्र चिन्तन का विकास अवरुद्ध हो गया था।

   मानववादियों ने मध्ययुगीन व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाई और धार्मिक विषयों के स्थान पर विज्ञान, सौन्दर्यशास्त्र, इतिहास एवं भूगोल जैसे विषयों के अध्ययन-अध्यापन पर बल दिया, संयोग-वियोग, प्रेम-घृणा, नारी सौन्दर्य एवं दाम्पत्य जीवन जैसी सामाजिक समस्याओं जैसे विषयों को अधिक महत्त्व दिया न कि मोक्ष को। मानववादियों ने इहलोक को ही स्वर्ग बनाने पर जोर दिया। मानव स्वतन्त्रता एवं राष्ट्रीय निष्ठा पर बल दिया। यह उल्लेखनीय है कि 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से 16वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक मानववादी आन्दोलन का प्रबल ज्वार इटली में था। इसका सबसे प्रमुख कारण यह था कि इस समय इटली में शान्ति एवं सुव्यवस्था थी। दूसरी ओर जब पूर्वी यूरोप एवं कुस्तुन्तुनिया पर तुर्कों का आधिपत्य स्थापित हो गया तो वहां से अनेक विद्वान, विद्यार्थी एवं अध्यापक, कलाकार आदि भागकर इटली आ गए और शीघ्र ही इटली का प्रसिद्ध नगर फ्लोरेंस मानववादी आन्दोलन का गढ़ बन गया।

मानववादियों के भरसक प्रयत्नों से मध्ययुगीन व्यवस्था की दीवारें हिलने लगीं। इटली के सभ्य एवं सुसंस्कृत वर्ग ने प्राचीन साहित्य एवं कला का अध्ययन जीवन का आवश्यक अंग बना लिया। लोगों के हृदय में लौकिक एवं पारलौकिक जीवन के प्रति जो धारणाएं मध्यकाल से चली आ रही थीं उनके प्रति आस्था समाप्त हो गई। मठों की क्रियाओं को हास्यास्पद समझा जाने लगा। भौतिकवादी शिक्षा को सम्बल मिला। हेज के अनुसार, 'विश्वविद्यालयों में ग्रीक-इतिहास का परिचय दिया जाने लगा। विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त सांस्कृतिक संस्थाओं की स्थापना होने लगी। इतिहासकार हेज ने इसी प्रकार की एक संस्था का उल्लेख किया है जिसने मानववाद को पोषित किया।' अब मानववाद इटली तक ही सीमित नहीं रहा, उसकी जड़ें यूरोप में फैलने लगी और धीरे-धीरे मानववाद ने यूरोप में पुनर्जागरण पैदा कर धर्म सुधार आन्दोलन के मार्ग को प्रशस्त कर दिया।

2. **कला** (The Fine Art)—इतिहासकार हेज के शब्दों में, 'मध्ययुगीन यूरोप की कला मुख्यत: ईसाई धर्म से सम्बन्धित थी।' इस युग की कला शैली को गैथिक शैली (Gathic Art and Style) के नाम से जाना जाता है। धर्म के साथ जुड़े होने के कारण मध्ययुग में कला का अपना कोई स्वतन्त्र एवं पृथक् अस्तित्त्व नहीं था, किन्तु पुनर्जागरण काल में कला के विषयों में परिवर्तन आया। हेज ने इसका सबसे बड़ा कारण मानववाद को बताया है।' पुनर्जागरण काल में साहित्य एवं प्राचीनता का विशेष प्रभाव कला पर पड़ा और यूरोपीय कला में प्राचीनता के आदर्शों को स्थान मिला। कला के क्षेत्र में सम्पूर्ण यूरोप में इटली के कलाकारों की श्रेष्ठता सबसे ऊपर थी। अत: जब पुनर्जागरण का केन्द्र इटली कला के क्षेत्र में सम्पूर्ण यूरोप का विजेता बन गया। प्राचीन कला शैली में कला के विविध अंगों (स्थापत्य कला, मूर्ति कला, संगीत कला व चित्रकला) का विकास हुआ, जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है—

(अ) **स्थापत्य कला** (Architecture)—इटली के कलाकारों ने प्राचीनतम यूनानी एवं रोमन कलाकारों की शैली को पुनर्जीवित करने का जो प्रयास किया उसने मध्ययुगीन गैथिक शैली की ओर से लोगों का ध्यान हटने लगा और एक नई कला शैली का उद्भव हुआ जिसे रेनेसा स्थापत्य कला के नाम से जाना जाता है। रॉबर्ट इरगैंग के अनुसार, 'रेनेसा स्थापत्य कला वास्तव में कोई विशेष अलग एवं विशिष्ट शैली नहीं थी। यह तो कई समूहों की समष्टि थी। इसका स्वरूप व्यक्तिवादी था एवं प्राचीन रोमन-यूनानी तथ्यों में इसकी समता पायी जाती है। इसमें मौलिकता एवं नवीनता पर्याप्त रूप में थी।' रेनेसा स्थापत्य कला का प्रारम्भ फिलिप्पो ब्रूनेलेस्की (Filippo Brunelleschi) ने किया। यह फ्लोरेन्स निवासी था। इसने स्तम्भ एवं मेहराब शैली को अपनाया। शृंगार, सज्जा, विशालता एवं डिजाइन इस नवीन शैली की प्रमुख विशेषता थी। व्यक्तिगत भवनों की खिड़कियों को क्लासिकल पंक्तियों, प्लास्टर अथवा मेहराबों से सुसज्जित किया जाने लगा। फ्लोरेन्स स्थित प्रसिद्ध मेडिसी गिरजाघर, एवं रोम स्थित सन्त पीटर का नया गिरजाघर इस युग की स्थापत्य कला के सर्वोष्कृष्ट नमूने हैं।

रेनेसा स्थापत्य कला की सर्वोत्कृष्टता एवं क्रमिक विकास यद्यपि इटली के रोम एवं फ्लोरेन्स नगर राज्यों में परिलक्षित होता है, किन्तु यह कला शैली पश्चिमी यूरोप में भी अपनाई जाने लगी। हेज के शब्दों में, 'क्रमश: सम्पूर्ण पश्चिमी यूरोप में गैथिक स्थापत्य कला को गंवारू शैली के रूप में देखा जाने लगा और नए भवन रेनेसा कला शैली में निर्मित होने लगे। फ्रांस, स्पेन, नीदरलैण्ड्स, जर्मन एवं इंग्लैण्ड में इस कला शैली का प्रवेश द्रुतगति से हुआ।

(ब) **मूर्तिकला** (Sculpture)—स्थापत्य कला की अपेक्षा मूर्तिकला के कलाकारों ने यूनानी शैली एवं स्वरूप से अधिक विशेष प्रेरणा प्राप्त की। इटली में रेनेसा मूर्तिकला का पथप्रदर्शक दोनातेलो (Donatello) था। दोनातेलो प्रकृति से अत्यधिक प्रभावित था। उसने प्राचीन आदर्शों की रक्षा करते हुए तत्कालीन बच्चों एवं पुरुषों की अद्वितीय मूर्तियां बनाईं। ल्यूका देला रोबिया (Luca della Robbia), वेराकक्यो (Veracchio) एवं माइकेल ऐंजिलो (Michael Angelo) ने जो कि उसके परवर्ती कलाकार थे। उसकी मूर्तिकला से एक प्रेरणा प्राप्त की। माइकेल ऐंजिलो द्वारा बनायी गयी कृतियों के उत्कृष्टतम नमूनों को मोसेज एवं फ्लोरेन्स में स्थित मेडिसी के गिरजाघरों की मूर्तियों के रूप में देखा जा सकता है।

TOUCH 'n' PASS

(स) **संगीत-कला** (Music)—पुनर्जागरण में संगीत-कला में व्यापक परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए। संगीत की ध्वनि, मात्रा, राग एवं पद्धति में हुए परिवर्तनों के साथ-साथ यन्त्रीय संगीत का भी विकास हुआ। संगीत कला पर यूनानी, हिब्रू एवं रोमन आदर्शों का व्यापक प्रभाव पड़ा। जान बुल, विलियम बर्ड, पेलिखिना इत्यादि इस युग के महान संगीतज्ञ थे।

(द) **चित्रकला** (Painting)—चित्रकला को चर्च द्वारा सर्वाधिक प्रोत्साहन प्रदान करने के कारण पुनर्जागरण काल में यथार्थवादिता को स्वीकार करने के पश्चात् भी इस युग की चित्रकला में धार्मिक प्रतीकों की परम्परा बनी रही। धार्मिक परम्परा से यथार्थ की ओर चित्रकला को मोड़ने का प्रथम प्रयास माजासिओ (Masaccio) ने किया। उसके इस प्रयास को फ्रा फिलिपो लिप्पी एवं फ्रा ऐंजेलिको ने आगे बढ़ाया। बातिचेलि ने रहस्यवादिता एवं यथार्थवाद का सम्मिश्रण अपने चित्रों में किया। लियोनार्डो द विंशी (1452 से 1519 तक) जो कि फ्लोरेन्स का निवासी था, के मिलान के 'अन्तिम भोज' एवं पेरिस के 'मोनालिसा' नामक चित्र विश्व प्रसिद्ध हैं। माइकेल ऐंजेलो द्वारा चैपेल की दीवारों में 'अन्तिम निर्णय' नामक चित्र में तो ईश्वर की दया व प्रेम के अनुपात में भय एवं आतंक का अधिक पुट है। उसके चित्रों का प्रभाव इटली के चित्रकार रैफेल द्वारा निर्मित विश्व प्रसिद्ध 'सिस्टाइन मेडोना' एवं 'मेडोना ऑफ दी चेयर' नामक चित्रों में देखा जा सकता है। टीशियन (1470-1576 ई.) के चित्र रंग-सौन्दर्य के लिए प्रख्यात हैं।

3. **साहित्य** (Literature)—15वीं शताब्दी में इटली के विद्वानों द्वारा प्राचीन यूनानी एवं लैटिन साहित्य के प्रति उत्कृष्ट रुचि ने इटली में इटैलियन लोक भाषा के विकास में बाधा डाली। हेज के अनुसार, 'वे (इटैलियन विद्वान) सोचते थे कि प्राचीन लैटिन एवं यूनानी भाषा ही साहित्यिक प्रस्तुतीकरण का एकमात्र सम्माननीय वाहन है। फलत: वे लोक भाषाओं को असभ्य एवं साधारण मानकर हेय समझते थे।' इस प्रकार की विचारधारा से अभिभूत विद्वानों ने होरेस, वर्जिल एवं सिसरो की रचनाओं का अनुगमन किया। उनके इस प्रयत्न ने वैज्ञानिक आलोचना के द्वार अनावृत कर दिए। लोनेन्जोबल्ला (Lonenzovalla) ने तो चर्च के प्रति 'कांस्टेंटाइन के दान' की ऐतिहासिकता को अस्वीकार कर दिया। इतना होते हुए भी लैटिन एवं यूनानी भाषाओं में लिखा गया यह साहित्य सामान्य जनमानस की समझ के बाहर था। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि सामान्यजन अशिक्षित एवं रूढ़िवादी होने के कारण इन ग्रन्थों के रहस्यपूर्ण तथ्य को समझने में असमर्थ थे। उल्लेखनीय है कि इस ओर मात्र सुरक्षित वर्ग ही आकृष्ट हुआ, अत: 16वीं शताब्दी में स्थिति में परिवर्तन आया। हैज के शब्दों में, 'सोलहवीं शताब्दी राष्ट्रीय प्रतिद्वन्द्विता, दूरस्थ भौगोलिक आविष्कार, पूँजीवादी विकास तथा सामाजिक व धार्मिक अशान्ति से परिपूर्ण थी। लोकभाषाओं में लिखे गए साहित्य की माँग दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी क्योंकि सामान्य जनता कठिन लैटिन व यूनानी भाषाओं के स्थान पर लोकभाषाओं में लिखे गए साहित्य को अधिक पसन्द करती थी। अत: राष्ट्रीय एवं लोकभाषाओं में लिखे गए साहित्य का सृजन सामने आया।

मार्टिन लूथर ने बाइबिल का अनुवाद जर्मन भाषा में किया। क्रामर ने बुक ऑफ कामन प्रेयर (Book of Common Prayer) की रचना की। जान काल्विन ने इंस्टिट्यूट्स ऑफ दि क्रिश्चियन रिलिजन (Institutes of the Christian Religion) की रचना की। दांते, पेट्रार्क, बोक्सासियो, चौसर, शेक्सपियर, मिल्टन, स्पेन्सर, थामस मूर एवं मार्ले आदि के राष्ट्रीय साहित्य के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। राष्ट्रीय साहित्य के विकास में 'मैकियावेली' (Mechiavelly) ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। मैकियावेली फ्लोरेन्स का निवासी था। अपने जीवनकाल में वह सचिव के पद पर भी कार्य कर चुका था। अत: उसे राजनीति ज्ञान भी प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैकियावेली के इस अगाध राजनीतिक अनुभव को 'डिस्कोर्सिस ऑफ. लिवि', 'हिस्ट्री ऑफ फ्लोरेन्स' एवं 'द प्रिन्स' में देखा जा सकता है। मैकियावेली ने स्पष्ट किया कि धर्म एवं राजनीति दोनों अलग-अलग हैं। धर्म को राजनीति से अलग रहना चाहिए, क्योंकि धर्म राज्यों की शक्ति को निर्बल करता है। उसकी दृष्टि में धर्म नैतिकता का सन्देश देता है जबकि राजनीति में राज्य के हित के लिए नैतिकता का कोई स्थान नहीं है। आवश्यकतानुसार राज्य को कठोर एवं निर्मम साधनों का आश्रय लेना पड़ सकता हैं। राजनीतिक का मूल उद्देश्य सफलता प्राप्त करता है चाहे इसके लिए किसी भी नीति का आश्रय क्यों न लेना पड़े। इस प्रकार राष्ट्रवादी साहित्य ने मध्ययुगीन मान्यताओं को तर्क के आधार पर स्पष्ट चुनौती दी एवं नई मान्यताओं को प्रतिष्ठित किया।

TOUCH 'n PASS

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. निम्नलिखित में से किसे मानववाद का पिता कहा जाता है?
(क) पेट्रार्क (ख) इरैस्मस (ग) दांते (घ) काल्विन

उत्तर (क) पेट्रार्क

प्र.2. मानववाद से तात्पर्य लिया जाता है–
(क) उन्नत ज्ञान से (ख) व्यक्तिवादी विचारधारा से
(ग) हृदय की उदारता से (घ) मानव की धर्म के प्रति आस्था से

उत्तर (क) उन्नत ज्ञान से

प्र.3. निम्नलिखित में पेरिस के 'मोनालिसा' नामक चित्र किस कलाकार के हैं?
(क) लियोनार्दो द विंसी (ख) वातिचेलि (ग) माइकेल ऐंजेलो (घ) रैफेल

उत्तर (क) लियोनार्दो द विंसी

प्र.4. निम्नांकित युग्मों में से कौन-सा गलत है?
(क) माइकेल ऐंजेलो-लास्ट जजमेण्ट (ख) पेट्रार्क-मानववाद का पिता
(ग) लियोनार्दो द विंसी-मोनालिसा (घ) मैकियावली-दास कैपीटल

उत्तर (घ) मैकियावली-दास कैपीटल

प्र.5. कुतुबनुमा का प्रयोग किया जाता है–
(क) समुद्र में कहीं भी अपनी सही स्थिति जानने के लिए
(ख) बुखार नापने के लिए
(ग) कुतुबमीनार की लम्बाई नापने के लिए
(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (क) समुद्र में कहीं भी अपनी सही स्थिति जानने के लिए

प्र.6. निम्नलिखित में से कौन विश्व का प्रथम नाविक था, जो सर्वप्रथम विश्व का चक्कर लगाकर जीवित अपने देश लौटा था?
(क) कोलम्बस (ख) वास्कोडिगामा (ग) ड्रेक (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ग) ड्रेक

प्र.7. सूक्ष्मदर्शी का आविष्कार किसने किया था?
(क) रोजर बेकन (ख) गैलीलियो (ग) देकार्ते (घ) गुटेनबर्ग

उत्तर (क) रोजर बेकन

प्र.8. छापेखाने का आविष्कार किसने किया था?
(क) देकार्ते (ख) गुटेनबर्ग (ग) रोजर बेकन (घ) गैलीलियो

उत्तर (ख) गुटेनबर्ग

प्र.9. दूरबीन का आविष्कारक कौन था?
(क) गैलीलियो (ख) देकार्ते (ग) गुटेनबर्ग (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (क) गैलीलियो

प्र.10. कुतुबनुमा का आविष्कारक कौन था?
(क) मार्कोपोलो (ख) वास्कोडिगामा
(ग) गैलीलियो (घ) कोलम्बस

उत्तर (क) मार्कोपोलो

TOUCH 'n' PASS

प्र.11. पुर्तगाली नाविक बारथोलोम्यु डियाज ने कब पूरे पश्चिमी तट की यात्रा की उसने इस अन्तरीप का नाम उत्तमाशा अन्तरीप रखा?

(क) 1484 (ख) 1485 (ग) 1486 (घ) 1487

उत्तर (ग) 1486

प्र.12. कोलम्बस और अमेरिगो अपनी यात्रा में किसकी खोज कर बैठे?

(क) भारत (ख) दक्षिण अफ्रीका
(ग) अमेरिका (घ) वेस्टइण्डीज

उत्तर (ग) अमेरिका

प्र.13. कनाडा की खोज किसने की?

(क) कोलम्बस (ख) जान कोवेट (ग) वास्कोडिगामा (घ) हेंनरी

उत्तर (ख) जान कोवेट

प्र.14. प्रोटेस्टेंट सम्प्रदाय किसके प्रयास का परिणाम था?

(क) काल्विन (ख) जिंग्वगली
(ग) मार्टिन लूथर (घ) सुकरात

उत्तर (ग) मार्टिन लूथर

प्र.15. कैथोलिक और प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय के मध्य संघर्ष के परिणामस्वरूप कितने वर्षीय युद्ध हुआ?

(क) 20 वर्षीय (ख) 25 वर्षीय
(ग) 30 वर्षीय (घ) 35 वर्षीय

उत्तर (ग) 30 वर्षीय

प्र.16. निम्न में कौन-सा धर्म सुधार का प्रभाव था?

(क) चर्च की सम्पत्ति पर राज्य का अधिकार
(ख) बाईबिल का अनेक भाषाओं में अनुवाद
(ग) पोप द्वारा चर्च की बुराइयों को दूर करना
(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर (घ) उपरोक्त सभी

प्र.17. पुनर्जागरण ने क्या समाप्त नहीं किया?

(क) आडम्बर (ख) भौतिकवाद
(ग) अंधविश्वास (घ) प्रथाएँ

उत्तर (ख) भौतिकवाद

प्र.18. 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से 16वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक मानववादी आन्दोलन का प्रबल ज्वार किस देश में था?

(क) फ्रांस (ख) इंग्लैण्ड
(ग) इटली (घ) स्पेन

उत्तर (ग) इटली

प्र.19. निम्न में कौन-सा युग्म सही नहीं है?

(क) स्थापत्य कला का जनक — फिलिप्पो ब्रूनेलेस्की
(ख) रेनेसा मूर्तिकला पथप्रदर्शक — दोनातेलो
(ग) संगीत कला — माइकल ऐंजिलो
(घ) चित्रकला — लियोनार्डो द विंसी

उत्तर (ग) संगीत कला — माइकल ऐंजिलो

TOUCH 'n' PASS

प्र.20. सिस्टाइन मेडोना एवं मेडोना ऑफ दी चेयर नामक चित्रों का चितेरा कौन था?

(क) माइकल ऐंजलो (ख) रैफेल
(ग) मजासिओ (घ) जान बुल

उत्तर (ख) रैफेल

प्र.21. निम्न में किस ग्रंथ का रचयिता मैकियावली था?

(क) डिस्कोर्सिस ऑफ लिवि (ख) हिस्ट्री ऑफ फ्लोरेंस
(ग) द प्रिंस (घ) ये सभी

उत्तर (घ) ये सभी

प्र.22. कुस्तुन्तुनिया पर अरबों का अधिकार कब हुआ?

(क) 1451 (ख) 1452 (ग) 1453 (घ) 1454

उत्तर (ग) 1453

प्र.23. सूची 'A' को सूची 'B' से मिलाइए–

A	रोजर बेकन	—	1. पैण्डुलम के नियमों की खोज
B	कैपलर	—	2. सूक्ष्मदर्शी का आविष्कार
C	गैलीलियो	—	3. ग्रह गति के नियम
D	कॉपरनिकस	—	4. सौरमण्डल का केन्द्र सूर्य है

(क) A–1, B–2, C–3, D–4 (ख) A–2, B–3, C–1, D–4
(ग) A–3, B–2, C–1, D–4 (घ) A–4, B–3, C–1, D–2

उत्तर (ख) A–2, B–3, C–1, D–4

प्र.24. निम्न में कौन-सा युग्म सही है?

(क) देकार्ते—बीजगणित के ज्यामिति में प्रयोग करने का तरीका
(ख) एडियन बेसालियस—अनेक औषधियों की खोज
(ग) हारवे—मानव शरीर में रक्त प्रवाह की खोज
(घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर (घ) उपर्युक्त सभी

प्र.25. प्रेज ऑफ फौली ग्रंथ का रचयिता कौन था?

(क) दांते (ख) चौसर
(ग) शेक्सपियर (घ) इरैस्मस

उत्तर (घ) इरैस्मस

❑

TOUCH 'n PASS

UNIT-III

यूरोप में सुधारात्मक आन्दोलन
Reformation Movement in Europe

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. मार्टिन लूथर कौन था? जर्मनी में धार्मिक सुधार की सफलता के कारण लिखिए।
Who was Martin Luther? Write the causes for the success of religious reformation in Germany.

उत्तर मार्टिन लूथर (1438-1546) किसान पृष्ठभूमि से थे। उनका धर्म की ओर रुझान था और 1505 में उन्होंने एक भिक्षु बनने का फैसला किया। वह विटेनबर्ग विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र के प्रोफेसर थे। लूथर रिफॉर्मेशन सरल प्रश्न से शुरू हुआ—'ईश्वर की क्षमा पाने के लिए क्या करना चाहिए।'

प्र.2. लूथर एवं काल्विन के सिद्धान्तों की तुलना कीजिए।
Compare the principles of Luther and Calvin.

उत्तर लूथर एवं काल्विन के सिद्धान्तों में अनेक समानताएँ होने पर भी कुछ अन्तर थे, जिनमें से प्रमुख निम्नवत् हैं—

1. लूथर के सिद्धान्त राष्ट्रीय, किन्तु काल्विन के सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय थे।
2. काल्विनवाद में व्यक्ति की चारित्रिक पवित्रता पर विशेष बल दिया गया था, लूथरवाद में नहीं।
3. लूथर ने कैथोलिकों के सात संस्कारों में से केवल जन्म, ईसामसीह के भोज व प्रमाणीकरण को स्वीकार किया, किन्तु कॉल्विन ने केवल जन्म व भोज को ही स्वीकार किया।
4. लूथर ने ईश्वर के प्रति भक्ति व श्रद्धा को ही मुक्ति का एकमात्र मार्ग माना, किन्तु काल्विन भाग्यवादी था। उसके अनुसार प्रत्येक को उसके भाग्य के अनुरूप ही फल मिलता है।

प्र.3. धर्म-सुधार आन्दोलन की प्रकृति लिखिए।
Write the nature of religious reform movement.

उत्तर इंग्लैण्ड में हुए धर्म-सुधार आन्दोलन एवं यूरोप के अन्य राष्ट्रों के धर्म-सुधार आन्दोलन की प्रकृति में पर्याप्त अन्तर था। इंग्लैण्ड में हुआ आन्दोलन, यूरोप के राष्ट्रों के आन्दोलनों के समान, मात्र धार्मिक न था, वरन् इसके राजनीतिक एवं सामाजिक पहलू भी थे। यूरोप के अन्य देशों में धर्म-सुधार की मूल भावना का जन्म जनता में हुआ था जबकि इंग्लैण्ड में यह राजाओं से प्रारम्भ हुआ। इंग्लैण्ड में हेनरी अष्टम पोप के प्रभाव को समाप्त कर चर्च को अपने अधीन लाना चाहता था। उसका उद्देश्य कैथोलिक धर्म में सुधार करना न था। इस प्रकार, जर्मनी तथा यूरोप के अन्य देशों में यह एक धार्मिक आन्दोलन था, किन्तु इंग्लैण्ड में हुआ आन्दोलन प्रमुखत: हेनरी अष्टम तथा पोप की पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता का परिणाम था।

प्र.4. यूरोप में धर्म सुधार आन्दोलन का संस्थापक कौन था?
Who was the founder of the religious reform movement in Europe?

उत्तर जर्मनी में धर्मसुधार आन्दोलन का प्रणेता मार्टिन लूथर (1483-1546 ई०) था।

प्र.5. धर्म सुधार आन्दोलन के प्रमुख प्रभाव क्या हुए?
What were the main effects of the religious reform movement?

उत्तर धर्म-सुधार आन्दोलन के प्रमुख परिणाम—

1. कैथोलिक धर्म में सुधार
2. प्रोटेस्टेण्ट धर्म का उदय
3. इंग्लैण्ड का विकास

Touch 'n' PASS

4. शासक वर्ग की शक्ति में वृद्धि
5. पोप की शक्ति का पतन
6. राजकीय सम्पत्ति एवं शक्ति में वृद्धि
7. गिरजाघरों में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयास।

प्र.6. यूरोप में धर्म सुधार आन्दोलन क्या था?
What was the religious reform movement in Europe?

उत्तर धर्म सुधार आन्दोलन सोलहवीं सदी में प्रारम्भ हुए। मार्टिन लूथर को धर्म सुधार आन्दोलन का प्रणेता माना जाता है। पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप यूरोप के धार्मिक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों की माँग होनें लगी। धार्मिक क्षेत्रों में परिवर्तनों की माँग को ही धर्म सुधार आन्दोलन कहा जाता है।

प्र.7. ऑग्सबर्ग की सन्धि की प्रमुख धाराएँ लिखिए।
Write the main clauses of the Oxberg.

उत्तर इस सन्धि की प्रमुख धाराएँ निम्नलिखित थीं—

1. प्रत्येक शासक को (उल्लेखनीय है कि जनता को नहीं) अपना व अपनी प्रजा का धर्म चुनने का अधिकार प्रदान किया गया।
2. प्रोटेस्टैण्ट धर्मानुयायियों द्वारा चर्च से छीनी गयी जागीर व सम्पत्ति उन्हीं की मान ली गयी।
3. किसी को भी धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा।
4. साम्राज्य की परिषद् में कैथोलिकों व प्रोटेस्टैण्टों को एक समान प्रतिनिधित्व दिया जाएगा।
5. लूथरवाद (प्रोटेस्टैण्ट) के अतिरिक्त किसी अन्य धार्मिक सम्प्रदाय को मान्यता नहीं दी गयी।

प्र.8. धर्म में सुधार से आप क्या समझते हैं?
What do you understand by reform in religion?

उत्तर किसी धार्मिक, राजनीतिक या सामाजिक संस्था को बेहतरी के लिए बदलने के कार्य या प्रक्रिया को सुधार कहा जाता है। जब पूंजीकरण किया जाता है, तो सुधार विशेष रूप से यूरोप में प्रोटेस्टेण्ट सुधार को संदर्भित करता है, जो 1517 में प्रोटेस्टेण्ट द्वारा प्रेरित एक धार्मिक परिवर्तन था जो कैथोलिक चर्च में सुधार करना चाहते थे।

प्र.9. धर्म सुधार आन्दोलन के प्रमुख उद्देश्य क्या थे?
What were the main objectives of the religious reform movement?

उत्तर इस धर्मसुधार-विरोधी आंदोलन का उद्देश्य कैथोलिक चर्च में पवित्रता और ऊँचे आदर्शों को स्थापित करना था, चर्च और पोपशाही में व्याप्त दोषों को दूर कर उसके स्वरूप को पवित्र बनाना था।

प्र.10. धर्म सुधार आन्दोलन की शुरुआत सर्वप्रथम कहाँ हुई?
Where did the religious reform movement first begin?

उत्तर धर्म-सुधार आन्दोलन का प्रवर्तक मार्टिन लूथर था, जो जर्मनी का रहने वाला था। इसने बाइबल का अनुवाद जर्मन भाषा में किया। धर्म-सुधार आन्दोलन की शुरुआत इंगलैड में हुई।

प्र.11. धर्म सुधार आन्दोलन के क्या परिणाम हुए?
What were the results of religious reform movement?

उत्तर धर्म सुधार आन्दोलन ने सामाजिक गुटों के संतुलन में परिवर्तन किया। इसके द्वारा एक और चर्च के अधिकारियों के धन व प्रभाव में कमी आई तो दूसरी और भूपति वर्ग का उत्थान हुआ जिसने सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्र के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। धर्म सुधार आन्दोलन का एक नकरात्मक प्रभाव भी समाज में पड़ा।

प्र.12. धर्म सुधार आंदोलन को कितने भागों में बाँटा गया है?
In how many parts religious reform movement has divided?

उत्तर यह आधुनिक भारत के सभी सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक आन्दोलनों का अग्रदूत बना। वर्ष 1866 में यह दो भागों में विभाजित हो गया। अर्थात केशव चंद्र सेन के नेतत्त्व में भारत का ब्रहम समाज और देवेंद्रनाथ टैगोर के नेतृत्व में आदि ब्रह्म समाज।

TOUCH 'n PASS

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. धर्म सुधार आन्दोलन से आपका क्या तात्पर्य है?
What do you mean by religious reform movement?

उत्तर

धर्म सुधार आन्दोलन
(Religious Reform Movement)

जिस समय इंग्लैण्ड में हेनरी अष्टम और वूल्जे यूरोप की राजनीति में सक्रिय भाग लेने के लिए निरर्थक प्रयास कर रहे थे, उसी समय धार्मिक क्षेत्र में एक महान् परिवर्तन हो रहा था जिसे धर्म-सुधार आन्दोलन कहा जाता है। यह एक धार्मिक आन्दोलन था जिसे इतिहासकारों ने 'धर्म-सुधार' (Protestant reformation) कहा है। मध्ययुग में यूरोप की बर्बर जातियों के आक्रमणों से सुरक्षा करने के उद्देश्य से निमित्त तथा धार्मिक जीवन को उत्कृष्ट बनाने के लिए रोमन कैथोलिक चर्च की स्थापना की गई थी। इस चर्च ने मध्ययुग में सभ्यता के प्रसार के लिए सराहनीय कार्य किए, किन्तु सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों तक यूरोप की स्थिति में गम्भीर परिवर्तन हुआ। मध्यकाल के अन्त तक चर्च में अनेक दोष उत्पन्न हो गए थे। गिरजाघर अब भ्रष्टाचार तथा विलासिता के स्थान बनने लगे थे। पोप, जिसकी आज्ञा धार्मिक क्षेत्र में सर्वोपरि होती थी, स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि समझने लगे। पोप किसी भी राजा को पदच्युत, किसी भी देश के गिरजाघरों को बन्द तथा किसी भी व्यक्ति को ईसाई धर्म से बहिष्कृत कर सकता था। पोप ने अपनी शक्ति से लाभ उठाना प्रारम्भ कर दिया था तथा वे धार्मिक क्षेत्र के अतिरिक्त राजनीतिक मामलों में भी हस्तक्षेप करने लगे थे। इस प्रकार तत्कालीन चर्च एवं पोप में व्याप्त बुराईयों के विरोध में सोलहवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड तथा यूरोप में जो आन्दोलन हुआ, उसे धर्म-सुधार के नाम से जाना जाता है। वास्तव में, यह आन्दोलन यूरोप की धार्मिक प्राचीन रूढ़िवादिता के विरुद्ध था। यद्यपि तेरहवीं शताब्दी से चर्च में कुछ परिवर्तन हुए थे, किन्तु यह परिवर्तन आधुनिक युग की आवश्यकताओं के समान न थे। आधुनिक युग के आगमन से तथा पुनर्जागरण के कारण यूरोप की जनता तर्कवादी हो चुकी थी तथा अन्धविश्वासों को मानने के लिए तैयार न थी। इसी समय कुछ विद्वानों ने पोप की आचारहीनता, भ्रष्टता एवं विलासिता को देखकर जनता को अपने भाषणों एवं लेखों से पोप एवं अन्य पादरियों की वास्तविक स्थिति से परिचित कराया। परिणामस्वरूप जनसाधारण इस बात के लिए अब तैयार न था कि वह अपने धार्मिक कार्यों को इतने भ्रष्ट व्यक्तियों एवं कलुषित तरीकों से कराएँ। अत: धर्म-सुधार आन्दोलन शक्तिशाली होता गया और शनै:-शनै: यूरोप के समस्त देशों में इसका प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा। इस आन्दोलन को सफल बनाने में जर्मनी के लूथर का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। उसने पोप का घोर विरोध किया तथा एक नवीन सम्प्रदाय को जन्म दिया जिसे 'प्रोटेस्टेण्ट' कहते हैं। लूथर के प्रयत्नों से पोप तथा तत्कालीन धार्मिक व्यवस्था के विरुद्ध एक तीव्र आन्दोलन उत्पन्न हुआ, जिसके समक्ष पोप की शक्ति स्थिर न रह सकी। इस सन्दर्भ में वार्नर-मार्टिन ने लिखा है, "धर्म सुधार आन्दोलन पोप पद की सांसारिकता व भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक नैतिक विद्रोह था।"

प्र.2. धर्म सुधार आन्दोलन के परिणामों का उल्लेख कीजिए।
Mention the results of the religious reform movement.

उत्तर

धर्म सुधार आन्दोलन के परिणाम
(Results of the Religious Reform Movement)

धर्म-सुधार आन्दोलन अत्यधिक महत्त्वपूर्ण था। इसके यूरोप पर निम्नलिखित प्रभाव हुए—

1. **प्रोटेस्टैण्ट धर्म का जन्म एवं प्रभाव** (Birth and effects of Protestant Religion)—धर्म-सुधार आन्दोलन का यूरोप पर व्यापक प्रभाव पड़ा। धर्म-सुधार आन्दोलन सफल होने से पूर्व यूरोप में केवल एक कैथोलिक धर्म था, किन्तु इसके पश्चात् प्रोटेस्टैण्ट धर्म का प्रादुर्भाव हुआ और दोनों धर्मों के संघर्ष के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड को तीस वर्षीय युद्ध का सामना करना पड़ा। यही नहीं, यूरोप धर्म-सुधार आन्दोलन के परिणामस्वरूप दो धार्मिक गुटों में विभाजित हो गया। धार्मिक आन्दोलन के कारण ही इंग्लैण्ड में स्टुअर्ट शासक और उनकी संसद के सम्बन्ध मधुर न रह सके।
2. **इंग्लैण्ड का विकास** (Development of England)—धर्म-सुधार आन्दोलन ने इंग्लैण्ड के विकास में सहयोग दिया। इसके पूर्व पोप न केवल धार्मिक अपितु राजनीतिक मामलों में भी हस्तक्षेप करता था, जिसके कारण विकास में बाधा पड़ती थी, पोप अमेरिका में, पुर्तगाल एवं स्पेन को ही व्यापार प्रदान करने की अनुमति प्रदान करता था। इंग्लैण्ड ने भी धर्म-सुधार आन्दोलन के पश्चात् अमेरिका में अपने उपनिवेश स्थापित किए तथा यूरोप में स्वेच्छा से सम्बन्ध स्थापित किए।

TOUCH 'n' PASS

3. **राजा की शक्ति में वृद्धि** (Increase in the powers of the King)—धर्म-सुधार आन्दोलन के संवैधानिक परिणाम भी हुए। सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव चर्च का पूर्ण रूप से राजा के अधीन हो जाना था जिससे राजा के सम्मान तथा पद की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। इससे राजा की व्यक्तिगत शक्ति में वृद्धि हुई तथा राष्ट्रीय भावना प्रबल हुई। गिरजाघरों का प्रशासन, जिसमें विभिन्न पदाधिकारियों की नियुक्ति, झगड़ों का फैसला आदि सम्मिलित थे, राजा के अधिकार में हो गए। गिरजाघर के अधिकारी अब राजा का विरोध नहीं कर सकते थे। लार्ड सभा पर भी धर्म-सुधार का प्रभाव पड़ा। मठों के समाप्त होने से मठों के अध्यक्षों का लार्ड सभा में स्थान स्वत: समाप्त हो गया। राजा की शक्ति में वृद्धि होने का स्पष्ट उदाहरण हेनरी अष्टम के शासनकाल में उत्तरी विद्रोहों को दबाने के लिए विभिन्न परिषदों की स्थापना किया जाना है। एलिजाबेथ के शासन में हाई कमीशन न्यायालय की स्थापना की गई, जो धार्मिक विद्रोहों के मामलों में दण्ड देता था। यह ट्यूडर शक्ति को बढ़ाने का ही एक अंश था। धर्म-सुधार आन्दोलन एवं उससे सम्बन्धित विद्रोहों ने, अपनी शक्ति बढ़ाने में ट्यूडर शासकों को पूर्ण सहयोग दिया।
4. **संसद पर प्रभाव** (Effects on Parliament)—धर्म-सुधार आन्दोलन का इंग्लैण्ड की संसद पर भी प्रभाव पड़ा। ट्यूडर शासकों ने संसद को साझेदारी में प्रयोग करते हुए, अपनी शक्ति में निरन्तर वृद्धि की। इस साझेदारी, जिसके द्वारा संसद को धर्म-सुधार आन्दोलन का यन्त्र बनाया गया था, का प्रभाव संसद पर भी हुआ। संसद को राज्य के प्रमुख कार्य करने का अनुभव प्राप्त हुआ जिससे उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि हुई। संसद को अपनी शक्ति व अधिकारों का भी अनुभव हुआ जिसका प्रमाण, एलिजाबेथ के शासनकाल में संसद की जागरूकता व स्टुअर्ट-शासक जेम्स को चुनौती के रूप में मिलता है। धर्म-सुधार आन्दोलन का संसद पर एक अन्य प्रभाव लॉर्ड सभा में मठाधीशों (Abbots) की संस्था का कम होना था जिससे लॉर्ड सभा में धार्मिक मत का प्रभाव भी कम हुआ।
5. **सामाजिक प्रभाव** (Social Effects)—इसने सामाजिक गुटों के सन्तुलन में परिवर्तन किया। एक ओर चर्च के अधिकारियों के धन व प्रभाव में कमी आयी, दूसरी ओर भूपति (Gentry) वर्ग का उत्थान हुआ जिसने सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। धर्म-सुधार आन्दोलन का एक अन्य प्रमुख प्रभाव भिखारियों व चोरों की संख्या में वृद्धि होना था। मठों के समाप्त होने से ऐसा हुआ था, क्योंकि मठ गरीबों के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे थे। मठों में गरीबों को शरण एवं शिक्षा दी जाती थी, किन्तु मठों के समाप्त होने से ये गरीब असहाय हो गए, जिनसे अपराधों में वृद्धि हुई।

प्र.3. मार्टिन लूथर के सिद्धान्तों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।
Describe the principles of Martin Luther in brief.

उत्तर लूथर के समर्थकों ने पोप के आदेशों का विरोध (प्रोटेस्ट) किया था, अत: उसके समर्थकों द्वारा चलाया गया आन्दोलन 'प्रोटेस्टैण्ट आन्दोलन' कहलाया। इस प्रकार प्रोटेस्टैण्ट आन्दोलनकारियों ने परम्परागत कैथोलिक धर्म का विरोध कर नए धर्म का प्रतिपादन किया। इस धर्म की विधिवत् स्थापना 1530 ई. में हुई जिसमें लूथर के सिद्धान्तों का पालन किया गया। इस प्रकार जर्मनी में प्रोटेस्टैण्ट धर्म की स्थापना हो गयी।

लूथर के सिद्धान्त (Principles of Luther)—मार्टिन लूथर के द्वारा प्रतिपादित प्रमुख सिद्धान्त निम्नवत् थे—

1. पोप अथवा चर्च के स्थान पर ईसा एवं बाईबिल को सर्वोच्च घोषित करते हुए पोप की सत्ता को नकारा गया।
2. ईश्वर की भक्ति व उसके प्रति श्रद्धा ही मुक्ति प्राप्त करने का एक मात्र साधन है। अत: मुक्ति प्राप्त करने के लिए चर्च एवं पोप द्वारा निर्धारित कार्यों (क्षमा-पत्र आदि खरीदने) के स्थान पर ईश्वर की भक्ति पर जोर दिया गया।
3. चर्च द्वारा निर्धारित सात संस्कारों में से उसने केवल तीन को मान्यता दी। ये थे—नामकरण, प्रायश्चित एवं प्रसाद।
4. लूथर ने चर्च की अपार शक्तियों व चमत्कारों को मानने से इन्कार कर दिया।
5. सभी के लिए समान न्याय-व्यवस्था मानी गयी चाहे वह पोप ही क्यों न हो।
6. रोम के चर्च के प्रभुत्व को समाप्त करके राष्ट्रीय चर्च की शक्ति को मान्यता दी गई।
7. धर्म ग्रन्थ सबके अध्ययन के लिए हैं, किसी को उनका अध्ययन किए जाने से रोका नहीं जाना चाहिए।
8. चर्च में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए पादरियों को भी विवाह करने की अनुमति दी गयी।

TOUCH 'n PASS

लूथर के ये सिद्धान्त जर्मनी में अत्यधिक लोकप्रिय हो गए। अत: प्रोटेस्टैण्ट धर्म का तीव्र विकास व कैथोलिक धर्म का विरोध होने लगा। लूथर की शिक्षाओं ने जन-साधारण, सदाचारी ईसाइयों व राष्ट्रवादियों को विशेष रूप से प्रभावित किया। अत: उसके समर्थकों ने कैथोलिक चर्च के विरुद्ध विद्रोह कर दिया व चर्च की सम्पत्ति को छीन लिया।

प्र.4. धर्म-सुधार विरोधी आन्दोलन का उल्लेख कीजिए।

Explain the counter reformation of religion reformation.

उत्तर

धर्म-सुधार विरोधी आन्दोलन
(Anti Religion Reform Movement)

यूरोप के देशों में विकसित हुए प्रोटेस्टेण्ट धर्म तथा धर्म-सुधार आन्दोलन के विरुद्ध यूरोप में एक शक्तिशाली आन्दोलन हुआ, जिसे धर्म सुधार विरोधी आन्दोलन कहा जाता है। इस समय तक यूरोप में कैथोलिक धर्म की स्थिति काफी क्षीण हो चुकी थी, अत: पोप ने कैथोलिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए 1562 ई. में ट्रेण्ट नामक स्थान पर एक सभा का आयोजन किया, जिसमें कैथोलिक धर्म के लिए नवीन नियमों का प्रतिपादन किया गया। ट्रेण्ट की सभा में निम्नलिखित मुख्य उपदेशों की पुष्टि की गयी—

1. कैथोलिक चर्च का प्रधान पोप है।
2. चर्च को ही धर्म ग्रन्थों का अर्थ लगाने का एकाधिकार है।
3. कैथोलिकों के लिए लैटिन भाषा में एक नई बाईबिल तैयार की जाए।

इसके अतिरिक्त इस सभा में कुछ सुधारों की भी घोषणा की गयी, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित थे—

1. चर्च के पदों को बेचने पर प्रतिबन्ध लगाया गया।
2. सभी बिशप अपने-अपने कर्त्तव्यों का पालन करें।
3. पादरियों को उचित प्रशिक्षण व्यवस्था।
4. आवश्यकतानुसार जनसाधारण की भाषा में उपदेशों का प्रचार करना।

इन सुधारों का व्यापक प्रभाव हुआ। पोप ने भी इस सभा में भाग लिया था। इस घोषणा के पश्चात् योग्य व चरित्रवान लोगों को ही पादरी बनाया जाने लगा। स्कूलों में बाईबिल के अध्ययन पर जोर दिया गया। परिणामस्वरूप, रोमन कैथोलिक धर्म पुनर्जीवित होने लगा तथा धर्म सुधार आन्दोलन कमजोर पड़ने लगा। धर्म-सुधार विरोधी आन्दोलन का प्रमुख समर्थक स्पेन का राजा फिलिप था, जो विशाल साम्राज्य के अतिरिक्त नवीन संसार का भी स्वामी था। उसके पास अपार धन था तथा उसकी थल सेना अजेय समझी जाती थी। फिलिप की नौ-सेना भी अत्यन्त शक्तिशाली थी। यद्यपि फ्रांस और स्पेन की राजनीतिक शत्रुता थी तथापि फ्रांस भी इस आन्दोलन में स्पेन की सहायता कर रहा था। वह समय प्रोटेस्टैण्ट (Protestant) धर्म के लिए अत्यन्त संकट था। फ्रांस के ह्यूगनोट' तथा नीदरलैण्ड के प्रोटेस्टैण्ट अपने धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे थे। इंग्लैण्ड में इसी प्रकार का धर्म-सुधार विरोधी आन्दोलन फैलने की आशंका थी। यूरोप के राष्ट्रों में इंग्लैण्ड ही ऐसा था जिसकी शासिका व जनता मुख्यतया प्रोटेस्टैण्ट मानी जाती थी। अत: इंग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ को जीवन पर इस धर्म-सुधार विरोधी आन्दोलन का सामना करना पड़ा।

इसी समय प्रोटेस्टैण्ट धर्म व धर्म सुधार आन्दोलन का विरोध करने के लिए जैसुइट संगठन (Order of Jesuit) की स्थापना की गयी। इस नवनिर्मित संगठन का प्रमुख उद्देश्य प्रोटेस्टैण्ट धर्म का विरोध तथा कैथोलिक धर्म का प्रचार करना था। इस संगठन की स्थापना एक स्पेनी सैनिक इग्नेशियम लावला ने की थी। सर्वप्रथम इस संगठन की स्थापना स्पेन में हुई, तत्पश्चात् इसकी अनेक शाखाएं यूरोप के अनेक देशों में स्थापित हुईं। इस संगठन का प्रशिक्षण अत्यन्त कठोर था। लायला ने धर्म के प्रति श्रद्धा एवं आचार से पवित्र रहने का संगठन के लोगों से प्रण करवाया। लायला ने धार्मिक न्यायालयों की भी स्थापना की, जिन्हें 'इनक्वीजीशन' कहा जाता था। इस न्यायालय ने बड़ी संख्या में लोगों को मृत्यु-दण्ड व जीवित जलाने की सजा दी। जैसुइट संगठन ने पोप तथा पादरियों को भी सादगी का जीवन व्यतीत करने के लिए विवश किया। इस संगठन ने अनेक स्कूलों की भी स्थापना की व उचित शिक्षा का प्रबन्ध कराया। जैसुइट संगठन के लोगों ने कैथोलिक धर्म का प्रचार यूरोप के बाहर भी किया।

जैसुइट संगठनकर्त्ताओं ने इंग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ को कैथोलिक बनाने का प्रयास किया। उनका विचार था कि एलिजाबेथ का विवाह किसी कैथोलिक राजा से होना चाहिए। अत: एलिजाबेथ व स्पेन के राजा फिलिप के विवाह के लिए उन्होंने प्रयत्न किया, किन्तु एलिजाबेथ ने कूटनीति का सहारा लेते हुए इस विवाह को टाला। जैसुइट यह भी चाहते थे कि यदि यह विवाह न हो सके तो इंग्लैण्ड के सिंहासन पर स्काटलैण्ड की रानी मैरी को बैठाया जाए। यदि यह भी सम्भव न हो तो शक्ति द्वारा एलिजाबेथ तथा इंग्लैण्ड को कैथोलिक धर्म का अनुयायी बनाया जाए। उपर्युक्त किसी भी तरीके से जैसुइट इंग्लैण्ड में कैथोलिक धर्म प्रतिस्थापित

TOUCH 'n' PASS

न कर सके। फिर भी, धर्म-सुधार विरोधी आन्दोलन के परिणामस्वरूप प्रोटेस्टैण्ट धर्म को गहरा आघात लगा व कैथोलिक धर्म की पर्याप्त उन्नति हुई अत: धर्म-सुधार विरोधी आन्दोलन के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. धर्म सुधार आन्दोलन के कारणों का वर्णन कीजिए।
Describe the causes of the religious reform movement.

उत्तर

धर्म सुधार आन्दोलन के कारण
(Causes of the Religious Reform Movement)

तत्कालीन यूरोपीय समाज द्वारा, लूथर के द्वारा स्थापित मत को, तुरन्त स्वीकार कर लेना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि धर्म-सुधार के अनेक कारण थे क्योंकि किसी एक कारण अथवा उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किसी मत को एकाएक इतना शक्तिशाली समर्थन प्राप्त होना असम्भव है। अत: धर्म-सुधार आन्दोलन के कारणों को जानने के लिए उस युग की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन आवश्यक है; जो कि इस प्रकार है—

1. **चर्च की बुराइयाँ** (Abuses in the Church)—धर्म-सुधार आन्दोलन का सर्वाधिक प्रमुख कारण तत्कालीन चर्च में व्याप्त बुराइयाँ थीं। पोप तथा पादरी, धनी होने तथा किसी प्रकार का प्रतिबन्ध स्वयं पर होने के कारण विलासी एवं भ्रष्ट हो गए थे। उनके भ्रष्ट होने से गिरजाघर भी, जो पवित्र स्थल माने जाते थे, अब भ्रष्टाचार एवं विलासिता के केन्द्र बन गए थे। पहले पादरियों को विवाह करने की अनुमति नहीं थी, किन्तु अब उन पर ऐसा कोई प्रतिबन्ध न होने से वे सांसारिकता के मोहजाल में फंस गए थे। जनता को पादरियों का इस प्रकार का नैतिक पतन पसन्द न था। इसके अतिरिक्त पादरियों पर देश का कानून मान्य न था। उन पर राजा किसी प्रकार से भी मुकदमा नहीं चला सकता था चाहे उन्होंने कोई भी अपराध क्यों न किया हो? उन पर ऐसे न्यायालयों में भी मुकदमा चल सकता था जहाँ न्यायाधीश पादरी ही हो। उनको दण्ड भी जनसाधारण की तुलना में बहुत कम मिलता था।

   तत्कालीन चर्च में व्याप्त एक अन्य बुराई प्लूरेलिटीज की रीति थी, जिसके द्वारा एक पादरी अनेक गिरजाघरों का अध्यक्ष तथा अनेक पदों पर कार्य कर सकता था। इस रीति के कारण गिरजाघरों की व्यवस्था उचित नहीं हो पाती थी तथा पादरियों की अधिक आय होने के कारण उनकी विलासिता में वृद्धि होती थी।

   चर्च में व्याप्त उपर्युक्त बुराइयों के अतिरिक्त एक प्रमुख समस्या पोप की थी। पोप ईसाई जगत् का अनधिकृत सम्राट समझा जाता था तथा वह स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि समझता था। पोप समस्त ईसाई राज्यों का संरक्षक होता था तथा प्रत्येक देश में उसने अपने प्रतिनिधि लिगेट एवं ननसियस (Legate and Nuncious) नियुक्त किए थे जो पोप के अतिरिक्त किसी की आज्ञा को स्वीकार करने को तैयार न थे। अपनी शक्तियों को और अधिक निरंकुश बनाने के लिए पोप के पास दो विशेषाधिकार थे, जिनका प्रयोग कर वह समय-समय पर अपनी निरंकुशवादिता को प्रमाणित करता रहता था। इन विशेषाधिकारों में से एक अधिकार इण्टरडिक्ट (Interdict) था। जिसके द्वारा वह किसी भी देश के एक अथवा समस्त गिरजाघरों को बन्द करने का आदेश दे सकता था। ये एक महत्त्वपूर्ण अधिकार था क्योंकि गिरजाघरों के बन्द हो जाने से उस देश में जन्म, विवाह, मृत्यु आदि के अवसरों पर होने वाले समस्त धार्मिक कार्यों पर प्रतिबन्ध लग जाता और जनता को इस प्रकार अपार कठिनाइयों का सामना करना पड़ता। दूसरा विशेषाधिकार 'एक्सकम्यूनिकेशन' (Ex-communication) कहलाता था। इस अधिकार के प्रयोग से वह किसी भी देश के राजा को ईसाई धर्म से च्युत कर सकता था और इस प्रकार उसे उसके पद से हटा सकता था क्योंकि किसी अन्य धर्म का राजा ईसाई देश का शासक नहीं हो सकता था, इन विशेषाधिकारों के कारण प्रत्येक ईसाई देश का राजा तथा जनता, पोप से भयभीत रहती थी तथा उसका विरोध करने का साहस नहीं कर पाती थी। पोप ने इन अधिकारों का प्रयोग इंग्लैण्ड के राजा हेनरी द्वितीय पर किया था। पोप को इन अधिकारों ने निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी बना दिया था। आधुनिक काल के प्रारम्भ होते ही यूरोप के ईसाई देशों में से अनेक देशों की जनता पोप की इस निरंकुशवादिता को समाप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो गई।

   पोप ने स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि मानते हुए धन अर्जित करने का भी उपाय ढूँढ निकाला था। उसने **क्षमा-पत्र** (Indulgence) देने प्रारम्भ किए। कोई भी व्यक्ति अपने आप से मुक्त होने के लिए धन देकर पोप से क्षमा-पत्र प्राप्त

TOUCH 'n' PASS

कर सकता था। इस प्रकार धनी-वर्ग स्वेच्छा से अत्याचार करता था और अपने आप के परिणामों से परलोक से बचने के लिए पोप से क्षमा-पत्र प्राप्त कर लेता था क्योंकि पोप ने यह प्रचार कर दिया था कि जो व्यक्ति मृत्यु से पूर्व उससे क्षमा-पत्र प्राप्त कर लेगा, वह मरणोपरान्त स्वर्ग प्राप्त करेगा। इसके अतिरिक्त धन अर्जित करने के लिए पोप प्रत्येक ईसाई राष्ट्र से उसकी वार्षिक आय का एक अंश जिसे ऐनेट्स या फर्स्ट फ्रूट (Annates or First Fruit) कहते थे, प्राप्त करता था तथा गिरजाघरों में विभिन्न पदों को बेचा जाता था। इस प्रकार पोप ने तथा विभिन्न गिरजाघरों ने अपार सम्पत्ति एकत्रित कर ली थी। आधुनिक युगीन नेता गिरजाघरों एवं पोप में व्याप्त विभिन्न बुराइयों को समाप्त करना चाहते थे।

2. **यूरोप के राजाओं की लालसा** (Greedness of European Princes)—गिरजाघरों की सम्पत्ति, भूमि तेजी से बढ़ रही थी अत: यूरोप के शासकों की गिरजाघरों एवं पोप की सम्पत्ति पर नजर लगी हुई थी तथा उस पर वे अधिकार करना चाहते थे, क्योंकि मध्यकालीन यूरोप के राष्ट्रों के राजाओं को धन की भारी आवश्यकता रहती थी। अत: वे अवसर की प्रतीक्षा में थे। रैम्जे म्योर ने भी धार्मिक आन्दोलन के प्रमुख कारणों में, चर्च में व्याप्त अनियमितताएँ तथा यूरोप के राष्ट्रों के राजाओं की गिरजाघरों की सम्पत्ति पर अधिकार करने की लालसा को ही माना है।
3. **पोप से घृणा** (Hatred against Pope)—1309 ई० में पोप ने अपनी राजधानी रोम के स्थान पर एयुग्नेन (Ayugnen) बनायी। यह एयुग्नेन फ्रांस की सीमा पर स्थित था। एयुग्नेन, पोप की राजधानी 1378 ई० तक रही, किन्तु इस लगभग सत्तर वर्ष के समय का तत्कालीन धार्मिक एवं राजनीतिक स्थिति पर व्यापक प्रभाव पड़ा। पोप के एयुग्नेन रहने से पोप पर फ्रांस के राजा का प्रभाव बढ़ गया जिससे यूरोप के ईसाई राष्ट्र जो फ्रांस के शत्रु थे पोप से नाराज हो गए तथा उससे घृणा करने लगे। इसी कारणवश इंग्लैण्ड के शासक एडवर्ड तृतीय ने पोप एवं गिरजाघरों के अधिकारों को इंग्लैण्ड में कम करने का प्रयत्न किया। 1378 ई० में पोप के सम्मान को गम्भीर आघात लगा क्योंकि उस समय दो पोप हो गए तथा एक-दूसरे को नास्तिक कहने लगे। यह स्थिति 1417 ई० तक रही, जिससे पोप का आत्मसम्मान यूरोप में कम हो गया तथा उसकी शक्ति में पतन होने के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे।
4. **राष्ट्रीय भावना का प्रभाव** (Influence of National Spirit)—पोप के प्रभाव के कारण लोगों को अपने देश के नियम के स्थान पर पोप के आदेशों को स्वीकार करना पड़ता था। आधुनिक युग के उदय के साथ ही प्रत्येक देश में राष्ट्रीय भावना का जन्म हुआ और जनता में यह भावना जाग्रत होने लगी थी कि पोप एक विदेशी था, अत: पोप के प्रभाव को समाप्त करने का प्रत्येक देश का कर्त्तव्य हो गया। जनता अपने देश के प्रति वफादार रहना चाहती थी। जनता देश को धर्म एवं गिरजाघरों से अधिक महत्त्वपूर्ण समझने लगी थी।
5. **पवित्र धर्म की आवश्यकता** (Need of a Pious Religion)—प्रारम्भ में ईसाई धर्म एक सुन्दर और पवित्र धर्म था। उसमें किसी प्रकार की अपवित्रता व्याप्त नहीं थी, किन्तु शनैः-शनैः उसमें बुराइयाँ तथा अन्धविश्वास बढ़ने लगा। अत; आधुनिक युग के आगमन तथा पुनर्जागरण के प्रभाव से अब लोग ऐसे धर्म को अस्वीकार करने का तैयार न थे तथा एक नवीन धर्म की आवश्यकता का अनुभव कर रहे थे।
6. **पुनर्जागरण का प्रभाव** (Impact of Renaissance)—पुनर्जागरण के कारण लोग तर्कवादी हो गए थे। अत: वे पर्याप्त प्रमाण के अभाव में किसी सिद्धान्त अथवा बात को स्वीकार करने के लिए तैयार न थे। पुनर्जागरण का इस कारण धार्मिक क्षेत्र में गम्भीर प्रभाव पड़ा। बाइबिल का अनुवाद राष्ट्रीय भाषाओं में किया गया तथा छापेखाने के आविष्कार के कारण बाइबिल का पढ़ना सुगम हो गया। यूरोप के अनेक धर्म-सुधारक इटली गए तथा अपने देश लौटकर पोप एवं धर्म में व्याप्त बुराइयों से जनता को अवगत कराया। इस प्रकार पुनर्जागरण ने धर्म-सुधार आन्दोलन को रास्ता दिखाया।
7. **धर्म-सुधारकों द्वारा पोप का विरोध** (Oppose of Pope by Reformers)—यूरोप में समय-समय पर अनेक धर्म-सुधारक हुए जिन्होंनें तत्कालीन पोप एवं गिरजाघरों में व्याप्त बुराइयों को जनता के समक्ष रखा। इन धर्म-सुधारकों में एक प्रसिद्ध नाम वाइक्लिफ (Wycliff) का है। वाइक्लिफ इंग्लैण्ड में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में प्राध्यापक था। एडवर्ड तृतीय के समय उसने गिरजाघरों के विरुद्ध आवाज उठाई तथा जनता के समक्ष धर्म पर व्याप्त राजनीतिक प्रभाव तथा उसके दुष्परिणाम रखे। वाइक्लिफ ने बाइबिल का अंग्रेजी में अनुवाद किया, जिससे लोग उसका वास्तविक अर्थ समझ सके तथा पादरियों द्वारा गुमराह होने से बच गए। वाइक्लिफ ने राजा को गिरजाघरों में व्याप्त भ्रष्टाचार का कारण धन बताया तथा उसे सुझाव दिया कि गिरजाघरों एवं धर्म को पुन: पवित्र बनाने के लिए उनके धन एवं सम्पत्ति पर अधिकार कर ले।

वाइक्लिफ (Wycliff) के पश्चात् उसके अनुयायी उसके सिद्धान्तों का प्रचार करते रहे। दूसरा प्रमुख धर्म-सुधारक वोहेमिया में जान हुस हुआ। हुस, प्राग विश्वविद्यालय में प्राध्यापक था। उसने नवीन विचारों का प्रचार किया, जिसके परिणामस्वरूप 1415 ई० में उसे जीवित जला दिया गया। यद्यपि जान हुस की मृत्यु हो गई, किन्तु उसके सिद्धान्त जीवित रहे। तीसरा धर्म-सुधारक सेवोनैरोला इटली में हुआ, उसे भी मृत्यु-दण्ड दिया गया।

प्र.2. जर्मनी में हुए धर्म सुधार आन्दोलनों का वर्णन कीजिए।

Describe the religious reform movements in Germany.

***अथवा* एक धर्म सुधारक के रूप में मार्टिन लूथर के योगदान का वर्णन कीजिए।**

Describe the contribution of Martin Luther as a religious reformer.

उत्तर

जर्मनी में धर्म सुधार आन्दोलन
(Religious Reform Movements in Germany)

धर्म-सुधार आन्दोलन का प्रणेता मार्टिन लूथर था। उसके विचारों एवं कार्यों ने जर्मनी में धार्मिक क्रान्ति को जन्म दिया।

मार्टिन लूथर (Martin Luther)—जर्मनी में धर्म सुधार आन्दोलन के प्रणेता मार्टिन लूथर का जन्म 10 नवम्बर, 1483 ई० को आइबेन नामक गाँव में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। उसके पिता का नाम हान्स तथा माता का नाम मार्गरिथी जैंगलर था। मार्टिन लूथर के पिता की इच्छा थी कि उनका पुत्र वकील बने। इरफर्ट विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् उसने अपने पिता की इच्छानुसार कानून का अध्ययन प्रारम्भ किया, किन्तु वह वकील बनने के स्थान पर 1508 ई० में विटनबर्ग विश्वविद्यालय में धर्म एवं दर्शनशास्त्र का शिक्षक नियुक्त हो गया। इस पद पर कार्य करते हुए उसने धर्म शास्त्र का गहन अध्ययन किया तथा इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मानव की मुक्ति ईश्वर की भक्ति से ही सम्भव थी। लूथर स्वयं कैथोलिक धर्म का अनुयायी था तथा पोप के प्रति भी उसे अपार श्रद्धा थी।

1511 ई० में उसे रोम जाने का अवसर मिला। रोम की यात्रा के प्रति उसमें अपार उत्साह था, किन्तु रोम पहुँचने पर पोप के विलासमयी जीवन-शैली को देखकर उसकी आशाओं पर पानी फिर गया। रोम में व्याप्त आडम्बर व भ्रष्टाचार को देखकर वह हतप्रभ हो गया। रोम में उसने देखा कि वहाँ धर्म अधिकारी किस प्रकार विभिन्न तरीकों से धन कमा कर सुखद जीवन व्यतीत कर रहे थे। इसी कारण उसने कहा, **''ईसाई धर्म रोम के जितना निकट है उतना ही दोषयुक्त है।''** रोम की यात्रा से निराश होकर लौटने के पश्चात् भी उल्लेखनीय है कि लूथर ने रोम के पोप का विरोध नहीं किया वरन् चर्च में सुधार किए जाने के विषय में वह सोचने लगा।

लूथर द्वारा क्षमा-पत्रों का विरोध—इसी समय घटित कुछ घटनाओं ने लूथर को पोप विरोधी बना दिया तथा उसने खुलकर पोप का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। इसका मुख्य कारण उसके द्वारा क्षमा-पत्रों (Indulgence) का विरोध करना था। क्षमा-पत्र एक ऐसा 'मुक्ति-पत्र' होता था जिसको कोई भी व्यक्ति धन देकर पोप अथवा उसके प्रतिनिधियों से खरीद सकता था। पोप का कहना था कि इस पत्र को खरीदने से खरीदने वाले व्यक्ति के समस्त पाप धुल जाएँगे।

1517 ई० में पोप के प्रतिनिधि के रूप में टेटजेल क्षमा-पत्रों को बेचने के लिए विटनबर्ग पहुँचा। टेटजेल ने यह तक घोषणा की कि यदि कोई भविष्य में भी पाप करना चाहता है तो भी यदि वह क्षमा-पत्रों को खरीद लेगा तो वह पाप से मुक्त माना जाएगा। उसने कहा, **''जैसे ही क्षमा-पत्रों के लिए दिए गए सिक्कों की खनक गूँजती है तो उस आदमी की आत्मा सीधे स्वर्ग में प्रवेश कर जाती है।''** लूथर ने क्षमा-पत्रों को बेचे जाने का घोर विरोध किया व जर्मनी की जनता को समझाया कि यह धन प्राप्त करने का एक साधन मात्र है। उसने यह भी कहा कि यह धर्म विरोधी है। अपनी बात को जनता तक पहुँचाने के लिए उसने अपनी बातें '95 **बिन्दुओं**' में लिखकर 31 अक्टूबर, 1517 ई० को विटनबर्ग के गिरजाघर के प्रवेश द्वार पर चिपका दी। इसमें चर्च द्वारा इस तरीके से धन एकत्र करने की आलोचना की गई थी तथा जनता को समझाया गया था कि पाप पश्चाताप करने से दूर होता है न कि क्षमा-पत्र खरीदने से। इस सन्दर्भ में सेवाइन ने लिखा है, **''क्षमा-पत्रों के विषय में बड़ी भ्रान्तियाँ थीं। इस प्रथा को टेटजेल ने अधिक धन प्राप्ति के लिए और अधिक भ्रष्ट बना दिया। लूथर ने इस प्रथा की भर्त्सना की और क्षमा-पत्रों की प्रथा को चुनौती दी।''**

मार्टिन लूथर के विचारों का जर्मनी में स्वागत हुआ व शीघ्र ही वह जर्मनी में धार्मिक नेता बन गया। लूथर के बढ़ते हुए प्रभाव से पोप लिओ दशम् चिन्तित हो गया तथा उसने अपने सिद्धान्तों के प्रचार के लिए डॉ० जॉन नामक एक धर्मशास्त्री को जर्मनी भेजा। डॉ० जॉन से लूथर ने लिपजिग में वाद-विवाद किया व मनुष्य और ईश्वर के मध्य पोप को निरर्थक बताया। इसके साथ ही लूथर ने तीन पुस्तकें प्रकाशित कर पोप का विरोध किया व जनसाधारण को सत्य से अवगत कराया। ये पुस्तकें अग्रलिखित थीं—

TOUCH 'n' PASS

(i) **एन एड्रेस टू द नोबिलिटी ऑफ द जर्मन नेशन** (An Address to the Nobility of the German Nation)
(ii) **ऑन द लिबर्टी ऑफ द क्रिश्चियन मैन** (On the Liberty of the Christian man)
(iii) **ऑन द बेबिलोनिश कैप्टिविटी ऑफ द चर्च** (On the Babylonish Captivity of the Church)

उल्लेखनीय है कि इन पुस्तकों में वर्णित सिद्धान्त ही भविष्य में प्रोटेस्टैण्ट धर्म के प्रमुख सिद्धान्त बने।

लूथर के विरुद्ध पोप की कार्यवाही—लूथर के इन कार्यों से पोप अत्यधिक क्रोधित हुआ तथा उसने 1520 ई० में लूथर को आदेश दिया कि वह दो माह के अन्दर अपने विचार वापस ले अन्यथा उसके विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी। लूथर द्वारा ऐसा न करने पर पोप ने लूथर को धर्म से निष्कासित कर दिया, किन्तु लूथर ने निष्कासन के आदेश को जला दिया। उस समय पवित्र रोमन सम्राट चार्ल्स पंचम पोप का अनन्य अनुयायी था, अत: उसने इस समस्या का निराकरण करने के लिए **'वर्म्स की सभा'** आमन्त्रित की। इस सभा में लूथर से पोप का विरोध त्यागने को कहा गया, किन्तु लूथर ने कहा, "जब तक मुझे बाईबिल अथवा तर्क द्वारा गलत प्रमाणित न कर दें मैं कुछ भी त्यागने के लिए तैयार नहीं हूँ क्योंकि अन्त:करण के विरुद्ध आचरण करना न तो पवित्र है और न ही उचित।" परिणामस्वरूप, लूथर एवं चार्ल्स पंचम में कोई समझौता न हो सका तथा चार्ल्स पंचम ने उसकी समस्त पुस्तकों को प्रतिबन्धित कर दिया व उससे कानूनी सुरक्षा का अधिकार भी छीन लिया। ऐसी स्थिति में सैक्सनी के शासक फ्रेडरिक ने लूथर को संरक्षण दिया। उसके संरक्षण में लूथर को लगभग एक वर्ष तक रहना पड़ा, किन्तु इस समय का सदुपयोग लूथर ने बाईबिल का जर्मन भाषा में अनुवाद करके किया।

प्रोटेस्टैण्ट धर्म का जन्म—जर्मनी में लूथर के द्वारा पोप का विरोध किए जाने के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए धार्मिक विवाद का हल ढूँढ़ने के लिए पवित्र रोमन साम्राज्य की एक सभा स्पीयर (Speyer) में 1526 ई० में आमन्त्रित की गई। इस सभा में लम्बा वाद-विवाद तो हुआ, किन्तु यह किसी निष्कर्ष पर न पहुँच सकी। अत: 1529 ई० में स्पीयर में ही दूसरी धार्मिक सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में लूथर के सुधारवाद का विरोध किया गया व उसके विरुद्ध कठोर आदेश जारी किए गए। इस सभा द्वारा इस प्रकार एक-पक्षीय निर्णय दिए जाने का लूथर के समर्थकों ने घोर विरोध किया तथा पोप एवं स्पीयर की द्वितीय सभा के आदेशों को मानने से इन्कार कर दिया। इस प्रकार चूँकि लूथर के समर्थकों ने पोप के आदेशों का विरोध (प्रोटेस्ट) किया था, अत: उसके समर्थकों द्वारा चलाया गया आन्दोलन **'प्रोटेस्टैण्ट आन्दोलन'** कहलाया। इस प्रकार प्रोटेस्टैण्ट आन्दोलनकारियों ने परम्परागत कैथोलिक धर्म का विरोध कर नए धर्म का प्रतिपादन किया। इस धर्म की विधिवत् स्थापना 1530 ई० में हुई जिसमें लूथर के सिद्धान्तों का पालन किया गया। इस प्रकार जर्मनी में प्रोटेस्टैण्ट धर्म की स्थापना हो गई।

लूथर के सिद्धान्त—मार्टिन लूथर के द्वारा प्रतिपादित प्रमुख सिद्धान्त निम्नवत् थे—

1. पोप अथवा चर्च के स्थान पर ईसा एवं बाईबिल को सर्वोच्च घोषित करते हुए पोप की सत्ता को नकारा गया।
2. ईश्वर की भक्ति व उसके प्रति श्रद्धा ही मुक्ति प्राप्त करने का एक मात्र साधन है। अत: मुक्ति प्राप्त करने के लिए चर्च एवं पोप द्वारा निर्धारित कार्यों (क्षमा-पत्र आदि खरीदने) के स्थान पर ईश्वर की भक्ति पर जोर दिया गया।
3. चर्च द्वारा निर्धारित **सात संस्कारों** में से उसने केवल तीन को मान्यता दी। ये थे—नामकरण, प्रायश्चित एवं प्रसाद।
4. लूथर ने चर्च की अपार शक्तियों व चमत्कारों को मानने से इन्कार कर दिया।
5. सभी के लिए समान न्याय-व्यवस्था मानी गई चाहे वह पोप ही क्यों न हो।
6. रोम के चर्च के प्रभुत्व को समाप्त करके राष्ट्रीय चर्च की शक्ति को मान्यता दी गई।
7. धर्म ग्रन्थ सबके अध्ययन के लिए हैं, किसी को उनका अध्ययन किए जाने से रोका नहीं जाना चाहिए।
8. चर्च में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए पादरियों को भी विवाह करने की अनुमति दी गई।

लूथर के ये सिद्धान्त जर्मनी में अत्यधिक लोकप्रिय हो गए। अत: प्रोटेस्टैण्ट धर्म का तीव्र विकास व कैथोलिक धर्म का विरोध होने लगा। लूथर की शिक्षाओं ने जन-साधारण, सदाचारी ईसाइयों व राष्ट्रवादियों को विशेष रूप से प्रभावित किया। अत: उसके समर्थकों ने कैथोलिक चर्च के विरुद्ध विद्रोह कर दिया व चर्च की सम्पत्ति को छीन लिया।

ऑग्सबर्ग की सन्धि—लूथरवाद के बढ़ते प्रभाव से सम्राट चार्ल्स पंचम चिन्तित हो गया तथा उसने लूथरवादियों का दमन करना प्रारम्भ कर दिया। चार्ल्स पंचम ने अन्तत: इस समस्या का निदान करने के लिए ऑग्सबर्ग में एक सभा का आयोजन किया। इस सभा में प्रोटेस्टैण्ट धर्म के अनुयायियों द्वारा अपने सिद्धान्त सम्राट के समक्ष रखे गए, किन्तु उन्हें मानने से चार्ल्स पंचम ने इन्कार कर दिया। 1546 ई० के पश्चात् प्रोटेस्टैण्ट आन्दोलन और तीव्र हो गया तथा उसने गृह-युद्ध का रूप धारण कर लिया। यह गृह-युद्ध 1555 ई० तक चलता रहा, अन्तत: 1555 ई० में प्रिंस फर्डिनेण्ड ने प्रोटेस्टैण्ट धर्म के अनुयायियों के साथ ऑग्सबर्ग की सन्धि की। इस सन्धि की प्रमुख धाराएँ अग्रलिखित थीं—

1. प्रत्येक शासक को 'उल्लेखनीय है कि जनता को नहीं) अपना व अपनी प्रजा का धर्म चुनने का अधिकार प्रदान किया गया।
2. प्रोटेस्टैण्ट धर्मनुयायियों द्वारा चर्च से छीनी गई जागीर व सम्पत्ति उन्हीं की मान ली गई।
3. किसी को भी धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा।
4. साम्राज्य की परिषद् में कैथोलिकों व प्रोटेस्टैण्टों को एक समान प्रतिनिधित्व दिया जाएगा।
5. लूथरवाद (प्रोटेस्टैण्ट) के अतिरिक्त किसी अन्य धार्मिक सम्प्रदाय को मान्यता नहीं दी गई।

इस प्रकार इस सन्धि से प्रोटेस्टैण्ट आन्दोलन जर्मनी में समाप्त हो गया। उल्लेखनीय है कि इस सन्धि से पूर्व 1546 ई० में ही लूथर की मृत्यु हो चुकी थी, किन्तु उसके सिद्धान्त जीवित थे जिन्हें अन्ततः 1555 ई० की ऑग्सबर्ग की सन्धि से मान्यता प्राप्त हो गई। इसी कारण इस सन्धि का विशेष महत्त्व है। ऑग्सबर्ग की इस सन्धि में कुछ दोष भी थे जिनके कारण कुछ समय पश्चात् प्रोटेस्टैण्ट व कैथोलिकों में पुनः संघर्ष प्रारम्भ हो गया। इस सन्धि के प्रमुख दोष निम्नलिखित थे—

1. काल्विनवादी व ज्विंग्लीवादी विचारधाराओं को मान्यता नहीं दी गई थी।
2. इस सन्धि में सम्पत्ति पर अधिकार वाली धारा ने प्रोटेस्टैण्ट व कैथोलिकों के झगड़े को और बढ़ाया।

इन दोषों के कारण जर्मनी में पुनः धार्मिक संघर्ष प्रारम्भ हो गया जो अन्ततः तीस वर्षीय युद्ध के पश्चात् वेस्टफेलिया की सन्धि से समाप्त हो गया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि धर्म-सुधार आन्दोलन का वास्तविक जन्मदाता लूथर ही था जिसने पोप एवं चर्च की व्यवस्था में व्याप्त बुराइयों की ओर सर्वप्रथम जनता का ध्यान आकर्षित किया व उसके विरुद्ध आवाज उठाई। उसके ये विचार न केवल जर्मनी ही नहीं वरन् यूरोप के अनेक देशों में भी गूँजे। इसी कारण इतिहासकारों ने उसकी अत्यन्त प्रशंसा की है। फिशर ने लूथर के विषय में लिखा है—"मार्टिन लूथर को दुनिया में अद्वितीय स्थान इसलिए नहीं मिला कि वह मौलिक था बल्कि इसलिए मिला कि वह सच्चा प्रतिनिधि था।" इसी प्रकार टौट ने लूथर के प्रभाव के विषय में लिखा है, "सैक्सनी के इस विचारक ने जोश के कारण वह सब कुछ प्राप्त कर लिया जो उसके पूर्वगामी अपनी भीरू नीति के कारण नहीं कर सके थे।"

प्र.3. इंग्लैण्ड में हुए धर्म सुधार आन्दोलनों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

Describe in detail the religious reform movements in England.

उत्तर

इंग्लैण्ड में धर्म सुधार आन्दोलन : 'एंग्लिकनवाद'
(Religious Reform Movements in England : 'Anglicanism')

'एंग्लिकनवाद' प्रोटेस्टैण्ट सम्प्रदाय का वह स्वरूप है जिसे 16वीं सदी के इंग्लैण्ड के राष्ट्रीय चर्च के लिए राज्य धर्म के रूप में प्रतिष्ठित हुआ और कालान्तर में अमेरिका में 'एपिसकोपल चर्च' के नाम से जाना गया। सोलहवीं सदी के आरम्भ में कैथोलिक धर्म का ही प्रचलन था, किन्तु इंग्लैण्ड में उदीयमान शक्तिशाली राष्ट्रीयता की भावना कैथोलिक धर्म के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप से कब तक कदम मिलाकर चलती। अतः सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ से ही इंग्लैण्ड में धार्मिक उथल-पुथल आरम्भ हो गई।

इंग्लैण्ड के शासकों ने काफी समय पूर्व से पोप का विरोध करना प्रारम्भ किया था। सर्वप्रथम विलियम ने पोप के प्रभाव को इंग्लैण्ड से समाप्त करने का प्रयास किया यद्यपि वह स्वयं कैथोलिक विचारधारा का था। विलियम के पुत्र, विलियम रूफस ने भी पोप की शक्ति को सीमित करना चाहा। हेनरी द्वितीय ने भी **'क्लेरेण्डन कोड'** (Clarendon Code) पारित करके पोप की इंग्लैण्ड से सत्ता समाप्त करनी चाही, किन्तु असफल रहा। हेनरी द्वितीय के पुत्र जॉन भी अपने प्रयत्नों में असफल रहा और पोप का प्रभाव पूर्ववत् इंग्लैण्ड में विद्यमान रहा। चौदहवीं शताब्दी में वाइक्लिफ (Wycliff) ने इंग्लैण्ड में पोप तथा गिरजाघरों की बुराइयों का प्रचार किया तथा एडवर्ड तृतीय ने भी पोप का प्रभुत्व समाप्त करना चाहा, किन्तु असफल रहा। हेनरी सप्तम तथा प्रारम्भ में हेनरी अष्टम पोप के समर्थक थें अतः 1529 ई० तक पोप का प्रभाव इंग्लैण्ड में पूर्ववत् रहा, तथापि अनेक धर्म-सुधारकों ने वाइक्लिफ के सिद्धान्तों को अपनाया। ऐसे सुधारकों में ग्रोसीन जॉन कोलेट तथा टॉमस मूर प्रमुख थे, किन्तु सर्वाधिक प्रभाव फ्रांस के इरैस्मस का हुआ। उसने अपनी पुस्तक न्यू **टेस्टामेण्ट** (New Testament) तथा **'दि प्रेज ऑफ फौली'** (The Praise of Folly) द्वारा क्रान्ति उत्पन्न कर दी। न्यू टेस्टामेण्ट का लूथर ने जर्मन भाषा तथा टाइनेडल ने अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया, किन्तु फिर भी इंग्लैण्ड के हेनरी अष्टम के शासन काल के पूर्व कैथोलिक धर्म के स्थान पर किसी नवीन धर्म का प्रचलन न हो सका।

धर्म सुधार आन्दोलन के प्रति इंग्लैण्ड के विभिन्न शासकों की नीति का वर्णन अग्र है—

TOUCH 'n PASS

1. **धर्म सुधार आन्दोलन एवं हेनरी अष्टम** (Reformation Revolution and Henry VIII)—हेनरी अष्टम के शासन प्रारम्भ होने से पूर्व ही इंग्लैण्ड में कुछ विद्वानों ने धर्म सुधार आन्दोलन प्रारम्भ करने का प्रयत्न किया था। इन विद्वानों में जॉन वाइक्लिफ, जॉन कोलेट, टॉमस मूर, इरैस्मस आदि प्रमुख हैं, किन्तु इन विद्वानों के प्रयत्नों का इंग्लैण्ड पर विशेष प्रभाव न हुआ। अपने शासन के प्रारम्भ में हेनरी अष्टम भी पोप का समर्थक एवं धर्म-सुधार आन्दोलन का विरोधी था। उसने इरैस्मस की पुस्तक **'न्यू टेस्टामेण्ट'** (New Testament) के अंग्रेजी संस्करणों को जलवा दिया। पोप ने प्रसन्न होकर हेनरी अष्टम को **'धर्म रक्षक'** (Defender of the Faith) की उपाधि प्रदान की थी।
किन्तु, कैथराइन से तलाक लेने के प्रश्न पर हेनरी अष्टम तथा पोप में विरोधाभास उत्पन्न हो गया। हेनरी अष्टम कैथराइन से तलाक लेना चाहता था, किन्तु पोप ऐसा करने के पक्ष में नहीं था। अनेक इतिहासकारों का विचार है कि कैथराइन से तलाक लेने का प्रश्न ही इंग्लैण्ड में धर्म सुधार आन्दोलन का कारण था, किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं था। कैथराइन से तलाक लेने के प्रश्न ने धर्म-सुधार आन्दोलन के लिए अवसर प्रदान किया, किन्तु वह इंग्लैण्ड में धर्म-सुधार आन्दोलन का कोई एकमात्र कारण नहीं था।
हेनरी अष्टम ने पोप से नाराज होने के पश्चात् उसके विरुद्ध कार्य प्रारम्भ किया। अनेक नियम पारित करके हेनरी अष्टम इंग्लैण्ड के चर्च का सर्वोच्च अधिकारी बन गया तथा पोप से पूर्णत: सम्बन्ध समाप्त कर लिए। पोप के इंग्लैण्ड में प्रमुख अड्डे मठ थे, जिनको हेनरी अष्टम ने अत्यन्त कुशलतापूर्वक बन्द कराया व उनकी सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार यद्यपि हेनरी अष्टम ने धर्म-सुधार आन्दोलन में भाग लिया, किन्तु लूथर द्वारा संचालित आन्दोलन व हेनरी अष्टम की नीतियों में पर्याप्त अन्तर था। लूथर का उद्देश्य कैथोलिक धर्म में व्याप्त कुरीतियों एवं बुराइयों को दूर करना था, जबकि हेनरी अष्टम का मुख्य उद्देश्य इंग्लैण्ड में पोप के प्रभाव को समाप्त करना था। इस प्रकार लूथर द्वारा संचालित आन्दोलन का स्वरूप धार्मिक व हेनरी अष्टम का राजनीतिक था।
2. **धर्म-सुधार आन्दोलन एवं एडवर्ड षष्टम** (Religious Reform and Edward VI)—हेनरी अष्टम की 1547 ई० में मृत्यु हो गई। हेनरी अष्टम के उपरान्त उसका पुत्र एडवर्ड षष्टम इंग्लैण्ड का शासक बना। राजगद्दी पर आसीन होते समय वह अल्पवयस्क था, अत: 1547 ई० से 1549 ई० तक उसके मामा ड्यूक ऑफ सोमरसेट तथा 1549 ई० से एडवर्ड की मृत्यु (1553 ई०) तक ड्यूक ऑफ नार्थम्बरलैण्ड ने उसके संरक्षक के रूप में कार्य किया।
   (i) **सोमरसेट की नीति**—सोमरसेट प्रोटेस्टैण्ट मत का समर्थक था, किन्तु प्रारम्भ में उसने धार्मिक स्वतन्त्रता की नीति का पालन किया। उसने राजद्रोह नियम व हेनरी अष्टम के शासनकाल में पारित छह धाराओं वाला कानून समाप्त कर दिया। अत: यूरोप से अनेक धर्म-प्रचारक इंग्लैण्ड आए। सोमरसेट ने क्रैनमर की सहायता से गिरजाघरों में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न किया। गिरजाघरों से चित्रों, मूर्तियों तथा स्मारकों को हटाया गया। कैथोलिकों के प्रार्थना भवनों (Chantries) को नष्ट किया गया। 1549 ई० में क्रैनमर ने एक नयी प्रार्थना पुस्तक 'English Book of Common Prayer' तैयार की। यह पूर्णत: प्रोटेस्टैण्ट धर्म के अनुरूप व अंग्रेजी में लिखी गई। एकरूपता अधिनियम (Act of Uniformity) के द्वारा उसे प्रत्येक पादरी के लिए अनिवार्य बनाया गया।
   (ii) **नार्थम्बरलैण्ड की नीति**—नार्थम्बरलैण्ड भी प्रोटेस्टैण्ट था। उसने 1552 ई० में द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक निकाली जो पहली प्रार्थना-पुस्तक से भी अधिक प्रोटेस्टैण्ट सिद्धान्तों पर आधारित थी। नार्थम्बरलैण्ड ने 42 धाराओं वाला एक कानून पारित किया जो पूर्णत: प्रोटेस्टैण्ट धर्म के पक्ष में था।
   इस प्रकार एडवर्ड षष्टम के शासनकाल (1547-53 ई०) में धर्म-सुधार आन्दोलन की प्रगति हुई।
3. **धर्म-सुधार आन्दोलन एवं मैरी ट्यूडर** (Religious Reform Movement and Mary Tudor)—मैरी ट्यूडर कट्टर कैथोलिक थी, अत: उसने अपने शासनकाल में धर्म-सुधार आन्दोलन का विरोध किया व इंग्लैण्ड में पुन: पोप की खोई हुई प्रभुसत्ता एवं कैथोलिक धर्म को प्रतिस्थापित करने का प्रयत्न किया। मैरी ने कैथोलिक एवं पोप को प्रसन्न करने के लिए, हेनरी अष्टम तथा एडवर्ड षष्टम के शासनकाल में पारित समस्त धर्म सम्बन्धी नियमों को समाप्त कर दिया। इतना ही नहीं, मेरी ने प्रोटेस्टैण्ट लोगों पर अत्यधिक अत्याचार किए। अनेक व्यक्ति भयभीत होकर प्रोटेस्टैण्ट धर्म को त्यागने पर विवश हुए। प्रोटेस्टैण्ट नेताओं क्रेनमर, रिडले, लेटीमर आदि को जिन्दा जला दिया गया। प्रोटेस्टैण्टों पर किए गए अत्याचारों के कारण मैरी ट्यूडर को 'खूनी मेरी' (Bloody Mary) कहा गया है।

TOUCH 'n PASS

इस प्रकार मेरी के शासनकाल (1553-1558 ई०) में 'धर्म-सुधार आन्दोलन' (Religion Reformation Revolution) को इंग्लैण्ड में गम्भीर क्षति पहुँची।

4. **धर्म-सुधार आन्दोलन एवं एलिजाबेथ** (Religious Reform Movement and Elizabeth)—मैरी की मृत्यु के पश्चात् 1558 ई० में ऐन बोलेन की पुत्री **एलिजाबेथ** इंग्लैण्ड की शासिका बनी। एलिजाबेथ अत्यन्त व्यवहार-कुशल व बुद्धिमान स्त्री थी। एलिजाबेथ को धार्मिक मामलों में विशेष रुचि नहीं थी। उसने कैथोलिक व प्रोटेस्टैण्ट धर्म के अनुयायियों को अत्याचार करते देखा था। एलिजाबेथ व्यक्तिगत कारणों से पोप की विरोधी थी क्योंकि पोप ने उसे हेनरी अष्टम की अवैध सन्तान घोषित किया था। इसके अतिरिक्त पोप व उसके कैथोलिक समर्थक एलिजाबेथ के स्थान पर मेरी स्काट को इंग्लैण्ड की शासिका बनाना चाहते थे। अत: एलिजाबेथ का झुकाव प्रोटेस्टैण्ट धर्म की ओर था। एलिजाबेथ एक कुशल शासिका थी, अत: देश को धार्मिक विवादों से बचाने के लिए उसने मध्यम मार्ग को अपनाया। एलिजाबेथ ने इंग्लैण्ड को पोप के प्रभुत्व से बचाने हेतु **सर्वोच्चता नियम** (Act of Supremacy) पारित कराया। इस अधिनियम के द्वारा पोप का प्रभाव इंग्लैण्ड से समाप्त हुआ तथा एलिजाबेथ चर्च की सर्वोच्च अधिकारी बन गई। उसने कैथोलिकों को प्रसन्न करने के लिए 'चर्च के प्रधान' के स्थान पर **'चर्च की शासिका'** की उपाधि धारण की। एलिजाबेथ ने एडवर्ड षष्टमकालीन द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक में से कैथोलिकों को अत्यधिक चुभने वाली धाराएँ भी निकाल दीं। रविवार को प्रत्येक व्यक्ति के लिए चर्च में प्रार्थना करना आवश्यक था। ऐसा न करने वाले को प्रति रविवार एक शिलिंग दण्ड देना पड़ता था। इस प्रकार एलिजाबेथ ने प्रोटेस्टैण्ट एवं कैथोलिक धर्म के मध्य का मार्ग अपनाते हुए इंग्लैण्ड में शान्ति स्थापित करने का प्रयास किया। एलिजाबेथ का यह धार्मिक समझौता अत्यधिक उदार था। एलिजाबेथ ने इस धार्मिक समझौते के आधार पर एक नया चर्च बनाया जिसे **'एंग्लिकन चर्च'** (Anglican Church) कहा गया। यह एंग्लिकन चर्च प्रोटेस्टैण्ट व कैथोलिक विचारधाराओं का सम्मिश्रण था। अत: इससे अधिकांश लोग सन्तुष्ट हो गए।

प्र.4. स्विट्जरलैण्ड में धर्म सुधार आन्दोलन का वर्णन कीजिए।
Describe the religion reformation movement in Switzerland.

उत्तर

स्विट्जरलैण्ड में धर्म सुधार आन्दोलन
(Religion Reformation Movement in Switzerland)

स्विट्जरलैण्ड में धर्म सुधार आन्दोलन का जो स्वरूप निखर कर सामने आया, वह लूथरवाद से थोड़ा भिन्न था। इस परिप्रेक्ष्य में ज्विंग्ली (Zwingli) एवं काल्विन (Calvin) नामक धर्म सुधारकों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि स्विट्जरलैण्ड में काल्विन के विचारों जो कि काल्विनवाद के नाम से जाने जाते हैं कि पृष्ठभूमि ज्विंग्ली ने तैयार की थी।

ज्विंग्ली (Zwingli)—ज्विंग्ली का जन्म 1484 ई. में स्विट्जरलैण्ड के टोगेनबर्ग नामक प्रान्त में एक समृद्ध कृषक के घर में हुआ था। उसने वियना एवं बासेल के विश्वविद्यालयों में शिक्षा अर्जित की थी। शिक्षा ग्रहण करते समय से ही उसकी रुचि प्राचीन साहित्य एवं मानववाद की ओर उत्पन्न हुई। यह ठीक है कि वह एक कैथोलिक पादरी था, किन्तु उसने चर्च के दोषों एवं अपने देश की राजनीतिक विसंगतियों एवं गलत निर्णयों का जमकर विरोध किया। ज्विंग्ली को अपने विचारों का पूर्ण प्रसार करने का अवसर उस समय प्राप्त हुआ, जब वह कैथेड्रल में धर्मोपदेशक के पद पर था। उसने पोप की सर्वोच्चता के सिद्धान्त को अस्वीकार करते हुए यह स्पष्ट किया कि जीवन-यापन की वास्तविक मार्गदर्शक तो बाइबिल है। इसके अतिरिक्त उसने सामूहिक प्रार्थना, मठों की व्यवस्था, पापों से शुद्धि, आदि कैथोलिक सिद्धान्तों की कड़ी आलोचना की। 1525 ई. में उसने कैथोलिक चर्च से अपना सम्बन्ध तोड़ लिया एवं एक नए प्रोटेस्टैण्ट चर्च की स्थापना की, लूथर से उसके विचार 'यूकारिष्ट' (ईसा के पवित्र भोजन) के प्रश्न पर टकराए, लूथर का मानना था कि 'यूकारिष्ट' की क्रिया में ईसा को अर्पित रोटी एवं शराब ईसा की भौतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति के रूप में रूपान्तरित हो जाते हैं, ज्विंग्ली ने इस क्रिया को ईसा की मृत्यु एवं कार्यों का संकेत मात्र माना। इतिहासकार हैज के शब्दों में, 'सम्भवत: स्विस सुधारक की तत्त्वमीमांसा की सर्वाधिक विशिष्ट बात उसका यह सिद्धान्त था कि ईसा का अन्तिम भोजन (यूकारिष्ट की क्रिया) एक चमत्कार नहीं है अपितु साधारण स्मृति स्वरूप है।'

ज्विंग्ली के विचार स्विट्जरलैण्ड के अनेक प्रान्तों में फैलने लगे, किन्तु स्विट्जरलैण्ड के वन प्रधान पांच प्रान्तों ने कैथोलिक मत को नहीं त्यागा। फलत: स्विट्जरलैण्ड में 1529 ई. में गृह युद्ध छिड़ गया। एक ओर ज्विंग्लीवादी थे तो दूसरी ओर कैथोलिक।

TOUCH 'n' PASS

गृहयुद्ध में ज्विंग्ली मारा गया। उसकी मृत्यु के बाद 1531 ई. में दोनों दलों में 'कापेल की सन्धि' हुई। इस सन्धि के अनुसार प्रत्येक कैण्टन को अपना धर्म निर्धारित करने का अधिकार प्रदान कर दिया गया।

जॉन काल्विन (John Calvin)—जॉन काल्विन जिसने ज्विंग्ली द्वारा संचालित सुधार आन्दोलन को पुनर्जीवित कर उसे अन्तर्राष्ट्रीय प्रोटेस्टेण्ट धर्म का स्वरूप प्रदान किया, का जन्म 1509 ई. में फ्रांस के नीओ नामक नगर में हुआ। उसने पेरिस के विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् कानून की शिक्षा अर्लेआं विश्वविद्यालय में प्राप्त की। इस समय फ्रांस में धार्मिक उथल-पुथल चल रही थी जिसका प्रभाव काल्विन पर भी पड़ा और वह 1533 ई. में प्रोटेस्टैण्ट बन गया। फ्रांस में चल रही धार्मिक उथल-पुथल को शान्त करने के उद्देश्य से फ्रांस के शासक फ्रांसिस प्रथम ने प्रोटेस्टैण्टों का कुचलना आरम्भ कर दिया। अत: जॉन काल्विन को भागकर स्विट्जरलैण्ड के वासेल नगर में आना पड़ा। यहां पर उस पर ज्विंग्ली के धार्मिक आन्दोलन का व्यापक प्रभाव पड़ा। 1536 ई. में उसने 'दि इन्स्टीट्यूट्स ऑफ क्रिश्चियन रिलीजन' (The Institutes of Christian Religion) नामक पुस्तक की रचना की जिसमें उसने प्रोटेस्टैण्ट विचारधारा के सिद्धान्तों का समन्वित संकलन किया।

काल्विन ने बाईबिल की सर्वोच्च सत्ता एवं ईश्वर के सम्मुख सभी प्राणियों की असहाय स्थिति को स्वीकार किया। ईश्वर के सम्बन्ध में उसके विचार ओल्ड टेस्टामेण्ट पर आधारित थे। काल्विन ने 'पूर्व निर्धारित भाग्य के सिद्धान्त' पर बल दिया। इस सिद्धान्त के अनुसार उसका मानना था कि मानव का भाग्य पूर्व निर्धारित होता है। ईश्वर ही मनुष्य की आत्मा की मुक्ति का कर्त्ता-धर्ता है। वह प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था, पवित्र धार्मिक आचरण द्वारा व्यक्ति व राजनीति तथा समाज का पुनर्निर्माण करने का पक्षपाती था।

1536 ई. में जॉन काल्विन जेनेवा गया, जहां जनता ने उसे प्रमुख धर्म-उपदेशक के रूप में मान्यता दी। शीघ्र ही उसके निर्देशन में उसके अनुयायियों ने वहां पर काल्विनवादी अधिनायकतन्त्र स्थापित कर लिया। नैतिकता एवं कठोर अनुशासन पर विशेष बल दिया गया। इतिहासकार हैज के शब्दों में, 'काल्विन के नेतृत्व में जेनेवा की सरकार एक विचित्र धर्म प्रभावित संस्था थी, जिसका राजनीतिक एवं धार्मिक अधिनायक स्वयं वह था। काल्विन की अधिनायकता में जेनेवा सम्पूर्ण यूरोप में प्रोटेस्टैण्ट धर्म सुधार का प्रमुख केन्द्र बन गया। काल्विनवाद जेनेवा तक ही सीमित नहीं रहा। शीघ्र ही यह यूरोपीय महाद्वीप में सुधारित धर्म (Reformed Faith) के नाम से प्रसारित हुआ। हॉलैण्ड एवं स्कॉटलैण्ड में काल्विनवाद का द्रुतगति से विकास हुआ। विकास के इस क्रम में काल्विनवाद के महत्त्वपूर्ण परिणाम सामने आए। काल्विनवाद ने प्रोटेस्टैण्ट सम्प्रदाय के रूप में उस समय कैथोलिक सम्प्रदाय की शक्ति का सामना किया जबकि लूथरवाद अधिक उपयुक्त नजर नहीं आ रहा था। काल्विनवाद के कठोर अनुशासन एवं नैतिकता सम्बन्धी नियमों ने ऐसे योग्य चरित्रों को जन्म दिया जो कि कैथोलिक सम्प्रदाय का प्रतिरोध करने में सक्षम थे। यही नहीं, काल्विनवाद ने लोकतन्त्रात्मक पद्धति का मार्ग खोला। काल्विनवाद ने चर्च की शासन पद्धति की जो रूपरेखा सामने रखी वह लोकतन्त्रात्मक पद्धति के पर्याप्त निकट थी। नीदरलैण्ड की जनता ने फिलिप द्वितीय के भ्रष्ट शासन का विरोध कर, उच्च गणतन्त्र की नींव डालने में जो सफलता प्राप्त की नि:सन्देह वह काल्विनवाद का ही प्रभाव था। स्कॉटलैण्ड में नाक्स द्वारा 'प्रेसबीटेरियनवाद' की स्थापना हुई। यह स्कॉटलैण्ड की फ्रांसीसी प्रभुत्व की समाप्ति के दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना थी। इस प्रकार काल्विनवाद ने स्कॉटलैण्ड में प्रेसबीटेरियन के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इंग्लैण्ड भी काल्विनवाद के प्रभाव से अछूता नहीं रहा। इंग्लैण्ड में प्यूरिटन लोगों द्वारा स्टुअर्ट शासकों की निरंकुशता का प्रबल विरोध काल्विनवाद का ही प्रभाव था। इंग्लैण्ड की 'रक्तहीन क्रान्ति' की पृष्ठभूमि तो काल्विनवाद ने ही तैयार की। फ्रांस में भी ह्यूग-नोट्स ने दीर्घकाल तक निरंकुश शासकों का विरोध जारी रखा। आर्थिक क्षेत्र में काल्विनवादी विचारधारा ने पूंजीवाद के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। सांस्कृतिक दृष्टि से काल्विनवाद के नैतिकता सम्बन्धी एवं तर्क-वितर्क को आधार मानकर चलने वाले सिद्धान्त नि:सन्देह स्वतन्त्र विचारों की अभिव्यक्ति एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थे।

लूथर एवं काल्विन के सिद्धान्तों में तुलना
(Comparison between Principles of Luther and Calvin)

लूथर एवं काल्विन के सिद्धान्तों में अनेक समानताएँ होने पर भी कुछ अन्तर थे, जिनमें से प्रमुख निम्नवत् हैं—

1. लूथर के सिद्धान्त राष्ट्रीय, किन्तु काल्विन के सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय थे।
2. काल्विनवाद में व्यक्ति की चारित्रिक पवित्रता पर विशेष बल दिया गया था, लूथरवाद में नहीं।
3. लूथर ने कैथोलिकों के सात संस्कारों में से केवल जन्म, ईसामसीह के भोज व प्रमाणीकरण को स्वीकार किया, किन्तु कॉल्विन ने केवल जन्म व भोज को ही स्वीकार किया।

4. लूथर ने ईश्वर के प्रति भक्ति व श्रद्धा को ही मुक्ति का एकमात्र मार्ग माना, किन्तु काल्विन भाग्यवादी था। उसके अनुसार प्रत्येक को उसके भाग्य के अनुरूप ही फल मिलता है।
5. लूथर ने नए टेस्टामेण्ट का समर्थन किया जबकि काल्विन पुराने टेस्टामेण्ट का समर्थक था।
6. लूथरवाद राज्याश्रित धर्म था जबकि काल्विन का धर्म सैन्यवादी था।
7. काल्विनवाद में चर्च का संगठन लोकतन्त्रात्मक था जबकि लूथरवाद में ऐसा नहीं था।

प्र.5. धर्म-सुधार आन्दोलन की प्रकृति एवं इसके परिणामों का वर्णन कीजिए।
Describe the nature and results of the religion reformation movement.

उत्तर

धर्म-सुधार आन्दोलन की प्रकृति
(Nature of the Religion Reformation Movement)

इंग्लैण्ड में हुए धर्म-सुधार आन्दोलन एवं यूरोप के अन्य राष्ट्रों के धर्म-सुधार आन्दोलन की प्रकृति में पर्याप्त अन्तर था। इंग्लैण्ड में हुआ आन्दोलन, यूरोप के राष्ट्रों के आन्दोलनों के समान, मात्र धार्मिक न था, वरन् इसके राजनीतिक एवं सामाजिक पहलू भी थे। यूरोप के अन्य देशों में धर्म-सुधार की मूल भावना का जन्म जनता में हुआ था जबकि इंग्लैण्ड में यह राजाओं से प्रारम्भ हुआ। इंग्लैण्ड में हेनरी अष्टम पोप के प्रभाव को समाप्त कर चर्च को अपने अधीन लाना चाहता था। उसका उद्देश्य कैथोलिक धर्म में सुधार करना न था। इस प्रकार, जर्मनी तथा यूरोप के अन्य देशों में यह एक धार्मिक आन्दोलन था, किन्तु इंग्लैण्ड में हुआ आन्दोलन प्रमुखतः हेनरी अष्टम तथा पोप की पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता का परिणाम था तथा इसमें धार्मिक के अतिरिक्त अन्य कारण भी निहित थे। अतः अन्त में यह कहा जा सकता है कि इंग्लैण्ड में धर्म-सुधार आन्दोलन वास्तव में, एक व्यक्तिगत एवं राजनीतिक आन्दोलन था, जिसको धार्मिकता का रंग एवं आधार देकर सफल बनाया गया।

धर्म-सुधार आन्दोलन के परिणाम
(Results of the Religion Reformation)

धर्म सुधार आन्दोलन अत्यधिक महत्त्वपूर्ण था। इसके यूरोप पर निम्नलिखित प्रभाव हुए—

1. **प्रोटेस्टैण्ट धर्म का जन्म एवं प्रभाव** (Birth and effects of Protestant Religion)—धर्म-सुधार आन्दोलन का यूरोप पर व्यापक प्रभाव पड़ा। धर्म-सुधार आन्दोलन सफल होने से पूर्व यूरोप में केवल एक कैथोलिक धर्म था, किन्तु इसके पश्चात् प्रोटेस्टैण्ट धर्म का प्रादुर्भाव हुआ और दोनों धर्मों के संघर्ष के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड को तीसवर्षीय युद्ध का सामना करना पड़ा। यही नहीं, यूरोप धर्म-सुधार आन्दोलन के परिणामस्वरूप दो धार्मिक गुटों में विभाजित हो गया। धार्मिक आन्दोलन के कारण ही इंग्लैण्ड में स्टुअर्ट शासक और उनकी संसद के सम्बन्ध मधुर न रह सके।
2. **इंग्लैण्ड का विकास** (Development of England)—धर्म-सुधार आन्दोलन ने इंग्लैण्ड के विकास में सहयोग दिया। इसके पूर्व पोप न केवल धार्मिक अपितु राजनीतिक मामलों में भी हस्तक्षेप करता था, जिसके कारण विकास में बाधा पड़ती थी, पोप अमरीका में, पुर्तगाल एवं स्पेन को ही व्यापार प्रदान करने की अनुमति प्रदान करता था। इंग्लैण्ड ने भी धर्म-सुधार आन्दोलन के पश्चात् अमरीका में अपने उपनिवेश स्थापित किए तथा यूरोप में स्वेच्छा से सम्बन्ध स्थापित किए।
3. **राजा की शक्ति में वृद्धि** (Increase in the Powers of the King)—धर्म-सुधार आन्दोलन के संवैधानिक परिणाम भी हुए। सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव चर्च का पूर्ण रूप से राजा के अधीन हो जाना था जिससे राजा के सम्मान तथा पद की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। इससे राजा की व्यक्तिगत शक्ति में वृद्धि हुई तथा राष्ट्रीय भावना प्रबल हुई। गिरजाघरों का प्रशासन, जिसमें विभिन्न पदाधिकारियों की नियुक्ति, झगड़ों का फैसला आदि सम्मिलित थे, राजा के अधिकार में हो गए। गिरजाघर के अधिकारी अब राजा का विरोध नहीं कर सकते थे। लार्ड सभा पर भी धर्म-सुधार का प्रभाव पड़ा। मठों के समाप्त होने से मठों के अध्यक्षों का लार्ड सभा में स्थान स्वतः समाप्त हो गया। राजा की शक्ति में वृद्धि होने का स्पष्ट उदाहरण, हेनरी अष्टम के शासनकाल में उत्तरी विद्रोहों को दबाने के लिए विभिन्न परिषदों की स्थापना किया जाना है। एलिजाबेथ के शासन में हाई कमीशन न्यायालय की स्थापना की गयी, जो धार्मिक विद्रोहों के मामलों में दण्ड देता था। यह ट्यूडर शक्ति को बढ़ाने का ही एक अंश था। धर्म-सुधार आन्दोलन एवं उससे सम्बन्धित विद्रोहों ने, अपनी शक्ति बढ़ाने में ट्यूडर शासकों को पूर्ण सहयोग दिया।

TOUCH 'n PASS

4. **संसद पर प्रभाव** (Effects on Parliament)—धर्म-सुधार आन्दोलन का इंग्लैण्ड की संसद पर भी प्रभाव पड़ा। ट्यूडर शासकों ने संसद को साझेदारी में प्रयोग करते हुए, अपनी शक्ति में निरन्तर वृद्धि की। इस साझेदारी, जिसके द्वारा संसद को धर्म-सुधार आन्दोलन का यन्त्र बनाया गया था, का प्रभाव संसद पर भी हुआ। संसद को राज्य के प्रमुख कार्य करने का अनुभव प्राप्त हुआ जिससे उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि हुई। संसद को अपनी शक्ति व अधिकारों का भी अनुभव हुआ जिसका प्रमाण, एलिजाबेथ के शासनकाल में संसद की जागरूकता व स्टुअर्ट-शासक जेम्स को चुनौती के रूप में मिलता है। धर्म-सुधार आन्दोलन का संसद पर एक अन्य प्रभाव लॉर्ड सभा में मठाधीशों (Abbots) की संस्था का कम होना था। जिससे लॉर्ड सभा में धार्मिक मत का प्रभाव भी कम हुआ।
5. **सामाजिक प्रभाव** (Social Effects)—इसने सामाजिक गुटों के सन्तुलन में परिवर्तन किया। एक ओर चर्च के अधिकारियों के धन व प्रभाव में कमी आयी, दूसरी ओर भूपति (Gentry) वर्ग का उत्थान हुआ जिसने सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। धर्म-सुधार आन्दोलन का एक अन्य प्रमुख प्रभाव भिखारियों व चोरों की संख्या में वृद्धि होना था। मठों के समाप्त होने से ऐसा हुआ था, क्योंकि मठ गरीबों के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे थे। मठों में गरीबों को शरण एवं शिक्षा दी जाती थी, किन्तु मठों के समाप्त होने से ये गरीब असहाय हो गए, जिनसे अपराधों में वृद्धि हुई।
6. **आर्थिक सुधार** (Economic Reforms)—धर्म-सुधार आन्दोलन का महत्त्वपूर्ण आर्थिक प्रभाव इंग्लैण्ड पर पड़ा। मठों के समाप्त होने से उनकी अपार सम्पत्ति पर राज्य का अधिकार हो गया। इसके अतिरिक्त मठों को दी जाने वाली वार्षिक सहायता तथा पोप को भेजे जाने वाली धनराशि तथा उपहार आदि बन्द हो गए। इस प्रकार बची धनराशि का राष्ट्रीय विकास के लिए उपयोग किया गया।
7. **शिक्षा पर प्रभाव** (Effects on Education)—शिक्षा का भी धर्म-सुधार आन्दोलन से प्रसार हुआ, अनेक विद्यालयों की स्थापना की गयी। राष्ट्रीय भाषा की महत्ता में वृद्धि हुई। बाईबिल का अनेक भाषाओं में अनुवाद किया गया। साहित्य एवं शिक्षा की उन्नति के लिए अनेक समितियों की स्थापना की गयी। शिक्षा का कार्य अब चर्च के स्थान पर सामाजिक संस्थाओं द्वारा किया जाने लगा।
8. **गिरजाघरों की बुराइयों को दूर करने का प्रयास** (Efforts to remove the ills of the Church)—पोप ने धार्मिक क्षेत्र में अनेक सुधार कर कैथोलिक धर्म को सशक्त बनाने का पुन: प्रयास किया। उसने स्वयं गिरजाघरों में व्याप्त बुराइयों को स्वीकार किया तथा उन्हें दूर करने का प्रयास किया।

इस प्रकार धर्म-सुधार आन्दोलन ने, राजा की शक्ति, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और सांविधानिक स्थितियों को प्रभावित किया तथा जनसाधारण पर व्यापक प्रभाव डालकर, यूरोप के देशों को सुदृढ़ एवं शक्तिशाली बनाने में पर्याप्त सहायता की।

प्र.6. एलिजाबेथ और धर्म सुधार विरोधी आन्दोलन का वर्णन कीजिए।
Describe the Elizabeth and anti religion reform movement.

उत्तर

एलिजाबेथ और धर्म सुधार विरोधी आन्दोलन
(Elizabeth and Anti Religion Reform Movement)

एलिजाबेथ तत्त्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए कैथोलिक धर्म अपनाने को तैयार न थी, क्योंकि यदि वह ऐसा करती तो इंग्लैण्ड पर पोप का प्रभुत्व स्थापित हो जाता तथा इंग्लैण्ड की जनता जो कि मुख्यत: प्रोटेस्टैण्ट थी, इसे पसन्द न करती और तब उसे और भी गम्भीर परिस्थितियों का सामना करना पड़ता, परन्तु वह अपने शासन के प्रारम्भ में ही जैसुइट संगठन से सामना भी करना नहीं चाहती थी। अत: एलिजाबेथ लम्बे समय तक फिलिप अथवा फ्रांस के किसी राजकुमार से विवाह करने का आश्वासन देती रही यद्यपि विवाह उसने जीवन पर्यन्त नहीं किया। एलिजाबेथ अपनी कूटनीति का सहारा लेते हुए फ्रांस और स्पेन की शत्रुता से लाभ उठाती रही, अपने विवाह को उसने राजनीतिक अस्त्र के रूप में प्रयोग किया तथा लम्बे समय तक वह इसके द्वारा स्पेन की शत्रुता से बची रही, किन्तु सदैव के लिए इस संकट को टाल नहीं सकी और शीघ्र ही उसे जैसुइट द्वारा चलाए गए आन्दोलन के कारण अनेक संकटों एवं संघर्षों का सामना करना पड़ा। इस आन्दोलन के साथ एलिजाबेथ के संघर्ष को अध्ययन की सुविधा के लिए चार भागों में विभक्त कर सकते हैं—

1. स्कॉटलैण्ड का संकट (1558-1568 ई.),
2. एलिजाबेथ के विरुद्ध षड्यन्त्र एवं विद्रोह (1568-1587 ई.),

TOUCH 'n' PASS

3. स्पेन से संघर्ष (1588 ई.),
4. एलिजाबेथ का अन्तिम समय (1589-1603 ई.)।

1. **स्कॉटलैण्ड का संकट** (The Scottish Problem)—एलिजाबेथ के लिए सर्वप्रथम स्कॉटलैण्ड संकट का कारण बना। स्कॉटलैण्ड की शासिका मैरी स्वयं को इंग्लैण्ड के सिंहासन की अधिकारिणी समझती थी। मेरी स्काट कैथोलिक धर्म की अनुयायी थी, अत: उसे समस्त कैथोलिक राज्यों का समर्थन प्राप्त था। एलिजाबेथ की कैथोलिक जनता भी एलिजाबेथ के स्थान पर मेरी को इंग्लैण्ड की रानी बनाना चाहती थी। अत: मैरी को उनका समर्थन भी प्राप्त था। मैरी का विवाह फ्रांस के राजा के साथ हुआ था तथा उसने अपने समस्त अधिकार अपने पति को दे दिए थे जिससे मैरी की मृत्यु हो जाने पर वह स्कॉटलैण्ड का राजा तथा इंग्लैण्ड के सिंहासन का उम्मीदवार हो सकता था। अत: एलिजाबेथ के लिए आवश्यक था कि वह अत्यन्त कुशलतापूर्वक स्कॉटलैण्ड की समस्या का समाधान करे।
इस संकट काल में एलिजाबेथ ने फ्रांस और स्पेन की पारस्परिक शत्रुता से लाभ उठाया। स्पेन का शासक जानता था कि यदि मैरी का इंग्लैण्ड के सिंहासन पर अधिकार हो गया तो इंग्लैण्ड, फ्रांस और स्कॉटलैण्ड एक हो जाएंगे और उसके शत्रु फ्रांस की शक्ति में असीमित वृद्धि हो जाएगी, अत: वह इस प्रकार का गठबन्धन होते नहीं देख सकता था। एलिजाबेथ ने स्पेन की इस विवशता का लाभ उठाया। एलिजाबेथ जानती थी कि स्पेन मैरी स्काट को कभी भी इंग्लैण्ड की शासिका न होने देगा अत: उसने स्पेन के राजा को यह प्रलोभन दिया कि वह उससे विवाह कर लेगी। स्पेन के शासक फिलिप ने उपर्युक्त दो कारणों से एलिजाबेथ का समर्थन किया। स्पेन के शासक की सहायता के अतिरिक्त एजिलाबेथ को सर्वाधिक सहायता स्कॉटलैण्ड के प्रोटेस्टैण्ट व्यक्तियों से हुई। स्कॉटलैण्ड ही यूरोप में एक ऐसा राज्य हुआ जिसने अपने शासक के विरुद्ध प्रोटेस्टैण्ट धर्म को स्वीकार करने में सफलता प्राप्त की।
जिस समय एलिजाबेथ इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर आसीन हुई उस समय तक स्कॉटलैण्ड में कैथोलिक तथा प्रोटेस्टैण्ट वर्ग में संघर्ष प्रारम्भ हो चुका था। अनेक प्रोटेस्टेण्ट धर्म-प्रचारक अपने धर्म का प्रचार कर रहे थे। इन प्रचारकों में सर्वाधिक प्रमुख जॉन नॉक्स (John Knox) नामक व्यक्ति था। जिसके विषय में कहा जाता था, 'एक घण्टे में उस व्यक्ति की आवाज हमको इतना जीवन प्रदान करती है जितना कि छह सौ बिगुल लगातार हमारे कानों पर बजने के बाद भी नहीं दे सकते।' उसकी कब्र पर मोर्टन द्वारा कहे गए शब्द भी उसकी महत्ता को सिद्ध करते हैं। मोर्टन ने कहा था—'यहां वह व्यक्ति लेटा हुआ है जो किसी व्यक्ति से कभी नहीं डरा। जॉन नॉक्स ने जनता को मैरी की माता मेरी ऑफ गाइस (Mary of Guise) जो मैरी की संरक्षिका के रूप में शासन कर रही थी, के विरुद्ध भड़काया तथा शीघ्र ही अपने आन्दोलन की गति में तीव्रता लाते हुए स्कॉटलैण्ड को गृहयुद्ध की स्थिति में ला खड़ा किया। स्कॉटलैण्ड के प्रोटेस्टैण्ट वर्ग को यह आशा थी कि इंग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ उनकी सहायता करेगी, परन्तु एलिजाबेथ ने फ्रांस के भय से ऐसा न किया। एलिजाबेथ का विचार था कि यदि उसने स्कॉटलैण्ड के प्रोटेस्टैण्ट लोगों की कोई सहायता की तो फ्रांस उससे अप्रसन्न हो जाएगा तथा सम्भव था कि फ्रांस इंग्लैण्ड के कैथोलिकों को सहायता करने लगता।
स्कॉटलैण्ड के इस गृह-युद्ध में प्रारम्भ में प्रोटेस्टैण्ट लोगों को सफलता मिली। प्रोटेस्टेण्ट जनता ने चर्च एवं मठों की सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया तथा एडवर्ड षष्टमकालीन 'द्वितीय प्रार्थना पुस्तक' का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया। इसी समय प्रोटेस्टेण्ट वर्ग के दुर्भाग्य से फ्रांस के शासक हेनरी द्वितीय की मृत्यु हो गयी और मैरी का प्रति फ्रांसिस फ्रांस का शासक बना अत: स्कॉटलैण्ड की सहायतार्थ फ्रांस की सेना आ पहुँची तथा उन्होंने स्कॉटलैण्ड के प्रमुख बन्दरगाह लीथ पर अधिकार कर लिया। फ्रांस के हस्तक्षेप से ऐसा प्रतीत होने लगा कि प्रोटेस्टैण्ट जनता का प्रयत्न असफल हो जाएगा। अत: एलिजाबेथ ने अब हस्तक्षेप करना आवश्यक समझा और अंग्रेजी नौ सेना ने लीथ पर आक्रमण कर 1559 ई. में लीथ पर अधिकार कर फ्रांस से सहायता मिलने का रास्ता बन्द कर दिया। 1506 ई. के अप्रैल माह में अंग्रेजी सेना ने फ्रांस की सेना को पूर्ण रूप से परास्त कर उन्हें स्कॉटलैण्ड छोड़ने पर विवश किया। इस प्रकार अंग्रेज सेना की सहायता से प्रोटेस्टैण्ट वर्ग की विजय हुई, अत: अब एलिजाबेथ को स्कॉटलैण्ड से भयभीत होने की आवश्यकता न रही। 1560 ई. में ही एलिजाबेथ तथा स्कॉटलैण्ड के प्रोटेस्टैण्ट वर्ग के पक्ष में दो घटनाएं और हुईं-प्रथम, मैरी ऑफ गाइज (Mary of Guise) की मृत्यु होना और द्वितीय, दिसम्बर 1560 ई. में मैरी के पति फ्रांसिस की मृत्यु होना था। मैरी अब फ्रांस की रानी न रही तथा उसके कोई सन्तान न होने के कारण फ्रांस पर से उसका अधिकार समाप्त हो गया।

TOUCH 'n PASS

फ्रांस में अपना प्रभाव समाप्त होने पर मेरी स्कॉटलैण्ड आ गयी, परन्तु अब परिस्थितियाँ उसके विपरीत थीं। वह स्वयं कैथोलिक थी तथा उसकी प्रजा प्रोटेस्टेण्ट। जनता उससे अप्रसन्न थी। मैरी यद्यपि अत्यन्त चालाक स्त्री थी तथापि अपनी स्थिति को दृढ़ करने के लिए इस समय उसने कुछ ऐसे कार्य किए जिससे जनता और अधिक क्रुद्ध हो गयी। मैरी ने 1565 ई. में डार्नले (Darnley) नामक अंग्रेज से विवाह किया था जिसे जनता ने पसन्द नहीं किया। मैरी के इस विवाह के विरुद्ध एक विद्रोह उत्पन्न हुआ जिसका मैरी ने कठोरतापूर्वक दमन किया, किन्तु मैरी और डार्नले के सम्बन्ध अधिक दिनों तक मधुर न रह सके। मैरी ने डार्नले को राजा के अधिकार नहीं दिए तथा वह अपने सचिव रिजिओ (Rizzio) से प्रेम करने लगी। अत: डार्नले ने उसके सचिव रिजिओ की हत्या करवा दी। मैरी डार्नले के इस कार्य से अत्यन्त क्रुद्ध हुई और उसने बाथवेल (Bothwell) नामक व्यक्ति की सहायता से 1567 ई. में डार्नले की हत्या करवा दी और बाथवेल से विवाह कर लिया। इस विवाह का जनता ने अत्यन्त विरोध किया और जनता ने विद्रोह कर दिया। कारबरी हिल (Carberry Hill) के निकट युद्ध हुआ। बाथवेल युद्ध क्षेत्र से भाग गया और मैरी को बन्दी बनाया गया तथा उस पर डार्नले की हत्या का आरोप लगाया। मैरी के स्थान पर उसके डार्नले से उत्पन्न पुत्र को जेम्स षष्टम के नाम से स्कॉटलैण्ड का राजा घोषित किया।

मैरी ने अपनी सुन्दरता का लाभ उठाते हुए जेलर जॉर्ज डगलस को अपने प्रेमपाश में बांधने का नाटक किया और बन्दीगृह से भाग निकली। मैरी भागकर इंग्लैण्ड पहुँची तथा एलिजाबेथ से सहायता मांगी। एलिजाबेथ अत्यन्त दूरदर्शी एवं बुद्धिमान स्त्री थी उसने ऐसे अवसर को हाथ से नहीं जाने दिया और मैरी को बन्दी बना लिया, क्योंकि यदि वह मैरी को स्वतन्त्र छोड़ देती तो मेरी फ्रांस से सहायता प्राप्त करती और वह यह नहीं चाहती थी। इसके साथ ही वह स्वयं भी अपने दुश्मन को सहायता नहीं देना चाहती थी। अपनी दूरदर्शिता प्रदर्शित करते हुए उसने मैरी को मृत्यु-दण्ड भी नहीं दिया और इस प्रकार स्पेन से मधुर सम्बन्ध बनाए रखे, क्योंकि मेरी के जीवित रहने पर स्पेन यदि एलिजाबेथ के विरुद्ध हो जाता तो स्वाभाविक था कि मैरी इंग्लैण्ड की शासिका बन जाती और इस प्रकार इंग्लैण्ड, स्कॉटलैण्ड तथा फ्रांस का गठबन्धन हो जाता जो कि स्पेन फ्रांस के कारण कभी भी नहीं चाहता था। इस प्रकार स्कॉटलैण्ड में मैरी के पतन तथा वहां प्रोटेस्टैण्ट धर्म की स्थापना होने से एलिजाबेथ को स्कॉटलैण्ड से भय न रहा।

2. **एलिजाबेथ के विरुद्ध षड्यन्त्र और विद्रोह** (The Conspiracies and Plots Against Elizabeth)—1568 ई. तक एजिलाबेथ की स्थिति में पर्याप्त परिवर्तन आ गया था। स्कॉटलैण्ड से खतरा समाप्त होने के अतिरिक्त फ्रांस में गृहयुद्ध प्रारम्भ होने के कारण फ्रांस इंग्लैण्ड से मित्रता का इच्छुक था। एलिजाबेथ ने इस प्रस्ताव का स्वागत किया तथा फ्रांस के किसी राजकुमार से विवाह करने का प्रलोभन देकर उसका समर्थन प्राप्त करती रही। इसके अतिरिक्त एलिजाबेथ ने नीदरलैण्ड के प्रोटेस्टैण्ट वर्ग को गुप्त रूप से स्पेन के विरुद्ध सहायता देकर उनके विद्रोह को सफल बनाने का प्रयत्न किया।

यद्यपि स्कॉटलैण्ड की रानी मैरी के पतन के पश्चात् एलिजाबेथ को विदेशी शत्रुओं से भय न रहा, परन्तु स्वयं उसके देश के कैथोलिक निवासियों ने उसके विरुद्ध अनेक षड्यन्त्र किए। षड्यन्त्रकारी चाहते थे कि मैरी को स्वतन्त्र कर, एलिजाबेथ के स्थान पर शासिका बनाया जाए। अत: एलिजाबेथ ने जब तक मैरी को मृत्यु-दण्ड नहीं दिया तब तक ये विद्रोह होते रहे।

(क) **उत्तरी इंग्लैण्ड में विद्रोह** (Revolt in North England)—एलिजाबेथ के विरुद्ध सर्वप्रथम 1559 ई. में उत्तरी इंग्लैण्ड में विद्रोह हुआ। इस विद्रोह का नेता नोर्फोक (Norfolk) नामक व्यक्ति था। इसका विचार नीदरलैण्ड में स्पेन का कमांडर ड्यूक ऑफ अल्वा (Duke of Alva) से सहायता प्राप्त कर विद्रोह करने का था। इस षड्यन्त्र का भेद शीघ्र ही खुल गया तथा विद्रोहियों को बन्दी बनाने का आदेश दिया गया। विद्रोहियों ने मैरी स्काट को स्वतन्त्र कराने का प्रयास किया, किन्तु असफल रहे। कुछ विद्रोही भाग गए तथा अन्य को, जो पकड़े गए, डरहम तथा यार्कशायर में मृत्यु-दण्ड दिया गया। इस विषय में उल्लेखनीय बात यह है कि जब विद्रोहियों ने विद्रोह का कारण कैथोलिक धर्म के प्रति श्रद्धा एवं कर्तव्य बताया, तब एलिजाबेथ ने केवल विद्रोहियों के समान उनके साथ व्यवहार किया तथा उनको बन्दी बनाने के लिए भी उसने एक कैथोलिक व्यक्ति अर्ल ऑफ ससेक्स (Earl of Sussex) को ही भेजा।

(ख) **एलिजाबेथ का धर्म से निष्कासन** (Eviction of Elizabeth from Religion)—एलिजाबेथ के विरुद्ध दूसरा षड्यन्त्र 1570 ई. में हुआ। 1570 ई. में पोप पायस पंचम (Pope Pius V) द्वारा एलिजाबेथ को ईसाई धर्म से

TOUCH 'n PASS

निष्कासित कर दिया गया। अत: कैथोलिकों ने एलिजाबेथ को गद्दी च्युत करना चाहा। अनेक कैथोलिक धर्म-प्रचारक इंग्लैण्ड गए तथा कैथोलिक धर्म का प्रचार किया।

(ग) **रिडोल्फी षड्यन्त्र** (Ridolfi's Plot)—1571 ई. में रिडोल्फी (Ridolfi) का षड्यन्त्र हुआ। रिडोल्फी एक बैंक का कर्मचारी था, परन्तु रिडोल्फ के षड्यन्त्र की भी सूचना सरकार को मिल गयी। रिडोल्फी को बन्दी बनाया गया तथा उसको मृत्यु-दण्ड दिया गया।

(घ) **थ्रोकमोर्टन षड्यन्त्र** (Throckmorton's Plot)—1583 ई. में थ्रोकमोर्टन द्वारा षड्यन्त्र किया गया, किन्तु इसकी सूचना प्राप्त होने पर उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया।

(ङ) **बेबिंग्टन षड्यन्त्र** (Babington's Plot)—एलिजाबेथ के विरुद्ध अन्तिम और सबसे शक्तिशाली विद्रोह 1586 ई. में हुआ। इंग्लैण्ड में कैथोलिकों ने एलिजाबेथ की हत्या करने के प्रयत्न तीव्र कर दिए। सेवेज (Savage) नामक एक अधिकारी ने यह प्रतिज्ञा की कि वह एलिजाबेथ की हत्या कर देगा। उसकी सहायता बेबिंग्टन (Babington) नामक अंग्रेज कैथोलिक कर रहा था। अत: इस षड्यन्त्र को बेबिंग्टन के षड्यन्त्र (Babington's Plot) के नाम से जाना जाता है। इस षड्यन्त्र में मैरी भी सम्मिलित थी। इस कार्य के लिए छह व्यक्तियों को नियत किया गया था। एलिजाबेथ के मन्त्रियों को इस षड्यन्त्र के विषय में सूचना प्राप्त हो गयी, उन्हें षड्यन्त्रकारियों तथा मैरी के मध्य हो रहे पत्र-व्यवहार का पता चल गया तथा उन पत्रों को पढ़ा जाने लगा, किन्तु कोई भी कार्यवाही करने से पहले मन्त्री मैरी के विरुद्ध ठोस प्रमाण प्राप्त करना चाहते थे। शीघ्र ही उन्हें ऐसा प्रमाण मैरी के पत्र' के रूप में मिल गया। प्रमाण मिलते ही षड्यन्त्रकारियों को बन्दी बना लिया गया। समस्त षड्यन्त्रकारियों को मृत्यु-दण्ड दिया गया। मैरी को मृत्यु-दण्ड देने में एलिजाबेथ झिझक रही थी, किन्तु संसद तथा प्रिवी कौंसिल ऐसा करने के लिए दृढ़ थे। अत: फरवरी, 1587 ई. में मैरी को मौत के घाट उतार दिया गया। मैरी की मृत्यु के साथ ही एलिजाबेथ के विरुद्ध होने वाले विद्रोह भी समाप्त हो गए।

3. **स्पेन से संघर्ष** (Struggle from Spain)—स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय (Philip II) के साथ इंग्लैण्ड की रानी मैरी ट्यूडर (Mary Tuder) का विवाह हुआ था, परन्तु उसके समय में फिलिप केवल दो बार इंग्लैण्ड गया। मैरी ट्यूडर के पश्चात् एलिजाबेथ के इंग्लैण्ड की महारानी बनने के साथ ही इंग्लैण्ड के स्पेन से सम्बन्ध कटु हो गए, परन्तु फिर भी स्पेन और फ्रांस की पारस्परिक शत्रुता के परिणामस्वरूप स्पेन को एलिजाबेथ से मधुर सम्बन्ध बनाए रखने पर विवश होना पड़ा। फिलिप को भय था कि जब तक मैरी स्काट जीवित है, यदि एलिजाबेथ अपने पद से हटी, तो मैरी स्काट इंग्लैण्ड की महारानी बन जाएगी और क्योंकि मैरी स्काट का विवाह फ्रांस के राजकुमार से हुआ था तथा वह स्वयं स्कॉटलैण्ड की भी रानी थी, अत: ऐसी परिस्थितियों में फिलिप को अकेले इस सम्मिलित शक्ति का सामना करना पड़ता। अत: जब तक मैरी स्काट जीवित रही स्पेन का राजा फिलिप विवश होकर कैथोलिक होते हुए भी प्रोटेस्टैण्ट धर्म की समर्थक एलिजाबेथ का समर्थन करता रहा। फिलिप यद्यपि एलिजाबेथ से विवाह का इच्छुक था तथापि कभी उसे धमकी देता और कभी भयभीत करने का प्रयत्न करता, परन्तु एलिजाबेथ जानती थी कि वह इंग्लैण्ड से युद्ध नहीं करेगा।

इसके पश्चात् स्पेन और फ्रांस के पारस्परिक सम्बन्ध कुछ सुधरने पर फिलिप ने एलिजाबेथ के विरुद्ध विद्रोह कर रहे विद्रोहियों को समर्थन देना प्रारम्भ किया, किन्तु जब तक मैरी स्काट को मृत्यु-दण्ड नहीं दिया गया तब तक स्पेन का शासक इंग्लैण्ड से युद्ध करने का साहस न जुटा सका। 1587 ई. में मैरी को मृत्यु-दण्ड दिए जाने के पश्चात् फिलिप का भय समाप्त हो गया और अपने धार्मिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसके लिए आवश्यक हो गया कि इंग्लैण्ड को शक्ति के द्वारा परास्त करे। स्पेन जैसुइट संगठन का नेता था तथा इंग्लैण्ड प्रोटेस्टैण्ट वर्ग के व्यक्तियों का। स्पेन का आर्थिक तथा राजनीतिक हित पोप एवं कैथोलिक धर्म की रक्षा पर आधारित था, क्योंकि पोप के द्वारा उसे 'नवीन दुनिया' का अधिकारी बना दिया था तथा पोप ही उसकी विद्रोही प्रोटेस्टैण्ट प्रजा को धर्म से पृथक् कर सकता था। दूसरी ओर, इंग्लैण्ड की सहायता से स्कॉटलैण्ड में प्रोटेस्टैण्ट धर्म की विजय हुई थी और इंग्लैण्ड, फ्रांस तथा नीदरलैण्ड के प्रोटेस्टैण्ट वर्ग का सहायक था। अत: स्पेन के लिए इंग्लैण्ड को परास्त करना तथा एलिजाबेथ को हटाना आवश्यक था।

इंग्लैण्ड और स्पेन के मध्य हुए युद्ध का धार्मिक कारण के अतिरिक्त स्पेन और इंग्लैण्ड की आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता थी। स्पेन का व्यापार भी अत्यन्त बढ़ा हुआ था। एलिजाबेथ इस व्यापार को इंग्लैण्ड के अधीन करना चाहती थी, परन्तु स्पेन के शक्तिशाली रहते ऐसा करना असम्भव था। नीदरलैण्ड से ऊन का व्यापार हेनरी अष्टम के समय से होता चला आ रहा था।

TOUCH 'n PASS

नीदरलैण्ड, स्पेन के अधीन होने के कारण स्पेन का राजा फिलिप अंग्रेज व्यापारियों के साथ अत्यन्त कठोरतापूर्ण व्यवहार करता था। नीदरलैण्ड में प्रोटेस्टैण्ट जनता भी फिलिप के अत्याचारों से तंग आ चुकी थी, अत: उन्होंने विद्रोह कर दिया। फिलिप ने अल्वा के ड्यूक (Duke of Alva) को नीदरलैण्ड का विद्रोह शान्त करने के लिए भेजा। एलिजाबेथ ने विद्रोहियों को गुप्त रूप से सहायता पहुँचायी, परन्तु विद्रोहियों के नेता विलियम दी साइलेट (William the Silent) की स्पेन के एक प्रतिनिधि ने हत्या कर दी।

नीदरलैण्ड के अतिरिक्त आर्थिक क्षेत्र में वास्तविक द्वन्द्व 'नवीन दुनिया' में था, जहां स्पेन ने अधिकार कर रखा था। इंग्लैण्ड 'नवीन दुनिया' पर स्पेन के अधिकार को स्वीकार करने को तैयार न था तथा अनेक अंग्रेज व्यापारी गुप्त रूप से वहां व्यापार करते थे। स्पेन ने इसका विरोध किया तथा जो अंग्रेज पकड़े जाते उन्हें कठोर दण्ड दिया जाता था, परन्तु 'नवीन दुनिया' के धन के प्रलोभन के कारण तथा व्यापारिक प्रतिबन्धों के परिणामस्वरूप साहसिक अंग्रेज नाविकों ने व्यापार के स्थान पर स्पेन के जहाजों को लूटना प्रारम्भ कर दिया। इन लुटेरों में इंग्लैण्ड तथा अन्य देशों के प्रोटेस्टैण्ट व्यक्ति थे। स्पेन के जहाजों को लूटना प्रोटेस्टैण्ट लुटेरों के लिए आर्थिक लाभ तथा धार्मिक सन्तुष्टि का कारण बन गया और इन लुटेरों की संख्या बढ़ती गयी। रानी एलिजाबेथ इन लुटेरों की गुप्त रूप से सहायता कर रही थी। हॉकिन्स (Hawkins) तथा ड्रेक (Drake) के आक्रमणों से स्पेन भयभीत हो गया क्योंकि इसने 'नवीन दुनिया' के व्यापार को संकट में डाल दिया था। फिलिप ने अनेक बार इन लुटेरों की एलिजाबेथ से शिकायत की, किन्तु एलिजाबेथ ने उनका उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेने से इन्कार कर दिया। यही नहीं, एलिजाबेथ ने, ड्रेक के दक्षिणी अमरीका की यात्रा करने तथा अमरीका के पूर्वी तट पर स्थित नगरों को लूट कर वापस इंग्लैण्ड लौटने पर, ड्रेक को 'नाइट' (Knight) की उपाधि से सम्मानित किया। इससे स्पेन को स्पष्ट हो गया कि यदि उसे नवीन दुनिया के व्यापार को सुरक्षित रखना है, तो इंग्लैण्ड को परास्त करना आवश्यक है।

उपर्युक्त धार्मिक एवं आर्थिक कारणों के परिणामस्वरूप, स्पेन ने इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध की तैयारियाँ प्रारम्भ कर दीं। फिलिप ने मैरी स्कॉट की मृत्यु से पूर्व ही युद्ध की तैयारियां प्रारम्भ कर दी थीं। मैरी को मृत्यु-दण्ड दिए जाने के कारण उसका इंग्लैण्ड पर आक्रमण करने का निश्चय और भी दृढ़ हो गया।

स्पेन की सेना अत्यधिक शक्तिशाली थी और फिलिप का विश्वास था कि यदि उसके सैनिक इंग्लैण्ड के तट पर उतर गए तो उन्हें इंग्लैण्ड पर विजय प्राप्त करने में अधिक समय नहीं लगेगा। फिलिप 1587 ई. में इंग्लैण्ड पर आक्रमण करना चाहता था, अत: उसने एक बड़ा जहाजी बेड़ा (Armada) तैयार करवाया था, किन्तु ड्रेक ने कैडिज (Cadiz) के बन्दरगाह पर आक्रमण करके स्पेन के अनेक जहाजों को अग्नि की भेंट कर दिया। ड्रेक (Drake) ने सैंतीस जहाज तथा विशाल सैनिक भण्डार को नष्ट कर दिया था। इस घटना को 'स्पेन के राजा की दाढ़ी जलाना' कहा जाता है। इस घटना के परिणामस्वरूप, स्पेन को इंग्लैण्ड पर आक्रमण को कुछ समय के लिए टालना पड़ा। 1588 ई. में स्पेन का जहाजी बेड़ा तैयार हो गया। ड्रेक ने पुन: स्पेन पर आक्रमण करके उनके जहाजी बेड़े को नष्ट करना चाहा, परन्तु एलिजाबेथ ने उसको ऐसा करने की अनुमति नहीं दी क्योंकि उसे भय था कहीं ऐसा करने में इंगलिश चैनल सेना रहित न हो जाए।

20 मई, 1588 ई. को पोप का आशीर्वाद प्राप्त कर स्पेनी जहाजी बेड़ा लिस्बन (Livon) के बन्दरगाह से चला। इस जहाजी बेड़े में एक सौ तीस जहाज, उन्नीस हजार सैनिक तथा आठ हजार मल्लाह थे। इसके अतिरिक्त उन्हें तीस हजार सैनिक नीदरलैण्ड से लेने थे। स्पेन के शक्तिशाली जहाजी बेड़े के समान' इंग्लैण्ड का जहाजी बेड़ा न था। यद्यपि इंग्लैण्ड के जहाजी बेड़े में स्पेन से अधिक जहाज (एक सौ सत्तानवे) थे, किन्तु वे अत्यन्त छोटे थे। स्पेन के सैनिकों की संख्या भी अधिक थी, परन्तु वे अधिकांश थल-सैनिक थे। इस प्रकार यद्यपि परोक्ष रूप से स्पेन की सेना अत्यधिक शक्तिशाली प्रतीत हो रही थी, परन्तु यह वास्तविकता न थी। स्पेन के जहाजों की तोपें, उनके जहाज के अनुरूप बड़ी न थीं। दूसरी ओर इंग्लैण्ड के जहाज छोटे होने के कारण आसानी से किसी भी दिशा में मोड़े जा सकते थे। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड की जल-सेना है कुशल एवं वीर ड्रेक, हाकिन्स, फ्रोबिस्टर जैसे अनुभवी नाविक थे। उल्लेखनीय बात है कि वास्तव में स्पेन के जहाजी बेड़े का निर्माण समुद्री युद्ध के लिए नहीं वरन् स्पेन के सैनिकों को इंग्लैण्ड के समुद्री तट तक पहुँचाने के लिए किया था, किन्तु अंग्रेज जल-सेना ने उन्हें समुद्र तट तक पहुँचने ही नहीं दिया।

इंग्लैण्ड ने भी अपने जहाजी बेड़े के अतिरिक्त स्थल-युद्ध की पूर्ण तैयारी की थी। टिलबरी में सत्तर हजार सैनिक एकत्रित किए गए थे, जिनका निरीक्षण स्वयं एलिजाबेथ ने किया तथा सैनिकों को प्रोत्साहित करते हुए कहा था कि 'मैं यहाँ

TOUCH 'n PASS

इसलिए आयी हूँ ताकि अपने ईश्वर, देश, जनता, सम्मान तथा रक्त की रक्षा करते हुए आप लोगों के साथ ही जीवित रहूँ अथवा मृत्यु को प्राप्त हो सकूँ।'

स्पेन का जहाजी बेड़ा सकुशल इंगलिश चैनल में पहुँच गया। कैलेस (Calais) तक पहुँचने में यद्यपि जहाजी बेड़े को अंग्रेजों ने हानि पहुँचायी, परन्तु कोई विशेष प्रभाव डालने में अंग्रेज असफल रहे। 29 जुलाई, 1588 से 9 अगस्त, 1588 तक जल-युद्ध हुआ। कुशल और अनुभवी अंग्रेज डाकुओं द्वारा अंग्रेजों को सहायता करने के कारण स्पेनी बेड़े को अत्यधिक हानि उठानी पड़ी। अंग्रेजों ने टूटे जहाजों में आग लगाकर उन्हें स्पेनी बेड़े की ओर छोड़ दिया। इसने स्पेन के अनेक जहाजों में आग लग गयी। 8 अगस्त, 1588 ई. को निर्णायक युद्ध हुआ। छोटे-छोटे अंग्रेजी जहाज तोपों और बन्दूकों से सुसज्जित थे तथा विशालकाय स्पेनी जहाजों पर निशानेबाजी करते थे। विशाल स्पेनी जहाज शीघ्र ही मुड़ नहीं सकते थे, अत: बहुत-से स्पेनी जहाज डूब गए। इसी समय एक तेज तूफान आया जिससे स्पेनी जहाज तितर-बितर हो गए तथा अनेक जहाज नष्ट हो गए। स्पेन का जहाजी बेड़ा उत्तरी सागर का चक्कर काट कर स्पेन भागा। स्पेन केवल 53 जहाज पहुँच सके। अंग्रेजों की विजय हुई और इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच गयी।

इस पराजय के बाद स्पेन के राजा फिलिप ने अपने सैनिकों को आश्वस्त करते हुए कहा 'मैंने तुम्हें मनुष्य से युद्ध करने के लिए भेजा था न कि प्रकृति से।' इसी अवसर पर एलिजाबेथ ने अपनी विजय पर कहा—'ईश्वर ने हवा चला दी और वे छिन्न-भिन्न हो गए।' इस प्रकार यद्यपि इंग्लैण्ड की विजय को भाग्य का समर्थन कहा गया, परन्तु वास्तविकता ऐसी नहीं थी। इंग्लैण्ड की समुद्र में इस विजय का कारण उसके नाविकों के युद्ध-कौशल, साहस एवं श्रेष्ठ जहाजों का परिणाम था। वार्नर मार्टिन ने इंग्लैण्ड की युद्ध-कुशलता के विषय में कहा है कि इंग्लैण्ड के प्रथम दिन 2 तथा सम्पूर्ण युद्ध में केवल 60 व्यक्ति मारे गए थे। स्पेन के इतने जहाज नष्ट हो गए जितने कि इंग्लैण्ड के व्यक्ति नहीं मारे गए थे।' इस विजय के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड का समुद्र में कोई भी राज्य सामना करने का साहस न कर सका तथा इंग्लैण्ड में एक नए युग का प्रादुर्भाव हुआ।'

ड्रेवेलियन ने इंग्लैण्ड की स्पेनी जहाजी बेड़े के विषय में लिखा है—'आरमेडा की पराजय ने सम्पूर्ण विश्व को यह दिखा दिया कि समुद्रों का शासन भूमध्यसागरीय लोगों के हाथों से निकलकर उत्तरीय लोगों अर्थात् अंग्रेजों के हाथों में चला गया है। इस प्रकार पिछले चालीस वर्षों से स्पेन रूपी जो संकट इंग्लैण्ड पर छाया हुआ था, इस विजय से समाप्त हो गया। स्पेनी जहाजी बेड़े के परास्त हो जाने के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड को अब अपने भाग्य को स्वयं निर्धारित करने का अवसर प्राप्त हो गया तथा प्रोटेस्टैण्ट धर्म को भी बचाने में सफल हो गया। इंग्लैण्ड की सामुद्रिक शक्ति बढ़ने से भविष्य में व्यापार तथा उपनिवेश स्थापित करने के मार्ग पर वह अग्रसारित हुआ। इंग्लैण्ड की इस विजय का परिणाम केवल इंग्लैण्ड तक ही सीमित नहीं रहा, इसने कैथोलिक धर्म की उन्नति पर सर्वाधिक रोक लगायी।

4. **एलिजाबेथ का अन्तिम समय** (The Last days of Elizabeth)—स्पेनी जहाजी बेड़े पर विजय के पश्चात् एलिजाबेथ के शासन का अन्तिम समय शान्तिपूर्वक व्यतीत हुआ। इंग्लैण्ड को किसी भी विदेशी राज्य से भय नहीं रहा था, तथा कैथोलिकों का उत्साह भी क्षीण हो गया था। एलिजाबेथ को फ्रांस एवं नीदरलैण्ड में भी सफलता मिली। एलिजाबेथ की सहायता प्राप्त कर हेनरी ऑफ नावारे (Henry of Navarre) कैथोलिकों के विरुद्ध सफल रहा और 1589 ई. में फ्रांस की राजगद्दी पर हेनरी चतुर्थ के नाम से बैठा। नीदरलैण्ड भी एलिजाबेथ से सहायता प्राप्त कर स्पेन की परतन्त्रता से मुक्त हो गया।

इस प्रकार यद्यपि एलिजाबेथ को जीवन पर्यन्त जैसुइट संगठन के आन्दोलन का सामना करना पड़ा, परन्तु अन्त में वह इस प्रोटेस्टेण्ट धर्म विरोधी आन्दोलन (Counter-Reformation) पर विजय प्राप्त करने में सफल रही। उसने अपनी योग्यता एवं कुशल नीति से, सर्वाधिक शक्तिशाली कैथोलिक राज्य स्पेन की शक्ति को क्षीण कर नवीन दुनिया पर से भी उसका आधिपत्य समाप्त कर दिया। इसके अतिरिक्त स्कॉटलैण्ड में प्रोटेस्टेण्ट धर्म की सफलता, फ्रांस में प्रोटेस्टैण्ट धर्म के व्यक्ति का राजा बनना, नीदरलैण्ड को स्पेन के आधिपत्य से मुक्त कराना तथा इंग्लैण्ड के कैथोलिकों का एलिजाबेथ में विश्वास करना, प्रोटेस्टैण्ट धर्म विरोधी आन्दोलन पर उसकी सफलता को प्रमाणित करते हैं।

TOUCH 'n PASS

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. मार्टिन लूथर किस देश के थे?
(क) जापान (ख) जर्मनी (ग) आस्ट्रिया (घ) पुर्तगाल
उत्तर (ख) जर्मनी

प्र.2. मार्टिन लूथर ने कब भिक्षु बनने का फैसला किया?
(क) 1503 (ख) 1504 (ग) 1505 (घ) 1506
उत्तर (ग) 1505

प्र.3. पुनर्जागरण का काल रहा–
(क) 13वीं से 15वीं सदी (ख) 14वीं से 16वीं सदी (ग) 14वीं से 17वीं सदी (घ) 14वीं से 18वीं सदी
उत्तर (ग) 14वीं से 17वीं सदी

प्र.4. मैकियावली की पुस्तक 'द प्रिंस' कब प्रकाशित हुई?
(क) 1509 (ख) 1510 (ग) 1511 (घ) 1512
उत्तर (क) 1509

प्र.5. इंग्लैण्ड में आलोचना का प्रमुख विषय था–
(क) चर्च के भ्रष्टाचार (ख) अंधविश्वास (ग) राज्य की क्रूरता (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.6. धर्म सुधार आन्दोलन का कौन-सा प्रभाव नहीं हुआ?
(क) कैथोलिक धर्म में सुधार (ख) शासक वर्ग की शक्ति में कमी
(ग) पोप की शक्ति का पतन (घ) प्रोटेस्टेण्ट धर्म का उदय
उत्तर (ख) शासक वर्ग की शक्ति में कमी

प्र.7. किस देश धर्म सुधार आन्दोलन हेनरी अष्टम और पोप के मध्य प्रतिद्वन्द्विता का परिणाम था?
(क) जर्मनी (ख) इटली (ग) स्पेन (घ) इंग्लैण्ड
उत्तर (घ) इंग्लैण्ड

प्र.8. प्रोटेस्टेण्ट सुधार जर्मनी के विटनबर्ग में कब शुरू हुआ?
(क) 29 अक्टूबर, 1517 (ख) 30 अक्टूबर, 1517 (ग) 31 अक्टूबर, 1517 (घ) 1 नवम्बर, 1517
उत्तर (ग) 31 अक्टूबर, 1517

प्र.9. छापेखाने का आविष्कार जर्मनी गुटेनबर्ग ने कब किया?
(क) 1460 (ख) 1461 (ग) 1462 (घ) 1463
उत्तर (क) 1460

प्र.10. कैक्सटन ने कब इंग्लैण्ड में छापेखाने का प्रयोग प्रचलित किया?
(क) 1473 (ख) 1474 (ग) 1475 (घ) 1476
उत्तर (घ) 1476

प्र.11. कुतुबनुमा का आविष्कारक कौन था?
(क) कोलम्बस (ख) वास्कोडिगामा (ग) मार्कोपोलो (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) मार्कोपोलो

प्र.12. इटली निवासी मार्कोपोलो ने अपनी पहली यात्रा वेनिस से कब प्रारम्भ की?
(क) 1270 (ख) 1271 (ग) 1272 (घ) 1273
उत्तर (ख) 1271 ❑

TOUCH n' PASS

UNIT-IV

धार्मिक संघर्ष

Religious Warfare

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. तीस वर्षीय का युद्ध किस घटना से शुरू हुआ?
From which incident thirty-years war was started?

उत्तर हालाँकि तीस वर्षीय युद्ध के संघर्ष कुछ साल पहले भड़क गए थे, युद्ध को पारंपरिक रूप से 1618 में शुरू किया गया था, जब भविष्य के पवित्र रोमन सम्राट फर्डिनेंड द्वितीय ने अपने डोमेन पर रोमन कैथोलिक निरपेक्षता और बोहेमिया और दोनों के प्रोटेस्टेण्ट रईसों को लागू करने का प्रयास किया था। ऑस्ट्रिया विद्रोह में उठ खड़ा हुआ।

प्र.2. तीस वर्षीय युद्ध में शामिल होने में फ्रांस की रुचि क्या थी?
What was France's interest in involving in the thirty-years war?

उत्तर अब अपनी सीमाओं पर दो प्रमुख हैप्सबर्ग शक्तियों के घेराव को सहन करने में सक्षम नहीं, कैथोलिक फ्रांस ने हैप्सबर्ग का मुकाबला करने और युद्ध को समाप्त करने के लिए प्रोटेस्टेण्टों के पक्ष में तीस साल के युद्ध में प्रवेश किया।

प्र.3. तीस वर्षीय युद्ध की प्रमुख घटनाएँ क्या थीं?
What were the main events of the thirty-years war?

उत्तर प्राग की अवज्ञा (23 मई 1618) लुटजेन में गुस्तावस एडोल्फस की मौत (16 नवंबर 1632) डाउन की लड़ाई से पहले डच युद्धपोत (21 अक्टूबर 1639) रोक्रोई की लड़ाई (19 मई 1643) प्रमुख घटनाएँ थी।

प्र.4. यूरोप में धार्मिक युद्ध किसके कारण हुए?
What were the causes that religious wars occured in Europe?

उत्तर 1517 में प्रोटेस्टेण्ट सुधार शुरू होने के बाद लड़े गए, युद्धों ने यूरोप के कैथोलिक देशों या ईसाईजगत में धार्मिक और राजनीतिक व्यवस्था को बाधित कर दिया। युद्धों के दौरान अन्य उद्देश्यों में विद्रोह, क्षेत्रीय महत्त्वाकांक्षाएं और महान शक्ति संघर्ष शामिल थे।

प्र.5. धार्मिक युद्ध क्या था?
What is religious war?

उत्तर यूरोप के ईसाइयों ने 1095 और 1291 के बीच अपने धर्म की पवित्र भूमि फिलिस्तीन और उसकी राजधानी जेरूसलम में स्थित ईसा की समाधि का गिरजाघर मुसलमानों से छीनने और अपने अधिकार में करने के प्रयास में जो युद्ध किए धर्मयुद्ध, क्रूसेड कहा जाता है।

प्र.6. धर्म के युद्धों में कौन-से देश शामिल थे?
Which countries were involved in the war of religion?

उत्तर धर्म के युद्ध, (1562-98) फ्रांस में प्रोटेस्टेण्ट और रोमन कैथोलिक के बीच संघर्ष। फ्रांसीसी केल्विनवाद के प्रसार ने फ्रांसीसी शासक कैथरीन डे मेडिसिस को ह्यूगनॉट्स के प्रति अधिक सहिष्णुता दिखाने के लिए राजी किया, जिसने शक्तिशाली रोमन कैथोलिक गुइज परिवार को नाराज कर दिया।

प्र.7. धार्मिक संघर्ष क्यों होते हैं?
Why do religious conflicts occur?

उत्तर विभिन्न धर्मों के लोगों की विचारधाराओं के बीच मतभेद अतीत और वर्तमान में धार्मिक संघर्षों के लिए एक प्रमुख मुद्दा रहा है। यह विश्वास ही है जो लोगों को एक विशेष धर्म का अनुयायी बनाता है। अगर उनके धर्म और आस्था के खिलाफ कुछ भी कहा जाता है तो लोग आक्रामक हो जाते हैं।

TOUCH 'n' PASS

प्र.8. धार्मिक युद्धों का मुख्य कारण क्या था?
What was the main cause of religious war?
उत्तर सोलहवीं शताब्दी में यूरोप में धार्मिक युद्धों का मुख्य कारण क्या था? कैथोलिक और प्रोटेस्टेण्ट के बीच संघर्ष।

प्र.9. अंतिम धार्मिक युद्ध कब हुआ था?
When did the last religious war take place?
उत्तर जॉन मॉरिल (1993) ने कहा कि लैमॉन्ट ने अंग्रेजी नागरिक युद्ध (1642-1651) को एक धार्मिक युद्ध के रूप में माना 'अंग्रेजी नागरिक युद्ध पहली यूरोपीय क्रांति नहीं थी: यह धर्म के युद्धों में से अंतिम था।

प्र.10. प्रथम धर्म युद्ध कब लड़ा गया?
When did first religious war take place?
उत्तर ईसाइयों ने ईसाई धर्म की पवित्र भूमि फिलिस्तीन और उसकी राजधानी यरुशलम में स्थित ईसा की समाधि पर अधिकार करने के लिए 1095 और 1291 के बीच सात बार जो युद्ध किए उसे क्रूसेड कहा जाता है। इसे इतिहास में सलीबी युद्ध भी कहते हैं।

प्र.11. स्वीडन तीस साल के युद्ध में क्यों शामिल हुआ?
Why did Sweden involve in the thirty-years war?
उत्तर स्वीडिश हस्तक्षेप के बारे में सामान्य ऐतिहासिक प्रवृत्ति यह प्रतीत होती है कि जबकि पहले के ऐतिहासिक अध्ययनों ने जोर देकर कहा था कि जर्मनी में अपने प्रोटेस्टेण्ट पड़ोसियों की सहायता करने की इच्छा से गुस्तावस एडोल्फस ने स्वीडन को तीस साल के युद्ध में नेतृत्व किया, हाल के कार्यों ने इस तर्क को अपनाया है कि गुस्तावस द्वितीय ने आक्रमण किया।

प्र.12. तीस साल का युद्ध किसने लड़ा था?
Who had fought the thirty-years war?
उत्तर यह पवित्र रोमन साम्राज्य के कैथोलिक हैप्सबर्ग (ऑस्ट्रिया, अधिकांश जर्मन राजकुमारों और कभी-कभी स्पेन) के बीच एक राजनीतिक संघर्ष के रूप में विकसित हुआ। उनका डेनमार्क, स्वीडन, कैथोलिक फ्रांस और जर्मनी के प्रोटेस्टेंट राजकुमारों ने विरोध किया था। युद्ध 1648 में वेस्टफेलिया की शांति के साथ समाप्त हुआ।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. चार्ल्स पंचम के चरित्र का मूल्यांकन कीजिए।
Evaluate the character of Charles V.
उत्तर

चार्ल्स पंचम के चरित्र का मूल्यांकन
(Evaluation of Character of Charles V)

चार्ल्स पंचम हैप्सबर्ग वंश का एक ऐसा सम्राट था जिसके निधन के पश्चात् नि:सन्देह एक युग का अन्त हो गया। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि आने वाले समय में हैप्सबर्ग वंश का कोई भी शासक इतने बड़े साम्राज्य का स्वामी नहीं हो सका जितने का वह था। यह ठीक है कि वह सौन्दर्य रहित था। उसमें मौलिकता, कल्पनाशीलता एवं भावुकता का नितान्त अभाव था। उसके चरित्र में हठीलापन एवं अस्थिरता विद्यमान थे। उसमें उच्च कोटि के सैनिक गुणों का भी अभाव था, किन्तु उसमें साहस, धैर्य, अध्यवसाय, विवेकशीलता एवं कठिन से कठिन परिस्थितियों से जूझने की क्षमता विद्यमान थी। वह मानववादी था, वह कला-प्रेमी एवं ग्रीक एवं लैटिन भाषा का ज्ञाता था। हेज महोदय ने तो उसे सांस्कृतिक क्षेत्र में अपने युग की उपज बतलाया है। वह पक्का कैथोलिक था। उसने प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय के दमन हेतु स्पेन व नीदरलैण्ड्स में 'इन्क्वीजिशन' नामक धार्मिक न्यायालयों की स्थापना की। जर्मनी की पूर्वी सीमा एवं भूमध्य सागर में तुर्कों के आतंक को रोकने में उसने कैथोलिक के रूप में अपना पूर्ण योगदान दिया। यही कारण है कि स्टब्स महोदय ने उसके विषय में कहा है कि, 'एकमात्र चार्ल्स पर ही ईसाई जगत की रक्षा का भार था और यद्यपि उसकी सफलताएँ आकर्षक नहीं थीं, परन्तु उसके रक्षात्मक कार्यों की योग्यता एवं सत्यता की आलोचना की अपेक्षा उसकी प्रशंसा ही की जा सकती है।' चार्ल्स पंचम ने जर्मनी व नीदरलैण्ड्स में पूँजीवाद के विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। वह अपनी प्रशासनिक समस्याओं से जूझता रहा और हैप्सबर्ग वंश की प्रतिष्ठा को कायम रखने में सफल भी रहा। यूरोप की शक्तियों ने नि:सन्देह उसका लोहा माना। इतना सब कुछ होते हुए भी चार्ल्स पंचम अपने साम्राज्य में एकता स्थापित करने में असफल रहा, किन्तु इसका कारण उसकी अयोग्यता नहीं थी। वास्तव में, उसमें समय को पहचानने की क्षमता थी। इसका सबसे

TOUCH 'n PASS

बड़ा प्रमाण यह है कि जब वह शारीरिक रूप से अत्यन्त अस्वस्थ हो गया और उसने प्रशासनिक कठिनाइयों से स्वयं जूझ सकने की शक्ति का अपने में अभाव पाया तो उसके शासक का पद स्वेच्छा से त्याग दिया। अपने साम्राज्य का उसने दो भागों में विभाजन किया। पवित्र रोमन साम्राज्य एवं हैप्सबर्ग के पैतृक साम्राज्य का उत्तराधिकारी अपने अनुज फर्डीनेण्ड को बनाया और स्पेनी साम्राज्य एवं अमरीका के उपनिवेशों के शासन का भार अपने पुत्र फिलिप द्वितीय को सौंप दिया। इस प्रकार हैप्सबर्ग वंश के इतिहास का एक युग समाप्त हुआ और स्पेनी साम्राज्य का एक नया दौर आरम्भ हुआ, जिसका बागडोर फिलिप द्वितीय के हाथों में केन्द्रित हो गई।

प्र.2. फिलिप द्वितीय की गृह-नीति का उल्लेख कीजिए।
Explain the home-policy of Philip Second.

उत्तर

फिलिप द्वितीय की गृह-नीति
(Home-Policy of Philip Second)

फिलिप द्वितीय को जो विशाल साम्राज्य प्राप्त हुआ था, वह कांटों की सेज से कम नहीं था। उसकी राष्ट्र-प्रेम एवं धार्मिक नीति ने इसे और भी अधिक जटिल बना दिया था। अपने शासनकाल में उसे तीन महत्त्वपूर्ण आन्तरिक समस्याओं से जूझना पड़ा। प्रथम समस्या स्पेनी साम्राज्य की जर्जरित आर्थिक स्थिति के रूप में थी। द्वितीय समस्या मूरों के विद्रोह के रूप में सामने आई। तृतीय समस्या नीदरलैण्ड्स निवासियों का अत्यन्त भयंकर विद्रोह था। फिलिप द्वितीय अपनी इन आन्तरिक समस्याओं के निराकरण में कहां तक सफल हुआ? यह उसके आन्तरिक प्रशासन के अनुशीलन से स्पष्ट होता है।

आन्तरिक प्रशासन (Internal Rule)

फिलिप द्वितीय ने अपनी राष्ट्र प्रेम एवं धर्म प्रेम सम्बन्धी नीति को आधार बनाकर आने वाली समस्याओं का निराकरण करना चाहा। सर्वप्रथम उसने स्पेन के राष्ट्रीय एकीकरण हेतु प्रशासकीय एकता पर बल दिया। ऐसा करने के लिए उसे राजकीय शक्ति में वृद्धि करना आवश्यक था। अत: उसने स्पेनिश सामन्तीय सभा जिसे कार्टेज (Cartez) कहा जाता था, की उपेक्षा की। पहले से लगे करों को बिना कार्टेज की सलाह लिए वसूल किया गया। हाँ नए करों को लागू करने के सम्बन्ध में संसद की सलाह अवश्य ली गई। अब स्पेनी संसद के सदस्यों का मनोनयन स्वयं फिलिप द्वितीय द्वारा किया जाने लगा, सामन्तों को अधिकारविहीन कर दिया गया। इस प्रकार फिलिप द्वितीय ने निरंकुश शासन स्थापित किया। फिलिप द्वितीय ने स्थल सेना के गठन पर विशेष बल दिया, किन्तु उसने नौ सेना की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। अत: उसकी नौ सैनिक शक्ति में दिन-प्रतिदिन गिरावट आती चली गई। नि:सन्देह यह उसकी एक महान् भूल थी। इसी कारण उसे नीदरलैण्ड्स के विद्रोह का दमन करने में सफलता प्राप्त न हो सकी। फिलिप द्वितीय के सम्मुख सबसे जटिल समस्या विशृंखलित आर्थिक स्थिति थी। स्पेन की दुर्बल आर्थिक स्थिति का मूल कारण विशेषाधिकारों पर आधारित आर्थिक जीवन था। यह ठीक है कि सम्पूर्ण अमरीकी व्यापार एवं चांदी के आयात पर स्पेन का ही एकाधिकार था, किन्तु जिस प्रकार समुद्र पर डच, फ्रांसीसी एवं अंग्रेज व्यापारियों ने तस्कर के व्यापार को बढ़ा दिया था उससे स्पेन की आर्थिक स्थिति चरमराना स्वाभाविक था। फिलिप द्वितीय ने स्थिति से निपटने के लिए घरेलू उद्योग-धन्धों व व्यापार पर अधिक से अधिक कर लगाने की जो नीति अपनाई उसने स्पेन के उद्योग-धन्धों व व्यापार को चौपट कर दिया। मूर एवं यहूदी जैसी व्यापार कुशल जातियों को दमन का जो रुख उसने अपनाया, उससे व्यापार पर गहरा प्रभाव पड़ा। एक ओर यह स्थिति थी दूसरी ओर फिलिप द्वितीय के दीर्घकालिक युद्धों ने आग में घी का कार्य किया। अत: यह माना जा सकता है कि फिलिप द्वितीय अपनी आर्थिक समस्या का समाधान करने में सफल नहीं हो पाया।

धार्मिक नीति (Religious Policy)

फिलिप द्वितीय कट्टर कैथोलिक था। अपनी कट्टरता के कारण ही उसने प्रोटेस्टेण्टों, मूरों एवं यहूदियों के दमन का रुख अपनाया। उसकी दमनकारी नीति के कारण ही 1569 में मूरों ने विद्रोह कर दिया था। मूरों ने लगभग दो वर्ष तक स्पेन की सेना का पर्वतीय इलाकों में जमकर विरोध किया, किन्तु 1570 ई. में फिलिप द्वितीय को विद्रोह कुचलने में सफलता प्राप्त हो गई। फिलिप द्वितीय ने मूरों के विद्रोह का दमन तो कर दिया, किन्तु मूरों के दमन की उसकी नीति ने स्पेनी व्यापार एवं वाणिज्य को चौपट कर दिया। यही स्थिति यहूदियों के सन्दर्भ में भी थी। वास्तव में फिलिप की निष्ठा कैथोलिक सम्प्रदाय के प्रति ही सर्वोपरि थी। उसने गैर-कैथोलिकों के विनाश के लिए 'इन्क्वीजिशन' नामक धार्मिक न्यायालयों का भरपूर प्रयोग किया। यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि रोम के पोप के साथ उसकी तभी तक बनती रही जब तक कि पोप ने फिलिप के कार्यों को अपना समर्थन दिया, परन्तु जैसे ही पोप ने स्पेन के विरोध की नीति अपनाई, फिलिप ने पोप से सम्बन्ध विच्छेद कर स्पेन में अपने राजनीतिक अधिकारों को कायम

TOUCH 'n' PASS

रखा। पोप के आदेश भी स्पेन में उसकी आज्ञा के बिना कार्यान्वित नहीं हो सकते थे। इतना सब कुछ होते हुए फिलिफ द्वितीय कैथोलिक धर्म की सार्वभौमिकता को सम्पूर्ण यूरोप में स्थापित न कर सका। उल्टे नीदरलैण्ड्स में भयंकर विद्रोह हो गया, जिसके कारण उसे अपार हानि उठानी पड़ी।

प्र.3. नीदरलैण्ड्स के विद्रोह की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख कीजिए।
Explain the main incidents of Netherlands' revolt in brief.

उत्तर

नीदरलैण्ड्स के विद्रोह की प्रमुख घटनाएँ
(Main Events of Netherlands Revolt)

नीदरलैण्ड्स में व्याप्त असन्तोष को दबाने के लिए फिलिप द्वितीय ने अपनी बहिन मार्गरिट को 1559 में नीदरलैण्ड्स का शासन संभालने हेतु नियुक्त किया, किन्तु साथ ही उसने 'कार्डिनल ग्रेनविल' को वहां की राज्य परिषद का अध्यक्ष नियुक्त कर उसे सभी वास्तविक शक्तियां प्रदान कर दीं। कार्डिनल घोर स्पेनी था। इसी कारण मार्गरिट द्वारा स्पेनी सेना के वापस भेज दिए जाने तथा अयोग्य स्पेनी अधिकारियों को अपदस्थ कर दिए जाने के पश्चात् भी नीदरलैण्ड्सवासियों ने ग्रेनविल की नियुक्ति का घोर विरोध किया। फलत: कार्डिनल ग्रेनविल को वापस बुला लिया गया, किन्तु मार्गरिट ने नीदरलैण्ड्स के सामन्तों व नागरिकों के उस प्रार्थना-पत्र को भिखारियों का प्रार्थना-पत्र कहकर अनदेखा कर दिया जिसमें नीदरलैण्ड्स की समस्याओं को दूर करने के लिए कुछ माँगें रखी गई थीं। इसी समय से (1566 ई.) विरोधियों के एक वर्ग ने स्वत: भिखारी कहना आरम्भ कर दिया। फिलिप द्वितीय के इस आश्वासन को कि वह धार्मिक न्यायालयों को समाप्त कर देगा, पूरा न करने पर प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय की समर्थक जनता ने 1566 ई. में कैथोलिक चर्चों पर अपना प्रतिमा विनाशक रोष (Iconoclam Fury) प्रकट किया। अत: फिलिप द्वितीय ने अब आल्वा के ड्यूक को नीदरलैण्ड्स का प्रशासक बनाकर भेजा। 1567 ई. में ड्यूक ने नीदरलैण्ड्स पहुँचते ही अपना दमन चक्र आरम्भ कर दिया। उसने अशान्ति परिषद (Council of Troubles) की स्थापना की और बड़ी निर्दयता से विरोधियों का दमन किया। उसकी निर्दयता का अनुमान इस तथ्य से ही लग जाता है कि 1567 ई. से 1572 ई. तक के काल में ही अशान्ति परिषद ने लगभग 8,000 विरोधियों को मौत की नींद सुला दिया। नीदरलैण्ड्सवासियों ने इस परिषद को रक्त परिषद (Council of Blood) की संज्ञा दी। व्यापार एवं वाणिज्य के क्षेत्र में व्यापक पैमाने पर कर की जो नीति ड्यूक ने अपनाई उसके फलस्वरूप स्पेनी निरंकुश राजतन्त्र को उखाड़ने के लिए सम्पूर्ण नीदरलैण्ड्स में भयंकर विद्रोह हो गया। अब यह विद्रोह राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का विद्रोह बन गया। नीदरलैण्ड्स के विद्रोह को स्वतन्त्रता आन्दोलन के रूप में गति प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण श्रेय विलियम ऑफ आरेन्ज जिसे इतिहास में विलियम शान्त (William the Silent) के नाम से भी जाना जाता है, को है। जिस समय आल्वा के ड्यूक ने नीदरलैण्ड्स में अपना कार्यभार संभाला उस समय वह हालैण्ड तथा न्यूजीलैण्ड के प्रान्तों में प्रान्तपति था। ड्यूक के आगमन पर उसे नीदरलैण्ड्स छोड़कर जर्मनी जाना पड़ा था। इसका प्रमुख कारण यह था कि उस पर काल्विनवाद का प्रभाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था। ड्यूक की दमन नीति की अति से क्षुब्ध होकर वह पुन: नीदरलैण्ड्स आया और वहां के हतोत्साहित देशवासियों के उत्साह को पुनर्जीवित करने में लग गया। उत्साही डच नाविकों ने भिखारियों के दल को संगठित कर स्पेनी जहाजी बेड़ों के लिए अत्यन्त कठिनाई उत्पन्न कर दी जिससे स्पेनी सेना समुद्र पर अधिकार न कर सकी। विलियम ने तुरन्त स्पेनी सेना के विरुद्ध संघर्ष का नारा दिया। उसे फ्रांस, जर्मनी व इंग्लैण्ड से सैनिक सहायता भी प्राप्त हो गई। उसने उत्तरी नीदरलैण्ड्स से ड्यूक के अधिकार को समाप्त करने में सफलता प्राप्त कर ली। ड्यूक ने उत्तरी क्षेत्र पर पुन: अधिकार करने के लिए 8 माह का भीषण संघर्ष किया और उसे सफलता भी मिली। 1573 ई. में उसके स्थान पर फिलिप द्वितीय ने रेक्वेसेन्स को नीदरलैण्ड्स का प्रशासक बनाकर भेजा।

विलियम ने अपने साहस को नहीं छोड़ा। उसने रेक्वेसेन्स के लीडेन नगर पर अधिकार करने के सभी इरादों को विफल कर दिया। लीडेन नगर की सुरक्षा के लिए उसने समुद्र का बांध कटवा दिया। स्पेनी सेना ने त्रस्त होकर नीदरलैण्ड्स के उत्तरी व दक्षिणी भाग के नगरों में लूटमार एवं रक्तपात का ताण्डव नृत्य आरम्भ कर दिया। 'स्पेनियों के इस रोष' के विरोध में नीदरलैण्ड्स के 17 प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने घेण्ट नामक नगर में आपस में एक सन्धि की। इस सन्धि को 'घेण्ट की सन्धि' (Pacification of Ghent-1576) के नाम से जाना जाता है। इस सन्धि में यह निर्णय लिया गया कि, 'फिलिप द्वितीय को धार्मिक अदालतों को समाप्त करना होगा, स्पेनी सेनाएं नीदरलैण्ड्स को खाली करेंगी। नीदरलैण्ड्सवासियों को पुन: प्राचीन सुविधाएँ प्रदान की जाएँ। यदि ऐसा नहीं होता तो अब वे भी संगठित होकर विद्रोहियों का साथ देंगे।' फिलिप द्वितीय के लिए यह एक चुनौती थी। इधर 1776 में रेक्वेसेन्स की मृत्यु हो गई। अत: उसने डॉन जान को उसके स्थान पर भेजा, परन्तु जॉन डान को विलियम द्वारा छेड़े गए

TOUCH 'n' PASS

इस संघर्ष के विरोध में कोई विशेष सफलता नहीं मिली। 1578 में डॉन की भी मृत्यु हो गई। अत: अब पारमा के ड्यूक अलेक्जेण्डर फार्नेस को नीदरलैण्ड्स भेजा गया।

फार्नेस के आगमन के समय उसके सौभाग्य से उत्तरी नीदरलैण्ड्स के प्रोटेस्टेण्टों एवं दक्षिणी नीदरलैण्ड्स के कैथोलियों के मध्य पारस्परिक संघर्ष हो गया था। फार्नेस ने इसका लाभ उठाकर दक्षिणी नीदरलैण्ड्स के दसों प्रान्तों को स्पेन के हित में तोड़ दिया। उसने उन्हें कैथोलिक सम्प्रदाय की रक्षा की दुहाई दी। इस प्रकार उसने 'आरास की लीग' की स्थापना की। इसके विरोध में विलियम ने उत्तरी नीदरलैण्ड्स के सातों प्रान्तों को एकबद्ध कर 'यूट्रेक्ट का संघ' गठित किया। इस प्रकार 'घेण्ट की सन्धि' का अस्तित्त्व समाप्त हो गया और नीदरलैण्ड्स की एकता भंग हो गई। उत्तर के प्रान्तों ने विलियम के नेतृत्व में 1581 ई. में स्पेन की प्रभुसत्ता से स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। इतिहास में इसे डचों द्वारा मानव अधिकारों की घोषणा के नाम से जाना जाता है। 1584 ई. में फिलिप द्वितीय ने विलियम की हत्या करवा दी। विलियम की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र मरिश ने आन्दोलन का नेतृत्व संभाला। इंग्लैण्ड व फ्रांस की सहायता प्राप्त कर मरिश ने फिलिप द्वितीय से संघर्ष जारी रखा। 1598 ई. में फिलिप द्वितीय की मृत्यु के उपरान्त फिलिप तृतीय के काल में भी संघर्ष जारी रहा। अन्तत: तीसवर्षीय युद्ध (1618-1648) के पश्चात् ही यह संघर्ष समाप्त हुआ। 1648 में सभी यूरोप के राज्यों व स्पेन ने डच गणतन्त्रों का मान्यता प्रदान कर दी। इस प्रकार नीदरलैण्ड्स का उत्तरी भाग डच गणतन्त्र के राज्य के नाम से विख्यात हुआ और दक्षिणी नीदरलैण्ड्स स्पेनी नीदरलैण्ड्स कहलाया।

प्र.4. नीदरलैण्ड्स/डच आन्दोलन की सफलता के कारणों को लिखिए।

Write the causes of the success of the Dutch/Netherlands Movement.

उत्तर

नीदरलैण्ड्स/डच आन्दोलन की सफलता के कारण
(Causes of the success of the Dutch/Netherlands Movement)

नीदरलैण्ड्स पर स्पेन का प्रभुत्व, जबरदस्त शिंकजा एवं स्पेनी साम्राज्य के सदृश युद्ध सामग्री न होने पर भी नीदरलैण्ड्स का उत्तरी भाग में होने वाला डच स्वातन्त्र्य आन्दोलन सफल रहा और फिलिप द्वितीय को पराजय का सामना करना पड़ा। संक्षेप में, डच आन्दोलन की सफलता के कारणों को निम्नवत् इंगित किया जा सकता है—

1. नीदरलैण्ड्स के प्रति फिलिप द्वितीय की शोषण की नीति तथा विशेषत: प्रोटेस्टेण्टों के दमन की नीति ने वहां के निवासियों में यह भावना उत्पन्न कर दी थी कि फिलिप द्वितीय विदेशी है। अत: उत्तरी नीदरलैण्ड्स में विद्रोह का स्वरूप राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत हो गया। राष्ट्रीयता की भावना से किए गए संघर्ष का दमन नीति के सम्मुख विजय प्राप्त करना स्वाभाविक था।
2. फिलिप द्वितीय के साम्राज्य की विशालता, उसकी प्रशासनिक कठिनाइयां, फ्रांस व इंग्लैण्ड से अनवरत रूप से युद्धों में उलझे रहना आदि के कारण वह नीदरलैण्ड्स के विद्रोह के दमन में पूर्णत: संलग्न भी नहीं हो पाया था। अत: इस बात का लाभ राष्ट्रवादियों को मिल गया।
3. डचों की नौ सैनिक शक्ति अत्यन्त प्रबल थी, इसके विपरीत स्पेनी नौ सेना दुर्बल थी। डचों की गुरिल्ला युद्ध प्रणाली का लाभ भी डचों को प्राप्त हो गया।
4. स्पेन के विरुद्ध डचों को फ्रांस, इंग्लैण्ड व जर्मनी से सैन्य व आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही थी।
5. डचों की सफलता का सबसे महत्त्वपूर्ण कारण उनके आन्दोलन को विलियम ऑफ आरेन्ज का नेतृत्व प्राप्त होना था। विलियम ने डचों के टूटते हुए मनोबल को बढ़ाया और प्रत्येक स्थिति में संघर्ष जारी रखा। यही नहीं, उसने फ्रांस, इंग्लैण्ड व जर्मनी से सैन्य व आर्थिक सहायता प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि अपनी निरंकुश एवं हठवादी नीति के कारण फिलिप द्वितीय न तो स्पेन की जर्जरित आर्थिक समस्या का समाधान कर सका और न ही अपने इस उद्देश्य को पूर्ण कर सका कि कैथोलिक सम्प्रदाय सर्वमान धर्म बन जाए। यह ठीक है कि वह मूरों के दमन में सफल रहा, किन्तु इसका प्रभाव स्पेन की अर्थव्यवस्था पर पड़ा। स्पेन की अर्थव्यवस्था पूर्णत: चरमरा गई। अन्तत: यदि यह माना जाए कि यदि उसने धर्म की वेदी पर राजनीति को बलिदान करने का प्रयत्न न किया होता तो उसे गृह-नीति के क्षेत्र में असफलता का मुँह न देखना पड़ता।

प्र.5. तीस वर्षीय युद्ध की प्रमुख तीन घटनाओं का उल्लेख कीजिए।

Explain the main three events of thirty-years war.

उत्तर तीसवर्षीय युद्ध के घटना चक्र को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से अग्रलिखित चार कालों में विभक्त किया जा सकता है—

TOUCH 'n' PASS

1. **बोहेमियन अथवा पैलाटिनेटकाल** (1618-1624)–1618 ई. से 1624 ई. तक तीसवर्षीय युद्ध के प्रमुख केन्द्र स्थल बोहेमिया तथा पैलाटाइन राज्य थे, अत: इस काल को इतिहास में बोहेमियन अथवा पेलाटिनेट काल के नाम से जाना जाता है। बोहेमिया में प्रोटेस्टेण्टों का दमन करने के लिए असन्तोष प्रदर्शन की घटना के पश्चात् सम्राट फर्डीनेण्ड द्वितीय ने स्पेनी शासक फिलिप तृतीय से सैनिक सहायता माँगी। अत: स्पेन ने बवेरिया के सेनापति काउण्ट टिली के नेतृत्व में एक सेना बोहेमिया भेज दी। पेलाटिनेट के राजा फ्रेडरिक ने सैन्य सहायता के लिए इंग्लैण्ड से सहायता माँगी, किन्तु आन्तरिक परेशानियों के कारण उसे इंग्लैण्ड से सहायता न मिल सकी। यही नहीं, उसे लूथरवादी जर्मन राजकुमारों ने भी सहायता नहीं दी। इस स्थिति में 1620 ई. में बोहेमिया के 'ह्वाइट हिल' नामक युद्ध में फ्रेडरिक को लिली की सेना ने शिकस्त दी। फ्रेडरिक को पेलाटिनेट छोड़कर भागना पड़ा। शाही सेना ने बोहेमिया पर अधिकार कर लिया। पेलाटाइन पर बवेरिया के शासक मैक्सिमिलियन का अधिपत्य स्थापित हो गया। कैथोलिकों की इस अभूतपूर्व सफलता से प्रभावित होकर स्पेनी नरेश फिलिप चतुर्थ ने 1621 ई. में उत्तरी नीदरलैण्ड्स के डचों के विरुद्ध संघर्ष पुन: आरम्भ कर दिया। 1625 ई. में स्पेनी सेना ने ब्रेडा नामक डच नगर पर भी अधिकार कर लिया। अभूतपूर्व सफलता ने अब उत्तरी जर्मनी के लूथरवादी राजकुमारों के कान खड़े कर दिए। फर्डीनेण्ड द्वितीय ने जर्मनी के प्रोटेस्टेण्ट राज्यों की राजनीतिक एवं धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान करने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। बोहेमिया में कैथोलिक धर्म को जबरदस्ती लागू करवाया गया।
2. **डेनिश काल** (1625-1629)—प्रोटेस्टेण्टों की दुर्दशा पर डेनमार्क व नार्वे के नरेश क्रिश्चियन चतुर्थ ने जर्मनी के प्रोटेस्टेण्टों की सहायता की। अत: 1625 से 1629 का काल डेनिस काल के नाम से प्रख्यात है। 1625 में क्रिश्चियन चतुर्थ ने इंग्लैण्ड व जर्मनी के लूथरवादी एवं काल्विनवादी राजकुमारों से सहायता प्राप्त कर उत्तरी जर्मनी पर आक्रमण किया। सेनापति टिली एवं वालेन्स्टाइन की सेना ने लूथर (Luther) नामक स्थान पर 1626 ई. में क्रिश्चियन चतुर्थ को बुरी तरह पराजित किया। अन्तत: क्रिश्चियन चतुर्थ को विवश होकर फर्डीनेण्ड के साथ ल्यूबेक की सन्धि करनी पड़ी। इस सन्धि के अनुसार जटलैण्ड, श्लैशविग एवं हाल्सटीन पर क्रिश्चियन चतुर्थ का अधिकार तो बना रहा, किन्तु अब कैथोलिकों की प्रभुता स्थापित हो गई। जर्मनी में सम्राट की प्रभुसत्ता एवं हैप्सबर्ग वंश की प्रधानता स्थापित हो गई।
3. **स्वीडिश काल** (1630-1635)–1630 ई. में स्वीडन नरेश गस्टवस एडल्फस ने वाल्टिक क्षेत्र को स्वीडिश प्रभाव क्षेत्र में लाने एवं स्वीडन के व्यापार एवं वाणिज्य के विकास के उद्देश्य से तीसवर्षीय युद्ध में प्रवेश करते हुए जर्मनी के प्रोटेस्टेण्टों को सहायता प्रदान की। स्वीडन के द्वारा अपने सहधर्मियों की सहायता के कारण 1630-1635 का काल स्वीडिश काल के नाम से जाना जाता है। एडल्फ्स ने अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु यूरोपीय राजनीति में बोब राजवंश की प्रधानता स्थापित करने के लिए लालायित फ्रांस से गठजोड़ किया। यह ठीक है कि फ्रांस का प्रधानमन्त्री रिशलू स्वयं कैथोलिक था, किन्तु उसने हैप्सबर्ग वंश को चुनौती देकर बोब राजवंश के प्रभुत्व को स्थापित करने के उद्देश्य से प्रोटेस्टेण्टों का साथ दिया। 1634 ई. तक दोनों पक्ष युद्ध करते-करते थक चुके थे। अत: मई 1635 ई. में प्राग की सन्धि हुई। इस सन्धि के अनुसार यह निर्णय लिया गया कि जर्मन साम्राज्य की सैन्य शक्तियों पर जर्मन सम्राट का प्रभुत्व रहेगा। केवल सैक्सनी का राज्य अपनी सैन्य शक्ति रख सकेगा, शेष राज्यों को अपनी सैन्य शक्ति समाप्त करनी होगी। युद्ध के दौरान एक-दूसरे के जीते हुए क्षेत्र दोनों एक-दूसरे को वापस करेंगे तथा 1627 ई. तक जो भी कैथोलिक सम्पत्ति प्रोटेस्टेण्टों के अधिकार में आ गई तो वह आगामी 40 वर्षों तक या सन्तोषप्रद समाधान न होने तक परिवर्तित नहीं होगी। इस सन्धि का सबसे बड़ा दोष यह था कि इसके अनुसार जर्मनी में काल्विनवादियों को मान्यता प्रदान नहीं की गई थी।

प्र.6. फ्रांसीसी काल पर टिप्पणी कीजिए।
Write a note on French Period.

उत्तर

फ्रांसीसी काल (1635-1648)

हेज के अनुसार, 'प्राग की सन्धि नि:सन्देह स्थायी सिद्ध होती यदि रिशलू ने फ्रांस के हित को दृष्टि में रखकर इस युद्ध को जारी न किया होता।'

वास्तव में रिशलू तीसवर्षीय युद्ध को जारी रख हैप्सबर्ग राजतन्त्र को पराजित कर बोब राजवंश की प्रतिष्ठा को यूरोपीय राजनीति में कायम करना चाहता था। यही नहीं, वह युद्ध में भाग लेकर फ्रांस का प्रादेशिक विस्तार भी करना चाहता था। अत: अब फ्रांस ने अपने राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए युद्ध में सक्रिय रूप से भाग लिया। अत: इस काल (1635-1648) को फ्रांसीसी काल के नाम से जाना जाता है। अब सप्तवर्षीय युद्ध दो प्रश्नों के उत्तर के लिए अपेक्षित सिद्ध हुआ, प्रथम, यूरोप की राजनीति में

TOUCH 'n PASS

फ्रांस और आस्ट्रिया में से किसका वर्चस्व स्थापित होगा और द्वितीय यूरोप में कैथोलिक या प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदायों में से किसकी सर्वमान्यता स्थापित होगी? 1635 ई. में हैप्सबर्ग साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करने से पूर्व फ्रांसीसी प्रधानमन्त्री कार्डिनल रिशलू ने स्वीडन, सेवाय एवं हालैण्ड से सन्धि कर ली। कार्डिनल रिशलू की मृत्यु तक स्थिति यह थी कि स्पेनी साम्राज्य में विद्रोहों का सिलसिला जारी था तथा युद्ध में स्पेनी सेना को बराबर पराजय का मुँह देखना पड़ रहा था। रिशलू की मृत्यु के पश्चात् फ्रांस को उसके सौभाग्य से मैजरिन का नेतृत्व प्राप्त हुआ, जिसने रिशलू की ही विदेश नीति का अनुगमन किया। मई, 1648 ई. में फ्रांस व स्वीडन की संयुक्त सेना ने स्पेनी सेना को भयंकर शिकस्त दी। अब स्थिति यहाँ तक बिगड़ गई कि आस्ट्रिया की राजधानी वियना के लिए खतरा उत्पन्न हो गया। क्योंकि फ्रांस व स्वीडन की संयुक्त सेना ने बवेरिया की सेना को भी आतंकित कर दिया था, विवश होकर सम्राट को स्वीडन व फ्रांस के साथ 'वेस्टफेलिया की सन्धि' करनी पड़ी। फलत: तीस वर्षीय युद्ध का अन्त हुआ।

प्र.7. वेस्टफेलिया की सन्धि का स्पष्टीकरण उसके महत्त्व के सन्दर्भ में कीजिए।
Clarify the treaty of Westphalia with regards to its Importance.

उत्तर

वेस्टफेलिया की सन्धि : 1648
(Peace of Westphalia : 1648)

वेस्टफेलिया की सन्धि की प्रमुख धाराएँ निम्नवत् थीं—

1. काल्विनवादियों को वैधानिक मान्यता प्रदान की गयी।
2. 1624 ई. के आरम्भ में प्रोटेस्टेण्टों व कैथोलिकों के पास जो चर्च की सम्पत्ति थी वह यथावत् रहेगी तथा साम्राज्य की अदालतों में प्रोटेस्टेण्ट व कैथोलिक दोनों न्यायाधीशों की संख्या समान रहेगी।
3. जर्मनी के प्रत्येक राज्य को युद्ध व सन्धि सम्बन्धी पूर्ण अधिकार प्रदान कर दिए गए, किन्तु यह पाबन्दी लगायी गयी कि इन अधिकारों का प्रयोग उस सीमा तक ही मान्य होगा जहां तक कि ये सम्राट के विरुद्ध न जाते हों।
4. ओडर, एल्ब एवं बेसर नदियों के मुहाने पर स्वीडन के अधिकार को मान्यता दे दी गयी।
5. पैलाटाइन राज्य को दो भागों में विभक्त कर उत्तरी पैलाटाइन पर बवेरिया के शासक मैक्सिमिलियन का एवं दक्षिणी पैलाटाइन पर फ्रेडरिक के पुत्र चार्ल्स लुई का अधिकार माना गया।
6. स्ट्रासबर्ग नामक नगर को छोड़कर सम्पूर्ण आल्सेज, मेज, वर्दू एवं टूल के विशपरिकों को फ्रांस का अधिकार मान्य हुआ।
7. फ्रांस व स्वीडन जर्मन संसद में अपने प्रतिनिधि भेजने के अधिकारी होंगे।
8. स्विट्जरलैण्ड एवं उत्तरी नीदरलैण्ड्स को हैप्सबर्ग राजसत्ता से स्वतन्त्र मान लिया गया।

इस प्रकार इस सन्धि ने आस्ट्रियन हैप्सबर्ग के वंशानुगत आस्ट्रिया, हंगरी एवं बोहेमिया नामक राज्यों पर सम्राट के अधिकार को तो पूर्ववत् रहने दिया, किन्तु पवित्र रोमन साम्राज्य पर सम्राट के वास्तविक नियन्त्रण को सीमित तो कर ही दिया साथ ही जर्मनी में भयंकर परिवर्तन भी कर दिए। इस सन्धि ने यूरोपीय राजनीति में बूर्बो राजवंश के उत्थान एवं हैप्सबर्ग साम्राज्य के पतन को स्पष्ट कर दिया। यही नहीं, धर्म-सुधार के युग का अन्त हुआ और इसके स्थान पर राजनीतिक एवं आर्थिक नीति की प्रधानता वाले नव युग का सूत्रपात भी इस सन्धि ने किया। इस सन्धि के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए थेचर और फर्डीनेण्ड ने लिखा है, 'वेस्टफेलिया की सन्धि अनेक कारणों से इतिहास के महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों में से एक है। प्रथम, इसने फ्रांस व स्वीडन का जर्मनी के विभिन्न भागों पर अधिकार किया जाना सुनिश्चित किया, द्वितीय, इसने प्रोटेस्टेण्ट व कैथोलिक धर्मावलम्बियों के मध्य समझौते का नया आधार तैयार किया तथा तीसरा, इसने जर्मनी में एक नवीन राजनीतिक व्यवस्था को सुनिश्चित किया।'

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. चार्ल्स पंचम की गृह-नीति का विस्तार से वर्णन कीजिए।
Describe the Home Policy of Charles V.

उत्तर

चार्ल्स पंचम (1520-1556)
(Charles V)

1506 ई. में नीदरलैण्ड के शासक फिलिप की मृत्यु के पश्चात् उसका 6-वर्षीय पुत्र नीदरलैण्ड्स का शासक बना। अपनी माता जोआना की विक्षिप्त अवस्था के कारण चार्ल्स कैस्टाईल का शासक बन गया। 1516 ई. में उसके नाना फर्डीनेण्ड की मृत्यु हो जाने पर वह स्पेन, नेपेल्स, सापर्डीनिया, सिसली, अफ्रीका एवं अमरीकी उपनिवेशों का प्रशासक बन गया। 1519 ई. में अपने

TOUCH 'n' PASS

दादा सम्राट मैक्सिमिलियन के निधन के उपरान्त वह ऑस्ट्रियन साम्राज्य (आस्ट्रिया, बोहेमिया, हंगरी, कार्निओला, कैरेन्थिया, एस्टोरिया एवं टाईरन) का भी स्वामी बन गया, किन्तु उसने आस्ट्रियन साम्राज्य में आने वाले उक्त प्रदेशों का प्रशासन अपने भाई फर्डीनेण्ड को सौंप दिया। 1520 ई. में पवित्र रोमन सम्राट के चुनाव में वह विजयी हुआ और एला शैपल के स्थान पर उसका राज्याभिषेक हुआ। इस प्रकार चार्ल्स, जो कि 'चार्ल्स पंचम' के नाम से सिंहासनारूढ़ हुआ, यूरोप के इतिहास में ऐसा सर्वाधिक शक्तिशाली एवं भाग्यवान शासक सिद्ध हुआ, जिसे कि उत्तराधिकार के रूप में विशाल साम्राज्य प्राप्त हो गया। इसी कारण इतिहासकार हेज ने तो यहाँ तक कहा है कि 'उस पर राज्यों एवं साम्राज्यों की वर्षा होने लगी। इस विशाल साम्राज्य के शासक के रूप में उसने 1556 ई. तक शासन किया।

चार्ल्स पंचम की गृह-नीति
(Home Policy of Charles V)

चार्ल्स पंचम की गृह-नीति का विवरण निम्नलिखित है—

समस्याएँ (Problems)—चार्ल्स पंचम को उत्तराधिकार के रूप में एक विस्तृत साम्राज्य मिल तो गया था, किन्तु यह विशाल साम्राज्य कांटों की सेज से कम भी नहीं था। चार्ल्स पंचम को जितना विशाल साम्राज्य प्राप्त हुआ था, उतना ही उसका उत्तरदायित्व भी बढ़ गया था, उसका विशाल साम्राज्य ही उसके लिए सबसे महत्त्वपूर्ण चुनौती थी। उसके विशाल साम्राज्य की विस्तृत सीमाएँ एवं प्रादेशिक भिन्नता उसकी प्रमुख समस्या थी। वास्तव में, चार्ल्स पंचम का साम्राज्य तो एक राजवंशीय साम्राज्य था, जो कि अनेक राज्यों व प्रदेशों का असम्बद्ध समूह था। इतिहासकार हेज के शब्दों में, 'इसमें प्राचीन समय के रोमन साम्राज्य या पश्चात् के रूसी गम्भीर चुनौती था। इस प्रकार आन्तरिक क्षेत्र में चार्ल्स को आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक समस्याओं का सामना करना पड़ा जो कि अत्यधिक उलझी हुई थीं। चार्ल्स पंचम, अपनी इन समस्याओं के निराकरण में कहाँ तक सफल हुआ यह उसके स्पेन, नीदरलैण्ड एवं जर्मन सम्राट (पवित्र रोमन सम्राट) के रूप में किए गए कार्यों से स्पष्ट होता है। उसका स्पेन, नीदरलैण्ड्स एवं जर्मन सम्राट के रूप में शासन का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है—

स्पेन का शासन (Rule of Spain)

1516 ई. में फर्डीनेण्ड की मृत्यु के पश्चात् स्पेनिश साम्राज्य के सम्राट के रूप में चार्ल्स पंचम सिंहासनारूढ़ हुआ था। यहाँ पर उसने पूर्ण निरंकुशतापूर्वक शासन किया। आरागन एवं कैस्टाईल की संसदों ने चार्ल्स के निरंकुश अधिकारों को प्रतिबन्धित करने का जो प्रयत्न किया वह असफल सिद्ध हुआ। चार्ल्स की निरंकुशता स्पेन के सामन्तों एवं नगर प्रतिनिधियों को भी असह्य थी। अत: 1520 ई. से 1522 तक स्पेन में भयंकर विद्रोह हुए, किन्तु चार्ल्स पंचम ने सामन्तों एवं नगर प्रतिनिधियों के पारस्परिक संघर्ष का लाभ उठाकर इन विद्रोहों को कुचलने में सफलता प्राप्त कर ली। सामन्त वर्ग ने नगर प्रतिनिधियों के विरुद्ध अब निरंकुश प्रशासन का समर्थन आरम्भ कर दिया। मौके का लाभ उठाकर चार्ल्स पंचम ने नगर-प्रतिनिधियों के अधिकारों को छीन लिया, उनके नगर-प्रशासन सम्बन्धी स्थानीय अधिकार भी सीमित कर दिए गए। अब नगर के प्रशासन के संचालन के लिए एक राजकीय पदाधिकारी की नियुक्ति की गयी। अरागन व कैस्टाईल की संसदों ने जिस प्रकार प्रारम्भ में चार्ल्स के निरंकुश शासन का विरोध किया था उससे प्रभावित होकर चार्ल्स ने संसद की वास्तविक शक्ति को छीन लिया, किन्तु उसके कर्त्तव्य यथावत् बने रहे। अब संसद राज्याश्रित संस्था थी। 1523 ई. तक अपने निरंकुश प्रशासन को स्थापित कर उसने स्पेन निवासियों की सन्तुष्टि के लिए अधिकांश सरकारी पदों पर स्पेनवासियों को ही नियुक्त किया। यही नहीं, उसने 1526 ई. में पुर्तगाल की राजकुमारी ईसाबेला से विवाह किया।

चार्ल्स पंचम ने स्पेन के एकीकरण एवं राष्ट्रीयकरण के लिए कदम उठाए। उसने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में स्पेन की महत्ता को स्थापित करने के लिए साम्राज्यवादी नीति का अवलम्बन किया। अमेरीका गोलार्द्ध के मैक्सिको, मध्य अमरीका, पेरू, बोलिविया, चिली, न्यू ग्रानाडा एवं वेनेजुएला में स्पेनी उपनिवेश बसाने में उसने सफलता प्राप्त की।

इस प्रकार उसके स्पेन में प्रशासन ने वहां पर निरंकुशता की जो नीति अपनाई उससे वह निरंकुश प्रशासन सुप्रतिष्ठित करने में सफल तो रहा, किन्तु संसद की शक्ति सीमित हो जाने से स्पेन का वैधानिक विकास थम गया, उसने अन्तर्राट्रीय राजनीति में स्पेन को प्रभुत्व प्रदान करने के लिए जिस साम्राज्यवादी नीति को अपनाया उससे स्पेन के राजकोष पर गहरा असर पड़ा। स्पेनी राजकोष पर लगभग दो करोड़ पौण्ड का ऋण हो गया। यह सब करने के स्थान पर उसे स्पेन में एक जैसी कर-व्यवस्था व आर्थिक व्यवस्था स्थापित करनी थी। उसकी मूर-विरोधी नीति के कारण व्यापार में चतुर उद्योगशील मूर-जाति ने स्पेन को त्याग दिया। नि:सन्देह यह आर्थिक एवं औद्योगिक दृष्टि से अत्यन्त विनाशकारी सिद्ध हुआ। यह ठीक है कि स्पेन को अपने उपनिवेश प्राप्त हो गए, किन्तु

उसका यह औपनिवेशिक विस्तार स्पेन के राष्ट्रीय विकास के लिए घातक साबित हुआ। अमरीका के प्रदेशों से प्राप्त स्वर्ण ने स्पेनी जनता को विलासी बना दिया, इससे स्पेन का नैतिक पतन तो हुआ ही साथ ही स्पेनी जनता में अकर्मण्यता भी आ गई।

नीदरलैण्ड्स का शासन (Rule of Netherlands)

नीदरलैण्ड्स में ही चार्ल्स पंचम का जन्म एवं पालन-पोषण हुआ था। अत: वहाँ के निवासियों में चार्ल्स पंचम के लिए स्वभावत: श्रद्धा एवं सम्मान था। चार्ल्स ने नीदरलैण्ड्स की जनता की भावनाओं का पूर्ण लाभ उठाते हुए नीदरलैण्ड्स में सफलतापूर्वक शासन किया। उसने नीदरलैण्ड्स के 17 प्रदेशों को मिलाकर एक संघ की स्थापना की। प्रशासनिक कार्यों में संघ की सहायता के लिए एक स्टेट्स जनरल (संसद) एवं तीन कौन्सिलों की स्थापना की। उसने न तो वैधानिक क्षेत्र में और न ही आर्थिक क्षेत्र में कोई हस्तक्षेप किया। उसकी इस हस्तक्षेप न करने की नीति के कारण ही उस समय भी नीदरलैण्ड्स की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई जबकि उसकी साम्राज्यवादी नीति के कारण वहाँ अधिक कर लगाए गए। इस प्रकार उसकी प्रशासकीय नीति नि:सन्देह प्रशंसनीय है। साम्राज्य के सदृश एक केन्द्रीय सरकार नहीं थी, अपितु यह वैवाहिक सम्बन्धों के कारण एक विशेष राजवंश-हैप्सबर्ग राजवंश के अधीन अनेक राज्यों व प्रदेशों का असम्बद्ध समूह था।' प्रत्येक प्रान्त की अलग एवं स्वतन्त्र शासन-व्यवस्था थी। यह ठीक है कि जर्मनी में नाममात्र की केन्द्रीय व्यवस्था थी, परन्तु स्पेन, नीदरलैण्ड्स एवं इटैलियन राज्यों में तो यह नाममात्र के लिए भी नहीं थी। जहाँ एक ओर नीदरलैण्ड्स में आने वाले सभी प्रान्त अपना-अपना अलग अस्तित्व एवं स्वतन्त्रता रखते थे वहीं दूसरी ओर स्पेनिश साम्राज्य में भी विभिन्न प्रान्तों की शासन व्यवस्था अलग-अलग थी। स्पेनी एवं इटैलियन वर्गीयता जहाँ उसके लिए गम्भीर चुनौती थी तो पवित्र रोमन साम्राज्य होने के नाते उसका उत्तरदायित्व अत्यधिक बढ़ गया था। हेज ने इस समस्या को बाह्य आडम्बर की संज्ञा दी है। जर्मनी में तीव्र गति से फैलने वाला धर्म सुधार आन्दोलन चार्ल्स के सम्मुख एक किन्तु चार्ल्स पंचम ने नीदरलैण्ड्स में धार्मिक असहिष्णुता की जो नीति अपनाई, उसकी इतिहासकारों ने कटु आलोचना की है। चार्ल्स ने कट्टर कैथोलिक होने के कारण नीदरलैण्ड्स के काल्विनवादियों का दमन किया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए नीदरलैण्ड्स के प्राय: सभी प्रान्तों में 'इन्क्वीजिशन' नामक अदालतें स्थापित की गईं, किन्तु चार्ल्स की इस नीति के कारण भी प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय का विकास नीदरलैण्ड्स में होता चला गया। उसके अत्यधिक विरोध ने वहाँ पर फिलिप II के शासनकाल में स्थापित होने वाले एक सफल प्रोटेस्टेण्ट डच गणतन्त्र की स्थापना के द्वार का मार्ग खोल दिया। इस दृष्टि से चार्ल्स पंचम का नीदरलैण्ड्स में प्रशासन असफल ही माना जा सकता है।

जर्मन साम्राज्य या पवित्र रोमन साम्राज्य का शासन (Rule of Holy Roman Empire)

फ्रांस का शासक फ्रांसिस प्रथम एवं इंग्लैण्ड के शासक हेनरी अष्टम को चुनाव प्रतिद्वन्द्विता में परास्त कर 1520 ई. में चार्ल्स पंचम 'पवित्र रोमन सम्राट' के रूप में प्रतिष्ठित हुआ था, किन्तु जर्मन साम्राज्य (पवित्र रोमन साम्राज्य) उसके लिए भयंकर समस्याएं लिए खड़ा था, सम्पूर्ण साम्राज्य विशृंखलित था। छोटे-बड़े अर्द्धस्वतन्त्र राज्यों में विभक्त था। साम्राज्य में राजकुमार स्वतन्त्र नगर राज्य व सामन्त अपने-अपने अलग-अलग उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पारस्परिक युद्धों में संघर्षरत थे। चार्ल्स पंचम पवित्र रोमन साम्राज्य को सुसंगठित केन्द्रीय शासन के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहता था। अत: उसने जर्मनी में अपने व्यक्तिगत अधिकारों में वृद्धि एवं जर्मनी को आर्थिक दृष्टि से एक रूप में बाँधने का प्रयत्न किया, परन्तु उसके यह प्रयास निर्रथक रहे। इसका सबसे प्रधान कारण नगरों के प्रभावशाली व्यापारियों एवं सामन्तों का विरोध था। दूसरी ओर वह फ्रांस के साथ युद्ध में फँसा हुआ था। अत: पवित्र रोमन साम्राज्य की ओर वह विशेष ध्यान भी नहीं दे सका। चार्ल्स की जर्मनी समस्या सामन्तों का विरोध करने में ही समाप्त नहीं हो गई उसे तो उसी समय मार्टिन लूथर के धर्म सुधार आन्दोलन ने आ घेरा। सामन्त वर्ग धर्म सुधार आन्दोलन का लाभ उठाकर अपने अधिकारों में वृद्धि का प्रयत्न कर रहे थे। चार्ल्स पंचम कैथोलिक सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा को यथावत बनाए रखना चाहता था, अत: उसने धर्म सुधार आन्दोलन का विरोध किया। अत: जर्मनी गृह-युद्ध की विभीषिका में जल उठा। चार्ल्स पंचम न तो जर्मनी में राष्ट्रीय एकता स्थापित कर सका और न ही प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय के विकास को रोक पाया। उसे 1555 ई. में लूथर सम्प्रदाय को मान्यता देनी ही पड़ी। इतिहास में इसे 'आन्सबर्ग की स्वीकृति' के नाम से जाना जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि चार्ल्स पंचम ने अपने विशाल साम्राज्य की आन्तरिक समस्याओं का समाधान कर प्रजा में एकता स्थापित करने के जो प्रयत्न किए उसमें उसे सफलता प्राप्त न हो सकी। उसने आन्तरिक समस्याओं से जूझने का आजीवन संघर्ष किया, परन्तु इससे यह निष्कर्ष निकालना तर्कसंगत नहीं होगा कि वह अयोग्य था। नि:सन्देह वह आन्तरिक समस्याओं का सामना अपने धैर्य, दृढ़ता, स्वाभाविक गुणों एवं शैक्षणिक अनुभव के कारण ही करता रहा है। 'उसकी असफलता का कारण उसकी अयोग्यता नहीं, अपितु उसके विशाल साम्राज्य में निहित अनेक प्रान्तों व जातियों के परस्पर विरोधी हितों की प्रधानता थी।'

प्र.2. चार्ल्स पंचम की विदेशी नीति की विवेचना कीजिए।
Discuss the foreign policy of Charles V.

उत्तर

चार्ल्स पंचम की विदेश नीति
(Foreign Policy of Charles V)

आन्तरिक समस्याओं के सदृश ही चार्ल्स पंचम को विदेश-राजनीति के सन्दर्भ में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। उसका विशाल साम्राज्य यूरोपीय शासकों के लिए असहाय था। फ्रांस का शासक फ्रांसिस प्रथम उसका प्रबल प्रतिद्वन्द्वी था। तुर्कों का पूर्वी यूरोप में डेन्यूब नदी की ओर अनवरत रूप से प्रसार एवं भूमध्यसागर में तुर्कों की बढ़ती महत्ता नि:सन्देह चार्ल्स पंचम की प्रमुख समस्या थी। रोम के पोप तथा हेनरी अष्टम की विद्वेषपूर्ण नीति भी उसके सामने खड़ी थी। कुल मिलाकर उसका विशाल साम्राज्य ही अन्य यूरोपीय शक्तियों की आँखों का कांटा बना था। चार्ल्स को यूरोपीय शक्तियों के गिद्ध नेत्रों से अपने साम्राज्य को सुरक्षित रख अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में हैप्सबर्ग वंश की प्रतिष्ठा को कायम रखना था। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसे यूरोप की शक्तियों से संघर्ष भी करना पड़ा। यूरोप के प्रमुख देशों से उसके सम्बन्धों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है—

फ्रांस से सम्बन्ध (Relations with France)

अपनी आन्तरिक समस्याओं से आहत चार्ल्स पंचम फ्रांस से मधुर सम्बन्ध बनाने का पक्षपाती था, किन्तु उसे इस सन्दर्भ में निराशा का सामना करना पड़ा। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में जो उठापटक चल रही थी, उसके कारण युद्ध करके ही वह हैप्सबर्ग वंश की प्रतिष्ठा एवं अपने साम्राज्य को बचा सकता था। अत: फ्रांस से उसे युद्ध करने पड़े। वास्तव में फ्रांस के साथ उसकी शत्रुता के निम्नलिखित प्रमुख कारण थे—

1. चार्ल्स पंचम एवं फ्रांसीसी नरेश फ्रांसिस प्रथम दोनों ही पवित्र रोमन साम्राज्य के सम्राट के पद के दावेदार थे। इस प्रतिद्वन्द्विता में चार्ल्स पंचम विजयी हुआ। अत: फ्रांसिस प्रथम की पराजय दोनों के मध्य शत्रुता का कारण बन गई।
2. हैप्सबर्ग साम्राज्य की विशालता के कारण फ्रांसीसी साम्राज्य की सीमाएँ हैप्सबर्ग साम्राज्य से चारों ओर से घिरी थीं। यह फ्रांस की सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त घातक था। फ्रांसिस प्रथम हैप्सबर्ग वंश को चुनौती देकर अपने साम्राज्य को सुरक्षित करना चाहता था।
3. दोनों राजवंशों की शत्रुता परम्परागत रूप से चली आ रही थी।
4. दोनों शासक नेपल्स एवं सिसली पर अपना-अपना अधिकार बताते थे। चार्ल्स पंचम मिलान पर जिसे कि फ्रांसिस प्रथम ने अपने अधिकार क्षेत्र में ले लिया था अपना अधिकार स्थापित करना चाहता था। इधर फ्रांसिस प्रथम नावारे के दक्षिणी प्रान्तों पर अधिकार करना चाहता था।

स्पष्ट है कि दोनों राजवंशीय साम्राज्यों के मध्य युद्ध उक्त परिस्थितियों में अवश्यम्भावी था। 1522 ई. में दोनों के मध्य युद्ध छिड़ गया जो कि बीच-बीच में रुक तो जाता था, किन्तु पुन: आरम्भ हो जाता था। इस प्रकार 1522 ई. में आरम्भ हुआ फ्रांस व हैप्सबर्ग साम्राज्य के मध्य का युद्ध दोनों नरेशों के शासन काल के अन्त तक जारी रहा। 1522 ई. में जब फ्रांस व हैप्सबर्ग साम्राज्य के मध्य का युद्ध आरम्भ हो गया तो चार्ल्स ने हेनरी अष्टम व रोम के पोप से सहायता प्राप्त कर फ्रांसीसियों को उत्तर इटली से निष्कासित कर मिलान के सिंहासन पर स्फोरजा परिवार को प्रतिष्ठित किया। 1525 ई. में पैविया के घेरे में फ्रांस को स्पेन ने बुरी तरह पराजित किया। फ्रांसिस प्रथम ने जो कि युद्ध से थक चुका था अपनी माता को लिखा, 'मेरे जीवन व सम्मान के अतिरिक्त विश्व में कुछ भी शेष नहीं रह गया है।'' हेज के शब्दों में, 'सब कुछ चार्ल्स के उद्देश्यों के लिए मंगलकारी प्रतीत होता था। फ्रांसिस को बाध्य होकर बर्गण्डी, नीदरलैण्ड्स व इटली के प्रदेशों पर से अपने दावों को छोड़ने एवं चार्ल्स पंचम की बहिन से विवाह करने का वचन देना पड़ा, किन्तु कारावास से छूटने के पश्चात् फ्रांस पहुँचते ही फ्रांसिस प्रथम ने अपने दिए गए वचनों को अमान्य घोषित कर युद्ध को पुन: जन्म दे दिया।

1527 ई. में जब दोनों के मध्य पुन: युद्ध आरम्भ हुआ तो स्थिति पूर्ववत् नहीं थी। फ्रांस ने रोम के पोप, फ्लोरेन्स, मिलान एवं वेनिस को मिलाकर एक संघ बना लिया था। वस्तुत: इन राज्यों के राजाओं का फ्रांस का साथ देने का प्रमुख कारण पंचम की बढ़ती हुई प्रतिभा थी। चार्ल्स पंचम ने हिम्मत से काम किया और 1527 ई. में युद्ध आरम्भ होते ही चार्ल्स की सेना ने रोम पर भयंकर आक्रमण कर दिया। चार्ल्स के विरुद्ध हेनरी अष्टम (इंग्लैण्ड के शासक) की सेना भी कारगर सिद्ध न हुई। 1529 ई. में विवश होकर फ्रांसिस प्रथम को कैम्ब्रे की सन्धि (Treaty of Cambrai) स्वीकार करनी पड़ी। सन्धि के अनुबन्धों के अनुसार फ्रांस ने नेपल्स, मिलान व नीदरलैण्ड्स के प्रदेशों पर अपने दावे छोड़ने पड़े। फ्रांसिस प्रथम ने चार्ल्स पंचम की बहिन 'एलेनार' के साथ

TOUCH 'n' PASS

विवाह करना स्वीकार किया। बर्गण्डी के प्रान्त पर फ्रांस का अधिकार मान लिया गया। कैम्ब्रे की सन्धि (1529 ई.) ने चार्ल्स पंचम की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगा दिए। फ्रांस पराजित हो चुका था। पोप ने उसकी शक्ति का लोहा मान लिया और इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा को धक्का लग गया। अब इटली व जर्मनी में सर्वेसर्वा कोई था तो वह था—चार्ल्स पंचम। उसकी प्रतिष्ठा का अनुमान इसी बात से लग जाता है कि 1530 ई. में पोप ने स्वयं अपने हाथों से उसे पवित्र रोमन सम्राट का स्वर्ण मुकुट पहनाया था। यह रोम के पोप के द्वारा पवित्र रोमन सम्राट का अन्तिम राज्याभिषेक था। किन्तु कैम्ब्रे की सन्धि ने पूर्ण युद्ध विराम नहीं किया। फ्रांसिस प्रथम ने इटली पर अधिकार करने के उद्देश्य से पुनः संघर्ष की तैयारी आरम्भ कर दी। उसने फ्लोरेन्स की राजकुमारी 'मेरी डी मैडिसी' से अपने पुत्र हेनरी का विवाह कर लिया। यही नहीं, डेनमार्क, स्वीडन, तुर्की, उस्मानिया एवं स्काटलैण्ड ने धर्म सुधार आन्दोलन का कन्धा थपथपाकर संघ बनाए। मिलान के प्रश्न पर पुनः 1536 ई. में हैप्सबर्ग साम्राज्य व फ्रांस के मध्य युद्ध छिड़ गया, 1538 ई. में 'नीस की सन्धि' ने कुछ समय के लिए युद्ध विराम किया, किन्तु 1542 में पुनः युद्ध आरम्भ हो गया जो कि 1559 की कोटियो कैम्ब्रिसिस की सन्धि के पश्चात् ही थमा। इस सन्धि ने दीर्घकालीन युद्धों का अन्त कर दिया। अब इटली के राज्यों पर फ्रांस न अपने दावे छोड़ दिए। मेज, टूल एवं वर्दू नामक प्रदेश फ्रांस को दे दिए गए, फ्रांस को राईन नदी की ओर सीमा विस्तार की छूट दे दी गई।

इस प्रकार चार्ल्स पंचम एवं फ्रांसिस प्रथम के मध्य चलने वाले दीर्घकालीन युद्धों के अत्यन्त गम्भीर परिणाम निकले। कूटनीतिक एवं सामयिक दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में हैप्सबर्ग साम्राज्य की महत्ता स्पष्ट हो गई। राईन नदी की ओर फ्रांसीसी सीमा का विस्तार हुआ। हेज के शब्दों में, 'यूरोपीय साम्राज्य में फ्रांसीसी राजतन्त्र का विलय न हो पाया।'' युद्धों के कारण पूर्वी यूरोप में तुर्कों की प्रगति को बल मिला। फ्रांस से तुर्की के सम्बन्धों में सुधार आया, जिसका प्रभाव फ्रांस के व्यापार पर सकारात्मक पड़ा, किन्तु हैप्सबर्ग साम्राज्य के अन्तर्गत आने वाले स्पेन व जर्मन साम्राज्य की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई। रोम भयंकर रूप से रौंद दिया गया। जर्मनी में पनप रहे धर्म सुधार आन्दोलन की ओर चार्ल्स पंचम विशेष ध्यान न दे सका। अतः धर्म सुधार आन्दोलन का द्रुतगति से विकास होता था, जिसने चार्ल्स पंचम की आन्तरिक समस्याओं को जटिल बना दिया।

तुर्कों से सम्बन्ध (Relation with Turkey)

चार्ल्स पंचम के फ्रांस के साथ अनवरत रूप से युद्धों में उलझे रहने का पूर्ण लाभ तुर्कों ने उठाया। सुल्तान सुलेमान द्वितीय (1520-1566) के नेतृत्व में तो मिस्र से लेकर अल्जीरिया तक का सम्पूर्ण अफ्रीकी तट उसके स्वामित्व को स्वीकार करता था। 1541 ई. तक सुलेमान ने हंगरी पर अधिकार कर लिया। 1547 ई. में चार्ल्स पंचम एवं उसके भाई को विवश होकर हंगरी पर तुर्कों के अधिकार को स्वीकृति देनी पड़ी। फर्डीनेण्ड ने यह स्वीकार किया कि वह सुल्तान को 30,000 डूकाट (30,000 Ducats) वार्षिक कर के रूप में देगा। सुल्तान सुलेमान की हंगरी विजय निःसन्देह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थी। हेज के शब्दों में, 'सुलेमान ने न केवल अपने प्रतिद्वन्द्वियों के हंगरी पर अधिकार करने के सभी प्रयास विफल कर दिए, अपितु आजीवन हैप्सबर्ग की परम्परागत राज्य सीमाओं की सुरक्षा को भी खतरे में डाले रखा।'

ठीक इसी समय ट्यूनिस एवं एलजीयर्स तुर्की सरदार, बारबरोसा के अधिकार में आ गए। उसने फ्रांस से सहायता प्राप्त कर भूमध्यसागर में तुर्की सेना का जमाव इस प्रकार करना आरम्भ कर दिया कि इटली व स्पेन की सुरक्षा एवं व्यापारिक हितों के लिए भय उत्पन्न हो गया। यही नहीं, बारबरोसा ने स्पेन से भगाए गए मूरों का समर्थन प्राप्त कर भूमध्यसागर के यूरोपीय तटीय प्रदेशों में लूटपाट आरम्भ कर दी। ईसाई जगत के सम्राट चार्ल्स के लिए यह एक गम्भीर चुनौती थी। उसने तुरन्त तीन सौ जहाजों का एक बेड़ा एवं तीस हजार सैनिक बारबरोसा के दमनार्थ भेज दिए। 1535 ई. में चार्ल्स का अधिकार ट्यूनिस पर हो गया और विद्रोहियों व लुटेरों को सदा के लिए समाप्त कर दिया गया। हीरालाल सिंह के शब्दों में, 'चार्ल्स पंचम अपनी इस विजय से ईसाई धर्म के संरक्षक के रूप में गौरवान्वित हुआ।'

इंग्लैण्ड से सम्बन्ध (Relations with England)

इंग्लैण्ड के साथ स्पेन के हैप्सबर्ग राजवंश से सम्बन्ध की महत्ता स्पेन के शासक फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेला की पुत्री कैथरीन के इंग्लैण्ड के राजकुमार आर्थर से विवाह से ही स्पष्ट हो जाती है। आर्थर की मृत्यु के पश्चात् कैथरीन का विवाह हेनरी अष्टम से हो गया था। कैथरीन स्पेन के शासक चार्ल्स पंचम की मौसी थी। इतना होने पर भी चार्ल्स पंचम ने प्रारम्भ में इंग्लैण्ड की यूरोप की राजनीति में भूमिका को नगण्य समझा, किन्तु हेनरी अष्टम के मन्त्री 'कार्डिनल उल्से' ने अपनी नीति से यूरोप में इंग्लैण्ड के गौरव में वृद्धि की। उल्से ने प्रारम्भ में पंचम को सहयोग प्रदान किया, किन्तु रोम पर चार्ल्स के आक्रमण से स्थिति में परिवर्तन आ गया। अब इंग्लैण्ड ने फ्रांस की सहायता करना आरम्भ कर दिया। स्थिति में परिवर्तन का सबसे महत्त्वपूर्ण कारण वास्तव में हेनरी अष्टम

एवं कैथरीन के विवाह सम्बन्ध में कटुता आ जाना था। हेनरी कैथरीन को तलाक देना चाहता था, किन्तु चार्ल्स पंचम इसका विरोधी था। इधर रोम के पोप ने भी चार्ल्स पंचम से भयभीत होकर हेनरी को तलाक की अनुमति न दी। अत: हेनरी अष्टम ने सभी सम्बन्धों को ताक में रखकर फ्रांस की स्पेन के विरुद्ध सहायता तो की ही, साथ ही रोम के पोप व चार्ल्स पंचम की कोई परवाह न करते हुए कैथरीन को तलाक देकर अपनी प्रेमिका 'ऐन बोलेन' से विवाह कर लिया, किन्तु 1533 ई. में कैथरीन की पुत्री मेरी ट्यूडर के इंग्लैण्ड की शासिका हो जाने के पश्चात् चार्ल्स पंचम व इंग्लैण्ड के सम्बन्ध मधुर हो गए। चार्ल्स पंचम ने अपने पुत्र फिलिप द्वितीय का विवाह मेरी ट्यूडर से कर दिया। स्पेन व इंग्लैण्ड के सम्बन्ध अब उस समय तक मधुर रहे जब तक कि 'एलिजाबेथ ट्यूडर' के राज्यारोहण के साथ ही इंग्लैण्ड की विदेश नीति में परिवर्तन नहीं आया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि चार्ल्स पंचम आजीवन संघर्ष करता रहा। 1547 ई. में फ्रांसिस प्रथम व हेनरी अष्टम की मृत्यु के पश्चात् जब ऐसा प्रतीत होता था कि अब चार्ल्स की समस्याओं का अन्त हो जाएगा, तो ठीक इसी समय 1550 ई. के पश्चात् चार्ल्स पर समस्याओं का तांता पुन: टूट पड़ा। एक ओर इटली में विद्रोह होने लगे तो दूसरी ओर जर्मनी में हो रहे धर्म सुधार आन्दोलन ने अब पूर्ण गति पकड़ ली थी। पूर्वी यूरोप में तुर्कों का प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था। इधर चार्ल्स का स्वास्थ्य भी दिन-प्रतिदिन गिरता चला जा रहा था। अत: 1555-56 में उसने अपने साम्राज्य को दो भागों में विभक्त कर स्पेनी साम्राज्य एवं अमेरिकी उपनिवेशों का उत्तराधिकार तो अपने पुत्र फिलिप II को सौंप दिया और पवित्र रोमन साम्राज्य एवं हैप्सबर्ग के पैतृक राज्यों का उत्तराधिकार अपने अनुज फर्डीनेण्ड को सौंपकर राजनीति से संन्यास ले लिया और अपने जीवन के अन्तिम दो वर्ष स्पेन में शान्ति वातावरण में व्यतीत किए। 21 सितम्बर, 1558 में उसका निधन हो गया।

प्र.3. स्पेन के पतन के कारणों का विवरण दीजिए।
Describe the causes of the Downfall of spain.

उत्तर

स्पेन के पतन के कारण
(Causes of the Downfall of Spain)

स्पेनी साम्राज्य के चरमोत्कर्ष का काल नि:सन्देह फिलिप द्वितीय के शासन काल का पूर्वार्द्ध काल था। चार्ल्स पंचम से विरासत में प्राप्त स्पेनी साम्राज्य फिलिप द्वितीय की शक्ति का प्रतीक था। इस समय स्पेनी साम्राज्य में कई यूरोपीय प्रदेश एवं अमेरिकी उपनिवेश थे। यही नहीं, सम्पूर्ण यूरोप में हैप्सबर्ग वंश की प्रतिष्ठा के रूप में स्पेनी साम्राज्य स्वयंसिद्ध था। इतना सब कुछ होते हुए भी फिलिप द्वितीय के शासनकाल के उत्तरार्द्ध से ही स्पेनी साम्राज्य का पतन आरम्भ हो गया और 1665 ई. में फिलिप चतुर्थ की मृत्यु के साथ ही स्पेन का गौरव यूरोपीय राजनीति में लुप्त हो गया।

संक्षेप में, स्पेनी साम्राज्य के पतन के प्रमुख कारणों को निम्नवत् इंगित किया जा सकता है—

1. **स्पेनी साम्राज्य का ढाँचा** (Structure of Spanish Empire)—स्पेनी साम्राज्य के पतन के लिए उसमें निहित आन्तरिक दुर्बलताएँ मूलत: उत्तरदायी थीं। स्पेनी साम्राज्य की विशालता उसके पतन के लिए नि:सन्देह घातक सिद्ध हुई। उसके प्रभाव क्षेत्र के अन्तर्गत कई यूरोपीय देश, अमेरीकी उपनिवेश एवं भूमध्य सागर व अटलाण्टिक महसागर थे। अत: संस्कृति, भाषा, धर्म, शासन पद्धति, जातीयता, रीति-रिवाज, परम्पराओं एवं ऐतिहासिक आदि में स्पेनी साम्राज्य के अन्तर्गत आने वाले राज्यों में पर्याप्त असमानता थी। एक तो यह स्थिति थी दूसरी ओर साम्राज्य का स्वरूप भी राष्ट्रीय न होकर राजवंशीय था। अत: समय-समय पर साम्राज्य में विभिन्न समस्याएं उत्पन्न होती रहती थीं। धर्म-सुधार आन्दोलन, फ्रांस-स्पेनी युद्ध, तुर्कों की आक्रामक नीति, इंग्लैण्ड की स्पेन विरोधी नीति तथा नीदरलैण्ड्स का विद्रोह इसी प्रकार की समस्याएं थीं। इस प्रकार की भयंकर समस्याओं ने स्पेनी साम्राज्य की जड़ों को झकझोर कर रख दिया।
2. **फिलिप द्वितीय के अयोग्य उत्तराधिकारी** (Incapable successors of Philip II)—स्पेनी साम्राज्य के पतन का प्रमुख कारण फिलिप द्वितीय के अयोग्य उत्तराधिकारियों का होना भी था। फिलिप द्वितीय का पुत्र फिलिय तृतीय (1598-1621) का शासनकाल आर्थिक विपन्नता का काल सिद्ध हुआ। इसका सबसे बड़ा कारण उसका अपने प्रिय लोगों के हाथों का खिलौना बन जाना था। वह स्वयं भी अयोग्य एवं निर्बल शासक था। फिलिप चतुर्थ (1621-1665) का काल तो तीसवर्षीय युद्ध की लपेटों में झुलस गया था। वह स्वयं तो अयोग्य था ही साथ ही डचों व पुर्तगालियों के स्वतन्त्रता संघर्ष ने स्पेनी साम्राज्य को चुनौती दी। नि:सन्देह उसका काल स्पेनी साम्राज्य रूपी सूर्य के अवसान का काल ही था। उसके उत्तराधिकारी चार्ल्स द्वितीय का काल (1665-1700) स्पेनी साम्राज्य में 'राजवंशीय अराजकता' के काल के नाम से जाना जाता है। चार्ल्स पंचम अयोग्य एवं दुर्बल तथा अल्प-बुद्धि वाला शासक था। इस प्रकार फिलिप द्वितीय के पश्चात्

TOUCH 'n' PASS

स्पेनी साम्राज्य को किसी भी योग्य शासक का नेतृत्व प्राप्त न हुआ जो कि स्पेनी साम्राज्य को आने वाली भयंकर विपदाओं से राहत दिलाता। अत: यह कथन सत्य ही प्रतीत होता है कि, 'चार्ल्स पंचम एक महान योद्धा एवं शासक था। फिलिप द्वितीय केवल एक शासक था। फिलिप तृतीय एवं फिलिप चतुर्थ शासक भी नहीं थे और चार्ल्स द्वितीय (फिलिप द्वितीय की दूसरी पत्नी से उत्पन्न) एक मनुष्य भी नहीं था।'

3. **स्पेन की आर्थिक विपन्नता** (Economic distress of Spain)—स्पेन के पतन के लिए वहाँ की आर्थिक स्थिति भी कम उत्तरदायी नहीं थी। प्रो. एल. मुकर्जी के शब्दों में, 'यूरोप में स्पेन की आर्थिक व्यवस्था अत्यन्त जर्जरित थी।'' स्पेन की आर्थिक स्थिति के खराब होने के कारण राजशाही के भयानक खर्चे तथा युद्धों का होना थे। ठीक है कि स्पेन के लिए उसकी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए इस समय उपनिवेशों की आवश्यकता थी और अमेरीका जैसा धन-कुबेर उपनिवेश स्पेन के अधिकार में था, किन्तु यूरोपीय राजनीति में स्पेन के प्रभुत्व को स्थापित करने के उद्देश्य से चार्ल्स पंचम एक फिलिप द्वितीय ने जो प्रयत्न किए उनका बोझ अधिक भारी था। राजदरबारी एवं राजवंश के लोग भोग-विलास एवं शानो-शौकत में धन का अपव्यय करते थे। व्यापार कुशल यहूदी एवं मूर जाति को स्पेन से निष्कासित करना आर्थिक दृष्टि से कदापि उचित नहीं था। स्पेन में प्रचलित उत्तराधिकार का नियम अत्यन्त विचित्र था। इस नियम के अनुसार, पिता की सम्पत्ति का अधिकारी उसका ज्येष्ठ पुत्र होता था एवं अन्य पुत्रों के लिए सेना व चर्च में स्थान नियत होते थे। अन्य पेशा वे नहीं कर सकते थे। यह नियम नि:सन्देह स्पेनी व्यापार एवं वाणिज्य की दृष्टि से अत्यन्त घातक था। यही नहीं, सभी वस्तुओं पर दस प्रतिशत विक्रय कर लगता था। राज्य के उद्योगों को राजकीय संरक्षण प्राप्त न होने से राष्ट्रीय व्यापार व उद्योगों को गहरा आघात लगना स्वाभाविक था।

   कृषि की भी अत्यन्त दयनीय स्थिति थी। भूमि के अधिकांश भाग पर चर्च या सामन्तों का आधिपत्य था। इन्होंने कभी भी कृषि के उन्नति के विषय में विचार ही नहीं किया। भेड़ पालन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कृषकों को खेती की घेराबन्दी भी निषिद्ध कर दी गयी। इस स्थिति में फसल का चौपट हो जाना स्वाभाविक ही था। अत: कृषकों की स्थिति अत्यन्त चिन्ताजनक हो गयी।

4. **स्पेनी शासकों की धार्मिक असहिष्णुता की नीति** (Religious Intolerance policy of Spanish Kings)—स्पेनी शासक कैथोलिक थे। उन्होंने सदा ही कैथोलिक सम्प्रदाय की यूरोपीय सार्वभौम धर्म बनाने की चेष्टा की। इस प्रयोजन के लिए कैथोलिक विरोधियों का दमन निर्दयतापूर्वक किया। 'इन्क्वीजिशन' नामक धार्मिक अदालतें इसका स्पष्ट प्रमाण हैं। अत: स्वतन्त्र चिन्तन एवं वैज्ञानिक विचारधारा की प्रवृत्ति का मार्ग अवरुद्ध हो गया। यही कारण था कि स्पेन यूरोप के अन्य राष्ट्रों की तुलना में सांस्कृतिक एवं वैधानिक दृष्टि से काफी पीछे हो गया, जो कि स्पेनी साम्राज्य के पतन का महत्त्वपूर्ण कारण सिद्ध हुआ।

5. **सुदृढ़ नौ-सेना का अभाव** (Absence of Strong Navy)—स्पेन की थल सेना अत्यन्त सुदृढ़ किन्तु भूमध्यसागर एवं अटलाण्टिक सागर में अपना प्रभुत्व बनाए रखने के लिए स्पेन के लिए यह अति आवश्यक था कि वह अपनी नौ-सेना को भी सुदृढ़ करता। स्पेनी शासकों ने कभी भी गम्भीरता से सुदृढ़ नौ सेना के विकास के विषय में विचार नहीं किया। फिलिप चतुर्थ ने एक बार इंग्लैण्ड से लोहा लेने के लिए शक्तिशाली आर्मेडा का गठन किया था, किन्तु आर्मेडा की पराजय ने स्पेनी नौ-सेना की शक्ति पर प्रश्न चिह्न लगा दिया। इसके विपरीत स्पेन के प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी फ्रांस व इंग्लैण्ड की नौ-सेना दिन-प्रतिदिन सुदृढ़ होती चली गयी। नीदरलैण्ड्स के विद्रोह को दबाने में स्पेन अवश्य ही सफल हो गया होता यदि उसकी नौ-सेना सुदृढ़ होती।

6. **जनसंख्या में गिरावट** (Decrease in Population)—सोलहवीं शताब्दी के प्रथम चरण में स्पेन की जनसंख्या में भारी कमी हुई। दीर्घकालीन युद्धों में स्पेन की जनहानि, यहूदियों व मूरों का देश से निष्कासन तथा स्पेनियों का उपनिवेशों में प्रवास इसके महत्त्वपूर्ण कारण थे। जनसंख्या में द्रुतगति से गिरावट तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि से स्पेन के लिए अत्यन्त घातक सिद्ध हुई।

7. **अन्य महत्त्वपूर्ण कारण** (Other Important Causes)—उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त तीसवर्षीय युद्ध में स्पेन की पराजय फ्रांसीसी शासक लुई 14वें की साम्राज्य विस्तारक नीति, इंग्लैण्ड की उपनिवेशवादी नीति एवं इंग्लैण्ड तथा हॉलैण्ड का नौसेना के क्षेत्र में एकाधिकार की ओर बढ़ना स्पेनी साम्राज्य के पतन के लिए महत्त्वपूर्ण कारक सिद्ध हुए।

TOUCH 'n PASS

इस प्रकार माना जा सकता है कि स्पेनी साम्राज्य की विशालता एवं स्पेनी शासकों की अकुशल नीतियों ने स्पेनी साम्राज्य में अनेक अन्तर्विरोध पैदा कर दिए। इन अन्तर्विरोधों का सीधा प्रभाव वहाँ की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति पर पड़ा। यह प्रभाव नकारात्मक सिद्ध हुआ जिसका पूर्ण लाभ स्पेनी प्रतिद्वन्द्वियों फ्रांस, इंग्लैण्ड तथा हालैण्ड ने उठाया और भरसक प्रहार स्पेनी साम्राज्य पर किया। फिलिप द्वितीय के अयोग्य उत्तराधिकारी इस प्रहार को सहन न कर पाने में अक्षम सिद्ध हुए। अत: ऐसी स्थिति में स्पेन का पतन अवश्यम्भावी था और एक ऐसे युग का आरम्भ हुआ जिसका नेतृत्व फ्रांस के हाथों में चला गया।

प्र.4. वेस्टफेलिया की सन्धि के महत्त्व का आकलन तीस वर्षीय युद्ध के परिणामों के सन्दर्भ में कीजिए।
Assess the importance of treaty of Westphalia regarding with results of thirty years war.

उत्तर

तीस वर्षीय युद्ध के परिणाम अथवा प्रभाव
(Results or Impacts of Thirty-Years' War)

इतिहासकार हेज के शब्दों में, 'तीसवर्षीय युद्ध का युग एवं वेस्टफेलिया की सन्धि का आधुनिक यूरोप के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस युद्ध ने यूरोप की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था को झकझोर कर रख दिया। इसके प्रभाव या परिणामों को संक्षेप में निम्नवत् इंगित किया जा सकता है—

1. **आधुनिक राज्य-व्यवस्था का उत्थान** (Growth of Modern State System)—हेज के शब्दों में, 'तीसवर्षीय युद्ध के अन्तिम परिणामस्वरूप यूरोप की आधुनिक राज्य-व्यवस्था का उदय अन्तर्राष्ट्रीय कानून एवं अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति के अपने निरूपित सिद्धान्तों के साथ हुआ।' नि:सन्देह इस युद्ध ने हैप्सबर्ग सम्राट एवं पवित्र रोमन सम्राट के महत्त्व को कम ही नहीं कर दिया अपितु अब जर्मन साम्राज्य को भी अन्य यूरोपीय राज्यों के सदृश ही समझा जाने लगा। यूरोप के सभी राज्य कानून की दृष्टि से समान हो गए। अब अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति या यूरोपीय प्रश्न पर अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेसों के आह्वान का युग आरम्भ हो गया। युद्ध की विभीषिका ने मानववादियों को युद्ध के विध्वंसकारी उन परिणामों पर सोचने के लिए प्रेरित किया जिससे मानवता का हनन होता है। अब मानववादी, बीमार एवं घायल सैनिकों की चिकित्सा व्यवस्था, लूटमार एवं अनावश्यक रक्तपात को रोकने, युद्धकाल में असैनिक लोगों की रक्षार्थ नियमावली जैसे प्रश्नों पर तर्क करने लगे। फलत: ह्यूगो ग्रेसियस (Hugo Grotius) द्वारा 'युद्ध व शान्ति का विधान' (On the Law of War and Peace) की रचना सामने आयी जो कि अन्तर्राष्ट्रीय विधान की एक महत्त्वपूर्ण कृति सिद्ध हुई। नि:सन्देह इस कृति को अन्तर्राष्ट्रीय विधान की आधारशिला माना जाता है।'
2. **जर्मनी पर व्यापक प्रभाव** (Wide Effects on Germany)—तीसवर्षीय युद्ध का व्यापक प्रभाव जर्मनी पर पड़ा। इतिहासकार हेज के शब्दों में, 'आधुनिक राज्य-व्यवस्था एवं आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय विधान के उदय की अपेक्षा तीसवर्षीय युद्ध का विनाशकारी प्रभाव जर्मनी की राजनीतिक एवं विशेषत: आर्थिक स्थिति पर पड़ा।' राजनीतिक दृष्टिकोण से पवित्र रोमन साम्राज्य (जर्मन साम्राज्य) की गरिमा को गहरा आघात लगा। जर्मनी के राज्यों को युद्ध एवं सन्धि सम्बन्धी अधिकार प्रदान कर दिए जाने से सम्राट की महत्ता में कमी आ गयी। जर्मन राज्यों की पारस्परिक अनैक्यता को बल मिला, जिस कारण जर्मनी में राष्ट्रीयता का विकास अवरुद्ध हो गया। राष्ट्रीयता के विकास की धारा में कमी आ जाने से अन्य यूरोपीय देशों की तुलना में जर्मनी काफी पिछड़ गया। यही नहीं, जर्मनी अब फ्रांस व स्वीडन से घिर गया। जहां एक सामाजिक दृष्टि का प्रश्न है जर्मनी की सामाजिक संस्थाओं एवं व्यवस्थाओं को गम्भीर झटका लगा। जर्मनी की जनसंख्या 1/3 रह गयी। आर्थिक क्षेत्र में भी जर्मनी काफी पिछड़ गया। व्यापार एवं वाणिज्य चौपट हो गया। अब फ्रांस व हॉलैण्ड ने व्यापार व वाणिज्य पर अपना सिक्का जमा लिया। जर्मनी की कृषि व्यवस्था तहस-नहस हो गयी। कुल मिलाकर जर्मनी का सांस्कृतिक विकास अवरुद्ध हो गया। डेविड ऑग ने इस सन्दर्भ में लिखा है, 'तीसवर्षीय युद्ध ने जर्मन- सभ्यता को एक शताब्दी से अधिक पीछे धकेल दिया', इसी कारण इतिहासकार जान नेप्टन ने लिखा है, 'तीस वर्षीय युद्ध का इतिहास कूटनीति, कुचक्रों, सैनिक अभियानों तथा क्रूर विनाश का लेखा-जोखा है।
3. **अन्य महत्त्वपूर्ण परिणाम** (Other Important Results)—भावी यूरोपीय राजनीति की पृष्ठभूमि को निर्धारित करने में नि:सन्देह तीसवर्षीय युद्ध का महत्त्वपूर्ण स्थान है। फ्रांस, स्वीडन एवं डेनमार्क के महत्त्व में जहां एक ओर वृद्धि हुई वहीं स्पेन का गौरव घट गया। यूरोप की राजनीति में फ्रांस के बोर्बो वंश का गौरव स्थापित हो गया। ब्रोण्डेनबर्ग की राज्य सीमा

TOUCH 'n PASS

विस्तृत हो गयी। जर्मनी से हैप्सबर्ग सम्राट का प्रभुत्व समाप्त हो गया। इन दोनों बातों ने कालान्तर में प्रशा के नेतृत्व में जर्मनी के एकीकरण को सम्भव बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। वाल्टिक सागर पर स्वीडन की प्रभुता ने भी आगामी यूरोप को निःसन्देह गम्भीर रूप से प्रमाणित किया। इस युद्ध ने यूरोप में शक्ति सन्तुलन कायम किया। इस सन्दर्भ में एच. ए. एल. फिशर ने लिखा है, 'वेस्टफेलिया की सन्धि ने प्रथम बार यूरोप में शक्ति सन्तुलन को मान्यता प्रदान की एवं पर्याप्त समय के लिए स्थिर किया।'

4. **नवयुग का आरम्भ** (Rise of a New Era)—तीस वर्षीय युद्ध ने यूरोपीय धर्म-सुधार आन्दोलन के युग को समाप्त कर दिया। अब एक नए युग का सूत्रपात हुआ जिसमें राजनीतिक एवं आर्थिक नीतियों की ही प्रधानता थी। लार्ड एक्टन ने तो इसे प्रतिधर्म सुधार आन्दोलन की अन्तिम एवं महत्त्वपूर्ण उपज माना है।'

इस प्रकार स्पष्ट है कि तीस वर्षीय युद्ध का आरम्भ तो धार्मिक विवाद से आरम्भ हुआ, किन्तु कालान्तर में इसका स्वरूप राजनीतिक हो गया जिसमें अन्ततः हैप्सबर्ग वंश की पराजय हुई एवं फ्रांस के बूर्बो वंश का गौरव यूरोप में प्रतिस्थापित हुआ। इस प्रकार तीस वर्षीय युद्ध ने एक नवयुग का सूत्रपात कर दिया जिसका आधार धर्म न होकर राजनीतिक एवं आर्थिक प्रश्न थे, किन्तु यह स्मरणीय है कि तीसवर्षीय युद्ध ने स्पेन व फ्रांस के मध्य चलने वाले युद्ध का अन्त नहीं किया। इस युद्ध की समाप्ति तो पिरैनीज की सन्धि (1659) से हुई।

पिरैनीज की सन्धि : 1659 (Treaty of Pyrenees)

तीसवर्षीय युद्ध के पश्चात् भी लगभग 11 वर्षों तक (1648 से 1659) फ्रांस व स्पेन का युद्ध चलता रहा, किन्तु अन्ततः विवश होकर स्पेनी शासक फिलिप चतुर्थ को फ्रांस के साथ पिरैनीज की सन्धि (1659) करनी पड़ी। इस सन्धि की धाराएँ निम्नवत् थीं—

1. रूसोलिन, आर्तओं एवं नीदरलैण्ड के कतिपय प्रदेश स्पेन ने फ्रांस को दे दिए।
2. यह निश्चित हुआ कि फिलिप चतुर्थ की पुत्री मेरिया थिरिजा का विवाह फ्रांस के शासक लुई 14वें से होगा।
3. विवाह में दी जाने वाली दहेज की राशि के स्थान पर मेरिया ने स्पेन के सिंहासन पर अपना अधिकार त्याग दिया।

इस प्रकार पिरैनीज की सन्धि फिलिप चतुर्थ के लिए अत्यन्त अपमानजनक थी। अतः उसने पुनः पुर्तगाल पर अधिकार करने का प्रयत्न किया, किन्तु उसे पराजित होना पड़ा। 1665 में फिलिप चतुर्थ का देहावसान हो जाने से स्पेन का गौरव यूरोपीय राजनीति से लुप्त हो गया। अब नव नेतृत्व फ्रांस के हाथ में आ गया।

प्र.5. इंग्लैण्ड की गृह एवं धार्मिक नीति का वर्णन कीजिए।
Describe the home and religious policy of England.

उत्तर

गृह एवं धार्मिक नीति
(Home and Religious Policy)

हेनरी अष्टम जिस समय गद्दी पर बैठा, उस समय पोप का अनन्य भक्त था। 1512-13 ई. में पोप को प्रसन्न करने के लिए उसने फ्रांस से युद्ध किया, जिसमें जन-धन और समय की बर्बादी हुई। उसने 1521 ई. में लूथर के विरुद्ध एक पुस्तक लिखी जिससे प्रसन्न होकर पोप से उसने 'धर्म-रक्षक' (Defender of the Faith) की उपाधि प्राप्त की।

बीस वर्षों तक पोप को प्रसन्न करने के प्रयत्न करते रहने के पश्चात् उसके 1529 ई. में पोप से सम्बन्ध कटु हो गए। इस कटुता का कारण हेनरी का व्यक्तिगत स्वार्थ था। हेनरी अष्टम अपनी पत्नी कैथराइन से जो कि उससे आठ वर्ष आयु में अधिक थी, सम्बन्ध-विच्छेद करना चाहता था। पोप के स्पेन के राजा से मधुर सम्बन्ध थे जिसकी पुत्री कैथराइन थी। पोप हेनरी अष्टम को भी अप्रसन्न करना नहीं चाहता था अतः उसने इस विवादास्पद विषय को टालना चाहा। हेनरी अष्टम शीघ्रताशीघ्र कैथराइन से सम्बन्ध-विच्छेद चाहता था अतः हेनरी, पोप के विरुद्ध हो गया। वूल्जे, जिसके पोप से मधुर सम्बन्ध थे, भी हेनरी को कैथराइन से मुक्ति दिलाने में सफल न हो सका, परिणामस्वरूप उसका पतन हो गया। वूल्जे के स्थान पर हेनरी ने क्रामवैल को नियुक्त किया तथा क्रामवैल के परामर्श पर संसद का अधिवेशन बुलाया।

संसद का अधिवेशन 1529 ई. में प्रारम्भ हुआ और यह संसद 1536 ई. तक कार्य करती रही। इस संसद के सदस्य मुख्यतः व्यापारी तथा जमींदार थे जिनकी दृष्टि चर्च की अपार सम्पत्ति पर थी। अतः वे हेनरी अष्टम की इच्छानुसार पोप के विरुद्ध कार्य करने लगे। इस संसद ने ऐसे कार्य किए जिससे पोप के प्रभाव को इंग्लैण्ड से समाप्त करने में हेनरी सफल हुआ। हेनरी ने क्रैनमर नामक एक पादरी को अपना मित्र बनाया। 1533 ई. में उसे आर्कबिशप नियुक्त किया। क्रैनमर ने हेनरी के प्रथम विवाह को अवैध घोषित किया तथा कैथराइन से उसका सम्बन्ध-विच्छेद कराके ऐन बोलेन से उसका विवाह कराया।

TOUCH 'n PASS

हेनरी ने अपनी संसद की सहायता से अनेक नियम पारित किए, जिनको निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है—

1. पोप से सम्बन्ध समाप्त करने सम्बन्धी नियम,
2. पादरियों की शक्ति पर अंकुश सम्बन्धी नियम,
3. मठों को समाप्त करने सम्बन्धी नियम।

1. **पोप से सम्बन्ध समाप्त करने सम्बन्धी नियम** (Statutes against Pope)—पोप के प्रभाव को समाप्त करने के उद्देश्य से हेनरी ने अनेक नियम पारित कराए जिनकी सहायता से वह पोप की सत्ता को इंग्लैण्ड से समाप्त करने में सफल हुआ। वे अधिनियम इस प्रकार से हैं—

(क) **ऐनेट्स अधिनियम** (Act of Annates)—यह अधिनियम 1532 ई. में पारित किया गया। पोप यूरोप के ईसाई राज्यों में खुलने वाले चर्चों की पहले वर्ष की आय को लिया करता था, जिसको 'फर्स्ट फ्रूट्स (First Fruits) कहते थे। इस नियम के द्वारा यह आय रोम जाने से रोक दी गयी तथा उस पर राजा का अधिकार घोषित कर दिया गया।

(ख) **पीटर्स पेन्स अधिनियम** (Act of Peter's Pence)—यूरोप के राज्यों द्वारा पोप को समय-समय पर धन सम्बन्धी अथवा अन्य उपहार भेजे जाते थे। हेनरी अष्टम अपने राज्यकाल के प्रारम्भ में पोप का अनन्य भक्त था। अत: वह भी पोप को उपहार भेजता था। इस नियम के द्वारा इंग्लैण्ड से पोप के लिए उपहार भेजने की प्रथा को समाप्त कर दिया गया।

(ग) **अपील अधिनियम** (Act of Appeals)—यह अधिनियम 1533 ई. में पारित किया गया। इस नियम के पारित होने से पूर्व पोप के धर्म सम्बन्धी न्यायालय सभी ईसाई राज्यों में स्थापित थे, जिनकी अपील वह स्वयं सुना करता था। इस अधिनियम ने अपीलों के रोम जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इस नियम का अत्यधिक महत्त्व है क्योंकि इसने पोप के प्रभाव को पूर्णत: समाप्त कर दिया। इस नियम के पारित होने पर तत्कालीन चर्च के अधिकारी टॉमस मूर ने त्याग-पत्र दे दिया उसके स्थान पर हेनरी ने टॉमस क्रामवैल को नियुक्त किया। इसी समय क्रैनमर को भी कैण्टबरी का आर्कबिशप बनाया गया। इसी नियम के परिणामस्वरूप क्रैनमर, हेनरी अष्टम के उसकी पत्नी कैथराइन से सम्बन्ध विच्छेद करने में सफल हुआ तथा ऐन बोलेन से उसको विवाह की अनुमति प्रदान कर सका।

(घ) **उत्तराधिकार सम्बन्धी नियम** (Act of Successions)—यह नियम 1534 ई. में पारित किया गया। इसके द्वारा ऐन बोलेन के बच्चों को इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर वैध उत्तराधिकारी घोषित किया। यह पोप की आज्ञा की सर्वथा अवहेलना थी।

(ङ) **सुप्रीमेसी अधिनियम** (Act of Supremacy)—पोप ईसाई जगत का सम्राट समझा जाता था। हेनरी अष्टम ने यह निर्णय पारित करके इंग्लैण्ड के राजा को चर्च का प्रधान (Supreme Head of the Church in England) घोषित किया। जिन व्यक्तियों ने इस नियम को स्वीकार करने से इन्कार किया, उसको मौत के घाट उतार दिया।

इन नियमों के परिणामस्वरूप हेनरी अष्टम पोप के प्रभाव को इंग्लैण्ड से लगभग समाप्त करने में सफल हुआ।

2. **पादरियों की शक्ति पर अंकुश सम्बन्धी नियम** (Rules Related to Control the power of Priests)—पादरियों की शक्ति को सीमा में रखने हेतु हेनरी ने संसद से अनेक नियम पारित कराए। इससे जहां एक ओर हेनरी का पादरियों पर प्रभुत्व स्थापित हुआ वहीं दूसरी ओर उसे आर्थिक लाभ हुआ। ये नियम इस प्रकार से हैं—

(क) **प्रोबेट्स एवं मार्टनेरीज अधिनियम** (Act of Probates and Martanries)—इस अधिनियम द्वारा शादी एवं मृत्यु के समय पादरियों का शुल्क निर्धारित कर दिया गया।

(ख) **प्लूरेलिटिज अधिनियम** (Act of Pluralities)—इस अधिनियम द्वारा एक बिशप एक ही गिरजाघर का अध्यक्ष हो सकता था। इससे पूर्व पोप की अनुमति से एक ही बिशप अनेक गिरजाघरों का अध्यक्ष बन जाता था। अब राजा की अनुमति पर ही किसी विशेष कारणवश ऐसा होना सम्भव था।

(ग) **प्रेमुनायर अधिनियम** (Act of Praemunire)—हेनरी अष्टम की संसद ने 1531 ई. में, एडवर्ड चतुर्थ के समय में पारित प्रेमुनायर अधिनियम को पुन: लागू किया तथा इसके द्वारा पादरी वर्ग पर यह आरोप लगाया कि वे देशद्रोही थे, क्योंकि उन्होंने एक विदेशी सत्ता (पोप) के अधिकार को स्वीकार करते हुए प्रेमुनायर अधिनियम को भंग किया था। दण्ड से मुक्ति प्राप्त करने के लिए कैण्टबरी के संघ ने एक लाख पौंड तथा यार्क संघ ने अठारह हजार पौंड

TOUCH 'n' PASS

हेनरी को भेंट किए। कानून के अनुसार साधारण जनता भी दण्ड की भागी थी, किन्तु हेनरी ने उदारता का परिचय देते हुए उसे क्षमा कर दिया।

(घ) **छह नियमों का अधिनियम** (Statutes of Six Articles)—1539 ई. में हेनरी ने छह नियम पारित किए, जिनको मानना प्रत्येक पादरी के लिए आवश्यक था। ये नियम अग्र प्रकार थे—

(i) पादरियों के विवाह पर प्रतिबन्ध (Prohibition of the marriage of the Priests)।
(ii) ब्रह्मचर्य व्रत की शपथ (The necessity of keeping vows of chastity)।
(iii) व्यक्तिगत प्रार्थना को स्वीकारना (The continuance of private masses)।
(iv) गलती तथा पाप को स्वीकारने की प्रथा (The use of confession)।
(v) कम्यूनियन की प्रथा (The Practice of communion in one kind)।
(vi) ट्रान्सब्सटेन्शियेसन की प्रथा को स्वीकारना (A belief in the doctrine of transubstantiation)।

इन नियमों को न मानने पर मृत्युदण्ड दिया जाता था तथा इन्हीं के द्वारा पादरियों की शक्ति पर अंकुश लगाया गया।

3. **मठों को समाप्त करने सम्बन्धित नियम** (Statutes for dissolving the Monasteries)—ईसाई आश्रमों को, जहां ईसाई धर्म के प्रचारक रहते थे, मठ कहा जाता था। इन धर्म प्रचारकों में पोप के प्रति अपार श्रद्धा थी। ईसाई धर्म के इन प्रचारकों को भिक्षु (Monks) कहा जाता था। स्त्रियां भी विहारों में पुरुषों के समान शुद्ध एवं पवित्र जीवन व्यतीत करती थीं, इनको भिक्षुणियां (Nuns) कहा जाता था। स्त्रियों के विहारों को 'ननरीज' (Nunneries) कहते थे। मध्य युग तक इन मठों का अत्यधिक महत्त्व था क्योंकि ये मठ जनता को अनेक प्रकार से सहायता करते थे। इन भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों का जीवन प्रारम्भ में अत्यन्त पवित्र एवं स्वच्छ था, वे ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए अपना समय अध्ययन तथा धर्म-प्रचार में व्यतीत करते थे। मठों में ये भिक्षु जनता को पवित्र जीवन का उपदेश देते थे। रात्रि में यह मठ यात्रियों के लिए सराय का काम देते जहां यात्रियों को सम्पूर्ण सुविधाएं प्रदान की जाती थीं। मठ अस्पताल का कार्य भी करते थे। गरीबों के लिए भोजन की व्यवस्था भी मठ करते थे। इन उपयोगिताओं को देखते हुए राज्य भी इन्हें सहायता करते थे। इन विहारों को खर्चे के लिए सरकार द्वारा भूमि प्रदान की जाती थी। सरकार के अतिरिक्त धार्मिक व्यक्ति भी इन विहारों की आर्थिक सहायता करते रहते थे, परन्तु बाद में निम्नलिखित कारणों के कारण इनको समाप्त करने के लिए नियम बनाए गए—

(क) **मठों में भ्रष्टाचार** (Corruption in the Monasteries)—मध्य युग की समाप्ति तक मठ भ्रष्टाचार के केन्द्र बन गए। भिक्षुओं का पवित्र जीवन समाप्त हो गया तथा उसके स्थान पर विलासिता एवं सांसारिक सुखों को प्राप्त करने की आकांक्षा व्याप्त हो गयी। धन सम्पत्ति की अधिकता के कारण मठ आमोद-प्रमोद एवं भ्रष्टाचार के स्थान बन गए। परिणामस्वरूप इसका कुप्रभाव समाज पर भी दृष्टिगोचर होने लगा।

(ख) **पोप का प्रभाव** (Stronghold of Pope)—मठों पर पोप का प्रभाव छाया हुआ था, अत: मठ देश के नियमों की अवहेलना करते थे। भिक्षु पोप के अनन्य भक्त थे। पोप की आज्ञा को ही वे सर्वाधिक महत्त्व प्रदान कर उसी के अनुसार कार्यवाही करते थे। वे देश की एकता एवं राष्ट्रीयता में विश्वास नहीं रखते थे। जनता में राष्ट्रीयता की भावना आधुनिक युग के आगमन के साथ-साथ विकसित हो रही थी, अत: वह इन मठों का विरोध करने लगी।

(ग) **उपयोगिता में कमी** (Decrease in Utility)—इसके अतिरिक्त आधुनिक युग में जनता के लिए अनेक विद्यालय खुल गए थे, धर्मशालाओं तथा अस्पतालों की भी कमी न रहने के कारण मठों की उपयोगिता समाप्त हो गयी थी, अत: जनता का मठों से कोई विशेष सम्बन्ध न रहा था।

(घ) **मठों की सम्पत्ति** (Property of Monasteries)—मठों के लिए उनकी अपार धनराशि अहितकर प्रमाणित हुई क्योंकि राजा एवं जनता दोनों ही उनकी विपुल सम्पत्ति पर अधिकार करना चाहते थे। राजा एक तो पोप के अधीन थे तथा साथ ही साथ एक बड़ी धनराशि से भी वंचित थे, अत: हेनरी ने इन मठों को समाप्त करने का प्रयास किया।

(ङ) **मठों की समाप्ति** (The work of Monasteries Dissolution)—पोप की शक्ति को इंग्लैण्ड से निष्कासित करने के लिए हेनरी ने संसद से अनेक नियम पारित कराके अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर ली थी, किन्तु पोप की रही-सही शक्ति को नष्ट करने के लिए हेनरी ने अपना ध्यान अब मठों की ओर केन्द्रित किया। मठों को समाप्त

TOUCH 'n PASS

करने से हेनरी, पोप के प्रभाव को पूर्णतया इंग्लैण्ड से समाप्त करने में सफल हो जाता, साथ-साथ उसके मठों की विपुल धन-सम्पत्ति पर भी अधिकार हो जाता। अत: हेनरी ने सतर्कतापूर्वक मठों को नष्ट करने की योजना बनायी।

इंग्लैण्ड में उस समय अनेक छोटे-छोटे मठ थे, जो अपना निर्वाह भी कठिनता से पूरा करते थे। हेनरी ने 1535 ई. में इन मठों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए एक आयोग की नियुक्ति की जिसका अध्यक्ष क्रॉमवैल था। इस आयोग ने अत्यन्त तेजी से कार्य किया और शीघ्र ही मठों में व्याप्त भ्रष्टाचार की घोषणा की। 1536 ई. में इस आयोग की संस्तुति के आधार पर एक नियम पारित किया जिसके द्वारा ऐसे सभी मठ, जिनकी वार्षिक आय दो सौ पौंड से कम थी, को समाप्त कर दिया गया। इस प्रकार तीन सौ छियत्तर मठ समाप्त हो गए। इन समस्त मठों की सम्पत्ति को हेनरी ने अपने अधिकार में ले लिया। इस कार्य के विरुद्ध एक धर्म आन्दोलन (Pilgrimage of Grace) हुआ, जिसका कठोरतापूर्वक दमन किया। इस आन्दोलन का नेता रॉबर्ट आस्क (Robert Aske) था। रॉबर्ट को हेनरी ने क्षमा कर दिया, किन्तु कुछ मठाधीशों के बहकावे में आकर रॉबर्ट आस्क ने पुन: विद्रोह कर दिया, इस बार हेनरी ने रॉबर्ट आस्क को मृत्यु-दण्ड दे दिया।

छोटे मठों को समाप्त करने के पश्चात् हेनरी ने बड़े मठों को समाप्त करने का निश्चय किया। जिस आयोग ने छोटे मठों के विरुद्ध रिपोर्ट दी थी उसने बड़े मठों के विरुद्ध भी अभियोग लगाए। प्रारम्भ में तो रिश्वत तथा अन्य प्रलोभन देकर हेनरी ने मठों पर अधिकार करना चाहा, परन्तु जब मठाधीश इसके लिए तैयार न हुए तो डरा-धमका कर ऐसा करने को विवश किया। 1539 ई. तक एक-एक करके सभी मठों को समाप्त कर दिया गया। इन मठों की सम्पत्ति पर हेनरी ने अधिकार कर लिया। वार्नर-मार्टिन ने लिखा है-इन मठों में से कुछ को राजद्रोह अथवा षड्यन्त्र के अभियोग में राज्य में लिया गया तो दूसरों ने राजा की अधीनता स्वीकार करने में ही बुद्धिमत्ता देखी। भिक्षुओं को जीवन-वृत्ति दे दी गयी। छह बड़े मठों को लौकिकता (secularism) के आधार पर पुन: संगठित किया गया। उसकी सम्पत्ति का कुछ भाग शिक्षा-प्रसार पर व्यय किया गया तथा कुछ समुद्र तट पर दुर्ग बनवाने में, परन्तु उसका अधिकांश भाग राजा के हाथों में गया। उसने उनमें से बहुत कुछ अपने मन्त्रियों तथा दरबारियों को उपहार के रूप में अथवा मूल्य लेकर दे दिया। अब यह परिवर्तन स्थायी प्रतीत होने लगा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. गौरवशाली क्रांति के फलस्वरूप कौन-सा परिणाम हुआ?

(क) संसदीय शासन की स्थापना (ख) धार्मिक अत्याचार से मुक्ति
(ग) आर्थिक विकास की ओर इंग्लैण्ड अग्रसर (घ) ये सभी

उत्तर (घ) ये सभी

प्र.2. निम्न में कौन-सा गौरवशाली क्रांति का परिणाम नहीं था जो संसद को शक्ति मिली थी?

(क) नागरिक स्वतन्त्रता की रक्षा करना (ख) कानून बनाना
(ग) कर लगाना (घ) राजा का संसद की शक्ति में हस्तक्षेप

उत्तर (घ) राजा का संसद की शक्ति में हस्तक्षेप

प्र.3. विलियम ऑफ ओरेंज कब 15 हजार सैनिकों के साथ इंग्लैण्ड के होरबे बन्दरगाह पर उतरा?

(क) 3 नवम्बर, 1688 (ख) 4 नवम्बर, 1688
(ग) 5 नवम्बर, 1688 (घ) 6 नवम्बर, 1688

उत्तर (ग) 5 नवम्बर, 1688

प्र.4. कब जेम्स राजमुद्रा को टेम्स नदी में फेंककर फ्रांस पलायन कर गया?

(क) 22 दिसम्बर, 1688 (ख) 23 दिसम्बर, 1688
(ग) 24 दिसम्बर, 1688 (घ) 25 दिसम्बर, 1688

उत्तर (ख) 23 दिसम्बर, 1688

प्र.5. कब विलियम और मैरी संयुक्त रूप से इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर आसीन हुए?

(क) 10 फरवरी, 1689 (ख) 11 फरवरी, 1689
(ग) 12 फरवरी, 1689 (घ) 13 फरवरी, 1689

उत्तर (घ) 13 फरवरी, 1689

TOUCH 'n PASS

प्र.6. कब तक आते-आते ग्रेट ब्रिटेन विश्व की वर्कशाप, विश्व की भट्टी, विश्व का बैंकर एवं विश्व का सबसे बड़ा मालवाहक बनकर सामने आया?

(क) 1815 (ख) 1816 (ग) 1817 (घ) 1818

उत्तर (क) 1815

प्र.7. 1900 ई० में कितने प्रतिशत लोग ही इंग्लैण्ड में गाँवों में रह गए?

(क) 17% (ख) 18% (ग) 19% (घ) 20%

उत्तर (घ) 20%

प्र.8. जेम्स द्वितीय किस कैथोलिक राजा से आर्थिक और सैनिक सहायता प्राप्त कर इंग्लैण्ड में निरंकुश शासन स्थापित करना चाहता था?

(क) फ्रांस (ख) रूस (ग) पुर्तगाल (घ) स्पेन

उत्तर (क) फ्रांस

प्र.9. जेम्स द्वितीय ने इंग्लैण्ड को कैथोलिक देश बनाने हेतु कब धार्मिक अनुग्रह की घोषणा की?

(क) 1687 (ख) 1688 (ग) 1687 व 1688 (घ) 1689

उत्तर (ग) 1687 व 1688

प्र.10. जेम्स ने गिरजाघरों पर राजकीय श्रेष्ठता पूर्ण रूप से स्थापित करने हेतु कोर्ट ऑफ हाई कमीशन को पुनः कब स्थापित किया?

(क) 1686 (ख) 1687 (ग) 1688 (घ) 1689

उत्तर (क) 1686

प्र.11. जेम्स वाट ने भाप के इंजन का कब आविष्कार किया?

(क) 1768 (ख) 1769 (ग) 1770 (घ) 1771

उत्तर (ख) 1769

प्र.12. ब्रिटेन के औद्योगिक विकास में निर्णायक रहा–

(क) कोयले की बड़ी मात्रा (ख) लोहे की बड़ी मात्रा (ग) पूँजी की पर्याप्तता (घ) ये सभी

उत्तर (घ) ये सभी

प्र.13. निम्न में किसने इंग्लैण्ड के व्यापार में सहयोग नहीं किया?

(क) नहरों (ख) नदियों (ग) तालाबों (घ) समुद्र

उत्तर (ग) तालाबों

प्र.14. कब सैमुएल स्लेटर अमेरिका पहुँचा जो वहाँ ब्रिटिश कपड़ा उद्योग का ज्ञान अपने साथ ले गया जिससे अमेरिका में औद्योगिक क्रांति हुई?

(क) 1787 (ख) 1788 (ग) 1789 (घ) 1790

उत्तर (ग) 1789

❑

TOUCH 'n PASS

UNIT-V

गौरवशाली क्रांति एवं विकास

Glorious Revolution and Development

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. गृह-युद्ध को संक्षेप में समझाइए।
Explain the civil war in briefly.

उत्तर इंग्लैण्ड में 1642 ई. से 1649 ई. तक सप्तवर्षीय गृह-युद्ध हुआ। इस गृह-युद्ध का इंग्लैण्ड के इतिहास में अत्यधिक महत्त्व है, क्योंकि इसने राजा की स्वेच्छाचारिता, निरंकुशता और विशेष रूप से उसके दैवीय अधिकारों (Divine rights) को समाप्त किया। इंग्लैण्ड की जनता ने इस गृह-युद्ध के द्वारा यह प्रमाणित किया कि राज्य में जनता एवं संसद का भी महत्त्व होता है। यदि जनता को उसके आवश्यक अधिकार प्रदान नहीं किए जाएंगे तो जनता राजा के विरुद्ध आवाज उठा सकती है। वर्तमान समय में यह बात कोई असाधारण नहीं लगती, किन्तु 17वीं शताब्दी में निश्चित रूप से इसका महत्त्व था।

प्र.2. वैभवपूर्ण क्रान्ति के पश्चात् की स्थिति को संक्षेप में लिखिए।
Write briefly the situation after the glorious revolution.

उत्तर जेम्स द्वितीय का निरंकुश शासन लगभग तीन वर्षों (1685-88) तक रहा क्योंकि 1688 ई. में इंग्लैण्ड की जनता ने वैभवपूर्ण क्रान्ति के द्वारा जेम्स द्वितीय को इंग्लैण्ड छोड़कर भागने को विवश किया। इंग्लैण्ड के कुछ संसद सदस्यों एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने हॉलैण्ड के राजा विलियम ऑफ ऑरेन्ज को इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर बैठने के लिए आमन्त्रित किया था, किन्तु बाद में 22 जनवरी, 1689 ई. को संसद की बैठक में विलियम तथा उसकी पत्नी मेरी को संयुक्त रूप से सिंहासनारूढ़ करना निश्चित हुआ तथा कुछ शर्तों को उनसे स्वीकार करने के पश्चात् विलियम तथा मेरी को 13 फरवरी, 1689 ई. को इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर आसीन किया गया।

प्र.3. गौरवपूर्ण क्रांति कब और कहाँ हुई थी?
When and where did the glorious revolution take place?

उत्तर गौरवपूर्ण क्रांति को रक्तहीन क्रांति के नाम से जाना जाता है क्योंकि यह शांतिपूर्वक संपन्न हुई थी। इंग्लैंड का राजा बदला, इंग्लैंड की शासन व्यवस्था बदली, पर कहीं खून का एक कतरा भी न गिरा। इंग्लैंड के जेम्स द्वितीय द्वारा संसदीय संप्रभुता को चुनौती देने के फलस्वरुप ही इंग्लैंड राज्य में 1688 ईस्वी में क्रांति हुई थी।

प्र.4. क्या अंग्रेजी क्रांति और गौरवशाली क्रांति एक ही है?
Is the english revolution and the glorious revolution same?

उत्तर इंग्लैंड की क्रांति से तात्पर्य 1688 ई. में हुई गौरवशाली क्रांति या रक्तहीन क्रांति से है। इसे गौरवशाली क्रांति या रक्तहीन क्रांति इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इस क्रांति में किसी भी व्यक्ति के रक्त की एक बूंद भी नहीं बही और केवल प्रदर्शन एवं वार्तालाप से ही क्रांति सफल हो गई।

प्र.5. गौरवशाली क्रांति के दौरान इंग्लैंड का राजा कौन था?
Who was the king of England during the glorious revolution?

उत्तर गौरवशाली क्रांति तब हुई जब 1688 में विलियम ऑफ ऑरेंज ने जेम्स द्वितीय से अंग्रेजी सिंहासन ग्रहण किया। इस घटना ने अंग्रेजी संविधान के भीतर सत्ता का स्थायी पुनर्गठन किया।

प्र.6. गौरवशाली क्रांति का अंत कैसे हुआ?
How did glorious revolution end?

उत्तर राजा जेम्स द्वितीय द्वारा ऑरेंज की सेना के खिलाफ लड़ने के बजाय फ्रांस भाग जाने के बाद एक कन्वेंशन संसद बुलाए जाने के साथ गौरवशाली क्रांति समाप्त हो गई। समूह ने घोषणा की कि जब जेम्स भाग गया तो उसने अपना सिंहासन छोड़ दिया था।

TOUCH 'n PASS

प्र.7. गौरवशाली क्रांति में कौन लड़े?
Who had Fought in the glorious revolution?

उत्तर गौरवशाली क्रांति, जिसे 1688 की क्रांति भी कहा जाता है, 1688 में सांसदों के एक संघ और ऑरेंज- नासा के डच स्टैडहोल्डर विलियम III (ऑरेंज के विलियम) द्वारा इंग्लैंड के जेम्स द्वितीय को उखाड़ फेंका गया था।

प्र.8. गौरवशाली क्रांति में सेना की क्या भूमिका थी?
What was the role of the army in the glorious revolutions?

उत्तर राजा सेना का उपयोग आबादी पर कब्जा करने और संसद को धमकाने के लिए कर रहा था। जेम्स ने सोचा कि सेना के नियंत्रण में होने से वह अपने सुधारों को लागू करने में सक्षम होंगे, हालांकि वे अलोकप्रिय थे, और कम संसदीय निरीक्षण के साथ सरकार की अधिक निरंकुश शैली की ओर बढ़ सकेंगे।

प्र.9. गौरवशाली क्रांति का सारांश क्या है?
What is the summary of the glorious revolution?

उत्तर गौरवशाली क्रांति, जिसे अंग्रेजी इतिहास में 1688 की क्रांति या रक्तहीन क्रांति भी कहा जाता है, 1688-89 की घटनाएं जिसके परिणामस्वरूप जेम्स द्वितीय की गद्दी और उनकी बेटी मैरी द्वितीय और उनके पति विलियम-III, ऑरेंज के राजकुमार और स्टैडहोल्डर का राज्यारोहण हुआ।

प्र.10. गौरवशाली क्रांति के कारण क्या थे?
What were the reasons for the glorious revolution?

उत्तर 1. राजा एवं संसद के बीच संघर्ष,
2. जेम्स द्वितीय की निरंकुशता,
3. खूनी न्यायालय,
4. जेम्स की धार्मिक नीति,
5. टेस्ट नियम की अवहेलना।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. इंग्लैण्ड के हेनरी अष्टम पर टिप्पणी कीजिए।
Write the note on Henry VIII of England.

उत्तर

हेनरी अष्टम (1509-1547)
(Henry VIII)

जीवन परिचय (Life Sketch)

1509 ई. में हेनरी सप्तम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र हेनरी अष्टम इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर आसीन हुआ। हेनरी अष्टम के राजगद्दी पर आरूढ़ होने का इंग्लैण्ड की जनता द्वारा स्वागत किया गया क्योंकि अठारह-वर्षीय हेनरी अष्टम एक सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्त्व वाला', संगीत, नृत्य तथा खेल-कूद में रुचि रखने वाला नवयुवक था। हेनरी विद्यानुरागी तथा विद्वानों को आश्रय देना वाला व्यक्ति था। उसके दरबार में कौलेट, इरैस्मस तथा टॉमस मूर जैसे विद्वान रहते थे। हेनरी स्वयं भी एक विद्वान व्यक्ति था, क्योंकि अपने भाई आर्थर की मृत्यु से पूर्व हेनरी सप्तम ने उसको शिक्षा की ओर केन्द्रित रखा। उसने धर्मशास्त्र, फ्रांसीसी, लैटिन तथा अनेक अन्य भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया था। हेनरी अष्टम को वैभव तथा निरंकुशता उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त हुए थे। हेनरी ने राजसिंहासन पर आसीन होते ही अपने पिता के शासनकाल में मन्त्री एवं सलाहकार के पद को सुशोभित कर रहे एम्पसन तथा डडले को उनकी क्रूर नीति के कारण बन्दी बना लिया तथा कुछ समय पश्चात् जनता के समक्ष उनका वध कर दिया। हेनरी के इस कार्य से जनता अत्यन्त प्रसन्न हुई और उसे हेनरी से आशा की किरणें प्रस्फुटित होती दृष्टिगोचर होने लगीं, किन्तु शीघ्र ही प्रशासन के शुष्क एवं कठिन कार्य से वह ऊब गया तथा इस कार्य को उसने अपने विश्वासपात्र मन्त्री कार्डिनल वूल्जे (Cardinal Wolsey) को सौंप दिया और स्वयं जीवन के आनन्द उठाने में व्यस्त हो गया। हेनरी सप्तम से उसे अपार धनराशि प्राप्त हुई थी जिससे वह निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी बन गया। उसने अपने शासन के प्रथम बीस वर्ष विलासिता एवं ऐश्वर्य में बिताए तथा संचित कोष को रिक्त कर दिया। वूल्जे के पतन के पश्चात् उसने प्रशासन को अपने हाथों में लिया और कुशलतापूर्वक

TOUCH 'n' PASS

कार्य किया तथा अपने शासनकाल में ही इंग्लैण्ड को महान् वैभवशाली तथा शक्तिशाली बनाने में सफल हुआ। उसने अपने सुधारों तथा लोकप्रियता तथा वैदेशिक नीति के कारण विदेशों में सम्मान प्राप्त किया। हेनरी अष्टम को व्यक्ति की पहचान थी तथा अपने सलाहकार योग्य व्यक्तियों को नियुक्त किया था। शासकीय कार्यों में गोपनीयता को वह पसन्द करता था। पोप के प्रभाव को इंग्लैण्ड से समाप्त कर उसने अपनी सामर्थ्य एवं बुद्धिमता का परिचय दिया।

प्र.2. गृह-युद्ध के कारणों का उल्लेख कीजिए।
Explain the causes of the Civil War.

उत्तर

गृह-युद्ध के कारण
(Causes of the Civil War)

इस गृह-युद्ध के शुरू होने के कारण निम्नलिखित थे—

1. **जेम्स प्रथम की नीति** (Policy of James I)—जेम्स प्रथम एक निरंकुश एवं राजा के दैवीय अधिकारों में विश्वास करने वाला व्यक्ति था। उसने अपनी नीति से राजा और संसद के मध्य संघर्ष को जन्म दिया। संसद अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो चुकी थी अत: संघर्ष निरन्तर बढ़ता गया। जेम्स प्रथम के शासनकाल में प्रारम्भ हुए इस संघर्ष ने गृह-युद्ध की आधारशिला रख दी थी। चार्ल्स के समय में संसद की यह भावना और भी प्रबल हो गयी।
2. **चार्ल्स प्रथम की निरंकुशता** (Despotism of Charles I)—चार्ल्स प्रथम को राजा और संसद के मध्य अधिकारों के लिए संघर्ष अपने पिता से आनुवंशिक रूप से मिला था। चार्ल्स प्रथम ने कुशलतापूर्वक इस स्थिति को सुलझाने के स्थान पर निरंकुशता का सहारा लिया। चार्ल्स स्वेच्छाचारी, अपव्ययी एवं लोभी था, धन प्राप्त करने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार था। इसके अतिरिक्त अपने पिता के समान दैवीय अधिकारों का अनुयायी होने के कारण उसे जनता तथा संसद द्वारा हस्तक्षेप पसन्द न था। उसने अपने ग्यारह वर्षीय व्यक्तिगत शासन में अत्यधिक निरंकुशतापूर्वक शासन किया। अत: जनता उसकी विरोधी हो गयी।
3. **चार्ल्स द्वारा धन-प्राप्ति के असांविधानिक तरीके अपनाना** (Illegal Methods of Collecting Money adopted by Charles)—गृह-युद्ध का एक प्रमुख कारण चार्ल्स प्रथम की आर्थिक नीति था। चार्ल्स प्रथम को स्पेन एवं फ्रांस से युद्ध होने के कारण धन की अत्यधिक आवश्यकता थी। जब संसद ने चार्ल्स को उसकी आवश्यकतानुसार धन प्रदान न किया तो चार्ल्स ने धन प्राप्त करने के लिए असांविधानिक तरीके अपनाए। राजा ने अनेक कर लगाए, धन लेकर ठेके दिए तथा आर्थिक दण्ड दिए। संसद ने चार्ल्स के इन कार्यों का विरोध किया क्योंकि कर लगाने का अधिकार संसद को प्राप्त था। चार्ल्स ने बलपूर्वक संसद को दबाना चाहा परिणाम गृह-युद्ध के रूप में सामने आया।
4. **राजा के सलाहकार** (Advisers of Charles I)—संसद एवं जनता राजा के कुछ परामर्शदाताओं से अत्यधिक घृणा करती थी। संसद किसी प्रकार से बकिंघम से तो मुक्त हो गयी, किन्तु तत्पश्चात् राजा के दो सलाहकार वेण्टबर्थ (Wentworth) तथा लौड (Laud) के कारण जनता को अत्यधिक कष्ट सहने पड़े। चार्ल्स ने अपना ग्यारह वर्षीय शासन इन दो परामर्शदाताओं की सहायता से किया था, जिसमें जनता विभिन्न प्रकार ग्यारह-वर्षीय से प्रताड़ित हुई थी। अत: जनता एवं संसद इन परामर्शदाताओं से मुक्ति पाना चाहती थी तथा अपने उद्देश्य में सफल भी हुई। वेण्टवर्थ को मृत्यु-दण्ड तथा लौड को बन्दीगृह में डाल दिया गया। राजा ने यद्यपि विवश होकर अपने सलाहकारों को दण्डित किया, किन्तु वह इसका प्रतिशोध संसद से लेना चाहता था।
5. **चार्ल्स प्रथम की धार्मिक नीति** (Religious Policy of Charles I)—चार्ल्स प्रथम की धार्मिक नीति भी असफल रही। चार्ल्स प्रथम अपनी रानी के कैथोलिक होने के कारण कैथोलिकों को विशेष सुविधाएं प्रदान करता था। जनता इस कार्य का विरोध करती थी। इसके अतिरिक्त राजा एंग्लिकन चर्च को प्रजा पर थोपना चाहता था, अत: संसद इसका विरोध करती थी क्योंकि संसद में प्यूरिटन तथा प्रेस्बीटेरियन तथा अन्य मतावलम्बी व्यक्ति भी थे। धार्मिक नीति के कारण ही स्कॉटलैण्ड से युद्ध भी हुआ तथा इंग्लैण्ड को अपमान सहना पड़ा था।
6. **गृह-युद्ध के सामाजिक कारण** (Social Causes of Civil War)—1642 ई. में इंग्लैण्ड में हुए गृह-युद्ध का एक सामाजिक पहलू भी था। इस युद्ध में राजा के समर्थक अधिकांशत: उच्च कोटि के व्यापारी थे अथवा बड़े-बड़े जमींदार, जो आमोद-प्रमोद में रुचि रखने वाले व आराम पसन्द थे। इसके विपरीत संसद का नेतृत्व करने वाले कर्मठ किसान अथवा व्यापारी थे। 1590 ई. तक राजा व कुलीन वर्ग के स्वार्थ एक समान थे, अत: कुलीन वर्ग ने राजा का समर्थन किया, किन्तु

TOUCH 'n PASS

स्टुअर्ट वंश के प्रथम दो शासकों के समय में कुलीन वर्ग को राजा के समर्थन की पहले के समान आवश्यकता न रही। कुलीन वर्ग अब यह अनुभव करने लगा था कि राजा व उसकी नीति, उनके प्रगति के मार्ग में बाधक है। राजा प्रमुख सामन्त के समान था तथा अपनी व्यवस्था को बनाए रखना चाहता था, परन्तु स्टुअर्टकालीन संसद में अधिकांश नए युग के व्यक्ति थे, जो बीते हुए सामन्ती युग के सिद्धान्तों में विश्वास नहीं करते थे। अत: इन स्टुअर्टकालीन संसद द्वारा राजा तथा उसके 'दैवीय अधिकारों' के सिद्धान्तों का विरोध किया गया जो गृह-युद्ध के रूप में प्रस्फुटित हुआ।

7. **दीर्घ संसद एवं चार्ल्स के मध्य संघर्ष** (Struggle between Charles I and Long Parliament)—धन की आवश्यकता से विवश होकर चार्ल्स ने 1640 ई. में दीर्घ संसद को आमन्त्रित किया था। इस संसद ने कार्य भार ग्रहण करते ही राजा की शक्ति पर रोक लगाने के लिए अनेक नियम पारित किए तथा चार्ल्स प्रथम को विवश होकर इन पर हस्ताक्षर करने पड़े। यद्यपि राजा ने इन पर हस्ताक्षर करने में अपमान अनुभव किया था, किन्तु संसद को प्रसन्न करने के उद्देश्य से उसने हस्ताक्षर किए तथा अपने अनेक शुभचिन्तकों एवं परामर्शदाताओं को भी इसी कारण बलि चढ़ा दिया, किन्तु वह तब भी संसद को प्रसन्न करने में असफल रहा। संसद राजा की शक्ति को पूर्णत: समाप्त करने तथा उसको अपमानित करना चाहती थी। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण 'महान् विरोध पत्र' है जिसको लेकर संसद में भी दो दल बन गए, किन्तु राजा के विरोधी दल ने ग्यारह वोटों के बहुमत से उसे पारित किया तथा उसकी प्रतिलिपियां जनता में वितरित करके अपमानित किया।

प्र.3. गृह-युद्ध की प्रकृति को लिखिए।
Write the nature of the Civil War.

उत्तर

गृह-युद्ध की प्रकृति
(Nature of the Civil War)

इंग्लैण्ड में प्रारम्भ हुआ यह गृह-युद्ध कोई वर्ग संघर्ष (Class War) न था।' दोनों ही ओर से सभ्य व्यक्ति अपनी सेनाओं का नेतृत्व कर रहे थे। संसद में 80 लार्ड राजा चार्ल्स के समर्थक थे तथा 30 उसके विरोधी तथा लोकसभा में 175 सदस्य चार्ल्स के समर्थन में थे तथा 315 उसके विरोध में। भौगोलिक विभाजन की दृष्टि से हम्बर से साउथेम्पटन तक खींची जाने वाली रेखा दोनों दलों के क्षेत्रों को विभाजित करती थी। इस रेखा के पूर्व का क्षेत्र संसद के पक्ष में तथा पश्चिमी क्षेत्र राजा के समर्थकों का था। इस गृह-युद्ध के राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक पहलू थे। राजनीतिक दृष्टि से इस गृह-युद्ध से इस बात का निर्णय होना था कि राजा अथवा संसद में से किसके अधिकार अधिक हैं। धार्मिक रूप से यह तय होना था कि एंग्लिकन तथा प्यूरिटन सम्प्रदाय में से किसकी विजय होगी। इस युद्ध में इंग्लैण्ड के अतिरिक्त स्कॉटलैण्ड तथा आयरलैण्ड के भी उद्देश्य निहित थे। इंग्लैण्ड के धार्मिक एवं सांविधानिक कारणों के स्थान पर स्कॉटलैण्ड के निवासी प्रेस्बीटेरियन सम्प्रदाय की स्थापना के लिए प्रयत्नशील थे तथा आयरलैण्ड में यह प्रोटेस्टेण्ट प्रभुसत्ता के विरुद्ध संघर्ष था। यद्यपि इस युद्ध की प्रमुख घटनाएं इंग्लैण्ड में हुईं तथापि इसका व्यापक प्रभाव स्कॉटलैण्ड तथा आयरलैण्ड पर पड़ा।

गृह-युद्ध के धार्मिक एवं राजनीतिक पहलू के अतिरिक्त सामाजिक पहलू भी था। इस युद्ध में संसद का पक्ष नवीन विचारों वाले यौमैनों (Yeomen) ने भी लिया। बड़े-बड़े व्यापारियों को छोड़कर, शेष उपेक्षित व्यापारी वर्ग भी संसद के साथ था। इस वर्ग को ज्ञात था कि यदि राजा की विजय हो गयी तो सामन्ती प्रथा पुन: शक्तिशाली हो जाएगी जिससे कि व्यापार में बाधा उत्पन्न होगी। अत: नए सामाजिक वर्गों ने अपनी उन्नति का मार्ग खुला रखने के उद्देश्य से संसद का साथ दिया। इस प्रकार इस युद्ध ने सामाजिक स्वरूप धारण किया, जो जनता में सम्पत्ति के वितरण में परिवर्तन, जड़ता से मुक्त होने की भावना, उच्च वर्ग में प्रवेश पाने के रास्तों का बन्द होने के कारण उत्पन्न निराशा का द्योतक था। इस प्रकार यह गृह-युद्ध राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक तनाव का साकार रूप था। इंग्लैण्ड में मतभेद अत्यधिक तीव्र था। प्रत्येक श्रेणी काउण्टी तथा परिवार में गृह-युद्ध को लेकर मतभेद थे। गिरजाघरों का उच्च वर्ग चार्ल्स के साथ था तथा प्यूरिटन संसद के समर्थक थे। अधिकांश जमींदार चार्ल्स का समर्थन कर रहे थे। पूर्वी इंग्लैण्ड में किसान मुख्यत: संसद के समर्थक थे। व्यापार एवं कारखाने वाले शहरों में संसद का प्रभाव था। अनेक व्यक्ति तटस्थ भी थे जो या तो इनमें सन्निहित प्रश्नों पर विचार ही नहीं करते थे या सम्राट की उपलब्धियों तथा उसके चरित्र पर यदि उन्हें सन्देह था तो संसद के नेताओं पर भी उन्हें विश्वास न था। अनेक काउण्टियों ने युद्ध से अलग रहने के लिए संघ बना लिए थे। यही कारण था कि दोनों पक्षों को सैनिक भर्ती करने में परेशानी होती थी।

दोनों ही पक्षों में से किसी की भी सेना प्रशिक्षित न थी, क्योंकि इंग्लैण्ड के पास स्थायी सेना नहीं थी तथा सैनिक दृष्टिकोण से वह यूरोप का सबसे कम शक्तिशाली देश था। 1645 ई. तक की लड़ाई मुख्यत: जमींदारों या उनके पुत्रों के नेतृत्व में काम करने वाले

अथवा शायर की अर्द्ध-प्रशिक्षित सेना और लन्दन के प्रशिक्षण पाने वाले सैनिकों द्वारा लड़ी गयी। क्रामवैल के द्वारा वास्तविक व्यावसायिक सेना की नींव डालने से पूर्व चार्ल्स को सबसे बड़ा लाभ यह था कि घुड़सवारी, निशानेबाजी तथा शिकार में दक्ष व्यक्तियों की एक बड़ी संख्या उसके अधीन रहती थी। इसी कारण घुड़सवार सेना का इस गृह-युद्ध में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। इस गृह-युद्ध की एक उल्लेखनीय बात यह थी कि इसमें कटुता न थी। गुलाब के फूलों के युद्ध (War of Roses) के समान न तो इसमें कत्लेआम हुए तथा न ही विजय के पश्चात् मृत्यु-दण्ड ही प्रदान किए गए।

प्र.4. चार्ल्स प्रथम की पराजय के कारणों का उल्लेख कीजिए।
Explain the causes of King Charles Ist defeat.

उत्तर

चार्ल्स प्रथम की पराजय के कारण
(Causes of King Charles Ist Defeat)

चार्ल्स प्रथम की पराजय के निम्नलिखित कारण थे—

1. **संसद के कुशल सेनापति**—उसकी पराजय का सर्वाधिक प्रमुख कारण संसद के सेनापतियों का कुशल एवं अनुभवी होना था। क्रामवैल एक कुशल सेनापति था तथा उसने अपने सैनिकों में अनुशासन, धार्मिक प्रवृत्ति तथा राजनीतिक स्वतन्त्रता की भावना को जाग्रत किया। नौ-सेना भी संसद की सहायता कर रही थी तथा ब्लेक ने नौ-सेना को शक्तिशाली बना दिया था। इसके विपरीत राजा के सैनिक पर्याप्त प्रशिक्षित न थे तथा सेनापति राजकुमार रूपर्ट साहसी एवं वीर होते हुए भी एक कुशल सेनापति न था।
2. **चार्ल्स का निरंकुश शासन**—राजा की पराजय का द्वितीय कारण राजा का निरंकुश एवं व्यक्तिगत शासन था। जनता चार्ल्स के अत्याचारों तथा निरंकुशता से परेशान हो चुकी थी तथा उसे अपना शत्रु समझती थी एवं संसद का समर्थन करती थी।
3. **स्कॉटलैण्ड से संसद को मदद**—गृह-युद्ध के समय पिम द्वारा स्कॉटलैण्ड से सहायता प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करने से भी संसद की सैनिक शक्ति बढ़ी जिसने संसद को विजय दिलायी।
4. **चार्ल्स के पास धनाभाव**—राजा चार्ल्स के पास धन का अभाव था। राजा के अधिकांश साथी गरीब थे। धन के अभाव में राजा को सेना तथा अस्त्र-शस्त्र का प्रबन्ध करने में अत्यन्त कठिनाई होती थी। इसके विपरीत, संसद के पास धन की कमी न थी क्योंकि संसद के समर्थक अधिकांश धनी व्यक्ति थे तथा कर लगाने का अधिकार भी संसद के पास था।
5. **संसद की कुशल सेना**—संसद की पैदल सेना कुशल थी तथा उसे कम सैनिकों की आवश्यकता होती थी क्योंकि संसद के पास थोड़ी-थोड़ी दूरी पर दुर्ग थे। चार्ल्स प्रथम के अधिकार में कोई दुर्ग न था।
6. **कुशल परामर्शदाताओं का अभाव**—चार्ल्स प्रथम की पराजय में उसके पास किसी कुशल सलाहकार का न होना भी सहायक हुआ। बकिंघम, वेण्टवर्थ एवं लौड की हत्या की जा चुकी थी जबकि संसद में अनेक योग्य व्यक्ति थे, विशेष रूप से पिम एवं क्रामवैल।

उपर्युक्त समस्त कारणों से चार्ल्स प्रथम की पराजय एवं संसद की गृह-युद्ध में विजय हुई तथा इंग्लैण्ड के इतिहास में एक नवीन मोड़ आया।

प्र.5. जेम्स द्वितीय एवं वैभवपूर्ण क्रान्ति को समझाइए।
Describe the James II and glorious revolution.

उत्तर

जेम्स द्वितीय एवं वैभवपूर्ण क्रान्ति
[James II and the Glorious Revolution (1685-1688)]

जीवन परिचय (Life Sketch)

1685 ई. में चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु हुई। चार्ल्स द्वितीय के कोई वैध सन्तान न होने के कारण उसने अपने भाई जेम्स को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। फरवरी, 1685 ई. में जेम्स सरलता से इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर आसीन हुआ। यद्यपि 1680 ई. में जेम्स द्वितीय को राज्याधिकार से च्युत करने का प्रयत्न किया गया, किन्तु 1685 ई. में जब वह राजा बना, उसका स्वागत किया गया तथा इंग्लैण्ड की जनता ने राजभक्ति का परिचय दिया। जेम्स द्वितीय ने सिंहासनारूढ़ होते ही संसद का अधिवेशन आमन्त्रित किया। इस संसद में अधिकांश सदस्य टोरी थे जो राजा के दैवी अधिकारों और राजा के अन्य अधिकारों के समर्थक थे तथा राजा से अपेक्षा करते थे कि वह कानून-निर्माण और अर्थव्यवस्था में संसद को महत्त्व देगा एवं अपनी गृह एवं वैदेशिक नीति में एंग्लिकन चर्च का ध्यान रखेगा। इस संसद ने जेम्स के व्यक्तिगत व्यय के लिए पर्याप्त धनराशि स्वीकृत की जो चार्ल्स द्वितीय तथा

TOUCH 'n' PASS

अन्य स्टुअर्ट शासकों की आबंटित धनराशि से कहीं अधिक थी। जेम्स को संसद ने भारी कर लगाने का अधिकार दे दिया। इस प्रकार, जेम्स टोरी दल के साथ सद्व्यवहार तथा एंग्लिकन चर्च का ध्यान रखकर अत्यन्त सरलतापूर्वक शासन कर सकता था, किन्तु जेम्स ऐसा कर सकने में सफल न हो सका। जेम्स द्वितीय अपने भाई चार्ल्स द्वितीय के समान योग्य एवं दूरदर्शी न था। चार्ल्स द्वितीय ने अपने भावों को प्रकट न करने की अद्भुत क्षमता थी। यद्यपि चार्ल्स द्वितीय भी निरंकुशतापूर्वक राज्य करना चाहता था। जब उसे अपना रहस्य प्रकट होते प्रतीत होता वह तुरन्त उसका उत्तरदायित्व अपने मन्त्रियों पर डाल देता था। जेम्स में यह गुण न था।' अत: जहां चार्ल्स ने 25 वर्षों तक सरलतापूर्वक शासन किया, जेम्स को तीन वर्ष पश्चात् ही इंग्लैण्ड छोड़कर भागने पर विवश होना पड़ा। यद्यपि जेम्स द्वितीय, चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में ड्यूक तथा सेनापति रह चुका था, किन्तु वीर एवं साहसी होते हुए भी उसमें राजनीतिक दूरदर्शिता एवं समय के अनुरूप कार्य करने की क्षमता न थी। चार्ल्स द्वितीय ने ही जेम्स के विषय में कहा था, 'जब मेरी मृत्यु हो जाएगी और मैं नहीं रहूंगा तब मैं नहीं जानता मेरा भाई क्या करेगा? जब वह राजा बनेगा तो मुझे भय है कि कहीं उसे सुदूर यात्रा पर जाने के लिए विवश न कर दिया जाए।'

प्र.6. मन्मथ के विद्रोह पर टिप्पणी लिखिए।

Write a note on Monmouth's Rebellion.

उत्तर

मन्मथ का विद्रोह
(Monmouth's Rebellion)

मन्मथ चार्ल्स द्वितीय का अवैध पुत्र था। ह्विग नेताओं ने चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में मन्मथ को उसका उत्तराधिकारी घोषित किए जाने का प्रयत्न किया था, किन्तु चार्ल्स इसके लिए तैयार न था तथा इसी कारण से उसने बहिष्कार बिल पर हस्ताक्षर नहीं किए थे। इसी प्रश्न पर उसने तीनों लघु संसद भंग की थीं। ह्विग नेताओं ने तब चार्ल्स की हत्या करने का प्रयत्न राई हाउस षड्यन्त्र द्वारा किया, किन्तु यह षड्यन्त्र असफल हो गया था जिसके कारण अनेक नेताओं को दण्डित किया गया तथा कुछ इंग्लैण्ड से भाग गए। जेम्स के राजगद्दी पर आसीन होने पर ह्विग नेताओं ने मन्मथ को उत्तेजित किया कि वह जेम्स द्वितीय के विरुद्ध विद्रोह करे। मन्मथ ने इंग्लैण्ड आकर स्वयं को चार्ल्स द्वितीय का पुत्र घोषित करते हुए स्वयं को इंग्लैण्ड का वास्तविक शासक बताया। मन्मथ ने सेना भी एकत्र की जिसमें अधिकांश कृषक तथा मजदूर थे। जेम्स द्वितीय ने मन्मथ के विद्रोह को दबाने के लिए सेना भेजी। दोनों सेनाओं में सेजमूर (Sedgemoor) नामक स्थान पर युद्ध हुआ। यद्यपि मन्मथ की सेना ने अत्यन्त वीरता प्रदर्शित की, किन्तु अशिक्षित होने एवं अस्त्र-शस्त्र कम होने के कारण वे परास्त हुए तथा मन्मथ को बन्दी बनाया गया। बाद में उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया। पश्चिमी प्रदेश में विद्रोहियों की जांच करने के लिए न्यायाधीश जेफ्रीज (Jeffrys) को भेजा गया जिसने कठोर नीति अपनायी। तीन सौ व्यक्तियों को मृत्यु-दण्ड दिया गया तथा उनके शवों को सड़क के किनारे वृक्षों पर लटका दिया गया। आठ सौ से अधिक व्यक्तियों को वेस्टइण्डीज, दास बनाकर बेचा गया। इस कठोर नीति के कारण यह न्यायालय 'खूनी न्यायालय' (The Bloody Assizes) कहलाया। इस अत्याचार से इंग्लैण्ड की जनता आतंकित हो गयी तथा उसमें जेम्स द्वितीय के प्रति असन्तोष एवं घृणा उत्पन्न हो गयी।

प्र.7. वैभवपूर्ण क्रांति की घटनाओं का उल्लेख कीजिए।

Explain the events of glorious revolution.

उत्तर

वैभवपूर्ण क्रान्ति की घटनाएँ
(Events of Glorious Revolution)

जिस दिन सात पादरियों को मुक्त किया गया था उसी रात को एक सभा का आयोजन किया गया था जिसमें पादरियों, टोरियों तथा ह्विगों ने भाग लिया। इस सभा में निर्णय लिया था कि जेम्स द्वितीय के दामाद विलियम ऑफ ऑरेन्ज, जो हॉलैण्ड का राजा था, को इंग्लैण्ड के राजसिंहासन के लिए आमन्त्रित किया जाए। इस निर्णय के अनुसार विलियम को निमन्त्रित किया गया। विलियम उन दिनों फ्रांस से युद्ध में व्यस्त था। फ्रांस, हॉलैण्ड से कहीं अधिक शक्तिशाली था अत: विलियम ने इस अवसर से लाभ उठाने का निश्चय किया क्योंकि फ्रांस, इंग्लैण्ड तथा हॉलैण्ड की सम्मिलित शक्ति का सामना नहीं कर सकता था। अत: विलियम इंग्लैण्ड आने के लिए राजी हो गया।' लुई चौदहवें ने जेम्स को इस खतरे से अवगत कराया, अत: जेम्स ने अपनी नीति में परिवर्तन किया तथा धार्मिक न्यायालय को भंग कर दिया। जिन गिरजाघरों, विश्वविद्यालयों, न्यायालयों, नगर-निगमों तथा सेना के अधिकारियों को उनके पदों से च्युत किया था उन्हें पुन: उनके पदों पर नियुक्त कर दिया। कुछ अन्य प्रोटेस्टेण्ट व्यक्तियों को भी उच्च पदों पर नियुक्त किया, किन्तु जेम्स अपनी गलती अत्यन्त देर से समझा था तथा अब तक वह जनता का विश्वास खो चुका था। विलियम ऑफ ऑरेन्ज (William of Orange) पन्द्रह हजार सेना के साथ 5 नवम्बर, 1688 ई. में टोरबे (Trobay) के बन्दरगाह पर उतरा। विलियम के इंग्लैण्ड आगमन के समय जेम्स की स्थिति पर्याप्त अच्छी थी। जेम्स के अधीन चालीस हजार

सेना थी तथा नौ-सेना भी उसके प्रति स्वामिभक्ति रखती थी। जेम्स की तुलना में विलियम की सेना अत्यन्त कम थी तथा विभिन्न राष्ट्रों के सैनिक होने के कारण संगठित भी न थी। इस समय यदि जेम्स एक स्वतन्त्र संसद के निर्वाचन और उसकी इच्छानुसार शासन करने का आश्वासन देता तो सम्भवत: यह क्रान्ति न होती क्योंकि इंग्लैण्ड की प्रतिक्रियावादी जनता विलियम की अपेक्षा जेम्स को ही समर्थन देती, किन्तु जेम्स ने ऐसा नहीं किया। विलियम अपनी सेना के साथ लन्दन की ओर अग्रसर हुआ। जेम्स भी अपनी सेना के साथ विलियम का सामना करने आगे बढ़ा, किन्तु रास्ते में उसके साथी उसका साथ छोड़ने लगे तथा विलियम की ओर मिल गए। यहां तक कि उसका प्रमुख एवं विश्वासपात्र सेनापति जॉन चर्चिल तथा जेम्स की छोटी पुत्री ऐन (Anne) भी उसका साथ छोड़कर विलियम से जा मिले। इस प्रकार जेम्स की सेना छिन्न-भिन्न हो गयी तथा वह अत्यन्त निराश हो गया। निराशा में उसने कहा-'ईश्वर दया कर! मेरे अपने ही बच्चे मेरा साथ छोड़ चुके हैं।

जेम्स प्रत्येक दिशा से निराश हो 23 दिसम्बर, 1688 ई. को राजमुहर को टेम्स नदी में फेंककर फ्रांस भाग लिया। इस प्रकार एक बूंद भी रक्त की बहाए बिना इंग्लैण्ड में क्रान्ति हुई। इस क्रान्ति के महत्त्वपूर्ण परिणाम हुए। जेम्स के फ्रांस भागने के पश्चात् इंग्लैण्ड की राजगद्दी रिक्त हो गयी। संसद ने मेरी को रानी तथा विलियम को संरक्षक नियुक्त करना चाहा, किन्तु विलियम इस बात के लिए तैयार न हुआ क्योंकि उसे हॉलैण्ड की रक्षा करने के लिए शक्ति की आवश्यकता थी। 22 जनवरी, 1689 ई. को संसद की पुन: बैठक हुई जिसमें संसद ने विलियम के समक्ष कुछ शर्तें (Declaration of Right) रखीं जिनको मेरी तथा विलियम ने स्वीकार किया। इस प्रकार जेम्स द्वितीय के पश्चात् इंग्लैण्ड के सिंहासन पर विलियम तथा मेरी संयुक्त रूप से आसीन हुए।

प्र.8. वैभवपूर्ण क्रान्ति का महत्त्व एवं प्रभाव लिखिए।
Write the effects and significance of the revolution.

उत्तर

क्रान्ति का महत्त्व एवं प्रभाव
(Effects and Significance of the Revolution)

1688 ई. की वैभवपूर्ण क्रान्ति का इंग्लैण्ड के इतिहास में अत्यन्त महत्त्व है। इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप 1603 ई. अथवा उससे भी पूर्व से चले आ रहे संसद एवं राजा के मध्य संघर्ष समाप्त हो गया। इस क्रान्ति ने उन समस्त सिद्धान्तों को स्पष्ट कर दिया जिनके कारण यह संघर्ष चल रहा था, जिसके कारण गृह-युद्ध हुआ व इंग्लैण्ड को अपार संकटों एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। संसद एवं राजा के मध्य संघर्ष के प्रमुख सिद्धान्त अथवा कारण निम्न थे-राजा तथा संसद में किसके अधिकार सर्वोपरि हैं; इंग्लैण्ड के चर्च का स्वरूप क्या है; राज्यमन्त्री राजा के प्रति उत्तरदायी हैं अथवा संसद के; नागरिक स्वाधीनता की रक्षा, अधिनियम बनाना तथा कर लगाने का अधिकार किसको है; देश की वैदेशिक तथा गृह-नीति किसकी इच्छानुसार होनी चाहिए। उपर्युक्त कारणों का उत्तर इस क्रान्ति ने दे दिया। इस क्रान्ति ने स्पष्ट कर दिया कि राजा के दैवी अधिकारों (Divine Rights) को स्वीकार नहीं किया जा सकता। वह ईश्वर के प्रति नहीं वरन् जनता की प्रतिनिधि संसद के प्रति उत्तरदायी है। जनता की शक्ति सर्वोपरि है, अत: राजा को प्रचलित नियमों में परिवर्तन करने का अधिकार नहीं है। राजा की वास्तविक शक्ति संसद के सहयोग पर ही निर्भर है। राजमन्त्रियों के उत्तरदायित्व के सम्बन्ध में भी यह स्पष्ट हो गया कि वे संसद के प्रति ही उत्तरदायी हैं। राजा के क्षमा करने से वे संसद के प्रति उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं हो सकते। इस क्रान्ति ने यह भी स्पष्ट किया कि नागरिक स्वतन्त्रता की रक्षा करना, कानून बनाना तथा कर लगाना संसद के अधिकारों के अन्तर्गत हैं, राजा इसमें किसी प्रकार हस्तक्षेप नहीं कर सकता। राज्य की गृह एवं वैदेशिक नीति का निर्धारण भी राजा स्वेच्छा से नहीं अपितु संसद के परामर्श से करेगा। धार्मिक क्षेत्र में भी स्पष्ट हो गया कि इंग्लैण्ड का वास्तविक धर्म एंग्लिकन अथवा प्रोटेस्टेण्ट है। चर्च पर से राजा के अधिकार को समाप्त किया गया तथा संसद को चर्च का उत्तरदायित्व सौंपा गया। यह भी निश्चित किया गया कि कोई कैथोलिक व्यक्ति अथवा जिसका विवाह कैथोलिक से हुआ हो, इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर आसीन नहीं हो सकता था। इस प्रकार कैथोलिक के खतरे को सदैव के लिए इंग्लैण्ड से समाप्त कर दिया गया तथा प्रोटेस्टेण्ट धर्म इंग्लैण्ड में सदैव के लिए स्थापित हो गया। इस प्रकार इंग्लैण्ड के इतिहास में वैभवपूर्ण क्रान्ति का अत्यन्त महत्त्व है क्योंकि इनमें राजाओं की निरंकुशता व स्वेच्छाचारिता के स्थान पर वास्तविक संसदीय प्रणाली की स्थापना की। इस प्रकार सांविधानिक दृष्टिकोण से न केवल इंग्लैण्ड पर अपितु सम्पूर्ण विश्व पर इसका प्रभाव पड़ा। इस क्रान्ति के कारण ही इंग्लैण्ड में सहिष्णुता की भावना अधिक दृढ़ हुई तथा प्रेस पर से प्रतिबन्ध हटा लिया गया। न्याय विभाग तथा कार्यकारिणी पृथक्-पृथक् किए तथा एक लोकप्रिय सरकार की स्थापना हुई जैसा कि रैम्जे म्योर ने लिखा है, 'इस स्मरणीय तथा नवीन युग-निर्मातृ घटना से इंग्लैण्ड में लोकप्रिय सरकार का युग प्रारम्भ हुआ तथा सत्ता निरंकुश राजाओं के हाथ से निकलकर संसद के हाथ में आ गयी।''

वैभवपूर्ण क्रान्ति का प्रभाव न केवल इंग्लैण्ड पर अपितु सम्पूर्ण यूरोप पर हुआ। इंग्लैण्ड तथा हॉलैण्ड में पिछले अनेक दशकों से व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धा के कारण शत्रुता चल रही थी। डेन्वी ने यद्यपि मित्रता स्थापित करने का प्रयत्न किया, किन्तु यह मित्रता

अधिक समय तक स्थिर न रह सकी थी। इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड एवं हॉलैण्ड का राजा एक ही व्यक्ति होने के कारण दोनों देशों में स्थायी मित्रता स्थापित हुई। फ्रांस का हॉलैण्ड पर अधिकार करने का प्रयत्न अब उसके लिए एक स्वप्न मात्र रह गया। इंग्लैण्ड की यद्यपि हॉलैण्ड से मित्रता स्थापित हुई, किन्तु उसके फ्रांस के साथ सम्बन्ध तनावपूर्ण हो गए। चार्ल्स द्वितीय तथा जेम्स द्वितीय के समय में इंग्लैण्ड तथा फ्रांस के सम्बन्ध अत्यन्त मधुर थे क्योंकि दोनों ही शासक कैथोलिक थे तथा लुई चौदहवें से अत्यधिक प्रभावित थे। वैभवपूर्ण क्रान्ति के कारण इंग्लैण्ड में प्रोटेस्टेण्ट शासन की स्थापना तथा हॉलैण्ड एवं फ्रांस के सम्बन्ध कटु होने से इंग्लैण्ड एवं फ्रांस में शत्रुता हो गयी। इंग्लैण्ड एवं हॉलैण्ड की संयुक्त शक्ति अत्यन्त प्रबल होने के कारण इंग्लैण्ड का खोया हुआ वैदेशिक सम्मान उसे पुन: प्राप्त हो गया।

इस प्रकार वैभवपूर्ण क्रान्ति के इंग्लैण्ड एवं यूरोप की राजनीति पर व्यापक प्रभाव हुए तथा इस क्रान्ति ने इंग्लैण्ड एवं यूरोप के इतिहास को एक नवीन दिशा प्रदान की।

प्र.9. बिल ऑफ राइट्स को परिभाषित कीजिए।
Define the Bill of Rights.

उत्तर

बिल ऑफ राइट्स
(Bill of Rights)

1688 ई. में हुई वैभवपूर्ण क्रान्ति का महत्त्वपूर्ण परिणाम संसद का प्रशासकीय मामलों में सर्वोपरि शक्ति के रूप में उभर कर सामने आना था। संसद की शक्ति में वृद्धि करने वाला प्रमुख स्रोत बिल ऑफ राइट्स था। विलियम ने राजगद्दी पर आसीन होने से पूर्व बिल ऑफ राइट्स को स्वीकार किया था। इस बिल ऑफ राइट्स की प्रमुख धाराएँ निम्नलिखित थीं—

(अ) शान्तिकाल में राजा स्थायी सेना नहीं रखेगा।
(ब) कोर्ट ऑफ हाई कमीशन की स्थापना अथवा प्रचलित नियमों को भंग करने का राजा को अधिकार नहीं होगा।
(स) संसद का निर्वाचन स्वतन्त्र रूप से होगा तथा संसद-सदस्यों को भाषण की पूर्ण स्वतन्त्रता होगी; संसद का प्रत्येक वर्ष में अधिवेशन अवश्य बुलाया जाएगा।
(द) राजा संसद की अनुमति के बिना कर नहीं लगाएगा।
(य) भविष्य में इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर कैथोलिक व्यक्ति नहीं बैठ सकेगा।

इस प्रकार बिल ऑफ राइट्स के परिणामस्वरूप संसद की शक्ति में असीम वृद्धि हुई तथा राजा के दैवी अधिकारों, स्वेच्छाचारिता तथा निरंकुशता को सदैव के लिए समाप्त कर दिया गया। इस विधान के कारण ही स्टअर्ट काल के प्रारम्भ से चल रहे राजा एवं संसद के मध्य संघर्ष का अन्त हुआ तथा संसद की शक्ति ही सर्वोपरि प्रमाणित हुई। इस प्रकार यह विधान इंग्लैण्ड की जनता की स्वतन्त्रता का एक महानतम् आज्ञा-पत्र था। सेना सम्बन्धी कानून के कारण संसद का वार्षिक अधिवेशन आवश्यक हो गया, क्योंकि यदि संसद का अधिवेशन न होता तो सेना के लिए व्यय नहीं प्राप्त हो सकता था। इसका कारण अर्थ-नीति पर संसद का अधिकार होना था।

1689 ई. का यह बिल ऑफ राइट्स 1215 ई. के मैग्नाकार्टा' (Magnacarta), 1628 ई. के पैटीशन ऑफ राइट्स (Petition of Rights) तथा 1641 ई. के महान् विरोध-पत्र (Grand Remonstrance) की एक अगली कड़ी था। इस प्रकार इस बिल ऑफ राइट्स (Bill of Rights) ने राजा को संसद पर पूर्णत: निर्भर कर दिया।

प्र.11. कैबिनेट प्रणाली का प्रारम्भ एवं विकास का उल्लेख कीजिए।
Explain tbe beginning and evolution of cabinet system in England.

उत्तर

कैबिनेट प्रणाली का प्रारम्भ
(Beginning of the Cabinet System)

विलियम के शासनकाल से राजा मन्त्रियों की नियुक्ति करता था तथा ये राजा के प्रति उत्तरदायी होते थे, किन्तु विलियम के समय तक बिल ऑफ राइट्स तथा उत्तराधिकार सम्बन्धी नियम के परिणामस्वरूप महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुआ था। चार्ल्स के समय में संसद में दो दल हो गए थे-ह्विग एवं टोरी। ये दोनों परस्पर विरोधी विचारधारा के थे। विलियम विवश होकर दोनों ही दलों में से अपने मन्त्रियों को नियुक्त करता था, किन्तु अत्यन्त योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति करने तथा किसी भी दल का पक्ष न लेने पर भी विलियम को अत्यन्त कठिनाई का सामना करना पड़ता था। मन्त्रियों के परस्पर विरोधी दलों के होने के कारण उनमें मतभेद रहता था, अत: राज-कार्य करने में परेशानी होती थी। इसी समय फ्रांस से भी युद्ध चल रहा था, अत: मन्त्रियों के परस्पर विरोधी विचारधारा के कारण युद्ध का संचालन कुशलतापूर्वक नहीं हो पाता था। अर्ल ऑफ सेण्डरलैण्ड ने यह प्रस्ताव रखा कि विलियम

TOUCH 'n PASS

केवल एक ही दल के व्यक्तियों को मन्त्री नियुक्त करे क्योंकि वे सरलता से एकमत होकर कार्य करेंगे तथा उन्हें संसद का भी विश्वास एवं समर्थन प्राप्त हो सकेगा। विलियम ने इस परामर्श को स्वीकार किया तथा संसद में बहुमत वाले दल से मन्त्रियों को नियुक्त करना प्रारम्भ किया। विलियम का यह प्रशिक्षण सफल रहा तथा भविष्य में यह प्रथा स्थायी हो गयी। विलियम ने ह्विग दल के बहुमत में होने के कारण इसी दल से अपने मन्त्रियों को नियुक्त करना प्रारम्भ किया था। मन्त्रियों की बैठक जिस छोटे से कमरे में होती थी उसका नाम कैबिनेट था उसी के नाम पर मन्त्रिमण्डल का नाम 'कैबिनेट' पड़ा तथा दलबन्दी शासन (party government) की स्थापना भी इसी समय से प्रारम्भ हुई।

इंग्लैण्ड में कैबिनेट प्रणाली का विकास
(Evolution of Cabinet System in England)

कैबिनेट प्रणाली का अर्थ (Meaning of the Cabinet System)

प्रत्येक राजनीतिज्ञ की दृष्टि में यद्यपि 'कैबिनेट प्रणाली' की परिभाषा में अन्तर हो सकता है, परन्तु प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ सिडनी लो (Sydney Low) का कथन इस प्रकार है-'मन्त्रिमण्डल राष्ट्रीय कार्यों के प्रबन्ध को साधारण दिशा-प्रदान करने पर पूर्ण नियन्त्रण रखने वाली एक उत्तरदायी कार्यकारिणी है, परन्तु अपने इस अधिकार का प्रयोग वह जनता के प्रतिनिधियों के समूह 'हाउस ऑफ कॉमन्स' (House of Commons) के कठोर नियन्त्रण में करती है और अपने सभी कार्यों के लिए इसके प्रति ही उत्तरदायी है।' एक अन्य प्रसिद्ध राजनीनिज्ञ प्रो. मुनरो ने कैबिनेट की परिभाषा इन शब्दों में की है, 'मन्त्रिमण्डल को सम्राट के परामर्शदाताओं का एक समूह कहा जा सकता है और जिसका निर्माण सम्राट के नाम पर हाउस ऑफ कॉमन्स के बहुमत वाले दल की अनुमति से किया जाता है।'

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. एलिजाबेथ की गृह-नीति का वर्णन कीजिए।
Describe the Home-policy of Elizabeth.

उत्तर

एलिजाबेथ की गृह-नीति
(Home-Policy of Elizabeth)

मेरी ट्यूडर के पश्चात् एलिजाबेथ इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर आसीन हुई। शीघ्र ही उसे अनुभव हुआ कि उसके सम्मुख अनेक समस्याएं हैं, जिनका समाधान करना नितान्त आवश्यक है। मेरी ट्यूडर तथा उसके द्वारा अत्याचारपूर्ण नीति अपनाने के लिए इंग्लैण्ड की सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थिति अव्यवस्थित हो गई थी। एलिजाबेथ ने स्थिति को समझा और उसमें परिवर्तन लाने के लिए प्रयत्न किया। धीरे-धीरे स्थिति में सुधार लाते हुए उसने इंग्लैण्ड में शान्ति और व्यवस्था स्थापित कर देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर किया तथा देश में सुख, शान्ति और वैभव स्थापित किया। इसी कारणवश एलिजाबेथ के शासनकाल को इंग्लैण्ड के इतिहास में स्वर्णयुग के नाम से जाना जाता है।

1. **एलिजाबेथ और प्यूरिटन** (Elizabeth and Puritans)—धार्मिक समस्या को सुलझाने के लिए एलिजाबेथ ने धार्मिक समझौता बनाया था, किन्तु इंग्लैण्ड के प्यूरिटन इससे सन्तुष्ट न थे। प्यूरिटन एलिजाबेथ की उदार धार्मिक नीति को पसन्द नहीं करते थे तथा कैथोलिकों का कठोरतापूर्वक दमन करना चाहते थे। इंग्लैण्ड में प्यूरिटन (उग्रवादी प्रोटेस्टेण्ट) धार्मिक मामलों के अतिरिक्त राजनीति में भी हस्तक्षेप करने लगे थे। इनका विचार था कि धर्म मनुष्य का व्यक्तिगत विषय है। इसमें राज्य को हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। प्यूरिटन राजनीति स्वतन्त्रता की भी मांग करने लगे थे।
   प्यूरिटन वर्ग का विचार था कि एलिजाबेथ ने जो धार्मिक सुधार किए हैं, वे ईसाई धर्म के विरोधी हैं। इसके अतिरिक्त पादरियों की नियुक्ति के विषय में भी प्यूरिटन असन्तुष्ट थे, वे चाहते थे कि गिरजाघरों के अधिकारी सरकारी व्यक्ति न हों और न ही सरकार उन्हें आर्थिक सहायता करे। गिरजाघर के पदाधिकारी जनता द्वारा नियुक्त किए जाएं तथा दान आदि से अपनी जीविका चलाएं। प्यूरिटन वर्ग का विचार था कि गिरजाघरों में मूर्ति अथवा चित्रपूजा न की जाए। उनके विचार में यह कैथोलिक पद्धति थी। प्यूरिटन पादरियों के विवाह करने के भी विरोधी थे। उनका विचार था कि पादरियों को सांसारिक जीवन से दूर रहना चाहिए। प्यूरिटनों को इंग्लैण्ड के शक्तिशाली सरदारों का समर्थन प्राप्त था। मध्य वर्ग में भी इनकी संख्या बहुत बढ़ गयी थी जिसके कारण संसद तथा प्रिवी कौंसिल में भी इनका प्रभाव था। थामस कार्टराइट (Thomas Cartwright) नामक कैम्ब्रिज का प्रोफेसर अपने लेखों द्वारा प्यूरिटन वर्ग के विचारों का प्रसार तथा एंग्लिकन चर्च की बुराई करता था।

एलिजाबेथ का विचार था कि एंग्लिकन चर्च के लिए ये लोग कैथोलिक वर्ग के समान ही खतरनाक हो सकते हैं। उसने देखा कि प्यूरिटन पादरी प्रार्थना में नियमों का पालन नहीं करते हैं, अत: उसने कैण्टबरी के आर्क बिशप के द्वारा नियमों का पालन करने का आदेश निकलवाया, जिन पादरियों ने इस आदेश का पालन नहीं किया उन्हें उनके पद से च्युत कर दिया गया। प्रोफेसर कार्टराइट को भी उसके पद से हटा दिया गया। वह बन्दी बनाए जाने के भय से इंग्लैण्ड से भाग गया। एलिजाबेथ ने इस प्यूरिटन वर्ग के विरुद्ध कठोर नीति अपनायी। अनेक प्यूरिटन को बन्दी बनाया गया। इस प्रकार वह इन्हें शान्त करने में सफल हुई। एलिजाबेथ का उद्देश्य यद्यपि रक्तपात करना नहीं था, किन्तु देश व एंग्लिकन चर्च (Anglican Church) की सुरक्षा के लिए विवश होकर उसने कठोर नीति का पालन किया। उसने दोनों ही सम्प्रदायों को संरक्षण प्रदान किया।

2. **सामाजिक सुधार** (Social Reforms)—एलिजाबेथ की इच्छा थी कि उसकी प्रजा सुखी एवं प्रसन्न रहे। उसको अपने देशवासियों की स्थिति देखकर दु:ख होता था। क्योंकि जनता का एक बड़ा भाग निर्धन था। देश में व्याप्त अव्यवस्था के अतिरिक्त निर्धनता का प्रमुख कारण बेरोजगारी थी। जो लोग मजदूरी करके कार्य करना चाहते थे उन्हें काम नहीं मिलता था, अत: वे भिक्षा मांगने के लिए विवश होते थे। यद्यपि सोलहवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड में भिक्षा मांगने पर प्रतिबन्ध लगाने के अनेक नियम पारित किए थे, परन्तु वे अपने उद्देश्य में सफल न हो सके क्योंकि उन्होंने कभी इस ओर ध्यान नहीं दिया कि भिक्षा मांगने का कारण क्या है। सर्वप्रथम एलिजाबेथ ने इस ओर ध्यान दिया और मठों के नष्ट होने का इसका एक प्रमुख कारण स्वीकार किया। एलिजाबेथ ने नियम पारित कर सड़कों पर भिक्षा मांगने पर प्रतिबन्ध लगाया तथा जिन लोगों के पास जीविकोपार्जन का साधन न था उनके लिए देश में दरिद्रालय (Poor Houses) खोले गए। जो लोग अपंग अथवा अपाहिज थे उन्हें मुफ्त भोजन दिया जाता था तथा कार्य कर सकने योग्य व्यक्तियों को काम दिया जाता था तथा तब उनके भोजन आदि की व्यवस्था की जाती थी। 1601 ई. में दरिद्र संरक्षण नियम (Poor Law) पारित करके न्यायाधिपतियों (Justice of Peaces) को दरिद्रालय के प्रबन्ध का कार्य सौंपा गया। जनता से थोड़ा-सा कर लेकर इन दरिद्रालयों का व्यय वहन किया जाता था। उसके प्रयत्नों से शीघ्र ही भिक्षुओं की समस्या समाप्त हुई।

एलिजाबेथ के शासन काल से पूर्व तथा उसके प्रशासन के प्रारम्भिक समय की स्थिति अत्यन्त खराब थी। सड़कों की दशा दयनीय थी तथा यात्रा में लुटेरों का भी भय रहता था। सरायों की दशा भी शोचनीय थी। यात्रा करना अत्यन्त कष्टप्रद था। उस समय की स्थिति के विषय में इतिहासकार वेस्ट ने लिखा है—'यात्रा का अर्थ एक दिन का कार्य है, यात्रा हमें वास्तव में स्त्री की प्रसव वेदना का ध्यान दिलाती है, जो बहुत पीड़ादायक कार्य है।' अधिकांश जनता गन्दे मकानों में रहती थी, जिनमें हवा तथा प्रकाश की उचित व्यवस्था न थी। नगरों में भी गन्दगी व्याप्त थी। इस कारण समय-समय पर प्लेग तथा अन्य भयंकर रोग फैलकर जनता में आतंक फैलाते थे। विज्ञान की उन्नति न होने के कारण यद्यपि एलिजाबेथ इस समस्या का पूर्णत: समाधान करने में असफल रही तथापि उसने स्थिति में परिवर्तन लाने का प्रयास किया। इंग्लैण्ड में विशाल एवं भव्य-भवनों का निर्माण किया, नगरों में सफाई का भी उचित प्रबन्ध किया गया। मकानों में रोशनदान व खिड़कियों की व्यवस्था की गई। इससे जनता की रुचि में भी परिवर्तन हुआ अब वे स्वच्छ एवं मुलायम बिस्तरों का भी उपयोग करने लगे। नगरों में बाग लगाए गए तथा विभिन्न खेलों में भी जनता की रुचि उत्पन्न हुई। इस प्रकार समाज उन्नति के पथ पर अग्रसर हुआ।

3. **आर्थिक स्थिति एवं व्यापार** (Financial Condition and Trade)—एलिजाबेथ के शासन काल से पूर्व इंग्लैण्ड की स्थिति अच्छी न थी। हेनरी अष्टम के युद्धों एवं दरबार के व्यय के कारण उसने विभिन्न प्रकार से धन अर्जित किया था। इसी उद्देश्य से उसने मुद्रा में मिलावट करके उसका मूल्य गिरा दिया था, जिसका कुप्रभाव देश के व्यापार पर पड़ा। मेरी के शासनकाल में भी स्थिति में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। एलिजाबेथ ने शान्तिप्रिय नीति का पालन करते हुए काफी धन संचित किया, जिससे उसे संसद पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं रही। उसके शासनकाल में व्यापार में असाधारण प्रगति तथा समुद्री लुटेरों द्वारा स्पेन के जहाजों की लूट के कारण इंग्लैण्ड की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। एलिजाबेथ ने व्यापार में उन्नति लाने का कार्य अपने कुशल मन्त्री विलियम सीसिल (लॉथ बर्ली) को सौंपा। विलियम सीसिल कुशल अर्थशास्त्री तथा अत्यन्त परिश्रमी व्यक्ति था।

सीसिल ने 1563 ई. में शिल्पकार अधिनियम पारित करवाया जिसके द्वारा श्रमिक श्रेणियों के समस्त अलग-अलग विनियमों को समाप्त कर सभी उद्योगों की रोजगार सम्बन्धी शर्तों और स्थितियों को नियमित किया गया। कस्बे अथवा गांव सबमें एक ही नियम लागू किया गया। यह आदेश दिया गया कि सभी स्वस्थ व्यक्तियों को खेत मजदूर के रूप में कार्य

करना पड़ेगा। इससे उन्हीं व्यक्तियों को छूट दी जाती थी, जो किसी अन्य शिल्प में कार्य करने के अधिकारी हों। इस अधिनियम के द्वारा देश की सम्पूर्ण श्रम शक्ति को संगठित करने का प्रयत्न किया गया। यह व्यवस्था एक लम्बे समय तक चलती रही। इस व्यवस्था से कस्बों का धीरे-धीरे समाप्त होना रुक गया क्योंकि श्रमिक श्रेणियों से बचने के लिए उन्हें अब गांवों में जाने की आवश्यकता न रही। पहले व्याप्त यह शिकायत भी समाप्त हो गयी कि मालिक वर्ग ऐसे व्यक्तियों को काम पर रख लेता है जो प्रशिक्षित नहीं होते थे, क्योंकि अब शिल्पियों के लिए सात वर्ष का प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया गया था इसके अतिरिक्त मजदूरों के प्रति न्याय करने के उद्देश्य से मजदूरी की दरें निर्धारित करने का कार्य न्यायाधिपतियों को दे दिया गया।

इस व्यवस्था से सीसिल को सन्तुष्टि न हुई, उसने इंग्लैण्ड के उद्योग, नौ-परिवहन तथा व्यापार की वृद्धि के लिए अथक प्रयत्न किया। सीसिल के निर्देशन में इन तीनों ने असाधारण वृद्धि की। इस समय इंग्लैण्ड में शान्ति स्थापित रहने से भी सीसिल को सहायता मिली। विदेशों से भागकर आए हुए शिल्पकारों को भी सीसिल ने संरक्षण प्रदान किया तथा कपड़ा, कांच, कागज, बर्तन तथा चीनी साफ करने के लिए जर्मनी से खनिज लाए गए। सीसिल द्वारा इंग्लैण्ड की इमारती लकड़ी के साधनों के उपयोग तथा युद्ध-सामग्री विशेषकर बारूद एवं तोप की व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया गया। रैम्जे म्योर के अनुसार एलिजाबेथ के शासन काल में स्पेन का यह अनुमान था कि इंग्लैण्ड के पास पर्याप्त युद्ध-सामग्री न होने के कारण उससे खतरा नहीं है, परन्तु सीसिल ही वह व्यक्ति था जिसने यह अभाव पूर्ण किया और सम्भवत: इसी के परिणामस्वरूप स्पेन के जहाजी बेड़े को परास्त किया जा सका।

व्यापार तथा व्यवसाय की उन्नति से इंग्लैण्ड में कारखानों की संख्या में वृद्धि हुई। इसी समय नवीन प्रदेशों की खोज हुई, अत: अपने देश में निर्मित सामान को नवीन देशों तक पहुँचाने के लिए जहाजों तथा व्यापारिक कम्पनियों का अभाव प्रतीत हुआ। सीसिल ने इस दिशा में हर सम्भव प्रयत्न किया तथा जहाज निर्माण के कारखानों को आर्थिक सहायता प्रदान की। 1578 ई. में बाल्टिक प्रदेशों से व्यापार करने के उद्देश्य से सर्वप्रथम ईस्टलैण्ड कम्पनी (The Eastland Company) की स्थापना की गयी। इससे होने वाले लाभ को देखकर 1581 ई. में पूर्वी मेडिट्रेरियन प्रदेशों में व्यापार करने के विचार से लीवान्ट कम्पनी (Levant Company) की स्थापना की गई। इन कम्पनियों से इंग्लैण्ड को अत्यधिक लाभ हुआ। 1600 ई. में एक अन्य कम्पनी की स्थापना की गई जिसे 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' (East India Company) कहते हैं। ये कम्पनी इंग्लैण्ड के लिए अत्यन्त लाभप्रद प्रमाणित हुई क्योंकि न केवल उसने भारत से व्यापार किया वरन् कुछ समय पश्चात् उस पर अधिकार करने में भी सफल हो गयी।

इस प्रकार, शनै:-शनै: इंग्लैण्ड ने व्यापारिक क्षेत्र में असीमित उन्नति की। एलिजाबेथ द्वारा इस दिशा में किया गया कार्य सराहनीय है। रैम्जे म्योर के शब्दों में, 'एलिजाबेथ की सरकार की यह सबसे भारी कुशलता थी कि उसने इन समस्याओं को हल करने के साधन निकाले जिनके परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड में नवीन समृद्धि एवं सन्तुष्टि आयी।

साहित्य एवं संगीत
(Literature and Music)

एलिजाबेथ को साहित्य एवं संगीत में रुचि थी, अत: एलिजाबेथ-काल की महानतम् देन अंग्रेजी साहित्य की सर्वोत्कृष्ट उन्नति है। इस उन्नति का क्षेत्र वैसे तो साहित्य के सभी क्षेत्रों में था, तथापि कविता एवं नाटकों के क्षेत्र में यह सर्वाधिक था। परिणामत: इंग्लैण्ड एलिजाबेथ के शासनकाल में 'गाने वाले पक्षियों का घोंसला'' कहलाने लगा था। चॉसर के पश्चात् अब तक इंग्लैण्ड में एक भी उल्लेखनीय कवि नहीं हुआ था। अकस्मात् 1579 ई. तथा उसके बाद के वर्षों में अनेक कवियों का पदार्पण हुआ। 1588 ई. के पश्चात् इसे और अधिक प्रोत्साहन मिला तथा यह साहित्यिक प्रगति 1603 ई. तक बनी रही। अधिकांश कवि उच्च कोटि के थे जिन्होंने इंग्लैण्ड को संगीतमय बना दिया।

कविता के क्षेत्र में सर्वप्रथम रचना एडमण्ड स्पेन्सर (Edmund Spencer) की शेफर्ड्स केलेन्डर (Shepherd's Calender) थी। नार्थ ने प्लूटार्क की जीवनी का अनुवाद किया। लिली ने 'यूफ्यूसेज' लिखकर गद्य में एक नवीन शैली को जन्म दिया। गीत-काव्य लेखकों ने, जिनमें सर फिलिप सिडनी प्रमुख था और जिनकी रचनाएं 'आर्केडिया' तथा 'डिफेन्स आफ पाएजी' हैं अंग्रेजी साहित्य के एक सुन्दर, सुसंस्कृत तथा सच्चे स्वरूप को जन्म दिया। सुप्रसिद्ध नाटककार शेक्सपीयर एलिजाबेथ-युग की ही देन है। उनसे पूर्व अंग्रेजी नाटककार बरविज तथा विश्वविद्यालय की हास्यपूर्ण कृतियों के लेखक ग्रीन पील लॉज आदि लन्दन में अपना साहित्यिक जीवन प्रारम्भ कर चुके थे। शेक्सपीयर ने अपना साहित्यक जीवन सुखान्त नाटक 'लव्स लेबर लौस्ट' की रचना

करके प्रारम्भ किया था, एलिजाबेथ की मृत्यु से पूर्व ही 'हेमलेट' नाटक का अभिनय हो चुका था। 1590 ई. से 1600 ई. के मध्य 'डेटन' तथा 'डेनियल' के गीतकाव्यों की रचना हो चुकी थी। 1598 ई. में बेन जॉन्सन की रचना 'एवरी मैन इन हिज ह्यूमर' प्रकाशित हुई। गद्य लेखकों में 1594 ई. में हुकर की अमर कृति 'एक्लेशियास्टिकल पोलिटी' लिखी गयी। बेकन की सुस्पष्ट प्रज्ञा का परिचय 1597 ई. में प्रकाशित उसके निबन्धों में मिला। असाधारण रूप से उर्वर-समृद्ध युग की निधियों में से ये कुछ चुने गए नाम हैं। 1579 ई. में अंग्रेजी भाषा फ्रांस और स्पेन के महान् साहित्य की तुलना में निर्धन थी, विशेष रूप से इटली के साहित्य से तो अत्यन्त हीन थी, किन्तु एलिजाबेथ-युग से 1600 ई. तक अंग्रेजी भाषा का साहित्य किसी भी देश के साहित्य के सामने वैभवपूर्ण बन गया था। एलिजाबेथकालीन साहित्य का वह ओज, मस्तिष्क की उर्वरता, आनन्दमय दृष्टिकोण, प्राचीन श्रृंखलाओं को नष्ट कर विचारों के नवीन जगत् में प्रवेश, आदि विशेषताएँ साहित्यिक कृतियों के आधार हैं, जिन्हें तत्त्कालीन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है।

प्र.2. एलिजाबेथ की वैदेशिक नीति एवं औपनिवेशिक विस्तार को विस्तार से लिखिए।
Write the foreign policy and colonial expansion of Elizabeth.

उत्तर

एलिजाबेथ की वैदेशिक नीति
(Foreign Policy of Elizabeth)

एलिजाबेथ को सिंहासन पर आसीन होते ही अनेक संकटों का सामना करना पड़ा। उस समय इंग्लैण्ड पर विपत्ति के बादल मंडरा रहे थे। देश की आन्तरिक एवं बाह्य स्थिति शोचनीय थी। इंग्लैण्ड में प्रोटेस्टेण्ट एवं कैथोलिकों में संघर्ष हो रहा था तथा दूसरी ओर स्कॉटलैण्ड, स्पेन तथा फ्रांस, इंग्लैण्ड पर आधिपत्य स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे थे, किन्तु इन विपरीत परिस्थितियों में भी एलिजाबेथ संयम एवं धैर्य से कार्य कर कठिनाई रूपी चट्टानों से प्रशासन रूपी जहाज को सफलतापूर्वक निकाल कर ले जाने में सफल हुई। अपनी योग्यता, बुद्धिमत्ता, प्रशासनिक क्षमता द्वारा अपने समस्त संकटों पर विजय प्राप्त कर इंग्लैण्ड के सम्मान को उन्नति की चरम सीमा तक पहुँचाया। देश में शान्ति स्थापित करने के साथ-साथ उसने अपनी दूरदर्शिता से इंग्लैण्ड के तीन शक्तिशाली वैदेशिक शत्रुओं का भिन्न-भिन्न तरीकों से सामना करने का निश्चय किया। ये तीन शत्रु थे : स्कॉटलैण्ड, स्पेन तथा फ्रांस। स्कॉटलैण्ड की रानी मेरी स्कॉट, हेनरी सप्तम की पुत्री मार्गरेट की पौत्री होने के कारण, स्वयं को इंग्लैण्ड के सिंहासन की अधिकारिणी मानती थी। मेरी स्कॉट का विवाह फ्रांस के राजकुमार से होने के कारण, वह भी स्वयं को इंग्लैण्ड का भावी शासक मानता था। इसके अतिरिक्त स्पेन जिसके राजा से मेरी ट्यूडर का विवाह हुआ था, इंग्लैण्ड पर अपना अधिकार समझता था। स्पेन प्रोटेस्टेण्ट धर्म विरोधी आन्दोलन का नेता होने के कारण भी एलिजाबेथ को पदच्युत करना चाहता था। उधर पोप ने भी एलिजाबेथ को वैध शासिका नहीं स्वीकार किया था, एलिजाबेथ ने स्पेन व फ्रांस के राजाओं को यह आशा दिलायी कि वह उनसे विवाह कर लेगी। स्पेन तथा फ्रांस के परस्पर शत्रु होने से एलिजाबेथ को अत्यधिक सहायता मिली। वे इंग्लैण्ड का समर्थन अपने प्रति चाहते थे। अत: प्रत्यक्ष रूप से एलिजाबेथ को अप्रसन्न करना नहीं चाहते थे। एलिजाबेथ ने कूटनीति से काम लेते हुए स्पेन तथा फ्रांस के आन्तरिक विद्रोह की अग्नि को गुप्त रूप से विद्रोहियों को सहायता कर प्रबल बनाया और उन्हें अपनी आन्तरिक समस्याएं सुलझाने में व्यस्त कर दिया। स्कॉटलैण्ड में भी विद्रोहियों की सहायता देकर वहां प्रोटेस्टेण्ट धर्म को विजय प्रदान कर, स्कॉटलैण्ड से किसी भी प्रकार के संकट को समाप्त करने में सफल हुई। एलिजाबेथ, हेनरी सप्तम के समान शान्तिप्रिय वैदेशिक नीति को पसन्द करती थी। शान्तिप्रिय नीति अपनाने का कारण सिंहासनारोहण के समय रिक्त राजकोष तथा निर्बल सेना का होना भी था। वह जानती थी कि एडवर्ड षष्टम तथा मेरी ट्यूडर के शासनकाल में राजकोष रिक्त हो गया था। अत: ऐसी परिस्थितियों में किसी भी देश से युद्ध लड़ने में इंग्लैण्ड के सम्मान को चोट लगने की आशंका थी। रीज के अनुसार—'उसका उद्देश्य था कि वह देखे कि धार्मिक समझौता देश में जड़ जमाने में कितना समय लेता है, क्योंकि वह अपने देशवासियों को सिखाना चाहती थी कि वे पहले अंग्रेज हैं और बाद में कैथोलिक, जिससे यदि युद्ध करना ही पड़े तो वे उसका सामना संगठित होकर करें।'

1. **स्कॉटलैण्ड से सम्बन्ध** (Relation with Scotland)—एलिजाबेथ की समकालीन स्कॉटलैण्ड की शासिका जेम्स पंचम की पुत्री मेरी (1542-1587 ई.) थी। मेरी स्वयं को इंग्लैण्ड की उत्तराधिकारिणी समझती थी, अत: एलिजाबेथ के स्कॉटलैण्ड से सम्बन्ध खराब होना स्वाभाविक ही था। मेरी स्कॉट कैथोलिक धर्म की अनुयायी थी, अत: उसे समस्त कैथोलिक देशों का समर्थन प्राप्त था। इंग्लैण्ड की कैथोलिक जनता की सद्भावना भी मेरी के साथ ही थी। मेरी का विवाह फ्रांस के राजा फ्रांसिस से हुआ था, अत: एलिजाबेथ को स्कॉटलैण्ड के प्रति नीति निर्धारित करने में अत्यन्त सावधानी से कार्य करना पड़ा।

   एलिजाबेथ ने इस समय फ्रांस एवं स्पेन की पारस्परिक शत्रुता से लाभ उठाया। वह जानती थी कि स्पेन कभी भी यह पसन्द नहीं करेगा कि इंग्लैण्ड, फ्रांस व स्कॉटलैण्ड मिलकर एक हो जाएं, जो कि मेरी के इंग्लैण्ड की शासिका बनने पर सम्भव

हो जाता है। एलिजाबेथ ने स्पेन के शासक फिलिप को यह भी लालच दिया कि वह उससे विवाह कर लेगी। अत: फिलिप उपर्युक्त दो कारणों से इंग्लैण्ड का समर्थक हो गया। एलिजाबेथ को स्कॉटलैण्ड के प्रोटेस्टेण्ट वर्ग का भी समर्थन प्राप्त था। जिस समय एलिजाबेथ इंग्लैण्ड की शासिका बनी थी, स्कॉटलैण्ड में प्रोटेस्टेण्ट व कैथोलिक वर्ग में संघर्ष चल रहा था। कैथोलिक वर्ग की सहायता फ्रांस का शासक फ्रांसिस भी कर रहा था अत: एलिजाबेथ ने प्रोटेस्टेण्ट वर्ग की सहायता की व उसे विजय दिलायी। 1560 ई. में फ्रांसिस की मृत्यु होने से कैथोलिकों व मेरी की स्थिति स्कॉटलैण्ड में और भी खराब हो गयी। मेरी के अनेक विवाहों के कारण हुई बदनामी व प्रोटेस्टेण्टों द्वारा उसके विरुद्ध विद्रोह के कारण उसे स्कॉटलैण्ड से भागना पड़ा। मेरी भागकर इंग्लैण्ड पहुँची व एलिजाबेथ से सहायता मांगी, किन्तु एलिजाबेथ ने उसे बन्दी बना लिया। मेरी के स्कॉटलैण्ड से भाग जाने पर वहां प्रोटेस्टेण्ट धर्म की स्थापना हो गयी, अत: एलिजाबेथ को स्कॉटलैण्ड से किसी प्रकार का भय न रहा।

2. **स्पेन से सम्बन्ध** (Relation with Spain)—जिस समय एलिजाबेथ इंग्लैण्ड की शासिका बनी तब इंग्लैण्ड व स्पेन दोनों के ही फ्रांस के शासक फ्रांसिस से तनावपूर्ण सम्बन्ध होने के कारण स्पेन व इंग्लैण्ड का परस्पर झुकाव था। इसके अतिरिक्त एलिजाबेथ भी स्पेन के शासक को उससे विवाह कर लेने का प्रलोभन देकर स्पेन से मधुर सम्बन्ध बनाए हुई थी। 1560 ई. में फ्रांसिस (मेरी स्कॉट का पति) की मृत्यु हो जाने पर स्पेन को इस बात का भय न रहा कि यदि मेरी स्कॉट इंग्लैण्ड की शासिका बन गयी तो फ्रांस, इंग्लैण्ड व स्कॉटलैण्ड मिल जाएंगे। अत: उसने एलिजाबेथ के विरोधियों को सहायता देनी प्रारम्भ कर दी, किन्तु फिर भी जब तक मेरी स्कॉट को मृत्यु-दण्ड (1587 ई.) नहीं दिया गया, स्पेन, इंग्लैण्ड पर आक्रमण करने का साहस न कर सका, परन्तु 1587 ई. में एलिजाबेथ द्वारा मेरी स्कॉट को मृत्यु-दण्ड दिए जाने के पश्चात् ही स्पेन ने 1588 ई. में इंग्लैण्ड पर आक्रमण किया, किन्तु इंग्लैण्ड ने स्पेन के जहाजी बेड़े (Armada) को परास्त कर दिया।

3. **फ्रांस से सम्बन्ध** (Relation with France)—फ्रांस से इंग्लैण्ड के एलिजाबेथ के शासन-काल में मधुर सम्बन्ध न थे। खराब सम्बन्धों का कारण इंग्लैण्ड का प्रोटेस्टेण्ट धर्म व फ्रांस का कैथोलिक धर्म का समर्थक होना था। इसके अतिरिक्त कैले को लेकर भी दोनों देशों में सम्बन्ध तनावपूर्ण थे। कैले फ्रांस में स्थित था। प्रारम्भ में इस पर इंग्लैण्ड का अधिकार था, किन्तु बाद में फ्रांस ने इस पर अधिकार कर लिया था। एलिजाबेथ कैले पर पुन: अधिकार करना चाहती थी। इंग्लैण्ड को प्रारम्भ में स्पेन की भी सहानुभूति प्राप्त थी, किन्तु कुछ समय पश्चात् स्पेन व फ्रांस में मित्रता हो गयी। इस मित्रता का कारण स्पेन के शासक फिलिप का फ्रांस की राजकुमारी से विवाह करना था। फ्रांस एवं स्पेन की मित्रता से एलिजाबेथ अत्यधिक चिन्तित हुई व उसने फ्रांस से चाटुकैम्ब्रेसीस (Chateoucambresis) की सन्धि कर ली, जिसके द्वारा दोनों देशों ने परस्पर आक्रमण न करने का वचन दिया।

   फ्रांस में भी प्रोटेस्टेण्ट व कैथोलिक वर्ग में संघर्ष चल रहा था। प्रोटेस्टेण्ट इंग्लैण्ड से सहायता चाहते थे। इंग्लैण्ड ने उन्हें सहायता देने का वचन दिया, किन्तु कुछ समय पश्चात् ही यह संघर्ष समाप्त हो गया। इसी समय रिफोल्डी नामक व्यक्ति ने इंग्लैण्ड में एलिजाबेथ के विरुद्ध स्पेन की सहायता से विद्रोह करने का प्रयत्न किया। इस पर इंग्लैण्ड व स्पेन के सम्बन्ध और भी तनावपूर्ण हो गए। फ्रांस भी स्पेन की निरन्तर बढ़ती हुई शक्ति से भयभीत था। अत: इंग्लैण्ड और फ्रांस ने 1572 ई. में परस्पर समझौता किया जिसे 'ब्लोइस की सन्धि' कहते हैं। इस सन्धि के द्वारा फ्रांस ने इंग्लैण्ड की स्कॉटलैण्ड के प्रति नीति का समर्थन किया, जबकि एलिजाबेथ ने कैले पर फ्रांस का अधिकार स्वीकार किया। 1574 ई. में हेनरी तृतीय फ्रांस का सम्राट बना। एलिजाबेथ ने उसे भी विवाह का प्रलोभन देकर फ्रांस से सम्बन्ध मधुर रखने का प्रयत्न किया।

4. **आयरलैण्ड से सम्बन्ध** (Relation with Ireland)—आयरलैण्ड प्रारम्भ से ही इंग्लैण्ड के लिए एक समस्या रहा है। एलिजाबेथ से पूर्व भी ट्यूडर शासकों ने आयरलैण्ड की समस्या सुलझाने का प्रयत्न किया, किन्तु यह समस्या और भी जटिल होती गई। मेरी ट्यूडर ने अपने जमींदारों को आयरलैण्ड में बसाया तथा उसका राष्ट्रीयकरण करने का प्रयास किया, किन्तु इस समस्या का समाधान करने में वह असफल रही। मेरी ट्यूडर के शासनकाल (1553-1588 ई.) में, पोप के अधिकारों के इंग्लैण्ड में पुनर्स्थापित हो जाने से आयरलैण्ड भी पूर्णत: कैथोलिक हो गया था। एलिजाबेथ के शासनकाल में इंग्लैण्ड में तो पुन: प्रोटेस्टेण्ट धर्म प्रबल हो गया, किन्तु आयरलैण्ड के निवासी कैथोलिक धर्म छोड़ने के लिए तैयार न थे। आयरलैण्ड की जनता पर एलिजाबेथ के धार्मिक समझौते का भी प्रभाव नहीं पड़ा तथा स्पेन का समर्थन कर, आयरलैण्ड ने एलिजाबेथ के विरुद्ध षड्यन्त्र करने प्रारम्भ कर दिए।

TOUCH 'n PASS

1575 ई. में आयरलैण्ड के मारिस नामक एक सरदार ने पोप से सहायता प्राप्त कर इंग्लैण्ड के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, किन्तु एलिजाबेथ ने इन विद्रोहों का दमन कर दिया। मारिस ने 1579 ई. में, मन्सटर प्रदेश में पुन: विद्रोह किया। इस बार एलिजाबेथ ने अत्यन्त कठोरतापूर्वक इस विद्रोह को कुचला। अनेक जमींदारों की भूमि पर अधिकार कर लिया गया। इसी समय आयरिश जनता के दुर्भाग्य से आयरलैण्ड में अकाल पड़ा जिससे आयरिश जनता को भयानक कष्ट सहने पड़े। इस विद्रोह तथा अकाल के कारण हजारों व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी।

इतने संकटों का सामना करने के पश्चात् भी आयरलैण्ड के निवासी कैथोलिक धर्म को त्यागने के लिए तैयार न थे। एलिजाबेथ जानती थी कि जब तक कैथोलिक धर्म आयरलैण्ड में जीवित है, विद्रोह की अग्नि शान्त नहीं हो सकेगी क्योंकि इंग्लैण्ड के दो प्रबल शत्रु स्पेन तथा फ्रांस आयरलैण्ड को भड़काते रहेंगे। स्पेन के जहाजी बेड़े को भी आयरिशों ने गुप्त रूप से सहायता दी थी। इसी समय आयरलैण्ड में दो नेता ओ नील (O'Neill) तथा ओ डोनल (O'Donnell) उभरे। इन दोनों नेताओं ने स्पेन की सहायता से आयरलैण्ड में इंग्लैण्ड के विरुद्ध वीभत्स विद्रोह किया। स्पेन ने आयरलैण्ड की सहायता के लिए 1597 ई. में दूसरा जहाजी बेड़ा भेजा, किन्तु वह भी समुद्री तूफान से नष्ट हो गया। 1598 ई. में स्पेन के शासक फिलिप की मृत्यु होने से आयरिशों को अत्यन्त निराशा हुई। एलिजाबेथ ने इस विद्रोह के दमन के लिए 1599 ई. में लॉर्ड एसेक्स (Lord Essex) को आयरलैण्ड भेजा। कुछ स्थानों पर सफलता प्राप्त करने के पश्चात् वह असफल होकर इंग्लैण्ड लौटा। एलिजाबेथ ने लॉर्ड एसेक्स के स्थान पर माउण्ट ज्वाय को नियुक्त किया। माउण्ट ज्वाय (Mount Joy) ने अत्यन्त क्रूरता एवं अत्याचारपूर्ण ढंग से विद्रोह का दमन किया। यद्यपि माउण्ट ज्वाय ने विद्रोह को समाप्त कर दिया, किन्तु एलिजाबेथ द्वारा कराए गए अत्याचार को आयरलैण्ड के निवासी न भुला सके। वेस्ट ने लिखा है, 'देखने लायक बात यह है कि जब स्पेन निवासी, नई दुनिया के रहने वालों के साथ निर्मम व्यवहार करते थे तो अंग्रेज उसे नापसन्द करते थे, लेकिन आयरिश लोगों के साथ अंग्रेजों का व्यवहार उससे कम निर्दयतापूर्वक न था।'

औपनिवेशिक विस्तार
(Colonial Expansion)

एलिजाबेथ के शासनकाल में कुछ नाविकों ने अपनी साहसिक यात्राओं द्वारा इंग्लैण्ड को लाभान्वित किया। इस साहसी नाविकों में से वाल्टर रैले ने अमेरिका में अनेक उपनिवेश स्थापित किए तथा एलिजाबेथ के नाम पर वर्जीनिया (Verginia) नामक नगर की स्थापना की। वाल्टर रैले (Ralegh) अमेरिका से आलू तथा तम्बाकू के बीज लाया तथा आयरलैण्ड में इनकी खेती की गई। एक अन्य नाविक हाकिन्स (Hawkins) ने दासों का व्यापार प्रारम्भ किया। उसने अफ्रीका के हब्शियों को अमेरिका में बेचा। इसके अतिरिक्त उसने न्यूफाउण्डलैण्ड की खोज कर उसे इंग्लैण्ड के उपनिवेश के रूप में बसाने में सफल हुआ। ड्रेक ने तीन वर्षों में सम्पूर्ण विश्व को घूमकर कीर्ति अर्जित की। इन उपनिवेशों से इंग्लैण्ड को अत्यन्त लाभ हुआ। एलिजाबेथ ने इन नाविकों को पर्याप्त सहायता दी तथा 1600 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी (East India Company) की स्थापना कर साम्राज्यवादिता को प्रोत्साहन दिया। इस प्रकार एलिजाबेथ अपनी कुशल वैदेशिक नीति के परिणामस्वरूप अपने समस्त उद्देश्यों को पूर्ण करने में सफल रही। इंग्लैण्ड को अब स्पेन, फ्रांस तथा स्कॉटलैण्ड किसी से भी भयभीत होने की आवश्यकता न रही। उसने न केवल देश के सम्मान को यूरोप में उठाया वरन् स्पेनी जहाजी बेड़े को परास्त कर इंग्लैण्ड को 'समुद्र की रानी' की पदवी दिलवायी। इंग्लैण्ड की भी यूरोप के शक्तिशाली राष्ट्रों में गिनती होने लगी। इतिहासकार ग्रीन के अनुसार, 'एलिजाबेथ की वैदेशिक नीति की सफलता, विस्तृत, आर्थिक तथा व्यावसायिक समृद्धि तथा राज्य की धार्मिक सहिष्णुता की नीति ने इंग्लैण्ड को जहां एक नए समाज का ढांचा दिया वहां उसे राजनीतिक स्थिरता भी प्रदान की।

मूल्यांकन
(Evaluation)

इंग्लैण्ड के इतिहास में एलिजाबेथ का शासनकाल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। एलिजाबेथ एक चतुर राजनीतिज्ञ, देशभक्त, प्रजावत्सल शासिका थी। उसने अपनी बुद्धिमता से देश में व्याप्त अशान्ति एवं धार्मिक विद्वेष को समाप्त किया तथा वह भय, आतंक, निर्धनता को नष्ट करने में सफल हुई। उसने अपने योग्य मन्त्रियों के परामर्श से देश को शक्तिशाली एवं वैभवपूर्ण बनाया। उसने देश में अनेक सुधार कर देश में समृद्धि, कला-कौशल, साहित्य और उद्योग-धन्धों का विकास किया। उसने धैर्य से सब परिस्थितियों का निरीक्षण किया और अपनी शान्तिप्रिय नीति से अपने उद्देश्यों को पूर्ण किया। प्रत्येक क्षेत्र में उसके प्रशासनकाल में आश्चर्यजनक रूप से उन्नति हुई। इसी कारण उसके प्रशासन काल को इंग्लैण्ड के इतिहास में स्वर्णकाल कहा जाता है।

एलिजाबेथ को वैदेशिक नीति के अन्तर्गत भी पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई, किन्तु इसके लिए उसने अपूर्व त्याग किया। अपने देश में शान्ति बनाए रखने हेतु उसने आजीवन विवाह नहीं किया। उसने अपने दीर्घकालीन शासन (1558-1603 ई.) में इंग्लैण्ड के

सम्मान एवं प्रतिष्ठा को उन्नति की चरम सीमा तक पहुँचाया। स्पेन के शक्तिशाली जहाजी बेड़े को परास्त करके उसने विश्व के समक्ष यह प्रमाणित किया कि इंग्लैण्ड की नौ-सेना विश्व में सबसे अधिक शक्तिशाली थी।

1603 ई. में एलिजाबेथ की मृत्यु हो गयी, जबकि वह प्रतिष्ठा के उच्चतम शिखर पर थी, सिंहासनारूढ़ होते समय आपत्तिग्रस्त और विभक्त राष्ट्र उसे मिला था, मरते समय एकता सम्पन्न विजयी राष्ट्र उसने छोड़ा। 1601 ई. में एलिजाबेथ ने संसद के समक्ष कहा था, 'मैं इसे गर्व की बात समझती हूं कि मैंने आपके स्नेह से आप पर शासन किया है।'

एलिजाबेथ एक सच्ची ट्यूडर शासिका थी जो अपनी प्रजा के स्वभाव से, अपने मन्त्रियों से भी अधिक भली-भांति परिचित थी। वह सिद्धान्तहीन थी, किन्तु अत्यन्त सफल रही। वह रूखे स्वभाव की थी, किन्तु लोकप्रिय थी। अपने शासनकाल के अन्त में स्वदेश में शान्ति, विदेशों में सम्मान अर्जित करने तथा इंग्लैण्ड को भविष्य में विश्वासी तथा गर्वित अनुभव कराने में सफल रही।

प्र.3. चार्ल्स प्रथम एवं संसद तथा दीर्घ संसद की विस्तार से विवेचना कीजिए।
Describe the Charles I and parliament and long parliament in detail.

उत्तर

चार्ल्स प्रथम एवं संसद
(Charles I and the Parliament)

चार्ल्स प्रथम जिस समय इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर आसीन हुआ, तब इंग्लैण्ड की स्थिति अत्यन्त गम्भीर थी। जेम्स प्रथम का मन्त्री बकिंघम (Buckingham) चार्ल्स प्रथम के समय में भी मन्त्री था तथा उसके प्रभाव में महत्त्वपूर्ण वृद्धि हो चुकी थी। यूरोप में तीस वर्षीय युद्ध (Thirty Year's War) चल रहा था। इंग्लैण्ड का राजकोष रिक्त था तथा संसद अपने अधिकारों की ओर जागरूक थी। चार्ल्स प्रथम की पत्नी का भी प्रभाव प्रशासनिक कार्यों में बढ़ने लगा था। चार्ल्स प्रथम की पत्नी मेरिया (Maria) कैथोलिक थी। अत: इंग्लैण्ड की जनता उसे सन्देहात्मक दृष्टि से देखती थी। मेरिया का प्रयास कैथोलिकों को अधिक सुविधाएं प्रदान करना था, किन्तु जनता तथा संसद इसका विरोध करती थी। धीरे-धीरे चार्ल्स प्रथम तथा संसद के सम्बन्ध खराब होते गए।

1. **प्रथम संसद** (First Parliament)—चार्ल्स प्रथम ने जून, 1625 ई. में अपनी प्रथम संसद बुलाई, किन्तु इससे पूर्व ही वह स्पेन के साथ युद्ध, जो कि जेम्स प्रथम के समय से चल रहा था, को जारी रखने के आदेश दे चुका था। इसके अतिरिक्त चार्ल्स ने डेनमार्क के राजा को तीस हजार पौंड की सहायता दी ताकि वह स्पेन के विरुद्ध युद्ध जारी रख सके। स्पेन से युद्ध जारी रखने के लिए उसे धन की आवश्यकता थी, इसी कारण संसद को आमन्त्रित किया था।
   संसद ने सर्वप्रथम चार्ल्स को राजा बनने पर बधाई दी। स्पेन से युद्ध चल रहा था अत: राजा को धन की अत्यन्त आवश्यकता थी, किन्तु चार्ल्स ने स्पष्ट रूप से यह बात संसद से नहीं कही तथा संसद भी इस सम्बन्ध में उदासीन ही रही। स्थिति का उचित ज्ञान न होने के कारण संसद ने कुल मांगी गयी धनराशि का सातवां भाग ही चार्ल्स को स्वीकृत किया तथा पाउण्डेज एवं टनेज कर वसूली का अधिकार भी राजा को केवल एक वर्ष के लिए ही प्रदान किया गया। संसद ने कैथोलिकों के साथ सहानुभूति प्रकट न करने की भी राजा से अपेक्षा की।
   प्रथम संसद द्वारा चार्ल्स को अत्यन्त अल्प राशि प्रदान किया जाना संसद की भूल थी। चार्ल्स को स्पेन के युद्ध के कारण धन की आवश्यकता थी। कैडिज (Cadiz) के बन्दरगाह पर इंग्लैण्ड के जहाजी बेड़े की पराजय का वास्तविक कारण अव्यवस्था के साथ-साथ धनाभाव भी था, यद्यपि इसका समस्त उत्तरदायित्व चार्ल्स के मन्त्री बकिंघम पर थोपा गया था। इसके अतिरिक्त 'टनेज एवं पाउण्डेज' कर की वसूली का अधिकार चार्ल्स प्रथम से पूर्व राजाओं को सम्पूर्ण जीवन के लिए प्राप्त होता था, क्योंकि धनाभाव में किसी भी राज्य में प्रशासन करना सम्भव नहीं होता। शासन का साधारण व्यय चार्ल्स प्रथम के समय तक कॉफी बढ़ चुका था तथा नयी दुनिया से भारी मात्रा में चांदी आने के कारण पौण्ड का मूल्य घट गया था जिससे राजा की आय में कमी आयी थी। संसद द्वारा राजा को अत्यन्त अल्पराशि प्रदान किए जाने के कारण चार्ल्स का संसद अधिवेशन बुलाने का उद्देश्य विफल हो गया। इसी समय बकिंघम का संसद द्वारा घोर विरोध किए जाने पर चार्ल्स को अवसर प्राप्त हुआ और उसने संसद को भंग कर दिया।
2. **द्वितीय संसद** (Second Parliament)—1626 ई. में चार्ल्स ने द्वितीय संसद आमन्त्रित की। चार्ल्स ने लोकसभा में प्यूरिटनों को प्रसन्न करने के उद्देश्य से कैथोलिकों के विरुद्ध नियमों का कठोरतापूर्वक पालन करना प्रारम्भ किया, यद्यपि चार्ल्स का यह कार्य उसके द्वारा अपने विवाह के समय फ्रांस को दिए गए वचन के विरुद्ध था, किन्तु धन प्राप्त करने के लिए चार्ल्स प्रथम सब कुछ करने की कैडिज की घटना की जांच होनी चाहिए, किन्तु चार्ल्स इसके लिए तैयार न था, उसका कहना था कि अपने मन्त्रियों की योग्यता अथवा अयोग्यता का निर्णायक वह स्वयं है न कि संसद।' चार्ल्स के इस प्रकार के विचारों से संसद की अपने प्रस्ताव की पूर्ति की भावना में तीव्रता आ गयी। सर जॉन इलियट ने बकिंघम की कटु

TOUCH 'n PASS

आलोचना की। जॉन इलियट के कैडिज की असफलता के सम्बन्ध में कहा—'हम अपमानित हो गए, हमारे जहाज जलमग्न हो गए, आदमी मारे गए और यह सब तलवार से अथवा दुश्मन के द्वारा या परिस्थितियों के कारण नहीं अपितु उनके कारण हुआ जिन पर हम विश्वास करते थे।' चार्ल्स प्रथम संसद के उपर्युक्त व्यवहार से अत्यन्त क्रोधित हुआ तथा अपने मन्त्री बकिंघम को बचाने के लिए उसने संसद को भंग कर दिया। इस प्रकार द्वितीय संसद ने फरवरी, 1626 से जून, 1626 ई. तक कार्य किया।

3. **तृतीय संसद** (Third Parliament)—चार्ल्स प्रथम ने अपनी द्वितीय संसद 1626 ई. में भंग की थी तथा आगामी दो वर्षों तक उसने संसद को आमन्त्रित नहीं किया। उसने धन प्राप्त करने के लिए अन्य तरीकों को अपनाया। चार्ल्स को धन की अत्यन्त आवश्यकता थी, अत: उसने संसद की अनुमति के बिना भी टनेज एवं पाउण्डेज कर लगाया तथा कठोरतापूर्वक वसूल किया। उसने ऋण लेना भी प्रारम्भ किया तथा जब कुछ पादरियों ने ऋण देने से इन्कार किया तो चार्ल्स ने उन्हें बन्दी बना लिया। न्यायाधीशों ने भी चार्ल्स का साथ दिया। चार्ल्स प्रथम ने शिपमनी (Shipmoney) नामक कर भी लगाया जो तट पर रहने वालों के साथ-साथ अन्य स्थानों में रहने वालों से भी वसूल किया गया। इसके अतिरिक्त चार्ल्स प्रथम ने काउण्टीज में सेना बलपूर्वक बनायी तथा सैनिकों को साधारण जनता के घरों में रखा जिससे जनता को अत्यन्त कठिनाई का सामना करना पड़ा। सैनिकों की सुविधा के लिए उसने सैनिक कानून (Martial Law) भी लागू किया।

उपर्युक्त समस्त साधनों का प्रयोग करने के पश्चात् भी चार्ल्स की आर्थिक समस्या समाप्त न हुई, अत: उसने विवश होकर 1628 ई. में पुन: संसद को आमन्त्रित किया। चार्ल्स ने इस संसद के समक्ष अपने प्रथम भाषण में कठोरता का परिचय दिया। चार्ल्स ने कहा, 'यदि संसद ने उसकी आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं किया तो वह उन समस्त तरीकों का प्रयोग करेगा जो ईश्वर ने उसे प्रदान किए हैं। यह धमकी नहीं है क्योंकि मैं बराबर बालों के अतिरिक्त किसी को धमकी देना अपना अपमान समझता हूं। संसद ने चार्ल्स के इस कठोर व्यवहार को पसन्द नहीं किया। इसके अतिरिक्त इस संसद ने चार्ल्स प्रथम के दरबार में अनेक उच्च पदों पर आर्मीनियम व्यक्तियों को देखा। आर्मीनियन कैथोलिक थे, अत: प्यूरिटन इनसे घृणा करते थे। इसके अतिरिक्त जनता भी आर्मीनियन व्यक्तियों की विरोधी थी, अत: संसद ने पिम (Pym) के नेतृत्व में राजा का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने एक अधिकार-पत्र (Petition of Right) राजा को प्रस्तुत किया तथा निर्णय लिया कि जब तक राजा इस अधिकार-पत्र को स्वीकार न कर ले वे राजा को एक पेनी धन भी स्वीकृत नहीं करेंगे। इस अधिकार-पत्र में निम्नलिखित मांगें थीं—

(क) शान्ति काल में सैनिक कानून न लगाया जाए।

(ख) वे समस्त कर अथवा ऋण जो संसद की अनुमति के बिना लिए गए हैं अवैध हैं।

(ग) राजा किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाए बन्दी न बनाए।

(घ) सेना के सिपाहियों के रखने की व्यवस्था राजा साधारण जनता के घरों में नहीं, अपितु कहीं अन्यत्र करे।

चार्ल्स ने प्रारम्भ में इस अधिकार-पत्र को स्वीकार न किया, किन्तु जब उसने यह अनुभव किया कि संसद उसे तब धन न देगी जब तक वह इसे स्वीकार नहीं करेगा, तो विवश होकर उसने इस अधिकार-पत्र को स्वीकार किया। यद्यपि भविष्य में चार्ल्स ने इस अधिकार-पत्र की धाराओं का उल्लंघन किया तथापि इंग्लैण्ड के इतिहास में इसका अत्यधिक महत्त्व है क्योंकि राजा जॉन द्वितीय के महास्वतन्त्रता पत्र के पश्चात् संसद तथा जनता के अधिकारों की रक्षा इसी अधिकार-पत्र से हो सकी। इसके अतिरिक्त इसने जनता तथा संसद को अपने अधिकारों में वृद्धि करने का प्रोत्साहन तथा राजा की स्वेच्छाचारिता पर अंकुश लगाया।

अधिकार-पत्र को स्वीकार करने के पश्चात् भी संसद चार्ल्स से प्रसन्न न हुई। संसद ने अब चार्ल्स के मन्त्री बकिंघम की निन्दा करना प्रारम्भ किया, इसके अतिरिक्त चार्ल्स के दरबार में आर्मीनियनों को लेकर भी संसद ने चार्ल्स का विरोध किया। चार्ल्स को संसद के इस व्यवहार से क्षुब्धता हुई, कि वह संसद को जितने अधिकार देता जाता था। संसद की मांगें भी उतनी ही बढ़ती जाती थीं। इसी समय जॉन फाल्टन नामक व्यक्ति के द्वारा बकिंघम की हत्या कर दी गयी। चार्ल्स को इस घटना से अत्यधिक दु:ख हुआ। चार्ल्स का विचार था कि बकिंघम के कारण ही संसद उसका विरोध करती है। उसकी मृत्यु के पश्चात् सम्बन्धों में सुधार होगा, किन्तु ऐसा नहीं हुआ क्योंकि संसद ने अब वेण्टवर्थ का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। वेण्टवर्थ (Wentworth) प्रारम्भ में संसद का नेता था तथा चार्ल्स का विरोधी था, परन्तु राजा द्वारा अधिकार-पत्र स्वीकार किए जाने के पश्चात् वह राजा का समर्थक हो गया। वह निरन्तर राजा का विरोध करने के पक्ष में न था। राजा का समर्थक बन जाने के कारण संसद उसका विरोध करती थी।

TOUCH 'n PASS

चार्ल्स प्रथम संसद का निरन्तर विरोध करने की नीति से परेशान हो चुका था, अत: उसने मार्च, 1629 ई. में तृतीय संसद को भी भंग कर दिया, किन्तु भंग होने से पूर्व संसद के अध्यक्ष को बलपूर्वक रोककर तीन प्रस्ताव पारित किए गए। धार्मिक नियमों में परिवर्तन करने वाला, संसद द्वारा अस्वीकृत करों को देने वाला तथा राजा को टनेज एवं पाउण्डेज कर लगाने में सहायता देने वाला, देशद्रोही समझा जाएगा। तृतीय संसद का यह अन्तिम कार्य था क्योंकि इसके बाद संसद भंग हो गयी तथा संसद के नेता सर जॉन ईलियट को बन्दी बना लिया गया जहां उसकी मृत्यु हो गयी।

चार्ल्स प्रथम एवं संसद के मध्य संघर्ष के गम्भीर परिणाम हुए। इंग्लैण्ड की आन्तरिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय हो गयी तथा विदेशों में इंग्लैण्ड के सम्मान को आघात पहुँचा। विदेशी व्यापार में भी कमी आयी। चार्ल्स ने 1640 ई. में लघु संसद आमन्त्रित की, जिसने 13 अप्रैल, 1640 से 5 मई, 1640 ई. तक कार्य किया। शक्तिशाली सेना तैयार करने के उद्देश्य से चार्ल्स प्रथम ने यह संसद बुलायी थी। इस संसद ने उसे अपेक्षित धन न दिया अत: शीघ्र ही चार्ल्स ने इसे भंग कर दिया।

दीर्घ संसद
(Long Parliament)

चार्ल्स प्रथम की अदूरदर्शिता के कारण इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड में युद्ध हुआ तथा चार्ल्स प्रथम को अत्यधिक अपमान सहना पड़ा। स्पिन के स्थान पर हुई सन्धि के द्वारा चार्ल्स को 850 पौंड प्रतिदिन स्कॉट सेना को देना था, अत: उसकी आर्थिक आवश्यकताओं में और भी वृद्धि हो गयी। इसी मध्य उसने राजकीय टकसाल से एक लाख तीस हजार पौंड का सोना जब्त कर लिया जिससे स्थिति और भी गम्भीर हो गयी क्योंकि राजा के ऐसा करने से व्यापार को अत्यधिक हानि हुई तथा व्यापारी अपनी हुण्डियां सकार करने में असफल रहे। राजा के इस कार्य से व्यापारी वर्ग भी उसका विरोधी हो गया। स्थिति की गम्भीरता का अनुभव करते हुए तथा आर्थिक संकटों के कारण चार्ल्स प्रथम को 3 नवम्बर, 1640 ई. को विवश होकर पुन: संसद आमन्त्रित करनी पड़ी। इस संसद ने लगभग 20 वर्षों तक कार्य किया, अत: इसे दीर्घ संसद के नाम से जाना जाता है। इस संसद के आमन्त्रित किए जाने का इंग्लैण्ड के इतिहास में विशिष्ट महत्त्व है। इस संसद का प्रमुख उद्देश्य सांविधानिक समस्या को स्थायी रूप से दूर करना तथा राजा एवं संसद के सम्बन्धों की स्पष्ट रूपरेखा तैयार करना था। इस दीर्घ संसद में अधिकांश ग्रामीण सदस्य, उग्र प्रोटेस्टेण्ट तथा एंग्लिकन थे, किन्तु प्रारम्भ में सबने मिलकर कार्य किया। इस संसद का नेतृत्व पिम (Pym) द्वारा किया गया। हैम्पडन भी एक प्रसिद्ध नेता था जिसने शिपमनी का घोर विरोध किया था। इसके अतिरिक्त एक अन्य प्रसिद्ध नेता ओलीवर क्रामवैल था जो प्रारम्भ में गम्भीर एवं शान्त-चित्त व्यक्ति था, किन्तु कुछ समय पश्चात् वह अत्यन्त उग्र हो गया था तथा उसकी प्रसिद्धि में भी पर्याप्त वृद्धि हुई थी।

1. **दीर्घ संसद के कार्य** (Works of Long Parliament)—दीर्घकालीन संसद ने सर्वप्रथम स्कॉटलैण्ड की सेना को आवश्यक धन देकर सन्तुष्ट किया। इसके पश्चात् इस संसद ने अपनी स्थिति को दृढ़ करने के प्रयत्न किए तथा अनेक नियम पारित किए जिसमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण त्रिवर्षीय नियम (Triennial Act) था। इस नियम के द्वारा राजा को बाध्य किया गया कि वह प्रत्येक तीन वर्ष बाद संसद का अधिवेशन अवश्य आमन्त्रित करेगा। यदि राजा ऐसा नहीं करेगा तो स्वत: ही संसद के चुनाव हो जाया करेंगे। इस संसद ने यह भी निर्णय लिया कि संसद को राजा स्वेच्छा से भंग नहीं कर सकेगा। संसद भंग करने के लिए संसद से परामर्श करना आवश्यक है। राजा इस नियम को पारित नहीं करना चाहता था क्योंकि ऐसा करने से उसकी शक्तियों पर आघात होता था, किन्तु उसे विवश होकर इसे स्वीकार करना पड़ा, क्योंकि व्यापारी उसी अवस्था में ऋण देने को तैयार थे। जब उन्हें विश्वास हो कि संसद भंग न होगी। राजा पर उन्हें विश्वास न था। चार्ल्स प्रथम को धन की आवश्यकता थी। अत: वह विवश हो गया। संसद ने राजा द्वारा टनेज पर पाउण्डेज पर लगाया जाना भी अनुचित घोषित किया तथा बलपूर्वक ऋण अथवा उपहार लेने पर भी प्रतिबन्ध लगाया। इसके अतिरिक्त इस संसद ने विशेष न्यायालयों कोर्ट ऑफ स्टार चेम्बर, कौंसिल ऑफ नॉर्थ तथा कोर्ट ऑफ हाई कमीशन को समाप्त किया एवं हैम्पडन तथा डारनेल के मुकदमों में न्यायाधीशों के निर्णय को रद्द कर दिया। इस प्रकार शिपमनी कर भी समाप्त हो गया। इस प्रकार उपर्युक्त नियमों द्वारा राजा की निरंकुशता पर अंकुश लगाकर संसद की इच्छानुसार शासन को बनाया गया। दीर्घकालीन संसद की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यही थी क्योंकि भविष्य में यह बातें इंग्लैण्ड के संविधान के स्वरूप की आधारशिला बनीं।
2. **वेण्टवर्थ तथा संसद** (Wentworth and Parliament)—अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के पश्चात् संसद ने राजा के परामर्शदाताओं को दण्डित करने का प्रयत्न किया। वेण्टवर्थ को चार्ल्स ने आयरलैण्ड का डिप्टी लॉर्ड बनाया था तथा

TOUCH 'n' PASS

'अर्ल ऑफ स्टैफोर्ड' की उपाधि से विभूषित किया था। संसद इस तथ्य से परिचित थी कि उसी के परामर्श से शिपमनी कर तथा अनेक अन्य कर लगे थे, किन्तु कोई प्रमाण उसके विरुद्ध न था। वेण्टवर्थ पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया, किन्तु यह प्रमाणित न हो सका। आयरलैण्ड के शासन के विषय में भी वेण्टवर्थ का घोर विरोध हुआ। उस पर आरोप लगाया गया कि उसने राजा को यह परामर्श दिया था कि वह आयरलैण्ड की सेना का प्रयोग इंग्लैण्ड की जनता को भयाक्रान्त रखने के लिए करे। इस आरोप को भी संसद कानून की दृष्टि से उसके विरुद्ध प्रमाणित न कर सकी।

जब संसद इस प्रकार से वेण्टवर्थ को दण्डित न कर सकी तो उसने महाभियोग का विचार त्यागकर सीधे मृत्यु दण्ड अर्थात् बिना सुनवाई के सजा दिए जाने का मार्ग अपनाया जो हेनरी अष्टम को अत्यन्त प्रिय था। संसद ने 'बिल ऑफ अटैण्डर' (Bill of Attaander) पारित किया जिसका आशय था कि वेण्टवर्थ अपराधी है, अत: उसे मृत्यु-दण्ड मिलना चाहिए। राजा इस पर हस्ताक्षर करने को तैयार न था, किन्तु उसके राजप्रासाद को क्रुद्ध जनसमूह ने घेर लिया तथा उसकी रानी पर अभियोग चलाने की मांग की। चार्ल्स ने विवश होकर बिशपों, न्यायाधीशों तथा स्वयं वेण्टवर्थ के परामर्श पर हस्ताक्षर कर दिए यद्यपि इस कार्य के लिए वह जीवन भर पछताता रहा। वेण्टवर्थ ने अत्यन्त वीरता का परिचय दिया।' इस प्रकार 12 मई, 1641 ई. को उसे मृत्यु-दण्ड दे दिया गया। इस दण्ड में निश्चित रूप से प्रतिशोध की भावना विद्यमान थी तथा जनता में इसकी प्रतिक्रिया भी हुई, अत: लौड को बन्दीगृह में ही डाल दिया गया तथा बाद में 1645 ई. में उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया।

3. **धार्मिक मतभेद** (Religious Difference)—यद्यपि संसद ने चार्ल्स प्रथम की निरंकुशता एवं स्वेच्छाचारिता पर रोक लगाकर उसके शासन के दोषों को समाप्त करने में सफलता प्राप्त की थी, किन्तु धार्मिक विषय पर स्वयं संसद में ही मतभेद था क्योंकि संसद में एंग्लिकन, प्रैस्बीटैरियन, प्यूरिटन आदि विभिन्न मतों के व्यक्ति थे। अत: चर्च में सुधार करना अत्यधिक दुरूह कार्य था। संसद में 1641 ई. में ही 'रूट और ब्रांच बिल' (Root and Branch Bill) रखा गया, जिसका उद्देश्य तत्कालीन चर्च में आमूल परिवर्तन करना तथा गिरजाघरों में से बिशपों का निष्कासित करना था। इस बिल का, एडवर्ड हाइड (जो बाद में लार्ड क्लेरेण्डन के नाम से प्रसिद्ध हुआ) तथा लार्ड फॉकलैण्ड ने घोर विरोध किया तथा वह अत्यन्त अल्प बहुमत से पारित किया जा सका। संसद में इस बिल के समर्थक एवं विरोधी लगभग समान थे। इस गम्भीर वातावरण में संसद की सभा कुछ समय के लिए विसर्जित हो गयी।
4. **आयरलैण्ड में विद्रोह** (Revolt in Ireland)—आयरलैण्ड में अक्टूबर, 1641 ई. में अकस्मात् विद्रोह की अग्नि प्रज्वलित हो उठी। आयरिश कैथोलिकों ने लगभग पांच हजार प्रोटेस्टेण्ट व्यक्तियों की हत्या कर दी। इंग्लैण्ड में इस घटना का अतिरंजित वर्णन जनता के समक्ष प्रस्तुत किया गया। विद्रोहियों का कथन था कि वे राजा के संकेत पर ऐसा कर रहे हैं। राजा के विद्रोहियों ने इस बात को सत्य माना। अत: संसद के समक्ष यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि इस विद्रोह का दमन करने के लिए राजा पर विश्वास किया जाए अथवा नहीं। इस प्रश्न पर संसद में गम्भीर मतभेद उत्पन्न हो गया।
5. **महान् विरोध-पत्र** (Grand Remonstrance)—1641 ई. में संसद ने एक महान् विरोध-पत्र तैयार किया। इसमें चार्ल्स प्रथम द्वारा किए गए अत्याचारों एवं अनियमितताओं का वर्णन था। संसद के अधिवेशन में पिम (Pym) ने इसे प्रस्तुत किया। यह राजा के प्रति स्पष्टत: अविश्वास था। इसके अतिरिक्त इसमें एक सुधार योजना भी थी। इसमें प्रस्ताव किया गया कि लोकसभा द्वारा अनुमोदित मन्त्रियों को ही रखा जाए तथा धार्मिक परिवर्तन के लिए प्रेस्बीटेरियन पादरियों की एक सभा की व्यवस्था की जाए। इस प्रकार की व्यवस्था कार्यान्वित होने पर राजा पद की प्रतिष्ठा धूलधूसरित हो जाती तथा पादरियों का पद भी निन्दनीय हो जाता। इस महान् विरोध-पत्र को लेकर संसद में दो दल हो गए, एक पिम तथा हैम्पडन के नेतृत्व में था जो कि राजा का विरोधी था दूसरा राजा के समर्थन में, हाइड तथा फॉकलैण्ड के नेतृत्व में। दोनों दलों में दीर्घकालीन वाद-विवाद हुआ तथा अन्त में पिम तथा हैम्पडन की ग्यारह मतों से विजय हो गयी। इस कानून की प्रतिलिपियां जनता में वितरित की गयीं। चार्ल्स प्रथम इससे अत्यधिक क्रोधित हुआ, जनता में भी इसे पढ़कर दो दल बनने लगे। अत: गृह-युद्ध का आभास होने लगा था।

इसी समय राजा के विरोधी दल ने एक 'सेना विधेयक' (Milita Bill) प्रस्तुत किया, जिसका उद्देश्य राजा के हाथों से जल एवं थल सेना का आधिपत्य छीनकर संसद द्वारा नियुक्त अधिकारियों को सौंपना था, किन्तु राजा ने इस पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया। रैम्जे म्योर के शब्दों में इस प्रकार का प्रयास एक सांविधानिक क्रान्ति थी।

TOUCH 'n PASS

4 जनवरी, 1642 ई. को चार्ल्स को सूचना प्राप्त हुई कि संसद उसकी रानी पर अभियोग लगाने वाली है, अत: चार्ल्स चार सौ सैनिकों के साथ संसद के पांच सदस्यों पिम, हैम्पडन, हैजलेरिंग, हौल्डा तथा स्ट्रोड को बन्दी बनाने संसद भवन पहुँच गया। चार्ल्स का उद्देश्य इन सदस्यों को बन्दी बनाकर इन पर महाभियोग लगाने का था, किन्तु पांचों सदस्य पहले ही वहां से भाग गए थे। राजा के इस कार्य से संसद सदस्यों में यह भय व्याप्त हो गया कि उन्हें किसी भी समय बन्दी बनाया जा सकता है। जनता की भावनाओं ने उग्र रूप लेना प्रारम्भ कर दिया था। अत: चार्ल्स जनवरी, 1642 ई. में लन्दन छोड़कर नॉटिंघम चला गया तथा उसकी रानी फ्रांस चली गयी। इस समय संसद ने 'उन्नीस प्रस्ताव' पारित किए। इन उन्नीस प्रस्तावों (nineteen propositions) में राजा से प्रार्थना की गयी थी कि वह वैधानिक रूप से शासन करे। इस वैधानिक रूप को उन्नीस प्रस्तावों के द्वारा दर्शाया गया था। इन प्रस्तावों से वह नाममात्र का राजा रह जाता, अत: चार्ल्स ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया, और इस प्रकार गृह-युद्ध होना निश्चित हो गया।

प्र.4. गृह-युद्ध की घटनाएँ एवं परिणामों का वर्णन कीजिए।
Describe the events and results of the Civil War.

उत्तर

गृह-युद्ध की घटनाएँ
(Events of the Civil War)

गृह-युद्ध की घटनाओं को निम्न दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—

1. प्रथम गृह-युद्ध
2. द्वितीय गृह-युद्ध।

1. **प्रथम गृह-युद्ध** (The First Civil War)—यह 1642 ई. से 1646 ई. तक चला जिसमें प्रारम्भ में राजा की विजय हुई तथा बाद में चार्ल्स की पराजय हुई। राजा चार्ल्स प्रथम का उद्देश्य शीघ्रताशीघ्र लन्दन पर अधिकार करके युद्ध को समाप्त करना था, किन्तु संसद की सेना का सेनापति एसेक्स (Essex) राजा को लन्दन से दूर रखना चाहता था। एसेक्स ने चार्ल्स का मार्ग अवरुद्ध करने के उद्देश्य से वोर्सेस्टर पर अधिकार कर लिया तथा सैनिकों को नार्थम्पटन बोर्सेस्टर तक लगा दिया था। चार्ल्स ने अपनी सेना के साथ लन्दन की ओर प्रस्थान किया तथा एसेक्स की सेनाओं को भेदता हुआ वेनवरी के समीप एजहिल पर अधिकार कर लिया।

   (i) **एजहिल का युद्ध** (Battle of Edgehill)—एजहिल नामक स्थान पर भयंकर युद्ध हुआ। चार्ल्स ने एसेक्स का मार्ग रोकने के लिए एजहिल का स्थान निर्धारित किया, क्योंकि एसेक्स वर्सेस्टर से लन्दन जा रहा था, किन्तु राजा की यह एक भूल थी कि वह रास्ते में ही रुक गया। उसे सीधे लन्दन जाना चाहिए था तथा लन्दन पर अधिकार करना चाहिए था। उसकी दूसरी भूल खुले मैदान में एसेक्स से युद्ध लड़ना थी। यह लड़ाई 23 अक्टूबर, 1642 ई. को लड़ी गयी। इसमें चार्ल्स के भतीजे राजकुमार रूपर्ट ने अत्यधिक वीरता प्रदर्शित की तथा राजा को विजय दिलायी, किन्तु एसेक्स भाग निकलने में सफल हो गया।

   (ii) **चार्लग्रोव का युद्ध** (Battle of Charlgrove)—यह युद्ध 1643 ई. में लड़ा गया। इससे पूर्व दोनों ही पक्षों ने अपनी सेना को शक्तिशाली बनाया। 1643 ई. में चार्ल्स प्रथम ने लन्दन पर आक्रमण की एक योजना बनायी, जिसमें चार्ल्स ऑक्सफोर्ड से, न्यूकैसल के अर्ल (Earl of New Castle) को उत्तर से तथा सर होप्टन (Hopton) को दक्षिण-पश्चिम से पहुँचकर आक्रमण करना था, किन्तु न तो होप्टन और न ही अर्ल ऑफ न्यूकैसल लन्दन पहुँच सके क्योंकि उनके रास्ते में संसद की सेना थी जिसको वे परास्त न कर सके। अत: चार्ल्स को अपनी योजना स्थगित करनी पड़ी। इस समय दोनों पक्षों का चालग्रोव के मैदान में सामना हुआ। इसमें राजकुमार रूपर्ट (Rupert) ने जॉन हैम्पडन की हत्या कर दी। संसद की सेना की इसमें पराजय तथा उसे अत्यन्त हानि का सामना करना पड़ा।

   (iii) **न्यूबरी का युद्ध** (Battle of Nebury)—राजा तथा एसेक्स दोनों की सेनाएँ लन्दन की ओर अग्रसर हो रही थीं। दोनों का सामना न्यूबरी में हुआ। यहां भी भयंकर लड़ाई हुई तथा चार्ल्स का सेनापति फॉकलैण्ड (Falkland) मारा गया। एसेक्स लन्दन पहुँचने में सफल हो गया तथा चार्ल्स को ऑक्सफोर्ड लौटना पड़ा।

   इसी समय संसद के नेता पिम (Pym) ने स्कॉटलैण्ड से सन्धि कर ली। अत: संसद की सेना की सहायता के लिए स्कॉटलैण्ड के इक्कीस हजार सैनिक आ गए। अत: संसद की शक्ति में पर्याप्त वृद्धि हुई। पिम द्वारा की गई इस सन्धि का निश्चित रूप से अत्यधिक महत्त्व था। इस सन्धि के कारण चार्ल्स प्रथम अत्यन्त चिन्तित हुआ और अपनी सैनिक

TOUCH 'n' PASS

शक्ति में वृद्धि करने के उद्देश्य से उसने आयरलैण्ड के विद्रोहियों के साथ सन्धि की। इस प्रकार आयरलैण्ड में स्थापित सेना राजा की सहायता के लिए आ गयी।

(iv) **मार्सटन मूर की लड़ाई** (Battle of Marston Moor)—चार्ल्स ने रूपर्ट को यार्क का घेरा हटाने का आदेश दिया तथा अपने पास बुलाया, किन्तु उसका रास्ता संसद की सेना ने रोक लिया। रूपर्ट इस समय लड़ना नहीं चाहता था, किन्तु उस पर आक्रमण कर दिया गया। यह लड़ाई 1544 ई. में हुई। रूपर्ट की पराजय हुई, किन्तु वह भाग निकलने में सफल हो गया। इस युद्ध के पश्चात् चार्ल्स के अधीन केवल दक्षिण-पश्चिम तथा पश्चिमी क्षेत्र रह गए। इस युद्ध में क्रामवैल ने अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की तथा वह गृह-युद्ध का आगामी वर्षों में रुख बदलने में सफल हुआ।

(v) **क्रामवैल द्वारा सुधार** (Reforms by Cromwell)—क्रामवैल ने सेना में सुधार करना आवश्यक समझा क्योंकि संसद के पास शिक्षित सेना का अभाव था। उसने घुड़सवार सेना बनायी तथा उनको प्रत्येक दृष्टि से शिक्षित किया। इसके अतिरिक्त संसद की सेना के वे सेनापति जो अयोग्य थे अथवा युद्ध कुशल न थे उन्हें क्रामवैल ने सेना से हटाया तथा उनके स्थान पर युद्ध कुशल एवं अनुभवी व्यक्तियों को रखा गया। इस प्रकार सेना का पुनर्संगठन कर उसने सेना को पर्याप्त शक्तिशाली बना दिया। इसके पश्चात् एक बार पुन: राजा चार्ल्स प्रथम से समझौता करने का प्रयत्न किया गया, किन्तु राजा ने इसे अस्वीकार कर दिया। अत: 1645 ई. में राजा के परामर्शदाता लौड को मृत्युदण्ड दे दिया गया।

(vi) **नेजबी की लड़ाई** (Battle of Naseby)—जून, 1645 ई. में क्रामवेल तथा सेनापति फेयरफाक्स (Fairfax) ने नेजबी के स्थान पर चार्ल्स प्रथम को घेर लिया तथा परास्त किया। राजा ने भागकर स्वयं को स्कॉटलैण्ड की सेना को सौंप दिया क्योंकि वह किसी भी समय प्यूरिटन लोगों के हाथ पड़ सकता था। लगभग सभी स्थानों पर संसद की सेना का अधिकार हो गया था। इस प्रकार नेजबी की लड़ाई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रमाणित हुई। नेजबी के युद्ध के साथ ही प्रथम गृह-युद्ध का भी अन्त हो गया। इस प्रकार नेजबी का युद्ध एक निर्णायक युद्ध साबित हुआ।

2. **द्वितीय गृह-युद्ध** (Second Civil War)—यह 1646 ई. से 1649 ई. तक चला जिसमें चार्ल्स की पराजय हुई तथा उसे बन्दी बनाया गया, किन्तु सेना एवं संसद में मतभेद हो गया। नेजवी के युद्ध में पराजय के पश्चात् भी चार्ल्स ने वाक्पटुता तथा विरोधियों के विभिन्न वर्गों को आपस में लड़ाकर अपना मतलब सिद्ध करने का प्रयास किया। स्कॉटलैण्ड की सेना चार्ल्स प्रथम पर अधिकार करके अत्यन्त प्रसन्न हुई। स्कॉटलैण्ड की सेना अपने ही देश के व्यक्ति को राजा के पद से हटाना नहीं चाहती थी। अत: उन्होंने चार्ल्स से प्रेस्बीटेरियन धर्म को राजधर्म घोषित करने के लिए कहा, किन्तु चार्ल्स ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। स्कॉटलैण्ड की सेना ने तब अपना मुआवजा लेकर चार्ल्स को संसद के हाथों सौंप दिया। संसद ने पुन: राजा से बातचीत करनी चाहिए, किन्तु स्वयं संसद तथा नवनिर्मित क्रामवैल की सेना में चर्च के प्रश्न पर झगड़ा उत्पन्न हो गया। राजा को स्वतन्त्र कर दिया गया तथा अपने अधिकार के प्रश्न पर संसद एवं सेना में संघर्ष हुआ। संसद ने सेना की शक्ति को क्षीण करना चाहा तथा चार्ल्स प्रथम को बन्दी बना लिया, किन्तु सेना ने विद्रोह कर दिया एवं चार्ल्स प्रथम को बलपूर्वक अपने अधिकार में ले लिया तथा उसके समक्ष दो प्रस्ताव रखे कि वह बिशप की अध्यक्षता में गिरजाघर को रखे तथा सभी मतों को समान अधिकार दे, किन्तु राजा ने इन प्रस्तावों को मानना अस्वीकार कर दिया, क्योंकि वह उस अवसर से लाभ उठाना चाहता था जबकि संसद एवं सेना में झगड़ा हो रहा हो। वह सेना की कैद से भागने में सफल हो गया और स्कॉटलैण्ड से सहायता मांगी तथा प्रेस्बीटेरियन धर्म को सहायता करने का उन्हें आश्वासन दिया। स्कॉटलैण्ड ने चार्ल्स का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया तथा उसे सहायता दी। इस प्रकार द्वितीय गृह-युद्ध प्रारम्भ हो गया।

(i) **प्रेस्टन की लड़ाई** (Battle of Preston)—1648 ई. में अप्रैल माह में सम्राट चार्ल्स प्रथम के समर्थकों एवं स्कॉट सेना ने विद्रोह एवं आक्रमण की अग्नि प्रज्जवलित की। जून माह तक इंग्लैण्ड के समस्त भागों में चार्ल्स के समर्थकों ने विद्रोह कर दिया, किन्तु चार्ल्स ने नवीन युद्ध करके भूल की थी क्योंकि वह क्रामवैल की सेना की शक्ति को पहचान न सका था। तीन माह के अन्दर क्रामवैल ने विद्रोह को कुचल दिया। प्रेस्टन के मैदान में क्रामवैल का सामना स्कॉटलैण्ड की सेना तथा उत्तरी इंग्लैण्ड के चार्ल्स समर्थकों से हुआ। क्रामवैल ने तीन दिनों में सेना को परास्त करके स्कॉटलैण्ड की सम्पूर्ण सेना को बन्दी बना लिया। इस प्रकार द्वितीय गृह-युद्ध समाप्त हो गया।

क्रामवैल तथा उसके प्रमुख साथी इस निष्कर्ष पर पहुँचे की चार्ल्स से समझौता करना बेकार है, अब मृत्युदण्ड देना ही उचित है। क्रामवैल ने एक अन्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य किया। 6 दिसम्बर, 1648 ई. को कर्नल प्राइड (Col. Pride) के नेतृत्व में सैनिकों ने 41 प्रेस्बीटेरियन संसद सदस्यों को बन्दी बना लिया तथा 26 सदस्यों को सदन के

TOUCH 'n PASS

निकट फिर कभी न आने का आदेश दिया। यह क्रामवैल के आदेश पर किया गया था। जिस समय 1640 ई. में दीर्घ संसद आमन्त्रित की गयी थी उसमें 420 सदस्य थे जिसमें से केवल 60 सदस्यों को लोकसभा के सदस्य के रूप में अब मान्यता दी गई। यह ही 'रम्प' के नाम से प्रसिद्ध हुई तथा इस घटना को 'प्राइड का नश्तर' (Pride's Purge) कहा गया।

(ii) **चार्ल्स प्रथम की मृत्यु** (Execution of Charles I)—इस संसद ने चार्ल्स प्रथम को 'संसद तथा इंग्लैण्ड के राष्ट्र के विरुद्ध युद्ध छेड़ने' के आरोप में अदालत के समक्ष प्रस्तुत होने का आदेश दिया। न्यायालय में अधिकांश सैनिक थे जिन्हें आदेश प्राप्त हो चुके थे। चार्ल्स ने उस न्यायालय को वैध न्यायालय तथा 'रम्प संसद' को संसद मानने से इन्कार कर दिया तथा शान्तिपूर्वक गर्व से पूर्वनिश्चित मृत्यु दण्ड को सुना।

30 जनवरी, 1649 ई. को प्रात: ह्वाइट हाल के सामने उसको मृत्यु-दण्ड दे दिया गया। राजा के धैर्य को देखकर जनता पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा तथा जनता उसे 'शहीद' मानने लगी। यद्यपि चार्ल्स प्रथम में अनेक खराबियां थीं, किन्तु जिस प्रकार से उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया वह कानून के विरुद्ध था। उसे मृत्यु-दण्ड देने वालों का विचार था कि वह एकतन्त्र को नष्ट कर रहे हैं, किन्तु वास्तव में उन्होंने उसे पवित्र बना दिया। रैम्जे म्योर के अनुसार, '1641 ई. से उठती हुई प्रतिक्रिया सम्राट की मृत्यु के क्षण से ही काबू से बाहर हो गयी, क्रामवैल की महानता तथा इंग्लैण्ड के इतिहास की सर्वश्रेष्ठ सेना ग्यारह वर्षों तक मात्र इसके प्रवाह को रोके रख सकी।'

गृह-युद्ध के परिणाम
(Results of the Civil War)

गृह-युद्ध का प्रमुख परिणाम चार्ल्स प्रथम को मृत्युदण्ड दिया जाना था। इंग्लैण्ड के इतिहास की यह एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। राजा चार्ल्स को मृत्यु-दण्ड देने के पश्चात् क्रामवैल ने राजतन्त्र की समाप्ति की घोषणा की तथा प्रजातन्त्र की स्थापना की। प्रजातन्त्रात्मक शासन प्रणाली की स्थापना भी इंग्लैण्ड के लिए महत्त्वपूर्ण थी। गृह-युद्ध के परिणामस्वरूप प्यूरिटन सम्प्रदाय का महत्त्व बढ़ गया क्योंकि इस सम्प्रदाय के व्यक्तियों ने चार्ल्स प्रथम को परास्त करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। इसके अतिरिक्त क्रामवैल ने शीघ्र ही शक्ति का केन्द्रीकरण करने का प्रयास किया तथा संसद की लॉर्ड सभा को समाप्त कर दिया। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड की प्रशासनिक व्यवस्था के लिए एक सभा बनायी गई जिसमें 41 सदस्य थे तथा इसे 'कौंसिल ऑफ स्टेट' (Council of State) कहा गया।

प्र.5. इंग्लैण्ड में राजतन्त्र की पुनर्स्थापना का वर्णन कीजिए।
Describe the restoration in England.

उत्तर

राजतन्त्र की पुनर्स्थापना
(Restoration)

राजतन्त्र की पुनर्स्थापना (Restoration)

1642 ई. में राजा चार्ल्स प्रथम के अत्याचारों से परेशान होकर एवं अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए इंग्लैण्ड की जनता ने राजा के विरुद्ध गृह-युद्ध (Civil War) की घोषणा की थी। इस गृह-युद्ध में जनता को सफलता प्राप्त हुई तथा चार्ल्स प्रथम को मृत्यु-दण्ड प्रदान किया गया, किन्तु जनता एवं संसद अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रही क्योंकि चार्ल्स प्रथम के स्थान पर अब उन्हें क्रामवैल की निरंकुशता का सामना करना पड़ा। क्रामवैल के समय में किसी में आवाज उठाने का साहस न था। इंग्लैण्ड में शान्ति व्याप्त थी।' किन्तु यह शान्ति वास्तविक न थी क्योंकि यद्यपि क्रामवैल ने इंग्लैण्ड को एक निश्चित संविधान प्रदान किया तथापि उसका शासन निरंकुशता एवं शक्ति पर आधारित था। उसके शासन में स्थायित्व का अभाव था। यही कारण था कि क्रामवैल की मृत्यु होते ही शान्ति भंग हो गयी एवं अराजकता के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे।

क्रामवैल ने अपना उत्तराधिकारी अपने पुत्र रिचर्ड (Richard) को घोषित किया था, किन्तु जनता उसे स्वीकार करने को तैयार न थी। क्रामवैल को जनता इंग्लैण्ड का वास्तविक शासक नहीं मानती थी क्योंकि क्रामवैल ने सेना की शक्ति के आधार पर इंग्लैण्ड की सत्ता को अपने हाथों में ले रखा था। अत: एक अधिकारी को अपना उत्तराधिकारी चुनने के अधिकार को जनता मान्यता प्रदान करने की विरोधी थी। रिचर्ड को जनता द्वारा पसन्द न किए जाने का एक अन्य कारण यह था कि जनता को चार्ल्स द्वितीय से सहानुभूति थी। जनता का विचार था कि अपराध चार्ल्स प्रथम ने किया था तथा उसे दण्ड मिल चुका था। चार्ल्स प्रथम के अपराध का दण्ड उसके पुत्र चार्ल्स द्वितीय को देना उचित नहीं समझती थी।

यद्यपि रिचर्ड को इंग्लैण्ड का प्रोटेक्टर (Protector) नियुक्त कर दिया गया, किन्तु उसके समक्ष अनेक समस्याएं थीं। प्रथम तो उसे जनता की सहानुभूति ही प्राप्त न थी। इसके अतिरिक्त रिचर्ड को राजतन्त्र के समर्थकों, प्यूरिटनों, गणतन्त्रवादियों का ही सामना नहीं करना था अपितु उसकी सेना में भी स्वामिभक्ति का अभाव था। युद्धकाल में जो सेना के अधिकारी तत्त्कालीन संकट का सामना करने के लिए परस्पर मिल गए थे अब राजनीति में भाग लेकर परस्पर ही झगड़ने लगे थे। जब तक क्रामवैल शक्ति में था। उसने अपने प्रभाव एव व्यक्तित्त्व के द्वारा इन झगड़ों को उभरने न दिया, किन्तु उसकी मृत्यु होते ही यह प्रारम्भ हो गए। सेना रिचर्ड को पसन्द नहीं करती क्योंकि वह सदैव युद्धों से दूर रहा था तथा उसे युद्ध अथवा सैनिक नेतृत्व का ज्ञान न था। अत: सेना उसे सेनापति स्वीकार करने को तैयार न थी। क्रामवैल तो सेनापति था, अत: संरक्षक बनने के योग्य था, किन्तु रिचर्ड केवल इसलिए संरक्षक बने कि वह क्रामवैल का ज्येष्ठ पुत्र था, इसका सेना विरोध करती थी। यदि क्रामवैल ने थोड़ी सूझ-बूझ से काम लिया होता एवं अपने छोटे पुत्र हेनरी को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया होता तो सम्भवत: इंग्लैण्ड में इतना शीघ्र प्रोटेक्टोरेट का पतन न होता क्योंकि हेनरी एक योग्य सेनापति एवं राजनीतिज्ञ था।

रिचर्ड ने संरक्षक बनते ही असन्तुष्ट सैनिकों की सेवाएँ समाप्त कर सेना को कम करने का प्रयत्न किया तो सेना ने मांग की कि सेनापति एवं संरक्षक के पद अलग-अलग कर दिए जाए तथा एक योग्य सेनाधिकारी फ्लीटवुड को सेनापति बनाया जाए। सेना माँग कर रही थी कि सेना सम्बन्धी समस्त अधिकार सेनापति को ही दे दिए जाए जिसमें सैनिकों की नियुक्ति एवं उन्हें पदच्युत करने का अधिकार भी था। यदि रिचर्ड इन समस्त माँगों को स्वीकार कर लेता तो सेना पूर्ण स्वतन्त्र हो जाती तथा सेनापति उसके समान अथवा सम्भवत: उससे भी शक्तिशाली व्यक्ति बन जाता। अत: रिचर्ड ने सेना की उपर्युक्त समस्त मांगों को अस्वीकृत कर दिया।

रिचर्ड ने शीघ्र ही संसद के चुनाव कराने का निर्णय लिया तथा 1659 ई. के प्रारम्भ में संसद का प्रथम अधिवेशन हुआ। इस संसद में मुख्यतया गणतन्त्र के विरोधी सदस्य थे। प्रथम अधिवेशन में ही संसद एवं सेना में मतभेद उत्पन्न हो गया। सेना के वेतन का भुगतान करने के लिए इस संसद ने धन स्वीकृतं न किया तथा सैनिक अधिकारियों पर अत्याचार करने का आरोप लगाकर जांच प्रारम्भ की। संसद ने यह भी प्रतिबन्ध लगाने का प्रयत्न किया कि सैनिक परिषद की बैठक संरक्षक तथा संसद के दोनों सदनों की अनुमति के अभाव में न हो सके तथा सेना संसद की स्वतन्त्रता के लिए शपथ ले, किन्तु सेना इसको स्वीकार करने के लिए तैयार न थी। सेना ने लन्दन में एकत्रित होना प्रारम्भ कर दिया। रिचर्ड ने सेना को लन्दन में एकत्र न होने के आदेश दिए जिसके विरोध में फ्लीटवुड ने संसद को भंग होने के आदेश दिए। संसद भंग हो गयी जिससे रिचर्ड की स्थिति शोचनीय हो गयी। रिचर्ड अपने भाई को आयरलैण्ड से अथवा सेनापति मौंक को स्कॉटलैण्ड से अपनी सहायतार्थ बुला सकता था, किन्तु ऐसा करने से पुन: गृह-युद्ध प्रारम्भ हो जाता। रिचर्ड इंग्लैण्ड में गृह-युद्ध को पुन: प्रारम्भ कराना नहीं चाहता था। उसका कहना था, 'मैं अपनी महानता की सुरक्षा के लिए, जो मेरे ऊपर एक बोझ है, रक्त की एक बूंद भी नहीं गिरने दूंगा।' अत: उसने मई, 1659 ई. में अपने पद से त्यागपत्र दे दिया ताकि शान्ति से अपना जीवन व्यतीत कर सके।

रिचर्ड के संरक्षक पद से त्यागपत्र देते ही पुन: सैनिक शासन इंग्लैण्ड में प्रारम्भ हुआ। अपने शासन को सांविधानिक रूप प्रदान करने के उद्देश्य से रम्प संसद को आमन्त्रित किया गया। रम्प एवं सैनिकों में समझौता न हो सका, अत: सेनापति लैम्बर्ट ने रम्प को भंग कर दिया तथा नवीन संविधान की रचना हेतु एक सुरक्षा समिति का निर्माण किया गया। इंग्लैण्ड की स्थिति अत्यन्त शोचनीय हो गयी, सर्वत्र अराजकता व्याप्त थी।

इंग्लैण्ड की स्थिति को देखते हुए 1660 ई. में स्कॉटलैण्ड के सेनापति मौंक (General Monck) ने इंग्लैण्ड के मामले में हस्तक्षेप किया। सेनापति मौंक इसके पूर्व भी अनेक अवसरों पर इंग्लैण्ड की सेवा कर चुका था। 1651 ई. में स्कॉटलैण्ड भेजी गई इंग्लैण्ड की सेना का नेतृत्व मौंक ने ही किया था। मौंक की सेना अत्यन्त शक्तिशाली एवं स्वामिभक्त थी। मौंक का विचार था कि गृह-युद्ध प्रोटेस्टेण्ट धर्म की रक्षा, जनता की स्वतन्त्रता एवं संसद के अधिकारों के लिए लड़ा गया था, यदि अब सेना स्वेच्छा से संसद को आमन्त्रित अथवा भंग करती है तो यह जनता के हित में नहीं है अपितु कुछ व्यक्तिगत स्वार्थों का परिणाम है। अत: सेनापति मौंक ने घोषणा की कि जब लैम्बर्ट एवं उसकी सेना हथियार डाल देगी तो वह संसद आमन्त्रित करेगा तथा जनता के निर्णय की प्रतीक्षा करेगा। अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु मौंक ने अपनी सेना के साथ इंग्लैण्ड की ओर प्रस्थान किया। इस समय इंग्लैण्ड की सेना ने मौंक से युद्ध न करने का निर्णय किया तथा मौंक के लन्दन पहुँचने पर लैम्बर्ट ने स्वयं को उसके अधिकार में दिया।

सेनापति मौंक ने रम्प को पुन: आमन्त्रित किया। रम्प के सदस्य सेना से प्रतिशोध लेना चाहते थे, किन्तु मौंक ने ऐसा न होने दिया तथा सेना को वेतन देने के लिए भी विवश किया। इसके पश्चात् दीर्घ संसद के अन्तिम अवशेष रम्प को भंग कर दिया गया तथा

एक नवीन एवं स्वतन्त्र संसद के चुनाव के लिए सेनापति मौंक ने आदेश दिए। नवीन एवं स्वतन्त्र संसद का प्रथम अधिवेशन अप्रैल, 1660 ई. में हुआ। इस संसद को क्योंकि राजा ने आमन्त्रित नहीं किया था अत: इसको कन्वेन्शन (convention) कहा गया। इस कन्वेन्शन को इंग्लैण्ड के शासन के विषय में निर्णय करना था। इस कन्वेन्शन में मुख्यतया राजतन्त्र समर्थक एवं प्रेस्बीटेरियन सदस्य थे, अत: उन्होंने चार्ल्स प्रथम के पुत्र चार्ल्स द्वितीय को आमन्त्रित करना निश्चित किया।

मौंक ने कन्वेशन के प्रस्ताव को चार्ल्स द्वितीय तक कुछ शर्तों के साथ पहुँचाया जो उस समय हालैण्ड के ब्रेडा (Breda) नामक स्थान पर रुका हुआ था। चार्ल्स ने कन्वेन्शन के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया तथा घोषणा की कि उसमें प्रतिशोध की भावना नहीं है, वह अपने पिता के शत्रुओं को क्षमा कर देगा तथा संसद की अनुमति के बिना किसी को दण्ड न देगा। उसने सेना को उसका वेतन देने का वचन दिया। वह सब कुछ संसद की इच्छानुसार करेगा। चार्ल्स ने यह घोषणा ब्रेडा नामक स्थान पर की थी, अत: इसे ब्रेडा की घोषणा (Declaration of Breda) कहा जाता है।

चार्ल्स द्वितीय ब्रेडा से इंग्लैण्ड के डोवर बन्दरगाह पहुँचा तथा उसने लन्दन की ओर प्रस्थान किया। ब्लेकहीथ में सेना ने चार्ल्स द्वितीय का स्वागत किया। चार्ल्स ने 29 मई, 1660 ई. को अपने जन्म-दिवस के अवसर पर लन्दन में प्रवेश किया। जनता ने चार्ल्स का सहर्ष स्वागत किया। वार्नर-मार्टिन-म्योर ने उस समय की लन्दन की स्थिति के विषय में लिखा है, 'लन्दन के रास्तों में पुष्प बिछे थे, घण्टियाँ बज रही थीं, सड़कों के दोनों ओर की दीवारों पर झालरें पड़ी थीं तथा फव्वारों से मदिरा की वर्षा हो रही थी।'

राजतन्त्र की स्थापना के प्रभाव (Effects of the Restoration)—इस प्रकार इंग्लैण्ड में ग्यारह वर्षों के उपरान्त पुन: राजतन्त्र की स्थापना हुई। इंग्लैण्ड में राजतन्त्र की पुनर्स्थापना के व्यापक प्रभाव हुए। राजतन्त्र की स्थापना के साथ ही क्रामवैल द्वारा प्रारम्भ किए गए सैनिक शासन का अन्त हुआ। सैनिक शासन की कठोरता से इंग्लैण्ड की जनता तंग हो चुकी थी, उसकी समाप्ति पर जनता ने राहत की सांस ली। जनता को पुन: स्वतन्त्रता प्राप्त हुई तथा आतंक एवं भय का राज्य समाप्त हुआ। इस प्रकार जनता के सामाजिक जीवन पर भी प्रभाव पड़ा। क्रामवैल के शासनकाल में मनोरंजन के सभी साधनों पर लगे हुए प्रतिबन्ध भी समाप्त हो गए। जनता में पुन: उत्साह, आनन्द, खेल-कूद की भावनाएं जागृत हुईं, किन्तु राजतन्त्र के आगमन से जनता का नैतिक स्तर गिरा, क्योंकि वहां मदिरापान, जुआ आदि पुन: प्रारम्भ हो गया, जिस पर क्रामवैल के शासनकाल में प्रतिबन्ध था।

राजतन्त्र की पुन: स्थापना के साथ ही इंग्लैण्ड में पुन: स्टुअर्ट वंश का राज्य प्रारम्भ हुआ। चार्ल्स प्रथम का अन्त देखकर चार्ल्स द्वितीय को यह सोचने पर विवश होना पड़ा कि यदि उसे शासन करना है तो संसद से सम्बन्ध मधुर रहने चाहिए। अत: स्वत: ही राजा के अधिकारों में कमी तथा संसद के अधिकारों में वृद्धि हुई। इस प्रकार राजाओं द्वारा स्वेच्छाचारिता से शासन करने की नीति पर प्रतिबन्ध लगा तथा राजा ने वैधानिक ढंग से शासन करना प्रारम्भ किया। इस प्रकार इंग्लैण्ड में वैधानिक राजतन्त्र का विकास हुआ।' इसके साथ ही राजा एवं संसद द्वारा परस्पर सहयोग से शासन करने के कारण लोकप्रिय शासन की स्थापना हुई। रैम्जे म्योर के अनुसार, 'राजतन्त्र की पुनर्स्थापना ने इंग्लैण्ड के भावी लोकप्रिय शासन के विकास का बीज बो दिया।

राजतन्त्र की स्थापना का एक अत्यन्त दुष्परिणाम संसद सदस्यों में भ्रष्टाचार एवं रिश्वत लेने की प्रथा का जन्म होना था। चार्ल्स द्वितीय जानता था कि शासन करने के लिए संसद से मधुर सम्बन्ध बनाए रखना आवश्यक है अत: उसने संसद सदस्यों को उपहार, पदवियां आदि प्रदान की तथा विभिन्न प्रकार से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उन्हें प्रभावित कर समर्थन प्राप्त करना चाहा, परिणामस्वरूप संसद सदस्यों को रिश्वत देने की प्रथा प्रारम्भ हुई जो उन्नीसवीं शताब्दी तक तो चलती ही रही।

राजतन्त्र की स्थापना का प्रभाव धार्मिक क्षेत्र पर भी पड़ा। क्रामवैल प्यूरिटन था, अत: उसके शासनकाल में धर्म पर अनेक प्रतिबन्ध थे। राजतन्त्र की स्थापना होने के पश्चात् संसद ने चर्च को अपने अधिकार में ले लिया तथा अनेक सुधार किए। एंग्लिकन धर्म इंग्लैण्ड का प्रमुख धर्म बना। क्रामवैल ने आयरलैण्ड, स्कॉटलैण्ड एवं इंग्लैण्ड को एक ही संसद के अधीन रखा था। राजतन्त्र की स्थापना होने पर तीनों देशों के लिए पृथक्-पृथक् संसद चुनी गयी। इस प्रकार राजतन्त्र की इंग्लैण्ड में पुनर्स्थापना के अनेक प्रभाव हुए, जिसके परिणाम इंग्लैण्ड की राजनीति, शासन एवं समाज पर स्पष्टत: दृष्टिगोचर हुए।

प्र.6. वैभवपूर्ण क्रान्ति के कारणों का वर्णन कीजिए।

Describe the causes of the glorious revolution.

उत्तर

वैभवपूर्ण क्रान्ति के कारण
(Causes of the Glorious Revolution)

जेम्स द्वितीय ने तीन वर्षों तक शासन किया, तत्पश्चात् उसे इंग्लैण्ड छोड़कर भागने पर विवश होना पड़ा। अपने तीन-वर्षीय अल्प शासनकाल में गृह-नीति के अन्तर्गत उसने जितने भी कार्य किए उनके परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड में वैभवपूर्ण क्रान्ति का जन्म हुआ। इस क्रान्ति में एक बूँद भी रक्त धरती पर नहीं गिरा, इसी कारण इसे वैभवपूर्ण क्रान्ति अथवा रक्तहीन क्रान्ति (Bloodles Revolution) कहा जाता है।

वैभवपूर्ण क्रान्ति के निम्नलिखित कारण थे—

1. **राजा एवं संसद के मध्य संघर्ष** (Struggle between King and their Parliament)—वैभवपूर्ण क्रान्ति के कारणों को जानने के लिए ट्यूडरकाल का अध्ययन करना आवश्यक है। हेनरी सप्तम द्वारा सामन्तों की शक्ति नष्ट किए जाने के पश्चात् से ट्यूडर शासक निरंकुश हो गए थे। ट्यूडर शासकों द्वारा मध्यवर्ग को प्रोत्साहन दिया गया था तथा इस वर्ग ने उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। इसी काल में हुए पुनर्जागरण तथा धर्म-सुधार आन्दोलनों के कारण मध्यवर्ग अपने अधिकारों के प्रति अत्यन्त जाग्रत हो चुका था। एलिजाबेथ के शासनकाल के अन्तिम वर्षों में मध्यवर्ग द्वारा रानी एलिजाबेथ का विरोध होने लगा था, किन्तु एलिजाबेथ के अत्यन्त कुशल होने एवं वैदेशिक नीति में असाधारण सफलता के कारण जनता उसका अत्यधिक सम्मान करती थी; अत: एलिजाबेथ को विशेष संकट का सामना नहीं करना पड़ा। 1603 ई. में स्टुअर्ट वंश की इंग्लैण्ड में स्थापना हुई। जेम्स प्रथम ने जनता पर अपने दैविक अधिकारों को थोपने का प्रयत्न किया, किन्तु जनता ने इसका विरोध किया, परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड में राजा एवं संसद के मध्य संघर्ष प्रारम्भ हुआ। जेम्स प्रथम तो किसी प्रकार शासन करने में सफल हो गया, किन्तु चार्ल्स प्रथम को इस संघर्ष का परिणाम भुगतना पड़ा और उसे 1649 ई. में मृत्यु-दण्ड दे दिया गया। क्रामबैल तथा चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल से यह संघर्ष चलता रहा। जेम्स द्वितीय के समय में राजा और संसद का संघर्ष तीव्र हो गया तथा वैभवपूर्ण क्रान्ति के रूप में इसका अन्त हुआ। इस प्रकार संसद ने राजा पर विजय प्राप्त की।
2. **जेम्स द्वितीय की निरंकुशता** (Autocracy of James II)—जेम्स द्वितीय ने प्रारम्भ से ही निरंकुशतापूर्वक शासन करने का प्रयत्न किया। वह अपनी अत्याचारी एवं निरंकुश नीति से जनता में भय एवं आतंक उत्पन्न करना चाहता था, ताकि वह स्वेच्छाचारिता से शासन कर सके। जेम्स द्वितीय कैथोलिक था तथा इंग्लैण्ड की अधिकांश जनता प्रोटेस्टेण्ट थी। जेम्स कैथोलिक धर्म का इंग्लैण्ड में प्रचार करना चाहता था, इसी उद्देश्य से जेम्स ने लन्दन में एक नवीन गिरजाघर बनवाया जिसका जनता ने घोर विरोध किया। जेम्स ने अवसर पाकर अपनी सेना में वृद्धि की, ताकि जनता को आतंकित कर सके। जेम्स की सेना में अधिकांश कैथोलिक थे। इंग्लैण्ड की जनता को स्पष्ट प्रतीत होने लगा कि इंग्लैण्ड में पुन: सैनिक शासन स्थापित होगा। जनता इंग्लैण्ड में पुन: सैनिक शासन की स्थापना नहीं चाहती थी क्योंकि क्रामवैल के सैनिक शासन से ही जनता तंग आ चुकी थी। अत: जेम्स की निरंकुश नीति का जनता द्वारा विरोध होना स्वाभाविक था।
3. **खूनी न्यायालय** (Bloody Assizes)—ह्विग दल इंग्लैण्ड में जेम्स द्वितीय के राजगद्दी पर आसीन होने का विरोधी था। ह्विग नेताओं ने चार्ल्स के अवैध पुत्र मन्मथ (Monmouth) को विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया। मन्मथ ने सेना एकत्र करके स्वयं को इंग्लैण्ड का उत्तराधिकारी घोषित किया। जेम्स द्वितीय ने सेजमूर नामक स्थान पर मन्मथ को परास्त करके बन्दी बनाया। विद्रोहियों के साथ अमानुषिक व्यवहार किया गया तथा मन्मथ को मृत्यु-दण्ड दिया गया। इस न्यायालय को खूनी न्यायालय (Bloody Assizes) कहा गया तथा जनता का जेम्स द्वितीय की अत्याचारी एवं कठोर नीति से घृणा हो गयी। जेम्स ने अपनी निरंकुश नीति को इंग्लैण्ड तक ही सीमित नहीं रखा अपितु आयरलैण्ड एवं स्कॉटलैण्ड में भी कार्यान्वित करने का प्रयत्न किया। स्कॉटलैण्ड एवं आयरलैण्ड में कैथोलिक अधिकारियों को नियुक्त किया गया जिन्होंने वहां के प्रोटेस्टेण्ट व्यक्तियों पर अत्याचार किए। अत: स्कॉटलैण्ड में अर्ल ऑफ अरगिल ने विद्रोह किया, किन्तु कठोरतापूर्वक इस विद्रोह का दमन किया गया, विद्रोहियों को अत्यन्त कठोर दण्ड दिए गए। तीन सौ व्यक्तियों को मृत्यु-दण्ड दिया गया तथा लगभग आठ सौ व्यक्तियों को दास बनाकर वेस्टइण्डीज में बेच दिया गया। जेफ्रीज नामक न्यायाधीश ने स्त्रियों एवं बच्चों को भी क्षमा नहीं किया तथा उनके साथ अभद्र व्यवहार किया। इंग्लैण्ड की जनता के साथ-साथ स्कॉटलैण्ड तथा आयरलैण्ड की जनता भी जेम्स की विरोधी हो गयी।

   इस प्रकार पुराने कैथोलिक न्यायालयों की पुनर्स्थापना तथा इन न्यायालयों द्वारा अत्यन्त कठोर नीति के परिणामस्वरूप जेम्स की अत्यन्त बदनामी हुई। कोर्ट ऑफ हाई कमीशन की भी स्थापना की गयी थी जिसमें कैथोलिक धर्म की आलोचना करने वाले व्यक्तियों को लाया जाता था तथा कठोर दण्ड दिया जाता था। गिरजाघरों में जो पादरी राजा की आज्ञा का पालन नहीं करते थे उन्हें पदच्युत कर दिया जाता था। इन न्यायालयों की भी अत्यन्त भर्त्सना की गयी।
4. **टेस्ट नियम की अवहेलना** (Rejection of Test Act)—इंग्लैण्ड में चार्ल्स द्वितीय के समय संसद ने टेस्ट अधिनियम पारित किया था। इस अधिनियम के द्वारा केवल एंग्लिकन चर्च के अनुयायी ही सरकारी कर्मचारी हो सकते थे। अत: कैथोलिकों को सरकारी सेवा से वंचित कर दिया गया था। जेम्स द्वितीय स्वयं कैथोलिक था। अत: कैथोलिकों को सुविधा प्रदान करना चाहता था किन्तु टेस्ट अधिनियम के कारण वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर सकता था।

TOUCH 'n PASS

जेम्स ने अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए राजा के विशेष अधिकारों का प्रयोग करना प्रारम्भ किया। इसी समय गोडेन के विरुद्ध हेल्स (Godden *Vs.* Hales) के मुकदमे में एक न्यायालय ने यह निर्णय दिया कि क्योंकि कानून राजा के द्वारा बनाए जाते हैं। अतएव राजा अपने विशेषाधिकारों के द्वारा उन कानूनों के विरुद्ध कार्य कर सकता था। इस आधार पर जेम्स ने 'राजा के निलम्बन' (suspending) तथा विमोचन (dispensing) अधिकारों का प्रयोग करना प्रारम्भ किया। इस अधिकार के द्वारा राजा किसी भी अधिनियम को स्थगित कर सकता था तथा किसी भी व्यक्ति को दण्ड से क्षमा कर सकता था। राजा ने इन अधिकारों का प्रयोग करके टेस्ट अधिनियम (Test Act) को स्थगित कर दिया तथा कैथोलिकों को राजकीय पदों पर आसीन करना प्रारम्भ कर दिया। मन्त्री, न्यायाधीश, नगर-निगम के सदस्य तथा सेना में उच्च पदों पर कैथोलिकों की नियुक्ति की। कैथोलिकों ने सार्वजनिक रूप से प्रार्थना करना आरम्भ कर दिया। इंग्लैण्ड की संसद ने जेम्स के इन कार्यों का विरोध किया क्योंकि संसद द्वारा पारित नियमों की अवहेलना करना देश के संविधान का अपमान करना था। जेम्स ने संसद के विरोध की परवाह न की, अत: जनता में विद्रोह की भावना जाग्रत होने लगी।

5. **विश्वविद्यालयों में हस्तक्षेप** (Intreference in the University Affairs)—टेस्ट अधिनियम की अवहेलना करते हुए जेम्स द्वितीय ने विभिन्न उच्च पदों पर कैथोलिकों को नियुक्त किया। विश्वविद्यालय भी जेम्स की इस नीति से बच नहीं सके। जेम्स ने विश्वविद्यालयों में भी कैथोलिकों को नियुक्त करना प्रारम्भ किया। क्राइस्टचर्च कॉलेज में अधिष्ठाता (Dean) के पद पर एक कैथोलिक व्यक्ति की नियुक्ति की गयी तथा मेक्डालेन विद्यालय के सभी शिक्षाधिकारियों को हटा दिया गया क्योंकि उन्होंने जेम्स की इच्छा होते हुए भी एक कैथोलिक व्यक्ति को अपना सभापति बनाने से इन्कार कर दिया था। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के कुलपति को जेम्स ने पदच्युत कर दिया क्योंकि उसने एक कैथोलिक को डिग्री देने से इन्कार कर दिया था। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय का नवीन कुलपति एक कैथोलिक व्यक्ति को बनाया गया।
इस प्रकार शिक्षा पर कैथोलिकों का आधिपत्य स्थापित करने का जेम्स द्वितीय ने प्रयत्न किया जिससे प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय को खतरा उत्पन्न हो गया क्योंकि विश्वविद्यालय से पढ़कर निकलने वाले छात्र कैथोलिक धर्म का ही प्रचार करते जिससे प्रोटेस्टेण्ट धर्म बहिष्कृत हो जाता, प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय के लिए आवश्यक हो गया कि वे जेम्स का विरोध करें।
6. **फ्रांस से मित्रता** (Alliance with France)—फ्रांस के शासक लुई का प्रभाव इस समय यूरोप में छाया हुआ था। चार्ल्स द्वितीय के समान जेम्स द्वितीय पर भी लुई चौदहवें का अत्यधिक प्रभाव था। वह फ्रांस से आर्थिक एवं सैनिक सहायता प्राप्त कर अपने निरंकुश शासन को इंग्लैण्ड में स्थापित करना चाहता था। लुई चौदहवां कट्टर कैथोलिक था तथा फ्रांस में प्रोटेस्टेण्ट वर्ग पर अत्यधिक अत्याचार करता था, अत: इंग्लैण्ड की जनता लुई चौदहवें को पसन्द नहीं करती थी तथा जेम्स से अपेक्षा करती थी कि वह फ्रांस से मित्रता न रखे। जेम्स अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए फ्रांस से मित्रता रखना आवश्यक समझता था। अत: उसने अपनी जनता के अनुरोध को स्वीकार नहीं किया। यद्यपि जेम्स की गृह-नीति अत्यन्त खराब थी, किन्तु उसके पतन का वास्तविक कारण उसकी गृह-नीति नहीं अपितु वैदेशिक नीति थी।' यदि वह फ्रांस के स्थान पर हॉलैण्ड से मित्रता करने का प्रयत्न करता तो उसे अपना पद छोड़ने पर विवश न होना पड़ता क्योंकि हॉलैण्ड एक प्रोटेस्टेण्ट देश था, अत: उससे मित्रता करने पर उसे इंग्लैण्ड की जनता का समर्थन प्राप्त हो जाता। ऐसा न करना उसकी भूल थी और इस गलती का परिणाम उसे शीघ्र ही भुगतना भी पड़ा।
7. **धार्मिक अनुग्रह की घोषणाएँ** (Declarations of Indulgence)—जेम्स द्वितीय पूर्णत: कैथोलिक तथा इंग्लैण्ड को एक कैथोलिक देश बनाना चाहता था। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु उसने टेस्ट अधिनियम की अवहेलना करके समस्त उच्च राजकीय पदों पर कैथोलिकों को नियुक्त किया। जेम्स ने रोम के पोप को भी इंग्लैण्ड आमन्त्रित किया तथा उसका अत्यधिक आदर सत्कार किया। जेम्स ने तदोपरान्त 1687 ई. में धर्म की प्रथम घोषणा की जिसके द्वारा कैथोलिकों तथा अन्य सम्प्रदायों पर लगे प्रतिबन्ध समाप्त कर दिए। धार्मिक अनुग्रह की प्रथम घोषणा को अधिक समय नहीं हुआ था कि 1688 ई. में अपने धार्मिक अनुग्रह की द्वितीय घोषणा की। इस घोषणा के द्वारा समस्त धर्मों को पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की गई तथा जेम्स द्वितीय ने वर्ग तथा धर्म का पक्षपात किए बिना प्रत्येक को राजकीय पद को प्रदान करने की सुविधा दी। प्यूरिटनों को जेम्स अपने पक्ष में करना चाहता था, किन्तु प्यूरिटनों ने जेम्स के सरकारी नौकरियां देने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। जेम्स के इस कार्य से प्रोटेस्टेण्ट अत्यधिक क्रोधित हुए तथा क्रान्ति की भावना उनमें प्रबल होने लगी।
8. **सात पादरियों को बन्दी बनाना** (Imprisonment of Seven Bishops)—जेम्स द्वितीय ने आदेश दिया था कि धार्मिक अनुग्रह की द्वितीय घोषणा को प्रत्येक रविवार को गिरजाघरों में पढ़ा जाए। इसका तात्पर्य था कि या तो पादरी अपने

धर्म और इच्छा के विरुद्ध इस घोषणा को पढ़ते अथवा राजा की आज्ञा की अवहेलना करते। अन्त में केण्टरबरी के आर्क के विरुद्ध सेनक्रोफ्ट (Sancroft), जो एक उग्रवादी टोरी तथा राजा के दैवी अधिकारों का समर्थक था, इस सम्बन्ध में अपने छह साथियों से परामर्श किया तथा एक प्रार्थना-पत्र राजा को प्रस्तुत किया, जिसमें उससे निवेदन किया गया था कि राजा अपनी घोषणा को पढ़ने के आदेश को वापिस ले व पुराने नियमों को तोड़ने की नीति को त्याग दे। इस पत्र के अन्त में यह भी लिखा गया था कि हम राजा की आज्ञा की अवहेलना नहीं कर रहे हैं वरन् राजा ही देश के नियमों का उल्लंघन कर रहा है। जेम्स ने पादरियों के इस कार्य को अपमान तथा विद्रोह समझा, अत: उन पर राजद्रोह का आरोप लगाकर लन्दन के टॉवर में कैद कर लिया। इंग्लैण्ड की जनता ने जब पादरियों को टॉवर में जाते देखा तो क्रान्ति के लिए वह तैयार हो गयी, किन्तु न्यायाधीशों ने इन पादरियों को अपराधमुक्त घोषित किया। जनता ने पादरियों की मुक्ति पर सभी स्थानों पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा जनता के इस उल्लास में सेना ने भी भाग लिया।

9. **जेम्स द्वारा जनता की शक्ति को न समझ पाना** (James Failed to Estimate People's Power)—जेम्स का यह भ्रम था कि वह जनता को शक्ति के द्वारा भयभीत करके स्वेच्छाचारिता से शासन कर सकता है। जेम्स द्वितीय को इतिहास से सबक लेना चाहिए था और उसे नहीं भूलना था कि जनता ने चार्ल्स प्रथम के विरुद्ध किस प्रकार अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया था और चार्ल्स प्रथम को मृत्यु-दण्ड प्राप्त हुआ था। जेम्स के लिए यह आवश्यक था कि वह जनता की भावना को परखता और चार्ल्स द्वितीय के समान शासन करता, किन्तु उसने जनता की इच्छा के विरुद्ध कार्य किया तथा जनता की शक्ति को समझने में वह असफल रहा।
10. **जेम्स द्वितीय के पुत्र का जन्म** (Birth of James II's Son)—जेम्स की प्रथम पत्नी से दो पुत्रियां थीं—मेरी तथा ऐन। ये दोनों ही प्रोटेस्टेण्ट थीं। अत: जनता का विचार था कि जेम्स द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् मेरी ही रानी बनेगी, अत: प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय को पुन: सुविधाएँ प्राप्त हो सकेंगी, किन्तु 10 जून, 1588 को जेम्स द्वितीय की द्वितीय पत्नी मोडेना ने पुत्र को जन्म दिया। जेम्स को पुत्र की प्राप्ति उसके लिए अत्यन्त भयंकर प्रमाणित हुई क्योंकि जनता को विश्वास हो गया कि जेम्स अपने पुत्र को कैथोलिक शिक्षा प्रदान करेगा, अत: उन्हें कैथोलिक राजाओं के अत्याचार से कभी मुक्ति नहीं मिलेगी। जनता ने अब जेम्स द्वितीय के विरुद्ध क्रान्ति करना आवश्यक समझा। साउथगेट ने लिखा है कि यद्यपि जेम्स के पतन के कारणों के लिए उसके शासनकाल में किए गए अनेक कार्य उत्तरदायी हैं—उसने सदैव जनता की इच्छा के विरुद्ध शासन किया, असांविधानिक तरीके से निलम्बन तथा विमोचन के अधिकारों का प्रयोग किया, धार्मिक न्यायालयों की स्थापना करके कानून को भंग किया, गिरजाघरों तथा विश्वविद्यालयों पर आक्रमण करके पादरियों तथा टोरियों को रुष्ट किया। उसका सात पादरियों को बन्दी बनाना अत्याचारपूर्ण था। उसने शक्ति के द्वारा स्वेच्छाचारी बनना चाहा, किन्तु यदि उसके पुत्र न हुआ होता तो इसमें सन्देह है कि यह क्रान्ति होती अथवा नहीं।

प्र.9. इंग्लैण्ड में कैबिनेट प्रणाली के विकास में विभिन्न राज्यों की स्थिति का वर्णन कीजिए।
Describe the conditions of different kings during cabinet system in England.

उत्तर

स्टुअर्ट काल में स्थिति
(Condition During the Stuart Period)

चार्ल्स प्रथम के शासनकाल में 'मन्त्रिमण्डल' (Cabinet) शब्द का प्रयोग होता था। उस काल में प्रिवी कौंसिल के कुछ प्रमुख सदस्य सम्राट के परामर्शदाता होते थे और सम्राट उनके ही परामर्श पर प्रिवी कौंसिल में कोई प्रस्ताव रखता था। वास्तव में, चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में मन्त्रिमण्डल के उदय के लिए परिस्थितियाँ अवश्य ही अनुकूल होती जा रही थीं। चार्ल्स द्वितीय के समय में संसद की शक्ति में निरन्तर वृद्धि हो रही थी और वह अपने चरमोत्कर्ष की ओर अग्रसर हो रही थी। अपने प्रवासकाल के अनुभवों के आधार पर चार्ल्स द्वितीय संसद में संघर्ष करने को तैयार नहीं था और संसद की शक्ति के विकास के कारण ही मन्त्रिमण्डल का निर्माण सम्भव हो सका। वास्तव में चार्ल्स द्वितीय के समय का 'केबाल मन्त्रिमण्डल' (Cabal Ministry) ही मन्त्रिमण्डल का प्रारम्भिक रूप था, परन्तु वह हाउस ऑफ कॉमन्स की अपेक्षा प्रिवी कौंसिल का प्रतिनिधित्व अधिक करता था। नारमन शासकों की प्रेट कौंसिल से 'प्रिवी कौंसिल' का जन्म हुआ था तथा प्रिवी कौंसिल से 'केबाल मन्त्रिमण्डल' का जन्म सम्भव हुआ। इस दिशा में चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में और अधिक प्रगति न हो सकी, परन्तु इससे मन्त्रिमण्डल के कार्य की रूपरेखा जनता के समक्ष आई। चार्ल्स द्वितीय के मन्त्री संसद के प्रभावशाली व्यक्ति होते थे अत: वे स्वेच्छा से संसद के नियम पारित कराते थे। ये मन्त्री हाउस ऑफ कॉमन्स के स्थान पर राजा के प्रति उत्तरदायी होते थे क्योंकि कॉमन सभा की शक्ति का पूर्ण विकास इस

समय तक नहीं हुआ था। चार्ल्स द्वितीय के समय के मन्त्री मुख्यत: राजा का प्रभाव संसद में रखने के उद्देश्य के कारण राजा के एजेण्ट होते थे। इसी समय से 'कैबिनेट' (Cabinet) शब्द का प्रयोग भी प्रारम्भ हुआ क्योंकि मन्त्रियों की सभा का अधिवेशन राजभवन के एक छोटे से कमरे (कैबिनेट) में होता था अत: उस कमरे के कारण मन्त्रिमण्डल को कैबिनेट कहा गया।

विलियम तृतीय के शासनकाल में स्थिति
(Condition During William III's Rule)

1688 ई. में राजा की पराजय तथा संसद की पूर्ण विजय ने मन्त्रिमण्डल के विकास में बहुत सहयोग दिया। विलियम तृतीय के काल में ही वास्तविक रूप में मन्त्रिमण्डल जन्म ले सका। विलियम तृतीय को राजा मानने के लिए ह्विग तथा टोरी दोनों दल तैयार हो जाने के कारण राजा ने अपने मन्त्री दोनों दलों में से चुने, परन्तु दोनों दलों के अन्दर मतभेद होने के कारण मन्त्री शासन कार्य को सुचारु रूप से चलाने में सर्वथा असमर्थ रहे। टोरी लोग युद्ध के विरोधी थे तथा हिग पक्षपाती, अतएव विदेशी युद्धों में फँसे रहने के कारण विलियम ने ह्विग दल के मन्त्री बनाए। यद्यपि विलियम ने अपने कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए यह पद्धति अपनाई, परन्तु परोक्ष रूप से उसने दलीय मन्त्रिमण्डल को जन्म दे दिया। इस पद्धति के द्वारा विलियम को सफलता मिली। 1869 ई. में टोरी दल के बहुमत में होने के कारण ह्विग के स्थान पर टोरी दल का मन्त्रिमण्डल चुना गया और इस प्रकार बिना किसी इरादे के अज्ञानता में यह परम्परा पड़ गई कि संसद में बहुमत दल के सदस्यों में से ही मन्त्रिमण्डल चुना जाया करे, जैसा कि आधुनिक मन्त्रिमण्डल के लिए भी आवश्यक है।

विलियम तृतीय का किसी दल विशेष की और आकर्षण नहीं था, वरन् उसने शासन व्यवस्था का सुचारु रूप से संचालन करने के लिए संसद में बहुमत वाले दल के सदस्यों में से ही अपने मन्त्रियों की नियुक्तियां प्रारम्भ कीं, परन्तु उस समय संसद इस नयी व्यवस्था की विरोधी थी। अत: 1701 ई. में संसद ने सैटिलमैन्ट एक्ट (Settlement Act) पारित किया जिसके अन्तर्गत इस प्रकार से गठित मन्त्रिमण्डल को उसके प्रारम्भिक काल में ही समाप्त करने का प्रयास किया गया। उपर्युक्त अधिनियम की एक धारा के अन्तर्गत सम्राट पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया कि वह संसद के सदस्यों में से ही अपने मन्त्रियों की नियुक्ति न करे क्योंकि इस धारा के अन्तर्गत सम्राट का कोई भी वेतनभोगी कर्मचारी हाउस ऑफ कॉमन्स का सदस्य नहीं हो सकता था। राजा की शक्तियों को प्रतिबन्धित करने के उद्देश्य से तो यह ठीक था, परन्तु दूसरी ओर कैबिनेट प्रणाली के लिए यह अत्यन्त घातक प्रमाणित हुआ क्योंकि जब संसद के सदस्य ही मन्त्री नहीं बनेंगे तो वे मन्त्री जनता के प्रतिनिधि कैसे होंगे और न ही वे जनता के प्रतिनिधियों के सम्मुख उत्तरदायी हो सकते थे।

ऐन के शासनकाल में स्थिति
(Condition During Anne's Rule)

1702 ई. में विलियम तृतीय की मृत्यु हो जाने पर महारानी ऐन इंग्लैण्ड के राजसिंहासन की उत्तराधिकारिणी बनी। रानी ऐन के समय में स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध (War of Spanish Succession) प्रारम्भ हो गया और इसके साथ ही टोरी दल की शक्ति भी क्षीण होने लगी। ह्विग दल पुन: शासन में आया। हिग दल के सदस्यों ने 1707 ई. में पैलेस एक्ट (Palace Act) पारित किया, जिसके द्वारा 1701 ई. के सैटिलमेन्ट एक्ट की उस धारा को समाप्त कर दिया जिसके अनुसार, कुछ विशेष राजकीय पदाधिकारियों के अतिरिक्त अन्य सभी राजकीय कर्मचारी हाउस ऑफ कॉमन्स के सदस्यों को अपने द्वारा पारित प्रस्तावों पर हस्ताक्षर करना आवश्यक था। इसी प्रकार प्रिवी कौंसिल को सभी कार्यों के लिए उत्तरदायी ठहराकर मन्त्रिमण्डल की आवश्यकता को समाप्त कर दिया गया। कुछ समय पश्चात् इस धारा को भी समाप्त कर कैबिनेट व्यवस्था का पुन: विकास प्रारम्भ किया गया।

वार्नर-मार्टिन-म्योर ने सैटिलमेन्ट एक्ट के महत्त्व के विषय में प्रकाश डालते हुए लिखा है, 'ऐसा कहा जाता है कि सैटिलमेन्ट अधिनियम ने हमें एक विदेशी शासक दिया, विदेशी शासक की उपस्थिति ने हमें एक प्रधानमन्त्री दिया।' इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर हैनोवरवंशीय शासकों का अधिकार होते ही कैबिनेट प्रणाली का तेजी से विकास होने लगा। इसका कारण हैनोवर वंश की इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर लिग दल की सहायता से स्थापना होना हैनोवर वंश के प्रथम दो शासकों जार्ज प्रथम एवं जार्ज द्वितीय को अंग्रेजी भाषा का ज्ञान न होना था।

हैनोवर काल में स्थिति
(Condition During Hanover Period)

रानी ऐन की मृत्यु के कारण रिक्त हुए इंग्लैण्ड के सिंहासन के लिए दो प्रतिद्वन्द्वी थे। टोरी दल के सदस्य स्टुअर्ट वंश के समर्थक होने के नाते जेम्स द्वितीय के पुत्र जेम्स एडवर्ड को इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर बैठाना चाहते थे, किन्तु जनता ऐसा नहीं चाहती थी,

क्योंकि स्टुअर्ट वंश की स्थापना पुन: हो जाती तो इंग्लैण्ड में प्रजातन्त्रीय भावना को अत्यधिक आघात पहुँचता। ह्विग दल हैनोवर के इलैक्टर जार्ज को इंग्लैण्ड का राजा बनाना चाहता था और अन्त में ह्विग दल को सफलता मिली। जार्ज, जार्ज प्रथम के नाम से इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर बैठा। ह्विग दल ने जार्ज प्रथम के देश हैनोवर की रक्षा करके शासक के प्रति अपने सम्मान को प्रदर्शित किया। जार्ज प्रथम ने अपने मन्त्रिमण्डल का गठन ह्विग दल के सदस्यों में से किया। तत्कालीन परम्परा के अनुसार राजा ही मन्त्रिमण्डलों के अधिवेशनों का सभापतित्त्व करता था। अत: जार्ज प्रथम को भी अपने मन्त्रिमण्डल को उसके कार्यों में प्रोत्साहित करने के लिए उसकी सभाओं में उपस्थित रहना पड़ता था।

1714 ई. में इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर बैठते समय जार्ज प्रथम की आयु 54 वर्ष थी तथा उसे अंग्रेजी का ज्ञान भी न था और न ही वह अंग्रेजी सीखने का इच्छुक था क्योंकि उसे राजकीय कार्यों में विशेष रुचि न थी। परिणामस्वरूप, शीघ्र ही मन्त्रिमण्डल की सभाओं से वह ऊब गया और उसने इन सभाओं में भाग लेना कम कर दिया और अन्त में उसने मन्त्रिमण्डल की सभाओं में आना पूर्णतया बन्द कर दिया। जार्ज प्रथम के समान ही जार्ज द्वितीय को भी अंग्रेजी का ज्ञान नहीं था और वह भी मन्त्रिमण्डल की सभाओं में सम्मिलित होना पसन्द नहीं करता था। इस प्रकार निरन्तर चालीस वर्षों तक मन्त्रिमण्डल की सभाओं से सम्राट के अनुपस्थित रहने के कारण राजा का अनुपस्थित रहना एक नियम-सा बन गया। राजा के अनुपस्थित रहने के कारण मन्त्री स्वतन्त्र होकर वाद-विवाद करने में सफल होते और अन्त में वे पूर्णत: स्वतन्त्र निर्णय करने लगे। बाह्य दबाव समाप्त हो जाने के कारण मन्त्रिमण्डल के सदस्यों में पारस्परिक सहयोग की भावना का विकास हुआ।

ह्विग मन्त्रिमण्डल राजा के हितों का अत्यन्त ख्याल रखता था और देश-विदेश में राजा के विरोधियों का दमन करता था, अत: जार्ज प्रथम ह्विग दल पर पूर्ण विश्वास करता था और उसने राजकीय समस्त कार्यों को पूर्ण रूप से ह्विग दल पर ही छोड़ दिया। जार्ज प्रथम को सौभाग्य से 1721 ई. में एक योग्य तथा विश्वासपात्र व्यक्ति वालपोल मिल गया। उसकी बनाई रिपोर्ट पर जार्ज प्रथम बिना पढ़े ही हस्ताक्षर कर देता था। अपने व्यक्तित्त्व के प्रभाव से वालपोल मन्त्रियों का नेता बन गया। राजा की अनुपस्थिति में वह मन्त्रियों की सभा की अध्यक्षता भी करता था और मन्त्रिमण्डल के कार्य की रिपोर्ट भी राजा को दे देता था। राजा ने राजकीय पदों पर नियुक्ति का अधिकार भी उसे दे रखा था। अब वह राजा के समान ही पदों पर नियुक्ति एवं उन्हें पदच्युत कर सकता था। मन्त्रियों को चुनने का अधिकार भी उसे मिल गया और वह अयोग्य मन्त्रियों को उनके पद से हटा भी सकता था। वर्तमान शासन प्रणाली में ये समस्त कार्य प्रधानमन्त्री करता है। यद्यपि वालपोल स्वयं को प्रधानमन्त्री नहीं कहता था, परन्तु फिर भी उसने इस प्रकार से कार्य करके कैबिनेट प्रणाली की एक अनिवार्य शर्त पूर्ण कर दी। उसके पश्चात् उसके उत्तराधिकारियों ने भी इसी प्रकार कार्य किया। इंग्लैण्ड के इतिहास में प्रधानमन्त्री शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम डिजरैली ने 1878 ई. में बर्लिन की सन्धि पर हस्ताक्षर करते समय किया था। उसने लिखा था, 'डिजरैली, अर्ल ऑफ बैकन्सफील्ड, प्रधानमन्त्री।'

हैनोवर वंश के प्रथम दो शासक जार्ज प्रथम और जार्ज द्वितीय, इंग्लैण्ड के लिए पूर्ण विदेशी थे और इन्होंने इंग्लैण्ड के राजकीय कार्यों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप भी नहीं किया। मन्त्रिमण्डल ही कार्यों की योजना बनाता और उसको कार्यान्वित करता। सम्राट उस पर केवल हस्ताक्षर ही करता था। हैनोवर वंश के राज्य से पूर्व राजा की सम्मति प्रधान होती थी तथा मन्त्रिमण्डल का इतना महत्त्व नहीं था, किन्तु जार्ज प्रथम के समय से ही राजा का महत्त्व कम होने लगा और किसी भी विषय में मन्त्रिमण्डल की सम्मति सर्वोपरि होती थी। इस समय से संसद में कोई भी नियम पारित कराने के लिए मन्त्रिमण्डल उत्तरदायी होता था। इस प्रकार राजा द्वारा किए जाने वाले समस्त कार्यों को अब मन्त्रिमण्डल करने लगा। प्रधानमन्त्री अपने मन्त्रिमण्डल का चयन हाउस ऑफ कॉमन्स अथवा हाउस ऑफ लॉर्डस के सदस्यों में से करता था तथा ये मन्त्री अपने पदों पर हाउस ऑफ कॉमन्स का विश्वास होने तक ही रह सकते थे। वालपोल को 1741 ई. में विदेश नीति के सम्बन्ध में संसद में पराजय हो जाने के कारण त्यागपत्र देना पड़ा। इस प्रकार मन्त्रिमण्डल की सफलता की एक अन्य आवश्यक प्रथा का उदय हुआ जिसके द्वारा मन्त्रिमण्डल सम्राट के प्रति उत्तरदायी न होकर संसद के प्रति उत्तरदायी होने लगा।

जार्ज प्रथम तथा जार्ज द्वितीय ने कभी भी अपने निषेधाधिकार (veto) का प्रयोग नहीं किया। प्रारम्भ में राजा को अधिकार था कि संसद द्वारा पारित किसी भी नियम को वह हस्ताक्षर न करके स्वीकृत कर सकता था। 1715 ई. के पूर्व इस अधिकार का अनेकों बार अनेक शासकों ने प्रयोग किया था, परन्तु अब स्थिति में परिवर्तन आ गया था। मन्त्रिमण्डल अपने बहुमत के आधार पर किसी भी नियम को संसद से पारित करवा लेता था और राजा उस पर बिना किसी आपत्ति के कर देता था। वर्तमान समय में यह वीटो का अधिकार इंग्लैण्ड में एक कल्पनामात्र है और गत दो सौ वर्षों से किसी भी सम्राट ने इस अधिकार का प्रयोग नहीं किया है।

कैबिनेट व्यवस्था की अनेक विशेषताओं में एक मुख्य विशेषता यह है कि इससे हाउस ऑफ कॉमन्स (House of Commons) की प्रधानता स्थापित हुई। गौरवपूर्ण क्रान्ति (Glorious Revolution) के उपरान्त हाउस ऑफ कॉमन्स की शक्ति हैनोवर वंश

के शासकों के काल में पर्याप्त रूप से हो चुकी थी। सम्राट की निरंकुशता समाप्त हो चुकी थी और हाउस ऑफ कॉमन्स की शक्ति में निरन्तर वृद्धि हो रही थी। अब राजा केवल एक वैधानिक शासक मात्र ही था तथा वास्तविक शासन में अब धीरे-धीरे वृद्धि हो रही थी और वालपोल जैसे महान् राजनीतिज्ञ ने भी 1741 ई. में हाउस ऑफ कॉमन्स की प्रधानता को स्वीकार किया। कोई भी मन्त्रिमण्डल अथवा मन्त्री हाउस ऑफ कॉमन्स की इच्छा के विरुद्ध अपने पद पर नहीं रह सकता था। 1741 ई. में वालपोल के त्याग-पत्र ने यह प्रमाणित कर दिया कि हाउस ऑफ कॉमन्स ही देश की नीति निर्धारित करने वाली सर्वोच्च शक्ति है। इस प्रकार स्पष्ट है कि कैबिनेट प्रणाली के प्रधान अंगों का विकास प्रथम दो मन्त्रिमण्डल द्वारा ही होने लगा। चैम्सफोर्ड ने हैनोवर वंश के शासकों के महत्त्व के विषय में अपना मत निम्न शब्दों में व्यक्त किया है।

'आधुनिक ब्रिटिश कैबिनेट के उत्थान तथा विकास का श्रेय हैनोवर वंश के प्रथम दो सम्राटों को ही है।' जार्ज प्रथम तो वास्तविक अर्थों में नाम मात्र का ही शासक था। जार्ज द्वितीय ने अवश्य कुछ अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न किया, किन्तु वह असफल रहा। अत: उसने एक बार कहा था, 'इस देश में मन्त्री ही सम्राट है। 1760 ई. तक कैबिनेट प्रणाली के विकास की गति तीव्र रही, किन्तु जार्ज तृतीय को उसकी माता ने वास्तविक अर्थों में राजा बनने की शिक्षा और प्रेरणा दी थी न कि मन्त्रिमण्डल के हाथों में कठपुतली बनने की। अत: जार्ज तृतीय ने अपनी माता की अपेक्षा के अनुसार व्यवहार एवं सिद्धान्त दोनों ही अर्थों में वास्तविक शासक बनने का प्रयास किया जैसा कि रैम्जे म्योर ने लिखा है।

'जार्ज तृतीय की माता ने जार्ज की पालन-पोषण वास्तविक राजा बनने के लिए किया था और जब उसका राज्याभिषेक हुआ तो उसने राज्य और शासन दोनों ही करने का निश्चय किया।'

जार्ज तृतीय ने शासन का भार अपने हाथों में लेते ही पिट को त्याग-पत्र देने के लिए बाध्य करके शासन की शक्ति अपने हाथों में केन्द्रित की। इस प्रकार जार्ज तृतीय के शासन काल में कैबिनेट प्रणाली के विकास में अवरोध उत्पन्न हो गया। इसी समय अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम और अपनी अस्वस्थता के कारण वह अपने प्रयत्नों में सफल न हो सका।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. किस घटना को आमतौर पर द्वितीय विश्वयुद्ध की पहली जुझारू कार्रवाई माना जाता है?

(क) जर्मनी का रूस पर आक्रमण (ख) ब्रिटेन पर जर्मनी का आक्रमण
(ग) पौलैंड पर जर्मनी का आक्रमण (घ) ऑस्ट्रिया पर जर्मनी का कब्जा

उत्तर (ग) पौलैंड पर जर्मनी का आक्रमण

प्र.2. जर्मनी पर युद्ध की घोषणा सबसे पहले किन दो देशों ने की थी?

(क) इटली और ग्रीस (ख) ब्रिटेन और फ्रांस
(ग) नॉर्वे और डेनमार्क (घ) संयुक्त राज्य अमेरिका और यूएसएसआर

उत्तर (ख) ब्रिटेन और फ्रांस

प्र.3. 1939 के अंत में सोवियत संघ ने किस देश के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष भड़काया?

(क) फिनलैंड (ख) यूगोस्लाविया (ग) चेकोस्लोवाकिया (घ) हंगरी

उत्तर (क) फिनलैंड

प्र.4. जर्मनी द्वारा आक्रमण करने वाले पहले दो पश्चिमी यूरोपीय देश कौन से थे?

(क) फ्रांस और बेल्जियम (ख) नॉर्वे और डेनमार्क
(ग) स्विट्जरलैंड और लिकटेंस्टीन (घ) ऑस्ट्रिया और नीदरलैंड

उत्तर (ख) नॉर्वे और डेनमार्क

प्र.5. द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत में जर्मनी की मानक आक्रमण रणनीति का सबसे अच्छा वर्णन कौन करता है?

(क) गति और जबरदस्त ताकत के संयोजन से हमला करें
(ख) सबसे पहले दुश्मन की सीमा पर एक बड़ी सेना इकट्ठा करके दुश्मन को डराएँ
(ग) दुश्मन की रेखाओं के पीछे तोड़फोड़ की कार्रवाइयों से शुरुआत करें
(घ) दुश्मन को थका देने के लिए यथासंभव लंबे समय तक लड़ाई जारी रखें

उत्तर (क) गति और जबरदस्त ताकत के संयोजन से हमला करें

TOUCH 'n PASS

प्र.6. फ्रांस पर जर्मनी के हमले से बचाव की तैयारी में मित्र राष्ट्रों ने कौन-सी बड़ी गलती की?
(क) वे यह अनुमान लगाने में विफल रहे कि हमला होगा
(ख) उन्हें नौसैनिक हमले के बजाय जमीनी बलों द्वारा हमले की उम्मीद थी
(ग) उन्होंने गलत व्याख्या की कि मुख्य आक्रमण कहाँ होगा
(घ) वे जर्मनी के साथ सीमा पर बारूदी सुरंगें स्थापित करने में विफल रहे

उत्तर (ग) उन्होंने गलत व्याख्या की कि मुख्य आक्रमण कहाँ होगा

प्र.7. मई 1940 में डनकर्क में क्या हुआ?
(क) ब्रिटिश सेनाएँ इंग्लिश चैनल के पीछे हट गईं (ख) फ्रांसीसी सेना एक बड़ी लड़ाई हार गई
(ग) अमेरिकी सेना ने फ्रांस पर आक्रमण किया (घ) एक बड़े नौसैनिक युद्ध में जर्मन सेना हार गयी

उत्तर (क) ब्रिटिश सेनाएँ इंग्लिश चैनल के पीछे हट गईं

प्र.8. जर्मनी के प्रति फ्रांसीसी आत्मसमर्पण पर हस्ताक्षर कहाँ किये गये थे?
(क) पेरिस में (ख) बर्लिन में (ग) एक रेलवे कार में (घ) एक नाव पर

उत्तर (ग) एक रेलवे कार में

प्र.9. ब्रिटिश रॉयल नेवी ने मेर्स-अल-केबीर में फ्रांसीसी युद्धपोतों पर हमला क्यों किया?
(क) फ्रांसीसी दल ने जर्मनी के प्रति निष्ठा की शपथ ली थी
(ख) फ्रांस ब्रिटेन के साथ युद्ध में था
(ग) अंग्रेजों के अनुरोध पर फ्रांसीसी दल ने अपने जहाज सौंपने से इनकार कर दिया
(घ) वे जर्मनों द्वारा संचालित थे

उत्तर (ग) अंग्रेजों के अनुरोध पर फ्रांसीसी दल ने अपने जहाज सौंपने से इनकार कर दिया

प्र.10. ब्रिटेन पर विजय पाने के लिए जर्मनी की प्रारंभिक रणनीति क्या थी?
(क) पहले हवाई श्रेष्ठता स्थापित करें, फिर जमीनी सेनाएँ भेजें
(ख) पहले ब्रिटिश नौसेना को नष्ट करो, फिर जमीनी सेना भेजो
(ग) पहले जमीनी सेना भेजो, फिर विमान से देश पर हमला करो
(घ) जहरीली गैस के हमलों से लंदन को स्थिर कर दो

उत्तर (क) पहले हवाई श्रेष्ठता स्थापित करें, फिर जमीनी सेनाएँ भेजें

प्र.11. ''लंदन ब्लिट्ज'' क्या था?
(क) जर्मनी की लंदन पर हमले की योजना
(ख) लंदन पर जर्मनी के बमबारी अभियान के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द
(ग) युद्ध के अंत में जर्मन मिसाइल हमलों की एक शृंखला
(घ) एक गुप्त ब्रिटिश राडार प्रणाली का कोड नाम

उत्तर (ख) लंदन पर जर्मनी के बमबारी अभियान के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द

प्र.12. कुल मिलाकर ब्रिटेन की लड़ाई मानी जाती है–
(क) जर्मनी की जीत (ख) ब्रिटेन की जीत (ग) किसी की भी जीत नहीं (घ) एक छोटा सा संघर्ष

उत्तर (ख) ब्रिटेन की जीत

प्र.13. युद्ध में इटली की प्राथमिक भूमिका क्या थी?
(क) इससे जर्मनी को अपने मुख्य उद्देश्यों को पूरा करने में मदद मिली
(ख) यह ब्रिटेन के लिए मददगार था
(ग) इससे जापान के लिए समस्याएँ खड़ी हो गईं
(घ) इसने जर्मनी को उसके मुख्य उद्देश्यों को पूरा करने से विचलित कर दिया

उत्तर (घ) इसने जर्मनी को उसके मुख्य उद्देश्यों को पूरा करने से विचलित कर दिया

TOUCH 'n' PASS

प्र.14. रूस पर आक्रमण करने का हिटलर का प्राथमिक औचित्य क्या था?
(क) स्टालिन जर्मनी पर आक्रमण की तैयारी कर रहा था
(ख) जर्मनी को अपनी जनसंख्या के लिए अधिक स्थान की आवश्यकता थी
(ग) हिटलर का मानना था कि दो मोर्चों पर युद्ध करने से उसे फायदा होगा
(घ) वह जार निकोलस द्वितीय की फाँसी का बदला लेना चाहता था

उत्तर (ख) जर्मनी को अपनी जनसंख्या के लिए अधिक स्थान की आवश्यकता थी

प्र.15. यूएसएसआर पर आक्रमण करने की जर्मनी की योजना को क्या कोड नाम दिया गया था?
(क) ऑपरेशन सी लायन (ख) ऑपरेशन बारब्रोसा (ग) ऑपरेशन वोल्फेंस्टीन (घ) ऑपरेशन क्रॉसबो

उत्तर (ख) ऑपरेशन बारब्रोसा

प्र.16. जर्मन आक्रमण के शुरुआती दिनों में सोवियत वायु सेना का क्या हुआ?
(क) 2,000 तक सोवियत विमान जमीन पर रहते हुए ही नष्ट कर दिए गए।
(ख) सोवियत पायलटों ने अनुभवहीन जर्मन पायलटों के खिलाफ आसान जीत हासिल की।
(ग) इसे साइबेरिया ले जाया गया।
(घ) सोवियत वायु सेना विशाल हवाई लड़ाई में लगी हुई थी जिसमें दोनों तरफ विमान शामिल थे।

उत्तर (क) 2,000 तक सोवियत विमान जमीन पर रहते हुए ही नष्ट कर दिए गए।

प्र.17. निम्नलिखित में से कौन जर्मनी के विरुद्ध सोवियत रक्षा योजना का हिसा नहीं था?
(क) सुव्यवस्थित पक्षपातपूर्ण प्रतिरोध
(ख) पीछे हटने से पहले किसी भी उपयोगी संसाधन को नष्ट करने की सख्त नीति
(ग) सोवियत ने जर्मन सेनाओं को जंगलों में लुभाने की कोशिश की, जहाँ वे आग लगा देंगे
(घ) प्रमुख कारखानों को नष्ट कर दिया गया और पूर्व की ओर ले जाया गया

उत्तर (ग) सोवियत ने जर्मन सेनाओं को जंगलों में लुभाने की कोशिश की, जहाँ वे आग लगा देंगे

प्र.18. हिटलर ने सोवियत संघ के किस क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता दी थी?
(क) यूक्रेन और दक्षिणी रूस (ख) लेनिनग्राद और उत्तरी रूस
(ग) मास्को और मध्य रूस (घ) साइबेरिया

उत्तर (क) यूक्रेन और दक्षिणी रूस

प्र.19. शहर की जर्मन घेराबंदी के दौरान रूसियों ने किस मार्ग से लेनिनग्राद को कुछ आपूर्ति भेजने का प्रबंधन किया था?
(क) काला सागर के पार एक जर्मन आपूर्ति लाइन (ख) एक भूमिगत रेलमार्ग
(ग) लाडोगा झील के पार एक आपूर्ति मार्ग (घ) एक एयरलिफ्ट

उत्तर (ग) लाडोगा झील के पार एक आपूर्ति मार्ग

प्र.20. अधिकांश नाजी विनाश शिविरों का स्थल कौन-सा देश था?
(क) यूएसएसआर (ख) चकोस्लोवाकिया (ग) पोलैंड (घ) हंगरी

उत्तर (ग) पोलैंड

TOUCH 'n' PASS

UNIT-VI

औद्योगिक क्रांति और अमेरिकी क्रांति

Industrial Revolution and American Revolution

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम कब और कहाँ हुई?
When and where did the industrial revolution first take place?

उत्तर 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में कुछ पश्चिमी देशों के तकनीकी, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति में काफी बड़ा बदलाव आया इसे ही औद्योगिक क्रांति के नाम से जाना जाता है। औद्योगिक क्रांति की शुरुआत इंग्लैंड में हुई।

प्र.2. औद्योगिक क्रांति की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं?
What were the main features of industrial revolution?

उत्तर औद्योगिक क्रांति से यूरोप एवं विश्व के अन्य देशों में अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इस क्रांति से उत्पादन के साधनों, विधियों, मात्राओं एवं गुणों में अत्यधिक परिवर्तन हुआ। जिससे व्यक्तियों, समाजों एवं राष्ट्रों के जीवन स्तर, रहन-सहन, खान-पान एवं विचारों में परिवर्तन हुआ।

प्र.3. औद्योगिक क्रांति के क्या कारण थे?
What were the causes of industrial revolution?

उत्तर औद्योगिक क्रांति में नवीन आविष्कारों के कारण खदानों की खोज हुई, कारखानों की आवश्यकता हुई तथा इनके लिए बड़ी मात्रा में कच्चे माल की आवश्यकता हुई। इसके कारण उपनिवेशों का तथा श्रमिकों का शोषण भी होने लगा। हजारों श्रमिक मशीनों के कारण बेकार होने लगे, श्रमिकों की आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न होने लगी। अनेक बैंकों की स्थापना हुई।

प्र.4. औद्योगिक क्रांति से क्या लाभ हुए?
What were the benefits of the industrial revolution?

उत्तर 1. उत्पादन क्षमता में वृद्धि-नवीन खोजों के परिणामस्वरूप उत्पादन की नवीन तकनीकों का विकास हुआ, जिससे उत्पादन क्षमता में निरंतर वृद्धि होती रही।
2. यातायात में विशेष सुविधा—औद्योगिक क्रांति से यातायात के साधनों का तेजी से विकास हुआ।

प्र.5. औद्योगिक क्रांति का क्या आर्थिक प्रभाव हुआ?
What was the economic impact of the industrial revolution?

उत्तर उत्पादन में वृद्धि से निर्यात में वृद्धि हुई। स्वतंत्र कारीगर कारखानों से प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर सके, फलत: कुटीर उद्योग समाप्त हो गए। बड़े-बड़े कृषि फार्मों की स्थापना के कारण छोटे किसानों को रोजगार की तलाश में गाँवों से शहरों की ओर जाना पड़ा। औद्योगिक केंद्रों के आस-पास नवीन नगरों का विकास हुआ।

प्र.6. अमेरिका की क्रांति कब और क्यों हुई?
When and why did the American revolution happen?

उत्तर अमेरिकी क्रांति 1775 से 1783 के दौरान जनरल जार्ज वाशिंगटन द्वारा अमेरिकी सेना का नेतृत्व करते हुए की गई थी। वाशिंगटन ने अमेरिकन उपनिवेशों को एकीकृत करके संयुक्त राज्य अमेरिका का वर्तमान स्वरूप प्रदान किया। बाद में उन्हें 1789 में अमेरिका का पहला राष्ट्रपति चुना गया। 14 दिसम्बर, 1799 को वाशिंगटन की मृत्यु हो गई।

TOUCH 'n' PASS

प्र.7. अमेरिकी क्रांति से आप क्या समझते हैं?

What do you understand by American revolution?

उत्तर अमेरिकी क्रांतिकारी युद्ध (1775-1783), जिसे संयुक्त राज्य में अमेरिकी स्वतन्त्रता युद्ध या क्रांतिकारी युद्ध भी कहा जाता है, ग्रेट ब्रिटेन और उसके तेरह उत्तर अमेरिकी उपनिवेशों के बीच एक सैन्य संघर्ष था, जिससे वे उपनिवेश स्वतन्त्र संयुक्त राज्य अमेरिका बने। शुरुआती लड़ाई उत्तर अमेरिकी महाद्वीप पर हुई।

प्र.8. अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांति में क्या अन्तर है?

What is the difference between American and French revolution?

उत्तर अमेरिकी क्रांति ब्रिटेन में अपनी सत्ताधारी राजशाही से दूर एक महासागर में एक उपनिवेश में हुई। फ्रांसीसी क्रांति फ्रांस के भीतर ही हुई, एक ऐसी कार्यवाही जिसने सीधे फ्रांसीसी राजतन्त्र के लिए खतरा पैदा कर दिया।

प्र.9. अमेरिका की क्रांति के क्या कारण थे?

What were the causes of American revolution?

उत्तर अंग्रेजों ने सप्तवर्षीय युद्ध अमेरिकी उपनिवेशों की रक्षार्थ लड़ा था, इसलिए युद्ध में विजयी होने पर अंग्रेजों ने युद्ध में व्यय होने वाली धनराशि को अमेरिकी उपनिवेशों से वसूल करना चाहा। इसके लिए ब्रिटिश संसद ने अमेरिकी उपनिवेशों पर कर लगाने चाहे, जिसका उपनिवेशों ने कड़ा विरोध किया।

प्र.10. अमेरिकी क्रांति का अन्त कैसे हुआ?

How did the American revolution end?

उत्तर पेरिस की सन्धि पर दो साल बाद, 3 सितम्बर, 1783 को डेविड हार्टले और रिचर्ड ओसवाल्ड और संयुक्त राज्य अमेरिका सहित बेंजामिन फ्रैंकलिन, जॉन एडम्स और जॉन जे सहित किंग जॉर्ज III के प्रतिनिधियों द्वारा आधिकारिक तौर पर संघर्ष को समाप्त करने पर हस्ताक्षर किए गए थे।

प्र.11. अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम का धार्मिक कारण क्या था?

What was the religious cause for the American war of independence?

उत्तर अमेरिकावासी अपने मातृदेश के साथ संबंध नहीं रखना चाहते थे। ब्रिटिश समाज सामंतवादी एवं कुलीन व्यवस्था पर आधारित थी; जबकि अमेरिकी समाज समतामूलक एवं प्रजातांत्रिक व्यवस्था पर आधारित था। इस प्रकार अमेरिका में धार्मिक एवं सामाजिक समरसता थी, जिसने स्वतन्त्रता संग्राम के लिए एक मजबूत आधार प्रदान किया।

प्र.12. अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम का इंग्लैण्ड और फ्रांस पर क्या प्रभाव पड़ा?

What was the impact of American war of independence on England and France?

उत्तर अमेरिकी क्रांति का प्रभाव भारत पर भी पड़ा। अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम में फ्रांस के युद्ध में कूद जाने से भारत में भी आंग्ल-फ्रांसीसी युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई। फ्रांसीसियों की कमजोर शक्ति से लाभ उठाकर अंग्रेजों ने अपने भारतीय राज्य विस्तार की नीति को मजबूत कर दिया।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम के तात्कालिक कारणों को बताइए।

State the immediate causes of the American war of independence.

उत्तर

अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम के तात्कालीन कारण
(Immediate Causes of American war of Independence)

अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम के तात्कालिक कारण निम्नलिखित हैं—

1. **स्टाम्प नियम** (Stamp Act)—स्वेच्छा से उपनिवेशवादी कोई आर्थिक सहायता इंग्लैण्ड को देने को तैयार न थे, अतएव संसद में ग्रेनविल ने 1765 ई० में स्टाम्प एक्ट पारित करवाया। इसके अनुसार सभी सरकारी कागजों पर सरकारी

TOUCH 'n' PASS

स्टाम्प लगाना आवश्यक था। अमेरिकावासियों ने इसका विरोध किया। इनकी दृष्टि से सरकार को उनके आन्तरिक मामलों में कर लगाने का कोई अधिकार नहीं था। अत: उन्होंने एक स्वर में इसका विरोध करते हुए नारे लगाए **'प्रतिनिधित्व नहीं तो कर भी नहीं'**। जब यह कर वसूल किया जाने लगा तो क्रांति के चिह्न स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगे। अत: 1766 ई० में यह समाप्त कर दिया गया।

2. **आयात-कर अधिनियम** (Import Tax Act)—1737 ई० में पिट-मन्त्रिमण्डल ने एक आयात कर अधिनियम पास किया, जिसने शीशा, चाय, कागज तथा रंग के आयात पर कर लगा दिया। अमेरिकावासियों के दृष्टिकोण से यह उनके मौलिक अधिकारों के प्रति बहुत बड़ा आघात था। इसका भी घोर विरोध हुआ।
3. **चाय पर कर लगाने का प्रयास** (Tax on Tea)—1771 ई० में लॉर्ड नार्थ प्रधानमन्त्री था। इसने कागज तथा शीशे पर चुंगी हटा ली, किन्तु चाय पर लगी रहने दी। उसने यह गलती ही की क्योंकि इससे अमेरिकावासियों का क्रोध शान्त नहीं हुआ। वे तो इंग्लैण्ड के कर लगाने के अधिकार के विरोधी थे न कि पैसे देने के।
4. **तत्कालीन घटनाएँ** (Immediate Events)—1770 ई० से 1773 ई० तक ऐसी घटनाएँ घटित हुईं जिससे दोनों पक्षों में तीव्र वैमनस्य उत्पन्न हो गया। इन घटनाओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—
   (i) बोस्टन शहर के निवासी ब्रिटिश रेजीमेण्टों का अपमान करने लगे थे। एक दल के कुछ सैनिकों के साथ जनता ने अभद्र व्यवहार किया। अंग्रेजों ने गोलियाँ चला दीं जिससे कुछ व्यक्ति मारे गए। अमेरिकावासियों ने लोगों को भड़काने के उद्देश्य से इसे एक बहुत बड़े **'नर-संहार'** (The Boston massacre) का नाम दिया।
   (ii) अमेरिका की चोर-बाजारी को रोकने के लिए एक शाही जहाज (Graspee) भेजा गया। उपनिवेशवासियों ने इसे जला डाला। अमेरिका में इससे खुशी मनायी गई, किन्तु इंग्लैण्ड में रोष फैल गया।
   (iii) **बोस्टन टी पार्टी** (Boston Tea Party)—1773 ई० में चाय अधिनियम द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी को सीधे अमेरिका को चाय भेजने का अधिकार प्राप्त हो गया था। इसका भी विरोध किया गया और अमेरिका निवासियों ने बोस्टन के बन्दरगाह पर एक जहाज में प्रवेश कर 340 चाय के बक्स समुद्र में फेंक दिए। इस घटना से अंग्रेजों को काफी क्रोध आया और उन्होंने यह समझ लिया कि अब अमेरिका विद्रोह अवश्य करेगा। विद्रोह शान्त करने के लिए सभी उपनिवेशों में सैनिक शासन लागू कर दिया तथा बोस्टन के बन्दरगाह को व्यापार के लिए बन्द कर दिया। यूवेक एक्ट द्वारा कनाडा की सीमा ओहियों नदी तक निर्धारित कर दी गई। वहाँ के कैथोलिकों को सुविधाएँ दे दी गईं। जिससे प्यूरिटन लोग और भी रुष्ट हो गए। प्रारम्भ में इंग्लैण्ड की सरकार अमेरिका के लोगों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करने से झिझकती थी; क्योंकि अमेरिका के लोगों के प्रति इंग्लैण्ड की सहानुभूति थी तथा सरकार का विचार था कि यदि वह दृढ़ रुख अपनाकर अमेरिकी घटनाओं पर केवल नजर ही रखे तो पर्याप्त होगा; क्योंकि यह संग्राम अधिक समय तक नहीं चल सकेगा और स्वत: ही समाप्त हो जाएगा, परन्तु बोस्टन (Boston) की घटना के कारण इंग्लैण्ड की सरकार कठोर कार्यवाही करने पर विवश हुई।
   अंग्रेजी सरकार ने 'बोस्टन टी पार्टी' की घटना को अपना अपमान समझा और अपराधियों को कठोर दण्ड दिया गया। इस दमन नीति का उपनिवेशवासियों ने विरोध किया। 1774 ई० में फिलाडेल्फिया (Philadelphia) में एक सभा हुई। इस सभा में अंग्रेजी सरकार से बातचीत करने का प्रस्ताव पारित किया गया, परन्तु जार्ज तृतीय ने विद्रोहियों से बातचीत करना उचित न समझा, अतएव अमेरिका वालों ने युद्ध करने का निर्णय लिया।

प्र.2. अमेरिका के स्वाधीनता संघर्ष में अंग्रेजों की पराजय के कारणों को लिखिए।

Write the causes for the defeat of the British in the freedom struggle of America.

उत्तर

अंग्रेजों की पराजय तथा अमेरिका की विजय के कारण
(Causes for the Defeat of the British and the Victory of America)

अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम में सफल होने के निम्न कारण थे—

1. **अमेरिका को शक्तिहीन समझना** (To consider Americans weak)—अमेरिका की शक्ति का अंग्रेज सही अनुमान न कर सके। वे अपनी शक्ति पर आवश्यकता से अधिक गर्व करते थे। जनरल गेज (Gaze) का अनुमान था कि चार रेजीमेंट अमेरिका पर विजय करने के लिए पर्याप्त हैं। अंग्रेज अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम को एक विद्रोह मात्र समझते थे और साधारण विद्रोह के समान उस पर विजय पाना आसान मानते थे।

TECHNICAL PASS

2. **अमेरिका की इंग्लैण्ड से दूरी** (Distance between U.S.A. and U.K.)—अमेरिका, इंग्लैण्ड से बहुत दूर था। इसके कारण युद्ध-सामग्री तथा सैनिक भेजने में बड़ी कठिनाई होती थी। अमेरिकावासी अपने ही देश में लड़ रहे थे, अत: उन्हें सहायता लेने के लिए दूर जाने की आवश्यकता न थी।
3. **यातायात की असुविधा** (Transport Problems)—युद्ध का घेरा एक हजार मील लम्बा-चौड़ा था। बस्तियों के मध्य कोई सड़क न थी। बीच में अनेक जंगल थे। बस्ती वाले इन जंगलों से परिचित थे, परन्तु अंग्रेज उनमें रास्ता भूल जाते थे। एक स्थान पर यदि अंग्रेज घिर जाते तो उसकी सूचना उनके साथियों को शीघ्र न मिल पाती थी।
4. **अंग्रेज सेना के अयोग्य सेनापति** (Incompetent British Generals)—अंग्रेज युद्धमन्त्री जर्मेन (Germaine) एक अयोग्य मन्त्री था। उसने इस बात की कभी चिन्ता न की कि अंग्रेजों की अमेरिका में क्या स्थिति है? वह अमेरिका से आई डाक खोलने का कष्ट भी नहीं करता था। उसने **'पिट दि एल्डर'** की योजना पर कार्य न किया, परिणामस्वरूप फ्रांस का बेड़ा अमेरिका पहुँच गया और अमेरिका को उचित समय पर सहायता मिल गई और कॉर्नवालिस को हथियार डालने पड़े।
5. **जॉर्ज तृतीय की अयोग्यता** (Incompetency George III)—जॉर्ज तृतीय अत्यन्त हठी शासक था। वह किसी के परामर्श को स्वीकार नहीं करता था। उसने मन्त्रियों को भी अपने हाथ की कठपुतली बना रखा था। मन्त्रियों में द्वेष-भाव था और अपने स्वार्थवश वे देश की चिन्ता न करते थे। योग्य सेनापति क्लेरटाउन को हटाकर बरगोयने को रखना उचित न था। राजा का व्यक्तिगत शासन युद्ध में पराजित होने का मुख्य कारण था। वार्नर-मार्टिन म्योर के अनुसार, "जॉर्ज तृतीय के राज्याभिषेक के समय एक बस्तियाँ परिपक्व हो चुकी थीं, किन्तु मातृ देश (इंग्लैण्ड) यह समझ न सका और सम्भवत: यही प्रमुख कारण था जिसकी वजह से इतनी समस्याएँ उत्पन्न हुईं।"
6. **जॉर्ज तृतीय में अंग्रेज जनता का विश्वास न होना** (Lack of people faith in George III)—देश में राष्ट्रीय सरकार न होने के कारण देश में एकता का अभाव था। जॉर्ज तृतीय के व्यक्तिगत शासन से अनेक लोग असन्तुष्ट थे। बहुत-से लोग अमेरिका की स्वतन्त्रता के पक्षपाती भी थे। लॉर्ड चेथम तथा बर्क ने जॉर्ज तृतीय को उचित सलाह देनी चाही, किन्तु जॉर्ज तृतीय ने उसकी परवाह न की। बर्क का निम्न कथन उसका अमेरिका के पक्ष में होना स्पष्ट करता है, 'मैं अमेरिका के विरोध से सन्तुष्ट हूँ। अन्याय तथा अत्याचार के कारण अमेरिकी पागल हो उठे हैं। क्या अंग्रेज इस पागलपन के लिए उन्हें सजा देंगे जिसका बीजारोपण अंग्रेजों ने ही किया।'

प्र.3. आधुनिक औद्योगीकरण की विशेषताएँ लिखिए।
Write the characteristics of modern industrilisation.

उत्तर

आधुनिक औद्योगीकरण की विशेषताएँ
(Characteristics of Modern Industrilisation)

तकनीकी नवाचार अधिकतर समाजों में लम्बे समय तक होते रहे हैं। शिल्पकार, कारीगर और कई प्रकार के कुशल मजदूर विश्व के लगभग सभी हिस्सों में विनिर्माण की विभिन्न प्रक्रियाओं में शामिल थे। कुछ समाजों में राजाओं और आभिजात्य वर्ग के उपभोग हेतु या यहाँ तक कि निर्यात के लिए वस्तुओं का निर्माण करने हेतु कार्यशाला आधारित उत्पादन भी प्रारंभ किया गया। यद्यपि, आधुनिक औद्योगीकरण मूल रूप से इससे पहले के सभी प्रकार के औद्योगीकरणों से भिन्न था; क्योंकि यह कहीं ज्यादा प्रभावशाली था और इसने अर्थव्यवस्था की पूरी संरचना को बदल दिया। इसने विस्तार में तकनीकी बदलाव शामिल थे जिसके कारण मशीनीकरण तथा मशीनों द्वारा मानव श्रम का प्रतिस्थापन हुआ। विभिन्न आविष्कारों ने शक्ति के अचेतन स्रोतों, जैसे—पानी, भाप और बाद में विद्युत शक्ति के द्वारा पशु शक्ति (जैसे—घोड़े, बैल इत्यादि) के प्रतिस्थापन को संभव बनाया। वैज्ञानिक नवाचारों को व्यापक रूप से उत्पादन के लिए लागू किया गया जिससे उत्पादन तेजी से बाजारोन्मुख हो गया। स्थानीयकृत कृषि उत्पादन धीरे-धीरे कृषि वस्तुओं के वाणिज्यिक उत्पादन द्वारा प्रतिस्थापित हो गया। परिणामस्वरूप भूमि जोतों का सुदृढ़ीकरण हुआ और बड़े पैमाने पर ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की तरफ श्रमिकों का विस्थापन हुआ। बड़ी संख्या में मजदूरों को रोजगार देते हुए, आधुनिक कारखाना इस औद्योगीकरण का आधार बन गया। नई तकनीकों, बढ़ते हुए आविष्कारों और बड़े पूँजी निवेश के कारण उत्पादन में विशाल वृद्धि हुई। नए सामाजिक वर्ग; जैसे—बुर्जुआ वर्ग, सर्वहारा वर्ग, मध्य वर्ग, व्यावसायिक वर्ग आस्तित्व में आए।

यूरोप में 16वीं सदी से, विभिन्न घटनाक्रमों का परिणाम आर्थिक वृद्धि के रूप में हुआ। हालाँकि 18वीं सदी से आधुनिक विकास की बुनियाद रखी गई। इस काल में कई यूरोपीय देशों में आंतरिक बाजार बहुत कुछ एकीकृत हुआ। अधिक सीमा-शुल्क लगाकर

विदेशी वस्तुओं के आयात के विरुद्ध देशी उद्योगों को सुरक्षा प्रदान की गई। ब्रिटेन में, विदेश के 'मुद्रित, चित्रित, चिह्नित और रंगे हुए सूती कपड़ों' के किसी भी रूप में प्रयोग पर 1722 में प्रतिबंध लगा दिया गया। फ्रांस में, ठीक 1686 से ही इस प्रकार के आयातों पर कड़ा प्रतिबंध लागू किया गया था। स्पेन और प्रशा में भी, भारतीय आयातों को रोकने हेतु कानूनों को लागू किया गया। देश में निर्मित वस्तुओं के निर्यात को प्रोत्साहित किया गया और शहरी क्षेत्रों की तरफ खाद्य-सामग्री की आपूर्ति बढ़ाने के लिए कृषि उत्पादन उन्नत किया गया। औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाने और परिष्कृत करने के लिए तकनीक में सक्रिय नवाचार आरंभ हुए।

दूसरा महत्त्वपूर्ण परिवर्तन था, जिसे ड्च इतिहासकार जान डि व्रिस द्वारा 'उद्यमशील क्रांति' की परिभाषा दी गई जिसमें कुछ विशेष व्यवसायों में पारिवारिक श्रम को संकेन्द्रीत करके कुशलतापूर्वक उपयोग किया गया। यूरोपीय 'खोज की यात्राओं' ने अधिकतर यूरोपीय देशों को व्यापार और लूट के जरिए काफी धन इकट्ठा करने हेतु लाभान्वित किया। कुख्यात दास-व्यापार ने भी उन्हें विश्व के विभिन्न हिस्सों में उनके बागानों के संचालन हेतु काफी सस्ता श्रम मुहैया कराया। आधुनिक विज्ञान का उद्भव और विकास एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष है जिसने यूरोप में आधुनिकीकरण तथा औद्योगीकरण की प्रक्रिया को और बढ़ाया। आधुनिक उद्योग के विकास हेतु नयी प्रौद्योगिकी को तैयार करने में मदद करने के अतिरिक्त, इसने नवाचारों और उनकी अविलंब स्वीकृति को सुगम बनाते हुए यूरोपीय जनता की मानसिकता को धीरे-धीरे बदल दिया।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. औद्योगिक क्रांति का वर्णन कीजिए तथा औद्योगिक क्रांति के दौरान हुए नवीन् और प्रौद्योगिकी परिवर्तन की विवेचना कीजिए।

Describe the industrial revolution and discuss the innovations and technological changes that took place during the industrial revolution.

उत्तर

औद्योगिक क्रांति
(Industrial Revolution)

18वीं सदी में औद्योगिक क्रांति हुई। इससे सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन हुए। यह बदलाव एक स्थायी कृषि और व्यापारिक समाज के आधुनिक औद्योगिक समाज बनने को चिंहित करता है। ऐतिहासिक तौर पर 1750 से 1850 की अवधि ब्रिटेन के इतिहास के सदंर्भ में है। सामाजिक और आर्थिक साँचे में आये नाटकीय परिवर्तनों से इनका स्थान आविष्कार के रूप में जगह आविष्कारों और नई तकनीकी द्वारा मशीनों के तैयार बड़े-पैमाने के उत्पादन की फैक्टरी व्यवस्था और वृहत आर्थिक विशिष्टता ने ले लिया। जो जनसंख्या पहले कृषि में कार्यरत थी अब शहरी कारखानों की ओर बढ़ने लगी। पहले के व्यापारी परिवारों को कच्चा माल देते और उनसे तैयार उत्पादन एकत्र करते थे। इस व्यवस्था से बाजार की बढ़ती माँगों को लम्बे समय तक पूरा नहीं किया जा सकता था। इसलिए 18वीं सदी के अंत तक, अमीर व्यापारियों के द्वारा कारखानों की स्थापना की गई। उन्होंने नई मशीनें लगाई, कच्चे माल से और निश्चित वेतन पर काम करने वाले श्रमिकों से मशीनों में बनी वस्तुएँ बनवाई। इस प्रकार कारखाना प्रणाली का जन्म हुआ।

औद्योगिक क्रांति की शुरुआत ब्रिटेन में भाप की शक्ति के उपयोग से शुरू हुई। वह 1769 में जेम्स वाट के भाप इंजन के आविष्कार के बाद संभव हुआ। 1733 में जॉन केयस ने उड़ती तूरी का आविष्कार किया जिससे कपड़े बुनने की प्रक्रिया को आसान कर दिया और उत्पादन चार गुणा बढ़ा दिया। जेम्स हरग्रीवस ने एक हाथ संचालित चरखा, स्पिनिंग जेनी का आविष्कार किया, इस स्पिनिंग जेनी (कताई चरखे) से एक बार में ही कई गुणा धागे बनने लगे। कताई चरखा स्पिनिंग जेनी के आविष्कार के बाद, सूती वस्त्र इस अवधि का प्रमुख उद्योग बन गया था। कोयले और लोहे की बड़ी मात्रा में उपस्थिति ब्रिटेन के तेजी से औद्योगिक विकास में एक निर्णायक कारक साबित हुआ। नहरों और सड़कों के निर्माण, इसी तरह से रेल और जहाज के आगमन थे, निर्मित वस्तुओं के लिए बाजारों को फैलाया। पेट्रोल इंजन और बिजली के साथ विकास का नया काल आया। इनके पास वे सभी संसाधन थे जो उसे एक औद्योगिक शक्ति बना सकते थे। औद्योगिक क्रांति का असर दुनिया भर में महसूस किया गया। 1830 के बाद फ्रांस में 1850 के बाद जर्मनी और गृह युद्ध के बाद अमेरिका में औद्योगीकरण शुरू हो गया।

प्रमुख आविष्कार और सुधारों ने इंग्लैंड में कृषि को बढ़ावा दिया। महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों नवाचारों जेथ्रो टुल बीज रोपण ड्रिल से बीजों के समान अंतराल और गहराई पर बिना बर्बाद किए बीज बोने में कृषि में अपनी जगह बना ली है। 1760 से 1830 के बीच, ब्रिटिश संसद ने लगभग 1000 संलग्नक अधिनियमों के द्वारा भूमि को जो पहले उस जिस समुदाय की थी उनको बड़े क्षेत्रों से जोड़ दिया गया। हालाँकि इन सब से लिए कृषि उत्पादन बढ़ाने में मदद मिली। लेकिन उसी समय इसने भूमिहीन लोगों की एक

बड़ी संख्या प्रदान की। अब केवल कुछ ही लोगों की खेतों पर काम करने की जरूरत थी। इसलिए की एक बड़ी संख्या में लोगों ने रोजगार के लिए शहरों की ओर पलायन शुरू कर दिया। इसने कारखानों में काम करने के लिए सस्ते और अधिक मजदूर प्रदान किए।
इंग्लैण्ड में अनुकूल राजनीतिक परिस्थितियों ने भी औद्योगिक क्रांति के विकास में मदद की। व्यापारिक प्रतिबंध हटाने जैसे एक्ट/अधिनियमों और सामूहिक बाजार व्यापारियों के लिए अनुदान था। इंग्लैंड मुख्य रूप से अपने परिवहन में विकास के कारण विदेशी बाजारों पर कब्जा करने में सक्षम था। कई यूरोपीय देशों ने अब वाणिज्यवाद की नीति का पालन शुरू कर दिया था। इस नीति के तहत उद्योगों और व्यापार में सरकारी नियंत्रण प्रयोग किया गया था। यह सिद्धान्त इस पर आधारित है कि राष्ट्रीय शक्ति अधिक निर्यात और कम आयात की ओर संकेत देता है। यह सिद्धांत इस पर भी विश्वास रखता है कि एक राष्ट्र की सम्पत्ति का स्वामित्व उसके सोने और चांदी पर निर्भर करता है तथा सरकार का व्यापार में हस्तक्षेप सीमित होना चाहिए।
इंग्लैंड के अन्य देशों में अधिक भौगोलिक लाभ का भरपूर उपयोग किया। सुरक्षित स्थान के साथ-साथ यह द्वीप समुद्रतट के नजदीक है। परन्तु इसने यूरोप के अन्य देशों से अलग होकर निर्बाध प्रगति की है। जलमार्गों; जैसे नहरों, नदियों और समुद्र ने इंग्लैंड को बिना कर और रुकावट के विशाल मुक्त व्यापार क्षेत्र प्रदान किया। इन सभी लाभों ने इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के लिए उचित स्थिति तैयार की।

औद्योगिक क्रांति के दौरान हुए नवीन और प्रौद्योगिकीय परिवर्तन
(Innovative and Technological Changes During the Industrial Revolution)

कई नवीन आविष्कार और प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों के इस अवधि के दौरान जगह ले ली। इसने औद्योगिक देशों को और अधिक शक्तिशाली और कुशल बनाने में मदद की। अब उत्पादन बड़ी मात्रा में, सस्ता और बहुत तेजी से किया जा सकता था। इन आविष्कारों का कपड़ा और परिवहन उद्योगों पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ा—

1. **वस्त्र उद्योग** (Clothing Industry)—कपड़ा उद्योग में तकनीकी प्रगति ने लोहा और इस्पात उत्पादन में आविष्कारों की एक श्रृंखला शुरू कर दी। अन्य देशों ने इंग्लैंड के उस उदाहरण से प्ररेणा ली जिसमें इंग्लैंड में निर्मित वस्तुओं की दुनिया के बाजार में बाढ़ आ गई। ब्रिटेन ने अपने हितों की रक्षा के लिए एक कानून पारित किया जिसमें कपड़ा मजदूरों को दूसरे देशों की यात्रा करने और औद्योगिक तकनीकी की जानकारी बाहर न खोलने पर प्रतिबंध लगा दिया। परन्तु 1789 में, सैमुएल स्लेटर इंग्लैंड से बाहर निकल कर अमेरिका पहुँचा। वह अपने साथ ब्रिटिश कपड़ा उद्योग का ज्ञान ले गया जिससे अमेरिका में औद्योगिक क्रांति प्रारंभ हुई। अमेरिका में कपास वृक्षारोपण के लिए विशाल क्षेत्रों को दासों के बढ़ते भाग के तहत लाया गया। फ्रांस और जर्मनी में औद्योगिक क्रांति समान घटनाओं से शुरू हुई। आर्क राइट को कारखाने प्रणाली का पिता कहा जाता था। उसने पहला कारखाना मुख्य रूप से घरेलू मशीनों से तैयार किया था, जहाँ काम के घंटे तय थे और लोगों को वास्तव में अनुबंध के आधार पर रखा गया था। 1779 में, शमूएल क्रॉम्पटन ने स्पिनिंग म्यूल का आविष्कार किया; जबकि एडमंड कार्टराईट ने पहले पानी संचालित करघे का आविष्कार किया।
2. **भाप का इंजन** (Steam Engine)—औद्योगिक क्रांति की एक और बड़ी उपलब्धि भाप की शक्ति का विकास और प्रयोग था। पहले के उपकरणों का सुधार किया गया और मशीनों के विकसित रूप में उद्योगों की संख्या को बढ़ाया गया था। इसलिए उत्पादन के लिए अत्यधिक शक्ति की जरूरत थी। 1705 में, थॉमस न्यूकॉमन कोयला खानों से पानी निकालने के लिए एक इंजन का निर्माण किया। 1761 में, जेम्स वाट डिजाइन ने न्यूकॉमन के इंजन के डिजाइन और दक्षता में चौगुना सुधार किया। उसने भाप और निर्वात गाढ़ा करने के लिए ठंडे पानी की एक जेट के साथ एक कक्ष की शुरुआत की। यह भी एक दूसरे से प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण की अवधि थी। वाट ने जॉन विल्किनसन के ड्रिल के बंदूक का इस्तेमाल करने के लिए अपने इंजन के लिए बड़े सिलेंडर बोर किया। भाप इंजन ने जल्द ही पहले लोकोमोटिव कोयला इंजन की जगह ले ली। इससे रेलवे लाइनों की माँग में वृद्धि हुई। प्रौद्योगिकी ने भाप इंजन को हल्का किया। जिससे अन्य उद्योगों इसकी माँग बढ़ी। अब नदियों या किसी भी झीलों के साथ कारखानों का लगाने की जरूरत नहीं थी।
3. **कोयला और लौह** (Coal and Iron)—भाप इंजन ने कोयला और लोहे के साथ आधुनिक उद्योगों की नींव रखी। उनका यह मानना था कि जिन लोगों की मौत की इच्छा हो वही खान में काम कर सकते थे। कोयला क्षैतिज सुरंगों के साथ टोकरी में ले जाया गया था और फिर सीधा घसीट कर सतह तक लाया जाता था। खानों से कोयले का ढकेलना जानवर, आदमी औरत और बच्चों ताकत पर पूरी तरह से निर्भर था। कोयला खानों में काम करने की स्थिति खतरनाक थी। दुर्भाग्य इस काम के लिए बच्चों को उनके छोटे आकार की वजह से पसंद किया जाता था।

TOUCH 'n PASS

भाप शक्ति के उपयोग में वृद्धि के कारण कोयले की माँग बढ़ने लगी। कोयला खानों में कई सुधार किए गए; जैसे सुरंगों को हवादार बनाया गया, विस्फोट के लिए बारूद का इस्तेमाल किया गया। लेकिन कोयला खनिज कई तरह के खतरों और स्वास्थ्य समस्याओं और फेफड़ों की बीमारी से पीड़ित करते थे।

लोहे उद्योग में इस समय के दौरान महत्त्वपूर्ण सुधार किए गए। 1709 में, इब्राहीम डर्बी कोक के साथ ढलवाँ लोहे का उत्पादन किया। इससे पहले ढलवा लोहा लकड़ी के कोयला से प्राप्त किया जाता था जिससे कि तेजी से इंग्लैंड के जंगलों में लकड़ी की कमी हुई। 1784 में, हेनरी कर्ट जो एक आयरन मास्टर थे उन्होंने एक कम भंगुर लोहे के उत्पादन के लिए एक प्रक्रिया विकसित की। यहाँ लोहे लवनहीज को बुलाया गया था। यह औद्योगिक प्रक्रियाओं में एक बहुत ही उपयोगी धातु साबित हुई। 1774 में, जॉन विल्किनसन ने एक ड्रिलिंग मशीन का आविष्कार किया है जिससे सटीकता के साथ छेद किया जा सकता था। 1788 और 1806 के बीच, लोहे के उत्पादन में कई गुना वृद्धि हुई है और लोहे का उपयोग कृषि मशीनरी, हार्डवेयर, जाहज निर्माण, आदि में फैल गया।

लोहा और कपड़ा उद्योग के विकास में यह आवश्यक था कि सस्ती वस्तुएँ और उनकी तेजी से ढुलाई के लिए बेहतर परिवहन सुविधाओं का आविष्कार किया जाए। घरेलू और विदेशी बाजारों की जरूरतों को पूरा करने के लिए ऐसा जल्द-से-जल्द करना आवश्यक था।

4. **परिवहन और संचार के साधन** (Recourses of Transportation and Communication)—परिवहन और संचार के साधनों में सुधार ने औद्योगिक क्रांति को बहुत प्रोत्साहित किया। कच्चे माल, तैयार उत्पादों को, भेजना और लोगों को परिवहन की एक विश्वसनीय प्रणाली की जरूरत थी। 1700 में पुल और सड़क निर्माण में सुधार शुरू में किए गए थे। वे उनके गंतव्यों परिवहनों से कच्चे और कारखानों में तैयार माल को अपने गंतव्य तक पहुँचाने में मदद करते थे। 1814 में, जॉर्ज स्टीवेंसन ने पहले भाप लोकोमोटिव इंजन का निर्माण किया जो रेलवे ट्रैक पर चला। भाप के इंजन और रेलवे पटरियों से जल्दी इंग्लैंड में माल लाने ले जाने के लिए नहर परिवहन को समर्थन मिला। डार्लिंगटन से स्टॉकटन के लिए पहली रेलवे लोकोमोटिव कर्षण का उपयोग करने के लिए यात्रियों के रूप में माल ले जाने के रूप में अच्छी तरह से लाइन वर्ष 1825 था।

मध्य 19वीं शताब्दी के दौरान लकड़ी चालित जहाज की जगह भाप चालित जहाज ने ले ली। इसके तुरंत बाद लोहा जहाज समुद्र के पार यात्रा के लिए इस्तेमाल किया गया था। यद्यपि औद्योगिक क्रांति का पहला चरण भाप पर निर्भर करता है, तो दूसरा चरण बिजली पर निर्भर था। बिजली अब व्यावसायिक रूप से उपलब्ध हो गयी और कारखानों को चलाने के लिए इस्तेमाल की जाने लगी थी। परिवहन, व्यापारिक लेन-देन और संचार की तेजी से मतलब है, सैनिक इकाइयों, कालोनियों, देशों और यहाँ तक कि आम लोगों के बीच तेजी से संपर्क बढ़ना। टेलीग्राफ और टेलीफोन के आविष्कार ने दुनिया में कहीं भी तुरंत संवाद संभव बनाया है।

प्र.2. औद्योगिक क्रांति के सामाजिक व राजनीतिक प्रभावों का वर्णन कीजिए।

Describe the social and political effects of industrial revolution.

उत्तर

औद्योगिक क्रांति के सामाजिक प्रभाव
(Social Effects of Industrial Revolution)

औद्योगिक क्रांति ने नये सामाजिक वर्गों को जन्म दिया तथा सामाजिक सम्बन्धों को निर्वेयक्तिक एवं अर्थ-सापेक्ष बना दिया। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप मनुष्य के सामाजिक सम्बन्धों के आधार-सूत्र बदल गए। सम्बन्धों के परम्परागत, भावनात्मक, कुलपरक, जातिमूलक आधार टूटने लगे। आर्थिक मापदण्ड सम्बन्धों का मुख्य सूत्र बन गया। इस औद्योगिक क्रांति का एक अंधकारपूर्ण पक्ष यह है कि उससे उत्पन्न समृद्धि का अधिकांश लाभ पूँजीपतियों के हिस्से में चला गया और उत्पादन प्रक्रिया में बराबर के भागीदार श्रमिकों को इसका लाभ नहीं मिल पाया। आर्थिक असमानता के आधार पर इन दो वर्गों—पूँजीपति वर्ग एवं श्रमिक वर्ग—की पहचान की जाने लगी। **अर्नोल्ड टॉयनबी** के अनुसार, "औद्योगिक क्रांति के प्रभाव यह सिद्ध करते हैं कि खुली प्रतियोगिता, जनकल्याण में वृद्धि के बिना ही समृद्धि को उत्पन्न कर सकती है।" सम्बन्धों के अर्थ-आधारित होने से समाज में आर्थिक असुरक्षा की भावना बढ़ गई। **ए०ई०आर० बोक** (द ग्रोथ ऑफ वेस्टर्न सिविलाइजेशन) के अनुसार, "औद्योगिक क्रांति के आरम्भ से ही अशांति एवं असुरक्षा, मनुष्य के जीवन की आधारभूत विशेषताएँ बन गयीं। पुरातन व्यवस्था में और कुछ नहीं तो कम-से-कम सापेक्षिक स्थिरता का गुण था।"

TOUCH 'n' PASS

आधुनिक युग के आरम्भ में यूरोप में हुए पुनर्जागरण ने समाज में मध्यम वर्गीय मूल्यों की स्थापना करके एक नये युग का आरम्भ किया था लेकिन लम्बे समय तक मध्यम वर्ग की शक्ति उजागर नहीं हो पायी थी। औद्योगिक क्रांति ने इस वर्ग की शक्ति को अभिव्यक्त किया। अब वैज्ञानिकों, कुशल शिल्पियों, प्रबन्धकों आदि का प्रभाव बढ़ गया। यदि फ्रांस की राज्य क्रांति ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं समानता का पाठ पढ़ाया, तो इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रांति ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता का क्रियात्मक उपयोग सम्भव बना दिया। औद्योगिक क्रांति के बाद श्रमिकों की बढ़ती हुई शक्ति ने एक ऐसी सामाजिक चेतना को जन्म दिया, जिसने व्यक्ति के सम्मान एवं उसके मूलभूत अधिकारों की सफलतापूर्वक माँग की।

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप संयुक्त परिवार प्रणाली को काफी आघात पहुँचा। उत्पादन की घरेलू व कुटीर प्रणाली के स्थान पर फैक्ट्री प्रणाली आने से मालिक व मजदूरों के परस्पर संघर्ष, श्रमिकों के शोषण, श्रमिकों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता के ह्रास, औद्योगिक नगरों व केन्द्रों की जनसंख्या बढ़ने से उनमें स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गईं।

औद्योगिक क्रांति ने मजदूरों की संख्या में भारी वृद्धि की। मजदूरों के पास मजदूरी के अतिरिक्त आजीविका का कोई अन्य साधन न था और उद्योगपति उनका शोषण करने में नहीं हिचकते थे। श्रमिकों को अमानुषिक एवं निराशाजनक परिस्थितियों में काम करना पड़ता था। उन्हें दुर्गन्ध भरे वातावरण में रहना पड़ता था। 1833 ई० की इंग्लैण्ड की पार्लियामेन्ट रिपोर्ट में यह बताया गया कि अस्वास्थ्यप्रद वातावरण में रहने एवं काम करने के कारण ही श्रमिकों के स्वास्थ्य में गिरावट हुई थी। श्रमिकों को सप्ताह में कोई छुट्टी का दिन नहीं मिलता था। उनको 14 से 16 घण्टे प्रतिदिन काम करना पड़ता था। इतना काम करने के बाद भी उन्हें जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी करने लायक पारिश्रमिक भी नहीं मिलता था। स्त्रियों एवं बच्चों से भी पूरा काम लिया जाता था; जबकि उन्हें पारिश्रमिक पुरुषों से कम मिलता था। कारखानों में अकुशल श्रमिक भरती करना नियम-सा बन गया था। बच्चों और औरतों को प्राथमिकता दी जाती थी; क्योंकि वे सस्ते तथा आसानी से उपलब्ध हो जाते थे। बच्चों को दिन में सोलह घण्टे तक काम करना पड़ता था। गरीब अपने बच्चों को कारखाना मालिकों को सौंप देते थे ताकि उनकी परवरिश के बोझ से मुक्त हो जाएँ। बच्चों को मशीनों से जंजीरों द्वारा बाँधने से भी वे नहीं चूकते थे ताकि वे भाग न सकें। बच्चों से अमानुषिक स्तर पर काम लिया जाता था। दुर्भाग्य से आज भी दुनिया के कई देशों में बाल श्रमिकों का शोषण हो रहा है। यदि मशीनों पर कार्य के दौरान किसी मजदूर को चोट पहुँचती या मृत्यु हो जाती थी, तो कारखाना मालिक कोई दायित्व स्वीकार नहीं करते थे। इस प्रकार नवोदित श्रमिक वर्ग की दशा दयनीय बनी हुई थी। परन्तु आधुनिक इतिहासकारों ने यह बताने की चेष्टा की है कि मजदूरों की दुर्दशा उन परिस्थितियों का परिणाम थी, जिनका इस क्रांति के आगमन से कोई सम्बन्ध न था। श्रमिकों की बिगड़ती दशा का कारण जनसंख्या में वृद्धि था। जनसंख्या में वृद्धि की प्रवृत्ति क्रांति से पूर्व ही परिलक्षित होने लगी थी। इसके अतिरिक्त औद्योगिक क्रांति का समय निरन्तर युद्धों का समय था, जिसके कारण वैज्ञानिक तथा आर्थिक विकास के लाभ सामने नहीं आ पाये। अठारहवीं सदी के अन्तिम तीन दशकों और उन्नीसवीं सदी के प्रथम दो दशकों में इंग्लैण्ड में फसल अच्छी नहीं हुई थी, जिससे व्यापार में मन्दी आ गयी, वेतन कम हो गए, बेरोजगारी बढ़ी, साथ ही जनता के कष्ट भी बढ़ गए। इन सभी तथ्यों को मद्देनजर रखते हुए भी इस सत्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि औद्योगिक क्रांति के प्रारम्भिक वर्षों में श्रमिकों की दशा शोचनीय थी। प्रोफेसर शार्प ने ठीक ही लिखा है कि, "अब श्रमिक सम्पत्तिहीन, मुद्राहीन और गृहविहीन प्रतिहारी मात्र रह गए थे।"

औद्योगिक क्रांति के अन्तर्गत मालिक एवं श्रमिक के व्यक्तिगत सम्बन्ध समाप्त हो गए। अब उनका रिश्ता एक नकदीय अंतर्बन्धन (कैश नैक्स्स) पर आधारित हो गया; जबकि पुरानी संघीय एवं घरेलू व्यवस्था के अन्तर्गत मालिक एवं व्यक्ति के सम्बन्ध अनेक प्रकार के एवं व्यक्तिगत थे। वे दोनों एक-दूसरे को भली-भाँति जानते थे साथ-साथ काम करते थे, साथ खाते थे, साथ खेलते थे, एवं प्राय: साथ रहते थे। **अर्नोल्ड टॉयनबी** (द इण्डस्ट्रियल रिवोल्यूशन ऑफ द एटीन्थ सेन्चुरी इन इंग्लैण्ड) के अनुसार, "बड़े पूँजीपति मालिकों के नये वर्ग ने यद्यपि अत्यधिक समृद्धि प्राप्त की, लेकिन उन्होंने अपने कारखानों के कार्य में व्यक्तिगत रूप से कोई रुचि नहीं ली या बहुत कम रुचि ली, उनके यहाँ काम करने वाले सैकड़ों व्यक्तियों से वे अपरिचित थे। इसके परिणामस्वरूप मालिकों एवं मनुष्यों के प्राचीन सम्बन्ध समाप्त हो गए एवं एक मानवीय सम्बन्ध का स्थान "नकदीय अन्तर्बन्धन ने ले लिया।"

अठारहवीं शताब्दी के मध्य से उन्नीसवीं सदी के अन्त तक यूरोप की जनसंख्या में तीन गुनी वृद्धि हुई। जनसंख्या में हुई इस वृद्धि को औद्योगिक क्रांति का परिणाम कहा जा सकता है। चिकित्सा क्षेत्र में हुई महत्त्वपूर्ण खोजों के कारण मृत्यु दर में कमी होने से भी जनसंख्या में वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त उन्नीसवीं सदी के आरम्भ तक इंग्लैण्ड में और फिर यूरोप में जो कृषि क्रांति हुई थी उसके कारण अधिकांश लोगों को पर्याप्त मात्रा में भोजन मिलने लगा और वे अधिक स्वस्थ रहने लगे। इस तथ्य पर इतिहासकार डेविड थॉमसन ने प्रकाश डाला है। जनसंख्या में वृद्धि से अनेक नई सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हुईं। जनसंख्या के नगरों में केन्द्रित होने से

आवास समस्या बढ़ी। बेरोजगारी में वृद्धि हुई। जनस्वास्थ्य की समस्या उत्पन्न हुई। प्रदूषित वातावरण, गन्दी बस्तियों तथा शुद्ध पेयजल की व्यवस्था न होने से अनेक रोगों का प्रकोप बढ़ा।

इतिहासकार **सी०डी०एम कैटलबी** ने लिखा है कि "औद्योगिक क्रांति से न तो विशेषाधिकारयुक्त वर्ग उत्पन्न हुआ, न इससे गरीबी आयी और न इससे वर्ग विभेदों को ही प्रश्रय मिला। किन्तु औद्योगिक क्रांति ने निश्चित रूप से ऐसे साधन उत्पन्न कर दिए थे, जिनसे कुछ विशेषाधिकार और शक्तियाँ एक वर्ग के हाथों में केन्द्रित हो गयीं। दूसरी ओर ऐसे मनुष्यों का वर्ग था, जो पैसे पर अपना श्रम बेचता था, जो अपनी जीविका और अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अथवा पूँजी, लालसाओं, साहस और औद्योगिक प्रशिक्षण के अभाव के कारण दूसरों की आर्थिक अधीनता में रहने के लिए मजबूर था।" श्रमिकों की बिगड़ती हुई हालत ने उन्हें ट्रेड यूनियन अथवा मजदूर संघ बनाने के लिए बाध्य किया। मजदूरों के ऊपर जो अत्याचार हो रहे थे, उन अत्याचारों से मुक्ति पाने का यही एकमेव उपाय था। मजदूरों ने समझ लिया था कि एकता में शक्ति है और व्यक्तिगत प्रयत्न की अपेक्षा सामूहिक रूप से काम करना अधिक प्रभावशाली होगा। एक ही व्यवसाय में लगे हुए मजदूरों का संगठन बनाना आसान भी था।

औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप जिन नये वर्गों का जन्म हुआ, वे अपने अधिकारों की माँग करने लगे। श्रमिक वर्ग के साथ-साथ स्त्रियों की ओर से भी नयी माँगें आने लगीं और इन दोनों वर्गों का जीवन के प्रति दृष्टिकोण ही बदल गया। अठारहवीं सदी के अन्तिम चरण से लेकर उन्नीसवीं सदी के मध्य तक के सुधारकों एवं विचारकों ने लगातार सिफारिश की कि स्त्रियों को अधिक राजनीतिक एवं व्यावसायिक सुविधाएँ दी जाएँ ताकि वे स्वतंत्र जीवन अनुभव कर सकें। इन सुधारकों एवं विचारकों में अठारहवीं सदी की मेरी वुल्स्टोनक्रेफ्ट थी तथा उन्नीसवीं सदी का जॉन स्टुअर्ट मिल। प्रथम विश्व युद्ध से पहले स्त्रियों के लिए अनेक नये स्कूल और कॉलेज खुले धीरे-धीरे सभी व्यापार एवं व्यवसाय के द्वारा भी स्त्रियों के लिए खुल गए। विवाहित स्त्रियों को अधिकार मिल गया कि वे अपने स्वतंत्र व्यवसाय से सम्पत्ति अर्जित कर सकती हैं। इस प्रकार एक सामान्य स्त्री भी अपने जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तनों से लाभ उठा सकती थी। परन्तु यह महिला स्वतंत्रता सम्पत्तिहीन श्रमिक महिलाओं के लिए बेमानी थी।

औद्योगिक क्रांति के राजनीतिक प्रभाव
(Political Effects of Industrial Revolution)

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप जो नवीन सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न हुईं, उनके समाधान हेतु यूरोपीय राज्यों के प्रशासकीय कार्यों में वृद्धि हुई। उदाहरणार्थ, उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में जब इंग्लैण्ड की सरकार का ध्यान मजदूरों की दशा और विशेष रूप से बाल श्रमिकों पर होने वाले अत्याचार की ओर आकर्षित हुआ, तो शासन ने श्रमिकों की दशा सुधारने और बाल श्रमिकों के काम के घण्टे कम करने के लिए कानून बनाए। उन्नीसवीं सदी में केवल इंग्लैण्ड में ही चालीस से अधिक फैक्ट्री अधिनियम बने, जिनके अधीन काम के घण्टे, न्यूनतम मजदूरी एवं अन्य बातों की व्यवस्था हुई। यद्यपि एडम स्मिथ, डेविड रिकॉर्डों आदि अर्थशास्त्रियों ने उद्योगों में शासन के हस्तक्षेप का विरोध किया किन्तु औद्योगिक क्षेत्र में राजकीय क्रिया-कलापों में वृद्धि होती गयी। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से औद्योगिक क्षेत्र की प्रत्येक शाखा में राज्य का हस्तक्षेप होने लगा।

अठारहवीं सदी के मध्य तक ब्रिटिश संसद में केवल भूमिपतियों का ही प्रभाव था। औद्योगिक क्रांति ने जिस नये वर्ग को जन्म दिया, वह यह सहन नहीं कर पाया कि राजनीति या संसद में भूमिपतियों का ही वर्चस्व रहे। फलस्वरूप नये नगरों द्वारा संसद में प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिलाने की माँग बढ़ने लगी। यह स्मरणीय है कि इंग्लैण्ड में औद्योगिक केन्द्रों, जिनका विकास कारखाना प्रणाली के साथ हुआ था, का संसद में प्रतिनिधित्व न था। आरम्भ में उभरते मध्यमवर्ग की संसदीय सुधार की माँग का विरोध किया। किन्तु आगे चलकर यह माँग इतनी प्रबल हो गयी कि उसकी उपेक्षा न की जा सकी। उन्नीसवीं सदी में इंग्लैण्ड में अनेक संसदीय सुधार किए गए। 1867 ई० में सरकार को नगरीय मजदूरों को मताधिकार देना पड़ा और फिर 1884 ई० में ग्रामीण मजदूरों को भी यह अधिकार मिला। इस प्रकार औद्योगिक क्रांति से पनपे वर्गों के प्रभाव के फलस्वरूप राजनीतिक सत्ता भूमिपतियों के हाथ से मुक्त हुई और इंग्लैण्ड में जनतंत्र का विकास हुआ। इतिहासकार ऐंसर का मत है कि इंग्लैण्ड में उन्नीसवीं शताब्दी में होने वाले संसदीय सुधार औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप सम्भव हुए थे।

औद्योगिक क्रांति ने उपनिवेश स्थापित करने अथवा अविकसित देशों पर राजनीतिक नियंत्रण स्थापित करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया। उन्नीसवीं सदी में इंग्लैण्ड, फ्रांस, हॉलैण्ड, बेल्जियम आदि देशों ने अपने-अपने औपनिवेशिक साम्राज्य का विस्तार किया, जिससे यूरोपीय राज्यों में औपनिवेशिक एवं व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता शुरू हो गयी। जर्मनी एवं इटली काफी पीछे रह गए; क्योंकि वे एक राष्ट्रीय शक्ति के रूप में 1870 ई० के बाद ही अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर प्रकट हो पाए थे। ये दोनों राष्ट्र भी अन्य यूरोपीय राज्यों की भाँति विशाल औपनिवेशिक साम्राज्य की स्थापना करना चाहते थे। अतः उनका अन्य राष्ट्रों में मनमुटाव स्वाभाविक था।

उन्नीसवीं सदी के अन्तिम चरण में साम्राज्यवादी लिप्सा ने उन्माद का रूप धारण कर लिया। ऐसी स्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय तनाव बढ़ने लगा, जिसके कारण प्रथम महायुद्ध को जन्म देने वाली परिस्थितियों को बढ़ावा मिला।

प्र.3. जीवन पर औद्योगिक क्रांति के आर्थिक प्रभावों का उल्लेख कीजिए।

Explain the economic effects of the industrial revolution on the life.

उत्तर

औद्योगिक क्रांति का आर्थिक प्रभाव
(Economic Effects of Industrial Revolution)

मानव समाज को जितना औद्योगिक क्रांति ने प्रभावित किया, उतना अन्य किसी परिवर्तन ने नहीं। प्रसिद्ध इतिहासकार विल ड्यूरा के अनुसार मानव समाज के इतिहास में दो प्रसिद्ध क्रांतियाँ हुईं, जिन्होंने मानव इतिहास को सर्वाधिक प्रभावित किया है। एक क्रांति उस समय हुई; जबकि उत्तर-पाषाण युग में मनुष्य ने आखेट छोड़कर कृषि एवं पशुपालन का पेशा अपनाया और दूसरी क्रांति वह है; जबकि आधुनिक युग में कृषि छोड़कर व्यवसाय को प्रधानता दी। वस्तुत: औद्योगिक परिवर्तन एक मौन किन्तु महान् क्रांति के रूप में था। सम्पूर्ण आधुनिक इतिहास में किसी घटना के द्वारा मानव जीवन में इससे अधिक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन नहीं लाए गए। इसके अतिरिक्त इसने देश के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में गम्भीर परिवर्तन करके उस पर उल्लेखनीय प्रभाव छोड़े। विभिन्न विद्वानों ने औद्योगिक क्रांति के प्रभावों का अध्ययन जनसंख्या, जीवन-स्तर, श्रमिकों की आर्थिक दशा, आर्थिक विकास की दर, विदेशी व्यापार आदि के संदर्भ में किया है, जिससे पता चलता है कि औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था का झुकाव गाँव से शहर की ओर, कृषि से उद्योग की ओर, गतिहीनता से प्रगति की ओर, छोटे पैमाने से बड़े पैमाने की ओर तथा राष्ट्रीय सीमाओं से अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं की ओर हुआ। **प्रो० नोबेल्स** के अनुसार, "क्रांति का परिणाम था—नई जनता, नये वर्ग, नई नीतियाँ, नयी समस्याएँ और नये साम्राज्य।"

औद्योगिक क्रांति का प्रभाव इस मत से भी प्रकट होता है कि "उन्नीसवीं शताब्दी फ्रांसीसी विचारों एवं ब्रिटिश तकनीक का परिणाम थी।" औद्योगिक क्रांति के कारण मानव समाज की विचारधारा एवं दृष्टिकोण में भी आमूल परिवर्तन हो गया।

औद्योगिक क्रांति का प्रथम प्रभाव उत्पादन पर पड़ा। यन्त्रों के द्वारा कम समय में अधिक वस्तुओं का निर्माण होने लगा। इंग्लैण्ड में औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि निम्न तालिका से स्पष्ट है—

क्र०सं०	वस्तुएँ	अवधि	उत्पादन वृद्धि	स्तर वृद्धि
1.	कच्चा लोहा	1788-1851	68 हजार टन से बढ़कर 25 लाख टन	37 गुणा
2.	कोयला	1780-1854	64 हजार टन से बढ़कर 646 लाख टन	10 गुणा
3.	कपास-खपत	1760-1830	8 हजार टन से बढ़कर 3.2 लाख टन	40 गुणा
4.	कच्चे ऊन का आयात	1801-1849	70 लाख पौण्ड से बढ़कर 740 लाख पौण्ड	10.5 गुणा

उत्पादन बढ़ जाने से इंग्लैण्ड अधिकाधिक माल का निर्यात करने लगा। इससे ग्रेट ब्रिटेन की सम्पदा और शक्ति बढ़ी और वह विश्व की प्रमुख औद्योगिक शक्ति बन गया। 1815 ई० के आते-आते ग्रेट ब्रिटेन विश्व की वर्कशॉप, विश्व की भट्टी, विश्व का बैंकर व विश्व का सबसे बड़ा माल-वाहक बनकर सामने आया।

औद्योगिक क्रांति से पहले सभी व्यवसाय एवं उद्योग घरेलू-प्रणाली के आधार पर संगठित थे। इस पद्धति के अन्तर्गत प्रत्येक कारीगर अपने घर पर अपनी ही पूँजी से इच्छानुसार वस्तुएँ बनाता एवं बेचकर मुनाफा कमाता था। किन्तु यन्त्रों का आविष्कार हो जाने पर कारखाने स्थापित होने लगे, जिनसे सस्ता माल सुलभ हुआ। परिणामत: स्वतंत्र कारीगर उनसे प्रतियोगिता न कर सके। इस प्रकार पुरानी कुटीर उद्योग पद्धति का स्थान कारखाना पद्धति ने ले लिया। धीरे-धीरे बड़े कारखानों में फैक्ट्री पद्धति अपनायी गयी।

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप लोग रोजगार की तलाश में गाँवों से शहरों की ओर भागने लगे। बड़े-बड़े कृषि फार्मों की स्थापना के कारण छोटे किसानों को गाँव छोड़कर काम की तलाश में कारखानों में आना पड़ा, जिससे औद्योगिक केन्द्रों की आबादी बढ़ने लगी। औद्योगिक केन्द्रों के आस-पास नवीन नगरों का विकास हुआ। इंग्लैण्ड में मैनचेस्टर, लीवरपूल, लीड्स आदि बड़े नगरों के रूप में उभरे। जहाँ इंग्लैण्ड में 1700 ई० में 77 प्रतिशत लोग गाँवों में बसते थे, वहाँ 1900 ई० में केवल 20 प्रतिशत लोग गाँवों में रह गए थे और 80 प्रतिशत लोग शहरों में रहने लगे। इस तरह तीव्र गति से जनसंख्या का शहरीकरण हुआ। गाँवों के उजड़ने एवं

TOUCH 'n' PASS

नवीन नगरों के बसने से अर्थव्यवस्था का आधार ही बदल गया। पहले गाँव ही अर्थव्यवस्था के आधार थे। औद्योगिक क्रांति के कारण अब शहर अर्थव्यवस्था के आधार बन गए।

औद्योगिक क्रांति के बाद प्रत्येक औद्योगिक देश के लिए यह आवश्यक हो गया कि वह अपने राष्ट्रीय बाजार को संरक्षित करे। अन्य देशों की निर्मित वस्तुओं पर भारी कर लगाकर राष्ट्रीय उत्पादनों को महत्त्व दिया जाने लगा। परन्तु उत्पादित माल को जब अपने ही देश में खपाना मुश्किल हो गया, तब अविकसित एवं पिछड़े देशों में मण्डियों एवं बाजारों की तलाश करनी पड़ी। बाजारों की आवश्यकता ने सरकारों को उपनिवेश प्राप्ति की ओर प्रेरित किया।

वृहत् स्तर पर उत्पादन, असमान वितरण और एकाधिकारी प्रवृत्तियों से उत्पादकों और उपभोक्ता का प्रत्यक्ष सम्बन्ध समाप्त हो गया और उत्पादन तथा उपभोग में असंतुलन होने से व्यापार-चक्रों की पुनरावृत्ति होने लगी। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में आर्थिक संकट एक अनिवार्य अंग के रूप में सामने आया। इंग्लैण्ड में 1825, 1837, 1847, 1857, 1866, 1873, 1888, 1890, 1900, 1907, 1921 और 1930 ई० की आर्थिक मंदियाँ औद्योगिक क्रांति में संकटों की आवृत्ति के उदाहरण हैं। औद्योगिक क्रांति ने एक नए प्रकार के पूँजीवाद—औद्योगिक पूँजीवाद को जन्म दिया। यह ठीक है कि औद्योगिक क्रांति के बहुत पहले से ही यूरोप में पूँजीवाद का जन्म हो चुका था परन्तु उस काल का पूँजीवाद व्यापारिक पूँजीवाद था, जिसमें पूँजी का उपयोग व्यापार विस्तार के लिए हुआ। उस काल के पूँजीवाद से सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ था परन्तु औद्योगिक पूँजीवाद ने आर्थिक ढाँचे में व्यापक परिवर्तन किए। इस नवीन औद्योगिक व्यवस्था में वही लोग ठहर सके, जिनके पास अधिक पूँजी थी। अधिक पूँजी की आवश्यकता ने संयुक्त स्कन्ध कम्पनियों एवं औद्योगिक निगमों को जन्म दिया। इस नयी व्यवस्था में पूँजीपति का काम उद्योग के लिए धन जुटाना और अन्त में लाभ प्राप्त करना रह गया।

प्र.4. अमेरिका के स्वाधीनता संग्राम की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए।

Describe the major events of the American war of independence.

उत्तर

अमेरिका के स्वाधीनता संग्राम की प्रमुख घटनाएँ
(Major Events of the American war of Independence)

जार्ज तृतीय की हठ के कारण उपनिवेशों की सामूहिक प्रार्थना अस्वीकार कर दी गई, अतएव फिलाडेल्फिया की सभा ने इंग्लैण्ड के विरुद्ध 1775 ई० में युद्ध की घोषणा कर दी। अमेरिका के स्वाधीनता संग्राम की प्रमुख घटनाएँ निम्नलिखित हैं—

1. **लेक्सिंगटन** (Lexingtion) **का युद्ध**—अमेरिका के स्वतन्त्रता की सर्वप्रथम घटना 19 अप्रैल, 1775 ई० में लेक्सिंगटन के स्थान पर हुई। अंग्रेजी और उपनिवेशिक सेना में घमासान युद्ध हुआ, परन्तु हार-जीत का निर्णय न हो सका। कुछ दिनों बाद 25,000 उपनिवेशिकों ने बोस्टन को घेर लिया।
2. **स्वतन्त्रता की घोषणा** (Declaration of Independence)—उपनिवेशिकों की एक सभा पुन: हुई, जिसमें समस्त प्रान्तों को मिलाकर **'संयुक्त राज्य अमेरिका'** (United States of America) का नाम दिया गया। प्रत्येक राज्य के प्रतिनिधि निश्चित किए गए, सब प्रतिनिधियों के हस्ताक्षरों से 'स्वतन्त्रता घोषणा-पत्र' 4 जुलाई, 1776 को जारी किया गया। इस घोषणा-पत्र में कहा गया था, "ईश्वर ने सब मनुष्यों को समान बनाया है। ईश्वर ने उन्हें कुछ ऐसे अधिकार दिए हैं, जिन्हें उनसे कोई छीन नहीं सकता। इन अधिकारों में जीवन, स्वतन्त्रता और सुख के लिए प्रयत्न शामिल हैं।" घोषणा-पत्र में यह भी कहा गया था कि चूँकि ब्रिटिश सरकार ने अमेरिकावासियों पर अत्यधिक अत्याचार किए हैं अतएव, "हम संयुक्त राज्य अमेरिका के नागरिक विश्व के सर्वोच्च न्यायाधीश से यह निवेदन करते हैं कि अब हम स्वतन्त्र राज्य के निवासी हैं तथा हम ब्रिटिश सम्राट के प्रति निष्ठा से मुक्त हो चुके हैं तथा हमारे व ब्रिटेन के मध्य अब किसी प्रकार का राजनीतिक सम्बन्ध शेष नहीं है। अत: वे युद्ध, शान्ति, सन्धि, व्यापार एवं अन्य सभी मामलों में अधिकारिक रूप से निर्णय लेने के लिए स्वतन्त्र हैं जो कि एक स्वतन्त्र राज्य के अधिकार होते हैं।"
3. **बंकर्स हिल** (Bunker's Hill) **की लड़ाई**—दक्षिणी उपनिवेशों ने अपने गवर्नरों को निष्कासित कर दिया और युद्ध में सम्मिलित हो गए। बोस्टन में अंग्रेजों ने बंकर्स पहाड़ी पर अपना मोर्चा लगाया, अतएव उपनिवेशों को इस युद्ध में हारना पड़ा।
4. **ब्रुकलिन** (Brooklyn) **की लड़ाई**—जॉर्ज वाशिंगटन के पास सीमित साधन होते हुए भी उसमें असीम उत्साह, उमंग तथा धैर्य था। यह भीषण से भीषण परिस्थितियों में भी निराश न होने वाला साहसी व्यक्ति था। वह कनाडा को अपनी ओर मिलाना चाहता था, परन्तु असफल रहा। वाशिंगटन क्रामवैल के समान ही अदम्य साहसी था, उसने सेना को शिक्षित किया और पुन: ब्रूकलिन के मैदानों में अंग्रेजों का सामना करने गया, परन्तु उसे पुन: हारना पड़ा। अत: वाशिंगटन को न्यूयार्क तथा न्यूजर्सी को खाली करना पड़ा।

अमेरिका की सरकार को फिलाडेल्फिया (Philadelphia) को भी खाली करना पड़ा। अमेरिकी लगातार हारने से घबरा गए। अंग्रेज जनरल होय (Howe) ने भागती हुई अमेरिकी सेनाओं का पीछा किया। वाशिंगटन ने पुन: सैनिकों में साहस का संचार किया और कुछ सैनिक टुकड़ियों को जनरल होय को पीछे से घेरने को भेज दिया। वाशिंगटन के इस चतुराईपूर्ण कार्य का आश्चर्यजनक परिणाम हुआ। अपने पीछे भी सेना को देखकर होय घबराकर न्यूयार्क वापिस चला गया। उपनिवेशिक सेना में पुन: उत्साह की लहर आ गई।

1777 ई० में अंग्रेजों ने अमेरिकी विद्रोह को पूर्णतया कुचलने का इरादा किया। अंग्रेज जनरल बरगोयने (Burgoyne) ने कनाडा में एक सेना तैयार की और हडसन की ओर प्रस्थान किया। इधर जनरल होय भी उसकी सहायतार्थ न्यूयार्क से हडसन (Hudson) पहुँचा। फिलाडेल्फिया को अंग्रेजों ने घेर लिया। वाशिंगटन ने वीरतापूर्वक अंग्रेजों का सामना किया, किन्तु उसे हारकर फिलाडेल्फिया छोड़कर अपने सर्दियों के स्थान सूकिल (Schuyekili) के किनारे जाना पड़ा। यहीं उसने होय के कैम्प पर आक्रमण करने की योजना तैयार की। उसने अपने पत्र में अपनी कठिनाइयों का वर्णन करते हुए लिखा, 'केवल कुछ सैनिकों के पास एक से अधिक कमीजें हैं, बहुतों के पास एक ही फटी-पुरानी कमीज है और बहुतों के पास वह भी नहीं। अधिकांश जवान नंगे पाँव हैं और उनके नंगे पैरों से बहते हुए रक्त द्वारा यह पता चलाया जा सकता है कि वे किधर गए हैं। इतना ही नहीं उनके पास राशन भी पर्याप्त नहीं है।'

ऐसी कठिन परिस्थितियों में युद्ध करना सरल कार्य न था। इसके अतिरिक्त, सर्दी ने अनेक सैनिकों को बीमार कर दिया तथा अनेक सेना से भागने पर विवश हुए, परन्तु वाशिंगटन के समर्थक उसके साथ डटे रहे और शीघ्र ही उन्हें अपनी सफलता दृष्टिगोचर होने लगी।

5. **साराटोगा** (Saratoga)—जनरल बरगोयने (Burgoyne) तथा होय जब अपने कार्य में सफल हो रहे थे तभी अमेरिकी जनरल गेट्स ने आश्चर्यजनक कार्य किया। उसने आगे बढ़कर उत्तरी हडसन को घेरकर, बरगोयने के रास्ते को बन्द कर दिया। ज्यों ही बरगोयने ने गेट्स पर आक्रमण करने का विचार किया, उसने अपने पीछे जनता का अथाह समुद्र लहरें लेता हुआ देखा। युद्ध हुआ और गेट्स की विजय हुई। बरगोयने को 17 अक्टूबर, 1777 ई० को हथियार डालने पड़े। अंग्रेजों को जब यह समाचार मिला तो वे कांप उठे। लॉर्ड चैथम, जो पहले ही अमेरिका से सन्धि के पक्ष में था, ने कहा, 'तुम अमेरिका को नहीं जीत सकते। मैं एक अंग्रेज हूँ लेकिन यदि मैं अमेरिकी होता तो विदेशी आक्रमण के समय मैं कभी अपने हथियार न डालता कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं।'

अमेरिका की साराटोगा (Saratoga) विजय ने अमेरिकावासियों में नवीन उत्साह का संचार किया। यही नहीं, इंग्लैण्ड के पुराने शत्रुओं को भी विश्वास हो गया कि अब इंग्लैण्ड हार जाएगा, उन्होंने अपने सप्तवर्षीय युद्ध में हार का प्रतिशोध लेना चाहा। फ्रांस ने 1778 ई० में 'संयुक्त राज्य अमेरिका' को स्वतन्त्र देश मान लिया और उससे सन्धि कर इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। कुछ समय पश्चात् स्पेन ने भी इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

यूरोप के देश रूस, डेनमार्क, स्वीडन, हॉलैण्ड तथा पर्शिया ने संगठन बनाया और अमेरिका को भी युद्ध-सामग्री भेजना प्रारम्भ किया। साथ ही यह घोषणा की कि इंग्लैण्ड को किसी तटस्थ राष्ट्र के जहाजों की तलाशी लेने का कोई अधिकार नहीं।

फ्रांस तथा स्पेन की जल सेना भी अब सम्मिलित रूप से अंग्रेजी चैनल में पहुँच गई तथा उसने अंग्रेजी तट पर उतरने की धमकी दी। इसी समय लॉर्ड चैथम ने भी मरते हुए कहा, 'क्या हम बोरबान वंश के सामने दण्डवत् करते हुए लेट जाएँगे।' इन शब्दों ने अंग्रेजी जनता को अपने कर्त्तव्य का बोध करा दिया। यद्यपि अमेरिका में उसे पराजय का सामना करना पड़ा, परन्तु अब देश पर आयी हुई आपत्ति का उन्होंने संगठित होकर सामना किया। स्पेन तथा फ्रांस की जल सेना ने जिब्राल्टर को घेरा। शीघ्र ही हॉलैण्ड भी स्पेन तथा फ्रांस से मिल गया, किन्तु अंग्रेजों ने तीनों देशों की संयुक्त जल-शक्ति का मुकाबला किया।

जनरल बरगोयने के हथियार डालने के कारण इंग्लैण्ड में एक निराशा का वातावरण छा गया था, किन्तु शीघ्र ही लॉर्ड कॉर्नवालिस की विजयों ने निराशा के बादलों को तितर-बितर कर दिया, किन्तु 1781 ई० में लॉर्ड कॉर्नवालिस को अचानक वाशिंगटन ने यार्कटाउन में घेर लिया और लॉर्ड कॉर्नवालिस को हथियार डालने पड़े। यह समाचार जब इंग्लैण्ड पहुँचा तो लॉर्ड नॉर्थ के मुँह से निकला, "सब कुछ समाप्त हो गया।" उसने त्याग-पत्र दे दिया। रौकिंघम प्रधानमन्त्री बना तथा उसने सन्धि की वार्ता प्रारम्भ की। फ्रांस ने भारत के, बंगाल के अतिरिक्त, समस्त प्रान्तों की माँग की। स्पेन ने

जिब्राल्टर की माँग की आयरलैण्ड ने भी अपनी सेना तैयार कर ली। इंग्लैण्ड के साम्राज्य का विघटन होता प्रतीत हुआ, परन्तु उसकी जल-शक्ति ने उसे आशा बंधाई। दो वर्ष और युद्ध चलता रहा, फ्रांस के बेड़े की हार ने अमेरिका को विदेशी सहायता की आशा से वंचित कर दिया। 1783 ई० में दोनों पक्षों ने सम्मानपूर्वक वार्साय की सन्धि पर हस्ताक्षर कर युद्ध बन्द कर दिया।

प्र.5. अमेरिकी स्वाधीनता संग्राम के नेताओं की विवेचना कीजिए।
Discuss the leaders of the American war of independence.

उत्तर

अमेरिकी स्वाधीनता संग्राम के नेता
(Leaders of the American War of Independence)

स्वाधीनता संग्राम के मुख्य नेता इस प्रकार से थे—

1. जॉर्ज वाशिंगटन (George Washington) (1732 ई० से 1799 ई० तक)

वाशिंगटन का जन्म 11 फरवरी, 1732 ई० को ब्रिज्स क्रीक (वर्जीनिया) में हुआ था। 20 जुलाई, 1749 ई० को वाशिंगटन ने भू-मापक का कार्य सम्भाला। कुछ समय पश्चात् वह सेना में सम्मिलित हो गए। उन्होंने चर्च, काउण्टी व सेना के महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। जॉर्ज वाशिंगटन अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति थे, किन्तु उनकी कीर्ति एक राष्ट्रपति के रूप में नहीं वरन् एक स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में अधिक है। उन्होंने अमेरिका की स्वाधीनता के लिए अपार कष्ट सहते हुए अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया। 6 नवम्बर, 1752 ई० को मेजर के पद से उन्होंने अपना सैनिक जीवन प्रारम्भ किया। 24 जुलाई, 1758 ई० को वह वर्जीनिया के प्रतिनिधि चुने गए। उनकी यह सफलता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थी। 1761 ई० में उन्होंने दक्षिण राज्यों की 1887 मील लम्बी यात्रा घोड़ागाड़ी से तय की। 1774 ई० के ऐतिहासिक फिलाडेल्फिया सम्मेलन में उन्होंने वर्जीनिया का प्रतिनिधित्व किया। 16 जून, 1775 ई० को उत्तरी अमेरिका के संयुक्त प्रान्तों के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने कार्यभार ग्रहण किया तथा आगामी 8-9 वर्षों में उन्होंने ब्रिटिश सेना के छक्के छुड़ा दिए। उन्होंने ब्रिटिश सरकार को इस बात के लिए बाध्य किया कि वह अमेरिका को मान्यता प्रदान करे। 28 मई, 1787 को उन्हें फिलाडेल्फिया में फेडरल सम्मेलन (Federal Conference) का अध्यक्ष चुना गया। जॉर्ज वाशिंगटन ने 17 सितम्बर, 1787 ई० को संविधान प्रारूप पर हस्ताक्षर किए व 30 अप्रैल, 1789 ई० को अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति का पद ग्रहण किया।

जिस समय वाशिंगटन राष्ट्रपति बने, अमेरिका की स्थिति अच्छी न थी। देश में नवीन संविधान को न तो किसी परम्परा का सहारा था और न संगठित लोकमत का ही समर्थन प्राप्त था। संविधान के निर्माण के समय दो दल बने थे वे भी एक-दूसरे के विरोधी थे। संघवादी दल वाले शक्तिशाली केन्द्रीय सत्ता के पक्ष में थे और व्यापार तथा व्यापारिक हितों की रक्षा करना चाहते थे। संघ विरोधी दल वाले राज्यों को अधिकार देने तथा कृषि को प्रधानता देने के पक्ष में थे। इसके अतिरिक्त, नवीन शासन को संचालित करने के लिए कार्य-प्रणाली की व्यवस्था भी वाशिंगटन को स्वयं ही करनी थी। कर एकत्र नहीं हो रहे थे। न्याय-विभाग की स्थापना न होने के कारण, कानून लागू करने की व्यवस्था न थी। सेना अत्यन्त दुर्बल थी व नौ-सेना का अस्तित्व समाप्त हो चुका था। ऐसी संकटमयी स्थिति में वाशिंगटन अमेरिका का राष्ट्रपति बना। उसका विवेकपूर्ण नेतृत्व कसौटी पर था।

वाशिंगटन ने राष्ट्रपति पद ग्रहण करते समय अधिकारों का निष्ठापूर्वक पालन करने व अपनी पूर्ण क्षमता से 'संयुक्त राज्य के संविधान के परीक्षण, संरक्षण और प्रतिक्षण' का वायदा किया। जिन गुणों के कारण वाशिंगटन क्रांति का प्रथम सैनिक बना था, उन्हीं गुणों ने उसे नवसंगठित गणतन्त्र का प्रथम राजनीतिज्ञ बना दिया। वाशिंगटन में भविष्य के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण योजनाएँ बनाने की दूरदर्शिता और असीम कष्ट सहने की क्षमता थी। वह चतुर की अपेक्षा सरल होना पसन्द करता था। वह साहसी व पराक्रमी होते हुए भी शालीन था, गम्भीर और यथार्थत: नम्र था तथा लोगों में अपने प्रति सम्मान तथा विश्वास उत्पन्न कर लेने की उसमें अद्भुत क्षमता थी।

इस प्रकार जॉर्ज वाशिंगटन के नेतृत्व में अमेरिका ने अपना जीवन प्रारम्भ किया। उसकी योग्य नीतियों से युद्ध से उत्पन्न हुई समस्याएँ सुलझने लगीं व देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होने लगा। उत्तरी न्यूयार्क, पेनसिलवानियाँ और वर्जीनिया की सम्पन्न घाटियाँ शीघ्र ही विशाल गेहूँ-उत्पादक क्षेत्रों में परिणत हो गईं। व्यापार व उद्योग का विकास भी तीव्र गति से हुआ। मैसाचूसेट्स और रोड आइलैण्ड में कपड़े के महत्त्वपूर्ण उद्योग की नींव पड़ रही थी। न्यूयार्क, न्यूजर्सी और पेनसिलवानिया कागज, काँच व लोहे का निर्माण करने लगे थे। जहाजरानी इतनी बढ़ गई थी कि समुद्र पर इंग्लैण्ड के पश्चात् अमेरिका का स्थान हो गया। 1790 ई० से पूर्व ही अमेरिकी जहाज समूर बेचने और वहाँ से चाय, मसाले और रेशम लाने के लिए चीन जाने लगे थे।

जॉर्ज वाशिंगटन 1797 ई० तक राष्ट्रपति पद पर आसीन रहे। उनके पदमुक्त होने से पूर्व सरकार संगठित हो चुकी थी, राष्ट्रीय साख जम चुकी थी, समुद्री व्यापार बढ़ रहा था, उत्तर-पश्चिम क्षेत्र पर पुन: अधिकार हो गया था और शान्ति सुरक्षित हो गई थी। 4 जुलाई, 1798 ई० को वाशिंगटन ने ले० जनरल व प्रधान सेनापति का पद ग्रहण किया। 14 दिसम्बर, 1799 ई० को इस महान् स्वतन्त्रता सेनानी व अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति की मृत्यु हो गई।

2. टॉमस जैफर्सन (Thomas Jefferson) (1743 ई० से 1826 ई० तक)

टॉमस जैफर्सन का जन्म 1743 ई० में हुआ था। उसके पिता का नाम पीटर जैफर्सन था, जो कि एक एस्टेट (Estate) का स्वामी था। जैफर्सन के बाग-बगीचों में अनेक दास (Salves) काम करते थे। उनका भविष्य में जैफर्सन की विचारधारा पर व्यापक प्रभाव पड़ा। जैफर्सन ने 5 वर्ष की आयु से स्कूल जाना प्रारम्भ किया। प्रारम्भ में चार वर्ष वह अंग्रेजी स्कूल में पढ़ा। नौ वर्ष की आयु में उसने लैटिन स्कूल जाना प्रारम्भ कर दिया। 16 वर्ष की आयु में उसने विलियम एण्ड मैरी कॉलेज (William and Marry College) में दाखिला ले लिया। इस कॉलेज में अध्ययन करते समय वह विलियम स्माल (William Small) नामक एक गणित के प्रोफेसर के सम्पर्क में आया। उनके प्रभाव से जैफर्सन की विचारधारा उदारवादी हो गई।

अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् जैफर्सन ने वकालत करना प्रारम्भ कर दिया। उसने मार्था वेल्स स्केल्टन (Martha Wayles Skelton) नामक एक विधवा स्त्री से विवाह किया। उसका विवाहित जीवन अत्यन्त सुखी था। उसके 6 बच्चे हुए थे, किन्तु जीवित केवल दो पुत्रियाँ ही रहीं। दुर्भाग्यवश जैफर्सन की पत्नी की मृत्यु हो गई। जैफर्सन ने उसके पश्चात् दूसरा विवाह नहीं किया। 1776 ई० से 1779 ई० तक वह लेजिस्लेटर रहा। 1779 ई० में जैफर्सन ने मुक्त शिक्षा प्रदान करने हेतु विधेयक पारित कराने का प्रयास किया, किन्तु वह अपने उद्देश्य में सफल न हो सका। जैफर्सन शिक्षा को अत्यधिक महत्त्व देता था।

जैफर्सन ने अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। 10 मई, 1775 ई० को फिलाडेल्फिया में द्वितीय महाद्वीपीय कांग्रेस की बैठक हुई थी। इस कांग्रेस की वास्तविक प्रकृति, 'शस्त्र उठाने के कारण और आवश्यकता' की उस उत्तेजक घोषणा से स्पष्ट हुई थी, जिसे जैफर्सन ने बनाया था। जैफर्सन ने कहा, "हमारा कर्त्तव्य न्यायसंगत है। हमारी एकता सम्पूर्ण है। हमारे आन्तरिक साधन बहुत हैं और यदि आवश्यकता पड़ी तो विदेशी सहायता भी हम प्राप्त करेंगे। जो शस्त्र हमारे शत्रुओं ने हमें उठाने के लिए विवश किया है, उन्हें हम अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए प्रयोग करेंगे, हम दास होने की अपेक्षा स्वतन्त्र होकर मरने का एकमत संकल्प कर चुके हैं।"

जैफर्सन स्वतन्त्र लोकतन्त्र का पक्षधर था। जैफर्सन अत्यन्त चिन्तनशील व दार्शनिक था। उसका मुख्य उद्देश्य अधिकाधिक व्यक्तिगत स्वतन्त्रता प्राप्त करना था; क्योंकि उसका विश्वास था कि संसार में 'प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक जनसमूह को स्वशासन का अधिकार है।' जैफर्सन अत्याचार व निरंकुशता का घोर विरोधी था तथा सदैव स्वतन्त्रता के विषय में सोचता था। उसका मानना था कि सब स्वतन्त्र पैदा होते हैं तथा उन्हें स्वतन्त्र ही रहना चाहिए।

1800 ई० में जैफर्सन अमेरिका का तीसरा राष्ट्रपति बना। उदारवादी विचारों के कारण उसे छोटे किसानों, दुकानदारों व अन्य कर्मकारों का समर्थन प्राप्त था। राष्ट्रपति बनने के पश्चात् उसने अपने एक मित्र को लिखा, "हमारे पोत के दृढ़ पार्श्वों की परीक्षा हो चुकी है। हम उसे उसके गणतान्त्रिक मार्ग पर बढ़ाएँगे और अब वह अपनी मनोहर गति से अपने निर्माताओं की कुशलता को स्पष्ट करेगा।" उसने अपने प्रथम भाषण में एक विवेकपूर्ण और मितव्ययी सरकार की स्थापना करने की प्रतिज्ञा की जो देश के निवासियों के मध्य व्यवस्था की रक्षा करते हुए उन्हें अपने उद्देश्य और विकास के प्रयत्नों को नियन्त्रित करने के लिए पूर्ण स्वतन्त्रता देगी।

राष्ट्रपति निवास में जैफर्सन की उपस्थिति से ही प्रजातान्त्रिक प्रणालियों को प्रोत्साहन मिला। जैफर्सन के लिए एक साधारण नागरिक भी उतना प्रतिष्ठित था, जितना उच्चतर अधिकारी। उसने कर्मचारियों को यह सिखाया कि वे जनता के सेवक हैं। उसने कृषि व पश्चिम की ओर विस्तार को प्रोत्साहित किया। यह विश्वास कर कि अमेरिका उत्पीड़ितों का आश्रयदाता है, उसने नागरिकता के कानून को सरल बना दिया। सम्पूर्ण अमेरिका में शीघ्र ही जैफर्सनवादी भावना की लहर प्रवाहित होने लगी। परिणामस्वरूप एक के बाद एक राज्यों ने कानूनों को उदार बनाया।

जैफर्सन का एक प्रमुख कार्य नेपोलियन से लुइजियाना को खरीदना था। इससे अमेरिका का क्षेत्रफल लगभग दुगना हो गया। मिसिसिपी नदी के पश्चिम का प्रदेश मुहाने पर स्थित न्यू आर्लियन्स के बन्दरगाह सहित चिरकाल से स्पेन के अन्तर्गत था। बन्दरगाह ओहायो और मिसिसिपी घाटियों में उत्पन्न अमेरिकी माल के निर्यात के लिए आवश्यक था। जैफर्सन के राष्ट्रपति बनने के बाद ही नेपोलियन ने स्पेन की सरकार को विवश किया कि वह लुइजियाना नामक प्रदेश फ्रांस को वापिस कर दे। इससे

TOUCH 'n PASS

अमेरिका के लोग अत्यन्त क्रोधित हुए; क्योंकि अमेरिका के ठीक पश्चिम में बड़ा औपनिवेशिक साम्राज्य बसाने की नेपोलियन की योजनाओं से व्यापारिक अधिकार और भीतर की सभी बस्तियों की सुरक्षा को संकट उत्पन्न हो जाता। जैफर्सन ने दृढ़तापूर्वक नेपोलियन के इस कार्य का विरोध किया तथा कहा कि यदि फ्रांस ने लुइजियाना पर अधिकार किया तो उसी क्षण से हम इंग्लैण्ड से गठबन्धन कर लेंगे तथा यूरोप के युद्ध में चला पहला तोप का गोला न्यू आर्लियन्स पर इंग्लैण्ड व अमेरिका की संयुक्त सेना के आक्रमण का संकेत होगा। नेपोलियन यह जानता था कि ऐमियन्ज की स्वल्पकालिक सन्धि के पश्चात् इंग्लैण्ड से एक दूसरा युद्ध होने वाला है और जब यह होगा तब लुइजियाना उसके हाथ से निकल जाएगा। इसलिए उसने लुइजियाना को अमेरिका के हाथ बेचने का निश्चय किया।

1803 ई० में अमेरिका ने डेढ़ करोड़ डॉलर में 26 लाख वर्ग किलोमीटर से भी अधिक भूमि व न्यू आर्लियन्स का बन्दरगाह खरीद लिया। अमेरिका को इससे बहुत लाभ हुआ। उसे सम्पन्न मैदानों का एक बहुत बड़ा क्षेत्र मिल गया था, जो अगले 80 वर्षों के भीतर विश्व का बहुत बड़ा अन्न भण्डार बनने वाला था। इसके अतिरिक्त, इसके द्वारा महाद्वीप की सभी प्रमुख नदियों पर भी नियन्त्रण रखा जा सकता था।

जैफर्सन के इस कार्य से उसकी लोकप्रियता दूर-दूर तक फैल गई; क्योंकि लुइजियाना बहुत बड़ा उपहार था, देश सम्पन्न था और राष्ट्रपति ने सभी वर्गों के लोगों को प्रसन्न करने का कठोर प्रयास किया था। इसी कारण 1805 ई० में वह पुन: राष्ट्रपति पद के लिए चुन लिया गया व 1809 ई० तक राष्ट्रपति के पद पर कार्य करता रहा।

जैफर्सन में शिक्षा व महानता के प्रति प्रेम कूट-कूट कर भरा हुआ था। अत: 1809 ई० में पदमुक्त होने के पश्चात् भी वह वर्जीनिया विश्वविद्यालय के विकास के लिए कार्यरत रहा। उसके विचार अत्यधिक आधुनिक थे, इसी कारण उसकी विचारधारा को कुछ लोग बीसवीं सदी की मानते थे। अब्राहम लिंकन (Abraham Lincoln) ने जैफर्सन के विषय में लिखा है, "आधुनिक समय में अमेरिका का प्रत्येक दल जैफर्सन को अपना आदि पुरुष मानता है।"

विल्सन (Woodrow Wilson) ने भी जैफर्सन की प्रशंसा करते हुए लिखा है, "जैफर्सन अपनी उपलब्धियों के कारण नहीं बल्कि मानवता के प्रति रुख के कारण अमर हैं।"

जैफर्सन ने अपनी कब्र पर लिखवाने के लिए स्वयं ही लेख (Epitaph) लिखा। जैफर्सन ने लिखा, "यहाँ पर स्वाधीनता की घोषणा का लेखक, धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए वर्जीनिया की स्टेच्यू व वर्जीनिया विश्वविद्यालय का पिता टॉमस जैफर्सन दफनाया गया है।"

जैफर्सन की मृत्यु 4 जुलाई, 1825 ई० को हुई।

प्र.6. ब्रिटेन में औद्योगीकरण की विभिन्न प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

Describe the different processes of industrilisation in Britain.

उत्तर

ब्रिटेन में औद्योगीकरण
(Industrilisation in Britain)

जैसाकि जाना जाता है, आधुनिक औद्योगीकरण को अपने उच्च स्तर तक पहुँचते हुए, उन्नीसवीं सदी के मध्य में पहली बार ब्रिटेन में वास्तविक बनाया गया। ब्रिटेन प्रथम औद्योगिक राष्ट्र था जो उत्पादन तथा जनसंख्या के बीच संतुलन को स्थापित कर पाया। पहली बार उन्नीसवीं सदी के दौरान जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के साथ प्रति व्यक्ति आय में भी वृद्धि हुई। पचास वर्षों से ज्यादा तक ब्रिटेन औद्योगिक विश्व के सबसे आगे रहा। इस अवधि में, एरिक हॉब्सबाम के अनुसार, ब्रिटेन विश्व की 'एकमात्र कार्यशाला, इसका एकमात्र बड़ा आयातक और निर्यातक, इसका एकमात्र वाहक, इसका एकमात्र साम्राज्यवादी, इसका लगभग एकमात्र विदेशी निवेशक ..... है। इसकी एकमात्र नौसैनिक शक्ति और इकलौता जिसके पास एक वास्तविक विश्व नीति थी'। आधुनिक औद्योगीकरण ने ब्रिटेन को वैश्विक मामलों में शक्ति के एक अद्वितीय शिखर तक पहुँचा दिया और इसने यूरोप के अन्य देशों को जल्दी से जल्दी औद्योगीकृत होने हेतु प्रेरित किया, बल्कि कहें कि दबाव डाला। इसी अवधि के दौरान अर्थव्यवस्था की संरचना में परिवर्तन हुआ, तकनीकी नवाचार अपनाए गए और विनिर्माण उद्योग के संगठन, विशेषत: सूती वस्त्र और लोहे के क्षेत्र में परिवर्तित हो गए।

विकास के विभिन्न सूचकों के अनुसार 17वीं तथा 18वीं सदी के दौरान फ्रांस और नीदरलैंड ब्रिटेन से पीछे नहीं थे। अत: कुछ इतिहासकारों द्वारा यह तर्क दिया गया कि ब्रिटेन पहले औद्योगीकृत हो गया, इसका यह अर्थ नहीं कि यह पूर्व निर्धारित या अपरिहार्य था। उदाहरण के लिए, क्राफ्ट्स तर्क रखते हैं कि 'यह तथ्य कि ब्रिटेन 1790 में 'ज्यादा उन्नत' या और उसमें आगे की

TOUCH 'n' PASS

प्रगति की बेहतर संभावना थी। इसका तात्पर्य यह नहीं कि 1740 में फ्रांस की तुलना में ब्रिटेन में प्रथम औद्योगिक क्रांति को सफल करने की बेहतर संभावना थी'। फिर भी इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि 16वीं सदी से ही, बल्कि विशेष रूप से 18वीं सदी के दौरान ब्रिटिश आर्थिक वृद्धि की दिशा बाकी यूरोप से भिन्न थी और इसका परिणाम आधुनिक औद्योगीकरण के प्रथम विस्फोट के रूप में हुआ। 1750 और 1850 के बीच, ब्रिटेन स्वयं को पूरी तरह से औद्योगीकृत कर चुका था और विश्व में सबसे अधिक औद्योगीकृत देश बन चुका था। इसका औद्योगीकरण मुख्यत: सूती वस्त्र (कॉटन), लोहा और खनिज उद्योगों के इर्द-गिर्द व्यवस्थित था। वह मुख्य कारक जिन्होंने इस प्रथम प्रमुख औद्योगीकरण को चालित किया, वह निम्न हैं—

1. **कृषि संरचना**—आधुनिक औद्योगीकरण की प्रमुख विशेषता थी, मानवीय एवं भौतिक संसाधनों का कृषि से उद्योगों की तरफ स्थानातंरण। इस संबंध में, हम पाते हैं कि 19वीं सदी के मध्य में ब्रिटेन अन्य यूरोपीय देशों से कहीं आगे था। कृषि संबंधी बदलावों की गति काफी तेज थी। इसका परिणाम था उत्पादन में बढ़ोत्तरी, जो गैर-कृषि क्रियाओं में व्यस्त जनसंख्या का भरण-पोषण कर सकता था। एक अवधि के दौरान इंग्लैंड की खेती में आए इस परिवर्तन को 'कृषि क्रांति' कहा गया। यह प्रक्रिया ब्रिटेन में किसी भी अन्य देश की तुलना में काफी पहले प्रारंभ हो चुकी थी। इसकी चार प्रमुख विशेषताएँ थीं—मध्ययुगीन खुले खेतों की प्रणाली की जगह बड़ी बाड़बंद इकाइयों में खेती करना, कृषि और पशु-पालन को बढ़ावा देने के लिए साझा भूमियों का समावेश, भूमि से किसानों का निष्कासन और कृषि मजदूरों में उनका रूपांतरण तथा कृषि उत्पादकता में अत्यधिक वृद्धि। यहाँ तक कि 18वीं सदी के प्रारंभ में, कृषि योग्य भूमि का लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा कुलीन और आभिजात्य वर्ग के अधिकार में था, जो 18वीं सदी के अंत तक बढ़ाकर 75 प्रतिशत से अधिक हो गया। इसमें से अधिकतर भूमि बड़े काश्तकार किसानों को पट्टे पर दी गई थी, जिनके पास पर्याप्त मात्रा में कृषि संबंधी औजारों, पशुओं और कुशल श्रमिकों की मदद से कृषि उत्पादन करने के संसाधन उपलब्ध थे। इंग्लैंड में अधिकतर भूमि पर बड़े काश्तकार-किसानों द्वारा खेती की जा रही थी; जबकि अधिकतर ग्रामीण श्रम शक्ति वेतनभोगी मजदूर के रूप में थी। बाजार और लाभ की तरफ उन्मुख होने से ब्रिटेन की खेती अठारहवीं सदी के अंत तक पूँजीवादी ढंग की थी। यह एक ऐसी विशिष्ट कृषि-संरचना थी जिसका समानांतर उदाहरण यूरोपीय महाद्वीप समेत पूरे विश्व में भी नहीं था। यह भूमि पर कम-से-कम शारीरिक श्रम का उपयोग करके कृषि उत्पादन में वृद्धि पर टिकी थी। फसलों के चक्रानुक्रम के विभिन्न तरीकों की वजह से कृषि में उत्पादकता काफी अधिक बढ़ी जिससे औद्योगिक कार्यों हेतु कृषि श्रमिकों की एक बड़ी भारी संख्या उपलब्ध हो गई। 1840 में ब्रिटिश पुरुष श्रमिकों की भौतिक उत्पादकता फ्रांस के श्रमिकों की तुलना में 50 प्रतिशत तथा स्विट्जरलैंड, स्वीडन, जर्मनी और रूस के श्रमिकों की अपेक्षा सौ प्रतिशत अधिक आंकी गई। बढ़ती हुई संकेंद्रीयता तथा भूमि के अपेक्षाकृत प्रभावी प्रबंधन ने खाद्य उत्पादकता को बढ़ाया तथा श्रमिकों की एक बड़ी भारी संख्या को कृषि से बंधनमुक्त किया जिन्हें आगे आने वाले उद्योग-धंधों में सस्ते वेतन पर रोजगार दिया जा सकता था। इस अवधि के दौरान उत्पादकता में वृद्धि इतनी अधिक थी कि ब्रिटेन को 'यूरोप के अन्नागार' के रूप में जाना गया। 1750 के दौरान इसने यूरोपीय महाद्वीप को अपने खाद्यान्न उत्पादन का लगभग 13 प्रतिशत निर्यात किया।

   इस प्रकार, कृषि से औद्योगिक की तरफ ब्रिटिश अर्थव्यवस्था का क्रमिक रूपांतरण, आय के तरीकों में उल्लेखनीय बदलाव तथा नए सामाजिक वर्गों की उत्पत्ति और विकास उस संपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तन के भाग थे जो कि औद्योगीकरण के उदय के समय स्वरूप ग्रहण कर रहा था। कृषि से उद्योग की तरफ श्रम का स्थानांतरण बहुत तेजी से हुआ था। 1840 में ब्रिटेन में 48.3 प्रतिशत आबादी शहरी केन्द्रों में रहती थी, सिर्फ 25 प्रतिशत श्रम शक्ति ही प्राथमिक क्षेत्र में संलग्न थी, केवल 28.6 प्रतिशत पुरुष श्रम शक्ति ही खेती में संलग्न थी तथा प्राथमिक क्षेत्र से होने वाली आय सिर्फ 24.9 प्रतिशत ही थी। दूसरी तरफ उद्योग में 47.3 प्रतिशत श्रम शक्ति संलग्न थी तथा उद्योगों से होने वाली आय 31.5 प्रतिशत थी। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि 1759 में उद्योग में पुरुष श्रम शक्ति का अनुपात 23.8 प्रतिशत तथा 1801 में 29.5 प्रतिशत था, यह वास्तव में एक बड़ा संरचनात्मक बदलाव था।
2. **जनसांख्यिकीय बदलाव**—ब्रिटेन में जनसंख्या वृद्धि की दर यूरोपीय महाद्वीप की तुलना में अधिक थी। अठारहवीं सदी के दौरान जनसंख्या में अचल विकास हुआ और इंग्लैंड तथा वेल्स में जनसंख्या 1701 में लगभग 5.8 मिलियन से 1831 में लगभग 14 मिलियन तक तीन गुना बढ़ गई। 18वीं सदी के पूर्वार्द्ध में जनसंख्या वृद्धि मामूली थी; जबकि 18वीं और 19वीं सदी के अंत के दौरान यह बहुत तेजी से बढ़ी। 1781 और 1911 के मध्य, प्रति दशक औसतन 10 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। इंग्लैंड में जनसांख्यिकीय बदलाव अन्य यूरोपीय देशों से कहीं अधिक था। इंग्लैंड की जनसंख्या 1680

और 1820 के मध्य 133 प्रतिशत तक बढ़ गई; जबकि फ्रांस में तुलनात्मक वृद्धि 39 प्रतिशत थी और नीदरलैण्ड में केवल 8 प्रतिशत। एक तरफ नई अर्थव्यवस्था का औद्योगीकरण से निकट संबंध था और दूसरी तरफ जनसंख्या में वृद्धि से भी। जनसंख्या के विस्तार ने विकसित उद्योग को विस्तृत बाजार के साथ-साथ सस्ती और अधिक श्रम शक्ति प्रदान की। दूसरी तरफ, औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने आय के स्तर में वृद्धि करके बढ़ती जनसंख्या को समर्थन दिया। अठारहवीं सदी में शहरी जनसंख्या में भी काफी तेजी से वृद्धि हुई और लंदन में 1750 के आसपास लगभग 750,000 लोग थे, जिसने इसे यूरोप में सबसे बड़े शहर के रूप में स्थापित किया। इंग्लैंड में शहरीकरण का स्तर भी काफी उन्नत था। अत: 1801 में 27.5 प्रतिशत में जनता इग्लैंड शहरी क्षेत्रों में रहती थी; जबकि फ्रांस में यह केवल 11 प्रतिशत थी। 1871 तक, इग्लैंड की आबादी का लगभग दो-तिहाई हिस्सा शहरी था जोकि किसी अन्य यूरोपीय देश की तुलना में कम-से-कम दोगुना ज्यादा था।

3. **तकनीकी नवाचार**—उत्पादन को बढ़ाने के लिए कुछ यांत्रिक उपकरणों के उपयोग का औद्योगीकरण की प्रक्रिया में क्रांतिकारी परिणाम रहा। इसके अतिरिक्त, यह किसी एक आविष्कार का नवीन रूप में अपनाना ही नहीं था, जिसने आधुनिक औद्योगीकरण के प्रथम चरण को निर्मित किया। बल्कि, यह नवाचारों के समूह को अपनाना था। यह पूरी प्रक्रिया 18वीं सदी के अन्त तथा आरंभिक 19वीं सदी के ब्रिटेन में अर्थव्यवस्था को मूलगामी रूप में रूपांतरित करने में निर्णायक सिद्ध हुई। तकनीकी स्तर पर, ब्रिटिश उद्यमी अपेक्षाकृत अधिक नवाचारों को अपनाने वाले तथा अधिक जोखिम उठाने वाले थे। कई प्रकार की ऐसी मशीनों को बनाया गया तथा उत्पादन में उनका परीक्षण किया गया जो श्रम की बचत करती थी। स्पिनिंग जेनी (जिसका आविष्कार जेम्स हारग्रीव्ज द्वारा 1764 में हुआ) काते हुए सूत को यांत्रिकीय रूप से घुमाकर कताई की गति को बढ़ाने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण आविष्कार था जो पहले मानवीय श्रम द्वारा किया जाता था। कोई भी कारीगर अब एक ही साथ कई धागों को कात सकता था। इसके शुरुआती रूप में इसमें 3 तकले (स्पिन्डल) थे। 1770 में 16 तकले (spindles), 1784 तक 80 तकले और 18वीं सदी के अंत तक 120 तकले वाली बड़ी जेनी (Jenny) संचालित की गई। चूंकि, कई तकले वाली एक जेनी, एक अकेले मजदूर द्वारा संचालित की जा सकती थी, अत: उत्पादन क्षमता में अत्यधिक विस्तार बिल्कुल स्पष्ट है। दूसरा महत्त्वपूर्ण आविष्कार 1769 में रिचर्ड आर्कराइट द्वारा निर्मित वॉटर-फ्रेम (water-frame) था जिसने सूत की कताई को मजबूती दी। 1779 में क्रॉम्पटन द्वारा इन दोनों मशीनों को एक सबसे महत्त्वपूर्ण आविष्कार में संयोजित कर दिया गया। क्रॉम्पटन की मशीन ने महीन और बेहतर सूत को बहुत तेजी से और अत्यंत कम कीमत पर कातना संभव बनाकर हाथ से कातने की भारतीय तकनीक को पूरी तरह से हटा दिया। जल और वाष्प की शक्ति से संयोजित इस महान आविष्कार ने अगली एक सदी तक कपड़ा उद्योग पर वर्चस्व बनाये रखा। इन तकनीकी नवाचारों ने कपड़ा उद्योग ने, जो कि औद्योगिक क्रांति का अग्रणी उद्योग था, श्रम लागत की बचत और सस्ती दर पर उत्पादन के लिए परिस्थितियां तैयार की। मशीनों को चलाने में वाष्प-ऊर्जा के उपयोग और परिष्करण ने कार्य-कुशलता में सुधार किया।

हालाँकि यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि 18वीं सदी में अधिकांश प्रौद्योगिकी जिसने आधुनिक औद्योगीकरण की शुरुआत की, वह नए तरीके के बजाए पहले के विकासों की परिणिति थी। लेकिन जो महत्त्वपूर्ण है, वह यह है कि 18वीं सदी के अंत और 19वीं सदी के प्रारंभ में नवाचारों की तरफ झुकाव अब एक अभूतपूर्व स्तर पर प्रारंभ हो चुका था। पहले की तकनीकियों के सुधार ने औद्योगिक संगठनों की नई संरचनाओं के अंतर्गत उन्हें और भी ज्यादा शक्तिशाली और व्यावहारिक बना दिया।

4. **कारखाना प्रणाली**—फैक्ट्री अथवा कारखाना, जो कि उत्पादन की कारीगर उत्पादन प्रणाली से विकसित हुआ था एक अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता थी जो आधुनिक औद्योगीकरण के युग को पारिभाषित करती है। कुछ नवीन तकनीकी आविष्कार, विशेषत: कताई में; जैसे—वॉटर फ्रेम (water frame) और म्यूल (Mule) अत्यंत बड़े और महंगे थे तथा इन्हें कारीगरों के घरों में रखना कठिन था। इसके संचालन के लिए उन्हें ऊर्जा के बड़े स्रोत; जैसे—जल या वाष्प की भी आवश्यकता थी। उपयोगी और ज्यादा लाभदायक बनाने के लिए इन्हें केन्द्रीय ऊर्जा स्रोत के आसपास बने कारखानों में स्थापित किया जाना था—आरंभ में वाटर व्हील (water wheels) और बाद में बड़े स्टीम इंजन (Steam Engines) के आसपास। एक कारखाने में एक ही छत के नीचे बड़ी संख्या में मजदूरों को इकट्ठा करने की प्रक्रिया का परिणाम उद्योग की संरचना में सबसे क्रांतिकारी परिवर्तन के रूप में हुआ। कारीगरों की कार्यशाला या सौदागरों द्वारा नियंत्रित विनिर्माण

TOUCH 'n PASS

केन्द्रों से विकसित होकर, इन कारखानों ने मजदूरों के बड़े समूह को एक साथ सुपरवाइजर की निगरानी में बड़ी मशीनों को संचालित करने हेतु इकट्ठा किया। उत्पादन अब विभिन्न नियमित स्तरों में बंट चुका था जो मजदूरों द्वारा संचालित व मशीनों द्वारा होता था। ब्रिटेन में कपास उद्योग में कारखाना प्रणाली प्रभावी हो गई थी, विशेषत: कताई और बाद में 1815 और 1840 के मध्य, बुनाई में। अत: ब्रिटेन में औद्योगिक पूँजीवाद, विशेषत: लंकाशायर जैसे कपड़ा उद्योग के क्षेत्र में पूँजीपतियों और श्रमिकों के मध्य औद्योगिक जनसंख्या के विभाजन, कारखानों में उत्पादन तथा मुनाफा- उन्मुख अर्थव्यवस्था की विशेषताओं से युक्त था।

5. **सरकार की भूमिका**—उद्यम, निवेश तथा व्यापार के लिए एक संपूर्ण वातावरण का निर्माण करने में सरकार की भूमिका भी बहुत महत्त्वपूर्ण थी। ब्रिटिश सरकार ने सभी स्तरों पर उद्यम का सहयोग किया, आंतरिक बाधाओं को दूर करने का प्रयत्न किया, भूमि की बाड़बंदी हेतु पूर्ण संसदीय सहयोग प्रदान किया, सख्त कानून एवं व्यवस्था बरकरार करके बेदखल पीड़ितों के असंतोष को काबू में रखा और विदेशी तथा सैन्य नीतियों के लक्ष्य पूर्ति के लिए भारी मात्रा में निवेश किया। ब्रिटिश नौसेना के उल्लेखनीय विकास ने, जो लगातार अपने विरोधियों को परास्त करने की क्षमता तथा अपने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की सुरक्षा करने में सक्षम थी, पूँजी के संचय तथा विदेशी बाजार के विस्तार में भारी मदद की। यह सरकार की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी।

उपरोक्त कारकों के अलावा, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की संरचना जिसमें ब्रिटेन मुख्यत: फैक्टरी उत्पादित वस्तुएं निर्यात करता था, व्यापक नहर आधारित प्रभावी परिवहन प्रणाली, इसके स्वयं की कृषि से प्राप्त पूँजी की उपलब्धता, औपनिवेशिक लूट तथा दास व्यापार, महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों; जैसे—लोहा व कायेले की आसान तथा प्रचुर उपलब्धता ने इसे औद्योगीकरण के रास्ते पर आगे बढ़ाने में निर्णायक योगदान दिया।

इस प्रकार, 18वीं सदी के मध्य में ब्रिटिश अर्थव्यवस्था यूरोप में सर्वाधिक वाणिज्यिकृत, शहरी, मुद्रा आधारित और औद्योगीकृत थी। हालांकि औद्योगीकरण के इस प्रथम चरण की सीमाएँ काफी सीमित थीं। सूती वस्त्र उत्पादन के अतिरिक्त कोई अन्य उद्योग 1840 के दशक तक पूर्णरूपेण मशीनीकृत नहीं हो पाया था। 1850 के दशक में कपड़े के कारखानों में, जो कि अर्थव्यवस्था का सर्वाधिक मशीनीकृत क्षेत्र था, में श्रम शक्ति का सिर्फ 6 प्रतिशत ही कार्यरत था। औद्योगीकृत श्रमिकों का बहुसंख्यक वर्ग अभी भी हाथ के औजारों का ही उपयोग करता था। रेलवे का तेज विकास विशेषकर 1830 के दशक से, लोहे, स्टील और कोयले के उत्पादन में भारी वृद्धि भी औद्योगीकरण के लिए उत्तरदायी था। इसी समय के आसपास, 1840 के दशक की शुरुआत से उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक ब्रिटेन में औद्योगीकरण का एक नया चरण घटित हुआ जोकि पूँजीगत वस्तु उद्योगों जैसे लोहे और स्टील उत्पादन पर आधारित था। इसी अवधि के दौरान उद्योगों में नए तकनीकी आविष्कारों के प्रयोग द्वारा कारखाने के उत्पादन को विभिन्न उद्योगों में सामान्यीकृत किया गया। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से यूरोप के कई देशों में तथा उन्नीसवीं सदी के मध्य से तथा बीसवीं सदी के आरंभ से विश्व के अन्य कई देशों में औद्योगीकरण की शुरुआत ने ब्रिटिश लोहे तथा स्टील, पूँजीगत वस्तुओं तथा पूंजी निवेश की भारी माँग को पैदा किया। 1840 से 1860 के मध्य ब्रिटिश निर्यात अपार मात्रा में बढ़ा, जिससे विशेष रूप से पूँजीगत वस्तु उद्योग को फायदा हुआ। इसने ब्रिटेन में पहले से ही विद्यमान औद्योगीकरण को नई गति प्रदान की। विदेशों में भी काफी मात्रा में ब्रिटिश पूँजी का निवेश किया गया जो 1870 तक 700 मिलियन पाउंड्स तक पहुँच चुकी थी। कुल मिलाकर 1830 के दशक से 1880 के दशक के दौरान ब्रिटिश अर्थव्यवस्था ने पूर्ण औद्योगीकरण को प्राप्त किया और अपने औद्योगिक आधार को 2 या 3 अग्रणी उद्योगों जैसे कपड़ा और कोयले से आगे बढ़ाकर लगभग सभी उद्योगों तक फैला दिया।

प्र.7. अमेरिका में लोकतांत्रिक भावना के विकास के कारणों का उल्लेख कीजिए।

Mention the reasons for the development of democratic sentiment in America.

उत्तर

अमेरिका में लोकतांत्रिक भावना का विकास
(Development of Democratic Sentiment in America)

यूरोप में सोलहवीं शताब्दी के दौरान सामंतवाद के पतन के यूरोपीय समाज के आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में दूरगामी परिणाम हुए। इस दौर के पुनर्जागरण एवं सुधारवादी आंदोलनों ने व्यक्तिगत स्वाधीनता की भावना का विकास करने में अपना अंशदान किया तथा लोगों को और साहसिक बना दिया। इस दौर के राजनीतिक तथा आर्थिक घटनाक्रमों ने भी यूरोप के लोगों को नए देशों को खोजने तथा जीतने के लिए प्रेरित किया। संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी समुद्रतट पर बसी अमेरिकी

TOUCH 'n PASS

बस्तियाँ नई दुनिया का भी हिस्सा थीं और पश्चिमी दुनिया का भी। नई दुनिया का हिस्सा होने के नाते इन अमेरिकी उपनिवेशों में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति बन गई; क्योंकि उपनिवेशक उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में बहुतायत से पड़ी जमीन पर हर ओर अपने पाँव पसारने की स्थिति में थे। अमेरिका की आबादी 1750 और 1770 के बीच दस लाख से बढ़ कर बीस लाख और 1790 तक चालीस लाख हो गई। ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, स्कॉटलैंड तथा आयरलैंड से आकर बसने वाले लोगों ने भी इन उपनिवेशों की आबादी में जबरदस्त वृद्धि की। जनसंख्या में हुई वृद्धि और पश्चिम की ओर हो रहे विस्तार ने मिलकर अमेरिकी 'सीमांत' का तथा इस सीमांत में बस गए लोगों की लोकतांत्रिक भावना का निर्माण किया। उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान यह सीमांत लगातार पश्चिम की ओर बढ़ता रहा और इस प्रकार एक ऐसे समाज का निर्माण हुआ जो ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौर की अपेक्षा कहीं अधिक लोकतांत्रिक तथा अमेरिकी था।

1740 के दशक में शुरू हुई एक आर्थिक क्रांति ने अमेरिकी आयात-निर्यातों में जबरदस्त विस्तार की स्थिति ला दी। ब्रिटेन से होने वाले आयातों का मूल्य 1747 में जो दस लाख पौंड से भी कम था, वह 1772 में बढ़ कर 45 लाख पौंड के आसपास पहुँच गया। मुख्य रूप से आंतरिक व्यापार में होने वाले विस्तार तथा कागजी मुद्रा के इस्तेमाल के कारण चलने वाली आर्थिक बदलाव की प्रक्रिया ने 'मंझले स्तर' के लोगों को इस योग्य बना दिया कि वे पुराने समय से चले आ रहे संरक्षक आश्रित वाले संबंध को तोड़ सकें। महा जाग्रति (ग्रेट अवेकानिंग) के नाम से मशहूर धार्मिक पुनर्जागरण ने भी पुराने समय से चले आ रहे भद्रजनों तथा स्थापित एंग्लिकन पुरोहित वर्ग के दबदबे को कमजोर किया।

अमेरिका में अठारहवीं शताब्दी के मध्य में गणतंत्रवादी (रिपब्लिकन) विचारों के विकास को एक ऐसी मजबूत लोकतांत्रिक परंपरा की विद्यमानता के साथ जोड़ कर देखा गया है जिसका आधार अमरीकी समाज के भीतर अटूट वर्ग सीमाओं तथा सामंतवाद की अनुपस्थिति रही। अठारहवीं शताब्दी के अमेरिका में कुलीनतंत्रीय परिवार तथा महाजन वर्ग तो अवश्य थे, किंतु वरजीनिया तथा न्यू हैम्पशायर को छोड़ उनमें से कोई भी राज्य की राजनीति में प्रभुत्व नहीं रखता था। औपनिवेशिक अमेरिका में समाज के उच्च वर्गों के पास ब्रिटेन की तुलना में कहीं कम आर्थिक तथा राजनीतिक शक्ति थी। दूसरी ओर, अधिसंख्य अमेरिकी किसानों के पास उनकी अपनी भूमि थी; जबकि इसके विपरीत ब्रिटेन में सीमांत काश्तकारों तथा भूमिहीन खेतिहरों की संख्या ही अधिक थी। अमेरिका में दो तिहाई गोरी औपनिवेशिक आबादी के पास अपनी जमीन थी; जबकि ब्रिटेन में केवल बीस प्रतिशत लोगों के पास ही भूमि थी। कुलीनतंत्र की अपेक्षाकृत कमजोर स्थिति, भूमिधर किसानों की एक बड़ी संख्या का होना, बड़ी संख्या में स्वदेशियों की अनुपस्थिति तथा पश्चिम की ओर पलायन करके भूमि हथियाने की संभावना ने अठारहवीं शताब्दी के अमेरिका की राजनीति को एक मजबूत गणतांत्रिक रंग दिया।

हालाँकि अमेरिकी समाज अन्य पश्चिमी समाजों की तुलना में अधिक समतावादी था, फिर भी वहाँ कुलीनतंत्र भी था, सम्राटों की परंपरा भी थी और अभिजात्य तथा आम जन के बीच पितृसत्तात्मक निर्भरता पर आधारित संबंध भी थे। अमेरिकी लोग अनेक प्रकार की वैधानिक निर्भरता अथवा पराधीनता के प्रति भी जागरूक थे। विशेषज्ञों के अनुसार एक समय ऐसा भी था जब कम से कम पचास प्रतिशत औपनिवेशिक समाज वैधानिक रूप से पराधीन था। उन पांच लाख अफ्रो अमेरिकी लोगों के अलावा, जो पुश्तैनी गुलाम थे, ऐसे हजारों गोरे अप्रावासी भी थे जो अनुबंधबद्ध नौकरों अथवा प्रशिक्षुओं के रूप में आए। इन्हें कई वर्ष अथवा कहीं कहीं तो कई दशक के लिखित अनुबंध पर यहाँ लाया गया। ऐसा अनुमान है कि उपनिवेशों में आने वाले तमाम आप्रवासियों में से आधे से लेकर दो तिहाई तक ऐसे अनुबंधबद्ध नौकर थे जो सात से लेकर चौदह वर्ष की अवधि तथा अपने मालिकों के प्रति लिखित रूप से अनुबंधित थे। अमेरिका में मजदूरी की बहुत मांग थी और क्योंकि अनुबंध पर नौकरों को बाहर से लाना महंगा पड़ता था इसलिए उनके कहीं आने जाने पर पाबंदी थी और उन पर नियंत्रण रखा जाता था कि वे कहीं भाग न जाएं। उपनिवेशों के बंधुआ मजदूर अपनी हैसियत के हिसाब से अंग्रेजी नौकरों की अपेक्षा अमेरिका के काले गुलामों के अधिक निकट थे; क्योंकि अंग्रेजी नौकरों को तो काफी आजादी मिली थी और उनका अनुबंध भी मात्र एक वर्ष का होता था। अनुबंधबद्ध नौकरों के इस्तेमाल ने अमेरिकी उपनिवेशकों को न केवल वैधानिक अधीनता से बनने वाली कठिनाइयों के प्रति अपितु शायद स्वाधीनता के महत्त्व के प्रति भी जागरूक बना दिया।

अठारहवीं शताब्दी के ज्ञानोदय (इनलाइटनमेंट) आंदोलन से उपजे विचारों ने पारंपरिक विश्वासों तथा सामाजिक संबंधों की अनेक प्रकार से जड़ें खोदी। ज्ञानोदय आंदोलन के विचारों को अपना कर अभिजात्य शासक वर्ग तथा सत्ताधारी लोगों ने शासक, न्यायकर्त्ता, मालिक तथा पिता के रूप में अपने ही अधिकारों को समाप्त कर लिया। पितृसत्ता के विरुद्ध एक क्रांति का जन्म गणतंत्रवादी विचारों के विकास के साथ-साथ हुआ। अठारहवीं शताब्दी में व्यवसायीकरण के साथ ही स्थिति यह हो गई कि जो अनुबंध पहले के समय में पति तथा पत्नियों अथवा मालिक तथा प्रशिक्षुओं के बीच पितृसत्तात्मक संबंधों पर आधारित होते थे,

उनका स्थान अब ऐसे अनुबंधों ने ले लिया जो सामाजिक संबंधों नहीं अपितु विशिष्ट लेन देन के प्रतीक दो समान पक्षों के बीच लाभदायक सौदेबाजी हो गई। मालिक मातहत के बीच सभी संबंधों को जब इस अनुबंध की दृष्टि से देखा जाने लगा तो सम्राट तथा उपनिवेशों के बीच संबंधों को देखने का अमेरिकी नजरिया भी इससे प्रभावित हुए बिना न रह सका। सच तो यह है कि शाही संबंध का बखान करने के लिए पिता-संतान के जिस रूप का इस्तेमाल किया गया, उसका प्रभाव अमेरिकी क्रांति से पूर्व टोरी तथा विग दोनों के लेखन पर पड़ा। आधुनिक वैधानिक अनुबंधन की भाषा का व्यापक इस्तेमाल होने लगा तो अमरीकी उपनिवेशकों के लिए मातृ देश तथा ब्रिटिश सम्राट के पितृसत्तात्मक अधिकार से नाता तोड़ना और भी आसान हो गया।

इसका ठीक ठाक कारण यह था कि अमेरिकी उपनिवेशों के निवासियों को जिस स्तर की समानता तथा संपन्नता मिली हुई थी वह पश्चिमी देशों के लिए उस समय इतनी असाधारण बात थी कि अमेरिकी लोग अपने अधिकारों तथा विशेषाधिकारों की रक्षा करने को अत्यधिक चिंतित थे। परिणामस्वरूप, अमेरिकियों ने उनकी स्वतंत्रता तथा संपन्नता के प्रति खतरे को और भी बढ़ा चढ़ा कर रखा। इसके अतिरिक्त, व्यवसायीकरण, पितृसत्तात्मक संबंधों के पतन तथा लोक राजनीति के इस युग में आर्थिक तथा सामाजिक बदलावों ने लोगों की चिंताओं को और बढ़ा दिया। अभिजात्य वर्ग के कुछ लोगों ने जो तेजी से प्रगति की, ब्रिटिश शाही नीति में बदलाव के कारण उनकी वही प्रगति उनकी संपन्नता में गिरावट के प्रति चिंता का कारण बन गई। 1757-1763 के सात वर्षीय युद्ध के बाद ब्रिटिश नीति के कठोर होने के परिणामस्वरूप 1765 का स्टाम्प अधिनियम लागू किया गया, जिससे अमेरिकियों की संपन्नता तथा स्वतंत्रता के प्रति खतरे के बारे में चिंता की स्थिति बनी। **जैक ग्रीन** के अनुसार, अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक जो औपनिवेशिक असेम्बलियां काफी मुखर होने लगी थीं, अब उन्होंने ऐसी संस्थाओं का रूप ले लिया था जिनके साथ खड़े होना शाही सत्ता तथा नीति के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए जरूरी हो गया। ब्रिटिश साम्राज्य की हठधर्मिता के प्रति बढ़ते जनता के विरोध में, तानाशाही तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध चलने वाले संघर्ष ने बड़ी तेजी के साथ स्वाधीनता संग्राम का रूप ले लिया।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. औद्योगिक क्रांति किस देश में शुरू हुई?
(क) जर्मनी (ख) फ्रांस (ग) इंग्लैण्ड (घ) स्पेन
उत्तर (ग) इंग्लैण्ड

प्र.2. औद्योगिक क्रांति का परिणाम नहीं था—
(क) नवीन आविष्कार (ख) उत्पादन में वृद्धि
(ग) मजदूरों का उच्च जीवन स्तर (घ) बेकारी
उत्तर (ग) मजदूरों का उच्च जीवन स्तर

प्र.3. गौरवशाली क्रांति इंग्लैण्ड में कब हुई?
(क) 1687 (ख) 1688 (ग) 1689 (घ) 1690
उत्तर (ख) 1688

प्र.4. गौरवशाली क्रांति के फलस्वरूप कौन-सा परिणाम हुआ?
(क) संसदीय शासन की स्थापना (ख) धार्मिक अत्याचार से मुक्ति
(ग) आर्थिक विकास की ओर इंग्लैण्ड अग्रसर (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.5. निम्न में कौन-सा गौरवशाली क्रांति का परिणाम नहीं था जो संसद को शक्ति मिली थी?
(क) नागरिक स्वतन्त्रता की रक्षा करना (ख) कानून बनाना
(ग) कर लगाना (घ) राजा का संसद की शक्ति में हस्तक्षेप
उत्तर (घ) राजा का संसद की शक्ति में हस्तक्षेप

प्र.6. विलियम ऑफ ओरेंज कब 15 हजार सैनिकों के साथ इंग्लैण्ड के होरबे बन्दरगाह पर उतरा?
(क) 3 नवम्बर, 1688 (ख) 4 नवम्बर, 1688 (ग) 5 नवम्बर, 1688 (घ) 6 नवम्बर, 1688
उत्तर (ग) 5 नवम्बर, 1688

TOUCH 'n PASS

प्र.7. कब जेम्स राजमुद्रा को टेम्स नदी में फेंककर फ्रांस पलायन कर गया?
(क) 22 दिसम्बर, 1688 (ख) 23 दिसम्बर, 1688
(ग) 24 दिसम्बर, 1688 (घ) 25 दिसम्बर, 1688
उत्तर (ख) 23 दिसम्बर, 1688

प्र.8. कब विलियम और मैरी संयुक्त रूप से इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर आसीन हुए?
(क) 10 फरवरी, 1689 (ख) 11 फरवरी, 1689 (ग) 12 फरवरी, 1689 (घ) 13 फरवरी, 1689
उत्तर (घ) 13 फरवरी, 1689

प्र.9. कब तक आते-आते ग्रेट ब्रिटेन विश्व की वर्कशाप, विश्व की भट्टी, विश्व का बैंकर एवं विश्व का सबसे बड़ा मालवाहक बनकर सामने आया?
(क) 1815 (ख) 1816 (ग) 1817 (घ) 1818
उत्तर (क) 1815

प्र.10. 1900 ई० में कितने प्रतिशत लोग ही इंग्लैण्ड में गाँवों में रह गए?
(क) 17% (ख) 18% (ग) 19% (घ) 20%
उत्तर (घ) 20%

प्र.11. जेम्स द्वितीय किस कैथोलिक राजा से आर्थिक और सैनिक सहायता प्राप्त कर इंग्लैण्ड में निरंकुश शासन स्थापित करना चाहता था?
(क) फ्रांस (ख) रूस (ग) पुर्तगाल (घ) स्पेन
उत्तर (क) फ्रांस

प्र.12. जेम्स द्वितीय ने इंग्लैण्ड को कैथोलिक देश बनाने हेतु कब धार्मिक अनुग्रह की घोषणा की?
(क) 1687 (ख) 1688 (ग) 1687 व 1688 (घ) 1689
उत्तर (ग) 1687 व 1688

प्र.13. जेम्स ने गिरजाघरों पर राजकीय श्रेष्ठता पूर्ण रूप से स्थापित करने हेतु कोर्ट ऑफ हाई कमीशन को पुनः कब स्थापित किया?
(क) 1686 (ख) 1687 (ग) 1688 (घ) 1689
उत्तर (क) 1686

प्र.14. जेम्स वाट ने भाप के इंजन का कब आविष्कार किया?
(क) 1768 (ख) 1769 (ग) 1770 (घ) 1771
उत्तर (ख) 1769

प्र.15. ब्रिटेन के औद्योगिक विकास में निर्णायक रहा—
(क) कोयले की बड़ी मात्रा (ख) लोहे की बड़ी मात्रा
(ग) पूँजी की पर्याप्तता (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.16. निम्न में किसने इंग्लैण्ड के व्यापार में सहयोग नहीं किया?
(क) नहरों (ख) नदियों (ग) तालाबों (घ) समुद्र
उत्तर (ग) तालाबों

प्र.17. कब सैमुएल स्लेटर अमेरिका पहुँचा जो वहाँ ब्रिटिश कपड़ा उद्योग का ज्ञान अपने साथ ले गया जिससे अमेरिका में औद्योगिक क्रांति हुई?
(क) 1787 (ख) 1788 (ग) 1789 (घ) 1790
उत्तर (ग) 1789

TOUCH 'n' PASS

प्र.18. निम्न में कौन-सा युग्म सही है?
(क) स्पिनिंग म्यूल—शमूएल क्राम्पटन (ख) पानी संचालित करघा—एडमंट कार्टराइट
(ग) डिलिंग मशीन—जॉन विल्किनसन (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.19. कब जॉर्ज स्टीवेंसन ने पहले भाप लोकोमोटिव इंजन का आविष्कार किया?
(क) 1814 (ख) 1815 (ग) 1816 (घ) 1817
उत्तर (क) 1814

प्र.20. यह कथन किसका है "औद्योगिक क्रांति के प्रभाव यह सिद्ध करते हैं कि खुली प्रतियोगिता, जनकल्याण में वृद्धि के बिना ही समृद्धी को उत्पन्न कर सकती है।"
(क) लास्की (ख) पीगू (ग) मार्शल (घ) अर्नोल्ड टॉयनबी
उत्तर (घ) अर्नोल्ड टॉयनबी

प्र.21. औद्योगिक क्रांति के संदर्भ में कौन-सा कथन सही नहीं है?
(क) श्रमिकों को सप्ताह में एक छुट्टी मिलती थी
(ख) मजदूरों को 14-16 घण्टे प्रतिदिन कार्य करना पड़ता था
(ग) उनका पारिश्रमिक कम था
(घ) स्त्रियों और बच्चों से भी पूरा काम लिया जाता था।
उत्तर (क) श्रमिकों को सप्ताह में एक छुट्टी मिलती थी

प्र.22. यह कथन किसका है "अब श्रमिक सम्पत्तिहीन, मुद्राहीन और गृहविहीन प्रतिहारी मात्र रह गए थे।"
(क) सी०डी०एम० कैटलवी (ख) लास्की
(ग) प्रोफेसर शार्प (घ) पीगू
उत्तर (ग) प्रोफेसर शार्प

प्र.23. कब इंग्लैण्ड में सरकार ने नगरीय मजदूरों को मताधिकार दिया?
(क) 1865 (ख) 1866 (ग) 1867 (घ) 1868
उत्तर (ग) 1867

प्र.24. ग्रामीण मजदूरों को इंग्लैण्ड में मताधिकार कब मिला?
(क) 1881 (ख) 1882 (ग) 1883 (घ) 1884
उत्तर (घ) 1884

प्र.25. निम्न में किसने उद्योगों में शासन के हस्तक्षेप का विरोध किया?
(क) एडम स्मिथ (ख) डेविड रिकॉर्डो (ग) (क) व (ख) दोनों (घ) हीगल
उत्तर (ग) (क) व (ख) दोनों

❑

TOUCH 'n' PASS

UNIT-VII

फ्रांसीसी क्रांति : कारण, महत्त्व एवं प्रभाव

French Revolution : Causes, Significance and Impact

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. फ्रांसीसी क्रांति के परिणाम क्या थे?
What were the results of the French revolution?

उत्तर फ्रांस की क्रांति ने शिक्षा को चर्च के अधिपत्य से निकालकर उसे राष्ट्रीय सार्वभौमिक तथा धर्मनिरपेक्ष बनाया साथ ही पुरातन व्यवस्था के अंधविश्वासों को नष्ट किया यूरोप साहित्य में स्वच्छंदतावाद आन्दोलन भी क्रांति का ही परिणाम था।

प्र.2. फ्रांस की क्रांति का मुख्य उद्देश्य क्या था?
What was the main objective of French revolution?

उत्तर फ्रांसीसी क्रांतिकारियों का मुख्य उद्देश्य राजशाही को समाप्त करना और लोकतान्त्रिक सरकार के लिए मार्ग प्रशस्त करना था। धार्मिक स्वतन्त्रता और चर्च द्वारा एकत्र करों का उन्मूलन क्रांतिकारियों का एक और महत्त्वपूर्ण उद्देश्य था।

प्र.3. फ्रांसीसी क्रांति का सारांश क्या था?
What was a summary of the French revolution?

उत्तर फ्रांसीसी क्रांति विश्व इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना थी जो 1789 में शुरू हुई और 1790 के दशक के अन्त में नेपोलियन बोनापार्ट की चढ़ाई के साथ समाप्त हुई। इस अवधि के दौरान, फ्रांसीसी नागरिकों ने अपने राजनीतिक परिदृश्य को मौलिक रूप से बदल दिया, सदियों पुरानी संस्थाओं जैसे राजशाही और सामंती व्यवस्था को उखाड़ फेंका।

प्र.4. 1848 की फ्रांसीसी क्रांति के कारण क्या थे?
What were the causes of French revolution?

उत्तर 1848 ई. की क्रान्ति का मुख्य कारण लुई फिलिप की आन्तरिक और बाह्य नीतियाँ थीं, जिनके कारण फ्रांस में उसका शासन अलोकप्रिय हो गया। 1848 ई. में फ्रांस में जो क्रान्ति हुई, वह केवल फ्रांस तक ही सीमित नहीं रही, वरन् इस क्रान्ति की चपेट में सम्पूर्ण यूरोप आ गया।

प्र.5. फ्रांसीसी क्रांति में किस राजा की मृत्यु हुई थी?
Who was the king died during French revolution?

उत्तर राजशाही को औपचारिक रूप से समाप्त कर दिया गया, और फ्रांसीसी गणराज्य का 'वर्ष।' घोषित किया गया। लुई सोलहवें की 21 जनवरी 1793 को गिलोटिन पर मृत्यु हो गई। वह वर्साय के महल में रहने वाले अंतिम राजा थे, और क्रांतिकारियों ने उन्हें विधिवत उपनाम 'लुई द लास्ट' दिया।

प्र.6. फ्रांस में पहला विद्रोह कब हुआ था?
When did first revolution take place in France?

उत्तर 14 जुलाई 1789 की सुबह, पेरिस नगर में आतंक का माहौल था।

प्र.7. फ्रांसीसी क्रांति के तीन प्रमुख सिद्धांत कौन-कौन से हैं?
What are three main principles of French revolution?

उत्तर सामाजिक दृष्टिकोण से, क्रांति में, जिसे सामंती व्यवस्था कहा जाता था, व्यक्ति की मुक्ति में, भू-संपत्ति के अधिक से अधिक विभाजन में, महान जन्म के विशेषाधिकारों के उन्मूलन में, समानता की स्थापना में, क्रांति शामिल थी।

TOUCH 'n' PASS

प्र.8. 1848 की क्रांति के फलस्वरूप किसके शासन का अंत हुआ?
Whose reign did end due to revolution of 1848?

उत्तर 1848 की क्रान्ति और लुई फिलिप का पतन—24 फरवरी को लुई फिलिप भयभीत होकर फ्राँस छोड़कर इंग्लैण्ड भाग गया। इस प्रकार 1848 की क्रान्ति के फलस्वरूप लुई फिलिप के शासन का अन्त हो गया

प्र.9. फ्रांसीसी क्रांति कितने समय तक चली?
What was the duration of French revolution?

उत्तर फ्रांसीसी क्रांति 1789 से 1799 तक चली। क्रांति ने यूरोपीय युद्धों की एक श्रृंखला को जन्म दिया, जिससे संयुक्त राज्य अमेरिका को इन यूरोपीय संघर्षों में उलझने से बचने के लिए तटस्थता की स्पष्ट नीति बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा।

प्र.10. फ्रांसीसी क्रांति की शुरुआत कैसे हुई?
How did French revolution start?

उत्तर 10 अगस्त, 1792 को, जैकोबिन्स के नेतृत्व में क्रांतिकारियों के एक गिरोह ने पेरिस में शाही घर पर हमला किया और सम्राट को कैद कर लिया, जिससे राजनीतिक स्थिति ही बदल गई। विधान सभा को राष्ट्रीय सम्मेलन द्वारा प्रतिस्थापित किया गया, जिसने राजशाही को समाप्त करने की घोषणा की। इससे फ्रांसीसी गणराज्य का निर्माण हुआ।

प्र.11. फ्रांसीसी क्रांति का जनक कौन था?
Who was the father of French revolution?

उत्तर फ्रांसीसी क्रांति में सबसे अहम योगदान वाल्टेयर, मौंटेस्यू एवं रूसो का था।

प्र.12. फ्रांस में कितनी क्रांतियाँ हुई थीं?
How many revolutions were take place in France?

उत्तर फ्रांस में तीन प्रमुख क्रांतियाँ 1789, 1830 और 1848 में हुईं। 1789 की फ्रांसीसी क्रांति है, जिसने राजशाही और प्राचीन शासन को समाप्त कर दिया और जिसके परिणामस्वरूप राजा हुई XVI और उनकी प्रसिद्ध पत्नी, मैरी एंटोनेट का सिर कलम कर दिया गया।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. फ्रांस की क्रांति के राजनीतिक कारणों का उल्लेख कीजिए।
Mention the political causes of the French revolution.

उत्तर

फ्रांस की क्रांति के राजनीतिक कारण
(Political Causes of the French Revolution)

फ्रांस की क्रांति के राजनीतिक कारण निम्नलिखित थे—

1. **लुई चौदहवें के उत्तराधिकारी** (Successors of Louis XIV)—फ्रांस में शताब्दियों से समस्त राजनीतिक शक्ति राजा के हाथों में ही केन्द्रित थी। फ्रांस का राजा लुई चौदहवाँ यद्यपि एक निरंकुश शासक था, तथापि यह एक योग्य व्यक्ति था। उसके शासन काल में फ्रांस की उन्नति चरम सीमा पर पहुँच गई थी, परन्तु अन्त में अनेक युद्धों के कारण तथा **सप्तवर्षीय युद्ध** (Seven Years War) के कारण उसकी आर्थिक स्थिति शोचनीय हो गई थी। उसने अपने पुत्र लुई पन्द्रहवें से अपनी मृत्यु के समय निम्नलिखित शब्द कहे थे—'मेरे बच्चे! अपने पड़ोसियों के साथ शान्तिपूर्वक रहने का प्रयत्न करना, जितना जल्दी हो सके लोगों को छुटकारा देने का यत्न करना और इस प्रकार वह कार्य पूरा करना जिसे दुर्भाग्यवश मैं पूरा न कर सका।'
   लुई पन्द्रहवाँ एक अयोग्य शासक प्रमाणित हुआ। सप्तवर्षीय युद्ध में फ्रांस के साम्राज्य का बहुत बड़ा भू-भाग उसके अधिकार से निकल गया तथा जनता के कष्टों में और वृद्धि हो गई। लुई पन्द्रहवें के पश्चात् लुई सोलहवाँ और भी अयोग्य निकला। मेडलिन ने लिखा—'वह पैदायशी राजा नहीं था'। एक फ्रेंच इतिहासकार ने लिखा है—'लुई चौदहवें के उत्तराधिकारियों ने राजवंश में सड़ांध पैदा कर दी और उससे जी मिचला देने वाली बदबू उठने लगी थी।' लुई सोलहवें को शासन-प्रबन्ध में विशेष रुचि न थी। उस पर अपनी पत्नी मेरी आन्तनेत (Marie Antoinette) जो कि मेरिया थरेसा की लड़की थी, का अत्यधिक प्रभाव था। मिराब्यू ने लिखा 'राजा के निकट केवल एक ही व्यक्ति है, उसकी पत्नी'। फ्रांस के

TOUCH n PASS

लोग मेरी आन्तनेत से अत्यन्त घृणा करते थे। उसको **'दि आस्ट्रियन'** (The Austrian) या **'मैडम डेफिसिट'** (Madam Deficit) के नाम से पुकारा जाता था। वह अत्यधिक अपव्ययी थी तथा बिना आवश्यकता के जनता का धन पानी की तरह बहाती थी।

2. **दोषयुक्त शासन-व्यवस्था** (Defective Administration)—फ्रांस की क्रांति का एक अन्य एवं प्रमुख कारण, वहाँ की बुरी शासन-व्यवस्था थी। राजा देश का प्रधान था और वह स्वेच्छानुसार आचरण करता था। लुई चौदहवें का विचार था कि देश की सर्वोच्च सत्ता व्यक्तिगत रूप से उसी में है; कानून बनाने की शक्ति एकमात्र उसी में ही विद्यमान है, उसकी प्रजा का अस्तित्व उसी के साथ ही है और राष्ट्रीय अधिकार केवल उसी के हाथों में ही है। ऐसी व्यवस्था कभी भी सुचारु रूप से नहीं चल सकती थी। राजा देश के विभिन्न भागों की स्थिति देखने के लिए दौरा नहीं करता था। परिणामस्वरूप, जनता के साथ उसका कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध न था। राजा जनता के दु:खों और इच्छाओं से पूर्णतया अनभिज्ञ था। राजा अपना ध्यान राजधानी में ही लगाए रहता था, जहाँ देशभर से दरबार के ओछे और निरर्थक कार्यों में भाग लेने कुलीन लोग आते थे। कहा गया था कि दरबार देश का मकबरा है। एक्टन ने लुई सोलहवें के शासन को 'The Era of Repentant Monarchy' कहा है।

देश की शासन-व्यवस्था अत्यधिक असन्तोषजनक थी। प्रशासन की दृष्टि से किए गए देश के भागों में से अनेक भागों की समाएँ ठीक तरह से निश्चित नहीं थीं और उनके कार्य-क्षेत्राधिकारों का एक-दूसरे से संघर्ष होने की सम्भावना रहती थी। देश की कानून-व्यवस्था (Legal System) भी दोषपूर्ण थी। सम्पूर्ण देश के लिए कोई एकरूप कानून-व्यवस्था नहीं थी। देश के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न कानून प्रचलित थे। कानून, अत्यधिक कठोर व अन्यायपूर्ण थे तथा साधारण अपराधों के लिए कठोर दण्डों की व्यवस्था थी। अपराधी का अपराध निश्चित करने और उसको दण्डित करने की कोई निश्चित प्रणाली नहीं थी। किसी प्रभावशाली व्यक्ति की इच्छा से कोई भी व्यक्ति कैद किया जा सकता था। बन्दी बनाने के लिए मात्र 'लैटरे डी कैचे' (Lettre de Cachet) को प्राप्त करने की आवश्यता होती थी और इसे प्राप्त करने के पश्चात् सम्बन्धित व्यक्ति अनिश्चित काल के लिए बिना किसी अदालती कार्यवाही के जेल में बन्द रखा जा सकता था।

करों को वसूल करने की प्रणाली भी अत्यधिक दोषपूर्ण थी। राज्य स्वयं अपने अधिकारियों द्वारा कर वसूल नहीं करवाता था। अपितु यह अधिकार सबसे अधिक बोली देने वाले व्यक्ति को दिया जाता था। परिणामस्वरूप जहाँ कर वसूलने वाले व्यक्ति राज्य को एक निश्चित रकम देते थे वहाँ दूसरी ओर जनता से अधिक धन वसूल करने का प्रयत्न करते थे। जहाँ एक ओर जनता का शोषण किया जाता वहाँ दूसरी ओर राज्य को कोई लाभ न होता था। चूँकि कुलीन वर्ग व पादरी कर नहीं देते थे, अत: सम्पूर्ण बोझ साधारण वर्ग पर ही पड़ता था। फ्रांस की सम्पूर्ण शासन-व्यवस्था को ही सुधारना आवश्यक था।

प्र.2. फ्रांस की क्रांति के सामाजिक कारणों को लिखिए।
Write the social causes of the French revolution.

उत्तर

फ्रांस की क्रांति के सामाजिक कारण
(Social Causes of the French Revolution)

गूच के अनुसार, 'फ्रांस की क्रांति यूरोप के इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना थी', किन्तु वास्तव में फ्रांस की क्रांति केवल फ्रांस और यूरोप के इतिहास की ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण मानव जाति के इतिहास में भी महत्त्वपूर्ण घटना थी। इस क्रांति ने लोगों के समक्ष स्वतन्त्रता, समानता तथा भ्रातृत्व (Liberty, Equality and Fraternity) के आदर्श विचार प्रस्तुत किए जो आज विश्व के कोने कोने तक पहुँच चुके हैं। फ्रांस की क्रांति सैनिक ही नहीं अपितु विचारों की भी लड़ाई थी।

क्रांतियाँ कभी अचानक नहीं होतीं और संयोगवश तो कभी भी नहीं। एक छोटी-सी घटना सुरंग में चिंगारी का कार्य कर आग तो प्रज्ज्वलित कर सकती है, परन्तु सुरंग का पहले से ही बारुद से भरा होना नितान्त आवश्यक है। फ्रांस की क्रांति में भी ऐसा ही हुआ। क्रांति रूपी सुरंग तो लगभग दो शताब्दियों पूर्व से ही तैयार होनी प्रारम्भ हो गई थी। 1789 ई० में उसे केवल विस्फोटित कर दिया गया। यद्यपि उस समय यूरोप के सभी देशों की स्थिति एकसमान थी, परन्तु फ्रांस की स्थिति सर्वाधिक शोचनीय थी, और यही कारण था कि सर्वप्रथम फ्रांस में ही क्रांति हुई। इस क्रांति ने फ्रांस की काया पलट दी। धनवान तथा निर्धनों का भेद-भाव ही मिटा देने का प्रयत्न किया गया, जमींदारों तथा पादरियों की सत्ता को समाप्त कर दिया गया।

फ्रांस की क्रांति के प्रमुख कारण अग्रवत् थे—

TOUCH 'n' PASS

फ्रांस की क्रांति का एक महत्त्वपूर्ण कारण सामाजिक असमानता था। मेडलिन के अनुसार, '1789 ई० की क्रांति का विद्रोह तानाशाही से भी अधिक असमानता के प्रति था।' फ्रांस की क्रांति के समय फ्रांस में समाज में अत्यधिक असमानता व्याप्त थी। समाज दो वर्गों में विभाजित था। विशेषाधिकार वाले वर्ग में कुलीन लोग और पादरी थे। जहाँ एक ओर इन्हें विशेषाधिकार प्राप्त थे वहाँ दूसरी ओर वे करों आदि से भी मुक्त थे। फ्रांस में प्रसिद्ध था, 'सरदार (nobles) लड़ते हैं, पादरी प्रार्थना करते हैं और जनता व्यय का भार उठाती है। एक ओर तो इस वर्ग को इतनी सुविधाएँ प्राप्त थीं, दूसरी ओर साधारण वर्ग के लोगों की अवस्था सन्तोषजनक भी नहीं थी। किसानों की स्थिति विशेष रूप से शोचनीय थी। किसानों को जमींदार की जमीन पर सप्ताह में तीन दिन और कटाई के दिनों में पाँच दिन काम करना पड़ता था। खेती की भूमि बेची जाती तो मूल्य का पाँचवाँ भाग जमींदार को मिलता था। राजा को दिए जाने वाले करों की संख्या सबसे अधिक थी।

अनुमान लगाया जाता है कि करों को देने के पश्चात् फ्रांस के किसान के पास अपनी उपज का कुल 20 प्रतिशत भाग शेष रह जाता था। फ्रांस के कुछ भागों में किसान इन करों को चुकाने के पश्चात् किसी तरह निर्वाह कर लेते थे, परन्तु शेष भाग में उनकी दशा अत्यन्त शोचनीय थी। अच्छी-से-अच्छी फसल के उपरान्त भी वे अपना निर्वाह करने में स्वयं को असमर्थ पाते थे। कहा जाता है कि 'फ्रांस में जनता का 9/10 भाग भूख से और 1/10 भाग अधिक खाने से मरा।'

यद्यपि रिशलू (Richelieu) ने सत्रहवीं सदी में नोबल्स की राजनीतिक शक्तियाँ समाप्त कर दी थीं, किन्तु इससे कुलीन वर्ग में साधारण वर्ग के लिए और भी घृणा उत्पन्न हो गई। मैरियट ने इस विषय में लिखा है, '1789 ई० की क्रांति के लिए रिशलू बहुत अधिक उत्तरदायी था।'

मध्यम वर्ग के लोग भी फ्रांस के समाज के साधारण वर्ग में शामिल थे। इस श्रेणी के अन्तर्गत प्रोफेसर, वकील, साहूकार व व्यापारी, न्यायाधीश, मजिस्ट्रेट आदि थे। ये धनी भी थे और योग्य भी, तथा दुनिया के कई भागों में घूम चुके थे, अत: पुराने राज्य (Ancient Regime) के द्वारा दी गई नीची सामाजिक स्थिति (Inferior Status) को स्वीकार करने के लिए तैयार न थे। इसी वर्ग के लोग ही फ्रांस की जनता के द्वारा पुराने राज्य के विरुद्ध किए गए विद्रोह में उसके नेता बने।

प्र.3. फ्रांस की क्रांति के आर्थिक कारणों को बताइए।
State the economic causes of French revolution.

उत्तर

फ्रांस की क्रांति के आर्थिक कारण
(Economic Causes of French Revolution)

फ्रांस की दयनीय आर्थिक अवस्था फ्रांस की क्रांति का प्रमुख कारण थी। कहा गया है कि फ्रांस की क्रांति को शीघ्र लाने का उत्तरदायित्व आर्थिक कारणों पर था और दार्शनिक विद्वान द्वारा तैयार किया गया बारूद आर्थिक कारणों के द्वारा भड़काया गया था। लुई चौदहवें के युद्धों ने देश की आर्थिक व्यवस्था को अत्यधिक शोचनीय बना दिया था। जिस समय उसकी मृत्यु हुई, उस समय देश की आर्थिक अवस्था अत्यन्त खराब थी। यद्यपि उसने लुई पन्द्रहवें को आर्थिक अवस्था सुधारने और युद्धों से बचने का परामर्श दिया था, किन्तु लुई पन्द्रहवें ने उसके परामर्श पर विशेष ध्यान न दिया, अपितु उसने बहुत से युद्धों में भाग लिया। राजमहल और प्रेमिकाओं पर भी बहुत रुपया नष्ट किया। जब लुई सोलहवाँ फ्रांस की राजगद्दी पर बैठा तो उस समय फ्रांस का दिवाला निकलने वाला था, परन्तु फिर भी फ्रांस ने अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम के युद्ध में भाग लिया। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि अमेरिका के स्वतन्त्र युद्ध में भाग लेने से ही फ्रांस में वह आर्थिक संकट उत्पन्न हुआ जो आगे चलकर फ्रांस की क्रांति का कारण बना।

फ्रांस की अर्थ-व्यवस्था शोचनीय थी। कुलीन वर्ग के लोग और पादरी राज्य के कोष में कुछ भी योगदान नहीं देते थे। अत: आश्चर्य नहीं कि करों का सारा बोझ साधारण जनता पर पड़ता था। यह अपने में ही असन्तोष उत्पन्न करने का कारण था। राष्ट्रीय ऋण भी बहुत अधिक बढ़ गया था। सरकार की आय उसके द्वारा दी जाने वाली राष्ट्रीय ऋण के ब्याज की राशि से भी कम थी, अत: सरकार के लिए बजट को सन्तुलित रखना असम्भव ही था। एडम स्मिथ तथा आर्थर यंग ने फ्रांस को आर्थिक गलतियों का अजायबघर बताया। यद्यपि तूर्जो (Turgot) जो 'No Bankruptcy, no increase in taxation, no more borrowing' में विश्वास रखता था, ने फ्रांस को इस संकट से निकालने के लिए पूर्ण प्रयत्न किया, किन्तु वह कुलीन वर्ग का सामना न कर सका। नेकर (Necker) ने भी आर्थिक संकट दूर करने की कोशिश की, किन्तु वह भी असफल रहा।

इस आर्थिक संकट को दूर करने के इरादे से लुई सोलहवें ने 1787 ई० में कुलीन वर्ग की एक सभा बुलाई। ऐसे आशा थी कि ये लोग विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग (Priviledged classes) के लोगों पर कर लगाने के प्रस्ताव पर अपनी स्वीकृति दे देंगे, परन्तु कुलीन वर्ग राजा पर यह कृपा करने के लिए तैयार न था। राजा ने और ऋण प्राप्त करने का प्रयत्न किया, किन्तु पेरिस की संसद ने

अन्य कर्ज और नए करों की अनुमति देने से इन्कार कर दिया। इसने अधिकारों का एक घोषणा-पत्र (Declaration of Rights) तैयार किया और यह दावा किया कि धन की माँगें सांविधानिक दृष्टि से केवल एस्टेट्स जनरल (Estates General) के द्वारा ही स्वीकृति की जा सकती हैं। सरकार ने पेरिस की संसद के विरुद्ध कार्यवाही की और उसको समाप्त कर दिया। इससे जनता में अत्यधिक आक्रोश उत्पन्न हुआ और सैनिकों ने जजों को गिरफ्तार करने से इन्कार कर दिया। जनता ने एस्टेट्स जनरल के अधिवेशन की माँग की। इन परिस्थितियों में राजा को झुकना पड़ा और उसने 175 वर्षों (1614-1789 ई०) के बाद एस्टेट्स जनरल के निर्वाचनों के लिए आदेश जारी किए। इस प्रकार फ्रांस की 1789 ई० की क्रांति प्रारम्भ हुई।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. फ्रांस की क्रांति 1789 ई० के पूर्व राजनीतिक, स्थिति का परीक्षण कीजिए।
Examine the political condition before the French revolution (1789).

उत्तर

फ्रांस की क्रांति के पूर्व राजनीतिक स्थिति
(Political Condition Before the French Revolution)

मध्ययुगीन यूरोप के अधिकांश देशों में सामन्तीय व्यवस्था (Feudal system) विद्यमान थी। फ्रांस भी इन्हीं देशों में से एक था। आधुनिक युग का प्रारम्भ होने के साथ ही सामन्तीय व्यवस्था ओझिल होने लगी तथा उसका स्थान शक्तिशाली राजवंशों के शासन ने लेना प्रारम्भ कर दिया। फ्रांस में हेनरी IV (1589 ई० से 1610 ई० तक) एक शक्तिशाली शासक हुआ। उसने एक नवीन राजवंश की स्थापना की जिसे बूर्बों वंश (Bourbon Dynasty) कहा जाता है। फ्रांस का बूर्बों वंश एक शक्तिशाली राजवंश प्रमाणित हुआ, जिसने फ्रांस में लगातार दो शताब्दियों तक कुशलतापूर्वक शासन किया।

हेनरी के पश्चात् उसका पुत्र लुई XIII (1610 ई० से 1643 ई० तक) फ्रांस की राजगद्दी पर आसीन हुआ। उसने अपने योग्य मन्त्री रिशलू (Richelieu) की सहायता से फ्रांस को यूरोप की प्रमुख शक्तियों में से एक बनाने का यथासम्भव प्रयास किया। लुई XIII ने फ्रांस में सम्पूर्ण अधिकारों को अपने हाथों में लेने का प्रयास किया था, निरंकुशतापूर्वक शासन किया। लुई XIII का उत्तराधिकारी लुई XIV (1643 ई० से 1715 ई० तक) था जो अत्यन्त शक्तिशाली शासक प्रमाणित हुआ। वह राजा के दैवीय अधिकारों (Divine rights of the king) में विश्वास रखने वाला व्यक्ति था। उसने अपनी शक्ति के द्वारा यूरोप में फ्रांस को उच्च स्थान प्रदान कराया, यद्यपि ऐसा करने के लिए उसे अनेक युद्ध लड़ने पड़े। लुई XIV अत्यन्त निरंकुश शासक था। उसका कहना था, "मैं ही राज्य हूँ। लुई XIV के युद्धों ने यद्यपि फ्रांस को यूरोप में सम्मान प्रदान किया, किन्तु उसकी इस नीति से फ्रांस को अत्यधिक आर्थिक हानि का सामना करना पड़ा, जिससे फ्रांस की अर्थव्यवस्था लड़खड़ाने लगी। लुई XIV के पश्चात् फ्रांस का शासक लुई XV बना। लुई XV जब गद्दी पर बैठा तब वह मात्र पाँच वर्ष का था, अत: उसने पहले तो अपने चाचा के संरक्षण में 1715 ई० से 1723 ई० तक तथा बाद में कार्डिनेल फ्लेरी के संरक्षण में 1723 ई० से 1743 तक शासन किया। 1743 ई० से 1774 ई० तक लुई XV ने स्वयं शासन किया। यह फ्रांस का दुर्भाग्य था कि लुई XV ने वहाँ इतने लम्बे समय तक शासन किया, क्योंकि वह एक अयोग्य शासक था। उसने अपना सम्पूर्ण जीवन विलासिता में ही व्यतीत किया। लुई XV के शासन-काल में ही वास्तविक अर्थों में फ्रांस में क्रांति के बीज बो दिए गए थे तो कुछ वर्षों के पश्चात् 1789 ई० में अंकुरित हुए। उसकी अकुशल नीतियों व गम्भीर आर्थिक स्थिति के कारण उसके उत्तराधिकारी लुई XVI (1774 ई० से 1793 ई० तक) को अत्यधिक परेशानी का सामना करना पड़ा।

इस प्रकार फ्रांस की क्रांति के समय वहाँ का शासक लुई XVI था।

अध्ययन की सुविधा के लिए क्रांति से पूर्व फ्रांस को निम्नलिखित शीर्षकों में विभाजित किया जा सकता है—1. राजनीतिक स्थिति, 2. आर्थिक स्थिति, 3. सामाजिक स्थिति, 4. धार्मिक स्थिति व 5. बौद्धिक क्रांति।

1789 ई० से पूर्व फ्रांस में जो शासन-व्यवस्था थी, उसे पुरातन-व्यवस्था (Old Regime) कहा जाता है। पुरातन-व्यवस्था की प्रमुख विशेषता उसमें व्याप्त अनियमितताएँ थीं, इसी कारण उसके लिए 'अपव्ययी अराजकता' (A prodigal anarchy), तथा 'शक्तियों का कचरा' (Debris of Powers), आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। पुरातन-व्यवस्था के अन्तर्गत समाज अनेक वर्गों में विभक्त था। उच्च वर्ग को अनेक विशेषाधिकार प्राप्त थे, जिससे निम्न वर्ग को अनेक अतिरिक्त कष्टों का सामना करना पड़ता था। तत्कालीन राजनीतिक स्थिति निम्नवत् थी—

1. **राजा के अधिकार** (Rights of the King)—फ्रांस में क्रांति से पूर्व निरंकुश राजतन्त्र था, जिसका सर्वोच्च अधिकारी राजा होता था। राजा, राज्य का उच्च तथा देदीप्यमान प्रमुख और राष्ट्र की शक्ति, प्रतिष्ठा तथा वैभव का प्रतीक होता था।

राजा, दैवीय अधिकारों (Devine rights) में विश्वास करने के कारण, स्वयं को किसी भी व्यक्ति अथवा संस्था के प्रति उत्तरदायी नहीं मानता था तथा निरंकुशतापूर्वक शासन करना चाहता था, जैसा कि लुई XVI के कथन, "चूँकि मैं चाहता हूँ, इसलिए यह कानूनी है" से स्पष्ट है। राजा ही कानून बनाता, वही कर लगाता, खर्च भी अपनी इच्छानुसार करता, युद्ध की घोषणा करता तथा अपनी स्वेच्छा से ही अन्य राष्ट्रों के साथ सन्धि करता। राजा किसी भी व्यक्ति को बिना अभियोग बताए बन्दी बना सकता था। यद्यपि स्टेट्स जनरल तथा पार्लमां (States General and the Parlement) राजा की शक्तियों पर अंकुश लगाने वाली दो संस्थाएँ थीं, किन्तु स्टेट्स जनरल नियमित संस्था नहीं थी तथा राजा की इच्छा पर ही उसका अधिवेशन बुलाया जाता था। स्टेट्स जनरल का अधिवेशन 1614 ई० के बाद से क्रांति तक एक बार भी नहीं बुलाया गया था। फ्रांस में क्रांति के समय जब इसका अधिवेशन आमन्त्रित करने का प्रयास किया गया तो फ्रांस में उस समय किसी को इसके संगठन व चुनाव-व्यवस्था की जानकारी न थी। अनेक कठिनाइयों के उपरान्त स्टेट्स जनरल के चुनाव कराए गए। अत: इससे स्टेट्स जनरल की महत्त्वहीनता स्वत: ही प्रमाणित हो जाती है। फ्रांस में दूसरी संस्था पार्लमां थी, जो प्रतिनिधि संस्था न होकर एक उच्चतम न्यायालय (Supreme Court) के समान थी। फ्रांस में कुल मिलाकर 13 पार्लमां थीं, जिनमें सबसे शक्तिशाली पेरिस की पार्लमां थी। पार्लमां का प्रमख कार्य, न्याय करने के अतिरिक्त राजा के आदेशों का पंजीकरण करना था। लुई XVI के शासनकाल में पार्लमां की शक्तियों में महत्त्वपूर्ण वृद्धि हुई तथा वह राजा का प्रतिरोध भी समय-समय पर करने लगी। स्टेट्स के अस्तित्वहीन होने के कारण पार्लमां ही राजा और जनसाधारण के बीच एक माध्यम थी। अत: पार्लमां का विशेष महत्त्व था।

2. **राजा की विलासिता** (Lustiness of the Kings)—फ्रांस के बूर्बोवंशीय शासक अत्यन्त शान-शौकत से रहते थे तथा अत्यन्त विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। फ्रांस की राजधानी पेरिस थी, किन्तु राजा वार्साय (Versailles) में रहते थे, जो पेरिस से 12 मील की दूरी पर स्थित था। वार्साय में उनका आलीशान महल बना हुआ था, जिसे लुई XIV ने करोड़ों डॉलर खर्च करके बनवाया था। उस महल में सैकड़ों कमरे, गिरजाघर, नाट्यशाला, भोजन कक्ष, सत्कार-गृह, अगणित अतिथि-भवन तथा नौकरों के रहने के लिए सैकड़ों कमरे बने हुए थे। इस महल में ही अनेक उद्यान, मूर्तियाँ, फव्वारे तथा कृत्रिम सरोवर बने हुए थे। राजा व राज-परिवार के लोग आमोद-प्रमोद में विलीन रहते थै। हैजन ने लिखा है कि इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि इन प्रासादों के निवासी अपने को सच्चे अर्थों में 'देवानां-प्रिय' समझते थे, क्योंकि पृथ्वी पर उससे अधिक विलासिता और तड़क-भड़क कहीं अन्यत्र देखने को नहीं मिल सकती थी।
3. **राजा की अपव्ययता** (Extravagency of Kings)—राजाओं के खर्चे भी असीमित थे। राजा तथा रानी दोनों ही कृपापात्रों एवं सेवकों को खुले हाथों से धन लुटाते थे तथा उच्च पद व पेंशन देकर राजकीय धन का अपव्यय करते थे। राजा तथा रानी के सेवक-सेविकाओं की संख्या ही 500 थी। रानी की नौकरानियों को दीपक बेचने का विशेष अधिकार था। ये दीपक केवल एक बार जलाए जाते थे, लेकिन उनसे प्रत्येक बेचने वाली को डेढ़ लाख का लाभ हो जाता था। कहा जाता है कि लुई XIV ने 1789 ई० से पूर्व के 15 वर्षों में तीस करोड़ रुपए इसी प्रकार के कार्यों में खर्च किए थे। इसी कारण हैजन ने लिखा है, "राजा की छत्र-छाया में फलने-फूलने वालों के लिए नि:सन्देह यह एक स्वर्ण युग था।" रानी आन्तनेत भी अत्यधिक अपव्ययी थी। कीमती चीजें खरीदने का उसे शौक था। प्रति सप्ताह वह चार जोड़ी जूते खरीदती थी। राज परिवार के लोगों द्वारा निरन्तर इसी प्रकार से अपव्यय करने का राजकोष पर गम्भीर प्रभाव होता था। इसी कारण फ्रांस में लोग राज दरबार को 'राष्ट्र की कब्र' (Grave of the Nation) कहते थे।
4. **अक्षम प्रशासनिक व्यवस्था** (Inefficient Administration)—फ्रांस की सरकार की स्थिति अत्यन्त खराब थी। फ्रांस की प्रशासनिक व्यवस्था अत्यधिक दोषपूर्ण तथा अक्षम थी। प्रशासन में योजना व व्यवस्था का पूर्णतया अभाव था। विभागों में कार्यों का वितरण भी तर्कसंगत न था। अनेक ऐसे कार्य थे, जिनकी जिम्मेदारी कई विभागों में विभक्त थी, जिससे कोई भी विभाग उस कार्य को नहीं करता था। राजा को परामर्श देने के लिए पाँच समितियाँ थीं, जो कानून बनाने, आदेश जारी करने तथा अन्य घरेलू व विदेशी कार्यों को भी करती थीं। प्रशासन की दृष्टि से फ्रांस 36 भागों में विभक्त था, जिन्हें जिनेरालिते (Generalities) कहा जाता था। प्रत्येक जिनेरालिते का अध्यक्ष **ऐतादां** (Intendant) कहलाता था। ऐतादां, साधारणतया मध्यम वर्ग का होता था। इनकी नियुक्ति स्वयं राजा के द्वारा ही की जाती थी। इनका काम राजधानी के आदेशों का पालन करना तथा अपने काम की आख्या राजधानी को भेजना था। ये ऐतादां, वास्तव में उस कुशासन को

TOUCH 'n' PASS

चलाने के साधन थे, जिनकी वास्तविक शक्ति पूर्वोक्त पाँच समितियों के हाथों में थी। अत: ये भी निरंकुश रूप से ही प्रशासन करते थे।

फ्रांस में स्थानीय स्वराज्य संस्थाएँ (Local self Government Institutions) नहीं थीं। स्थानीय प्रशासन की नीतियाँ भी वार्साय से ही नियन्त्रित होती थीं। हेजन ने लिखा है कि वास्तविक अर्थ में राज्य भर में लालफीताशाही (Red tapism) का ही बोलबाला था। इस राक्षसी व्यवस्था के अन्तर्गत साधारण जनता की स्थिति मूक तथा असहाय पशुओं के समान थी, जो न तो बोल सकती थी और न ही कुछ कर सकती थी, जिस तरफ को आवाज दी जाती उधर ही चली जाती। उस समय फ्रांस में कोई ऐसी संस्था न थी जो जनता को राजनीतिक शिक्षा देती। सरकारी पदों पर नियुक्ति योग्यता के आधार पर नहीं होती थी। उच्च वर्ग इन पदों को खरीद लेते थे तथा इस प्रकार अपनी आय व सम्मान को बढ़ाते थे। इन पदों के खरीदने व बेचने से भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता था।

फ्रांस में ही अलग-अलग स्थानों के लिए अलग-अलग कानून थे। फ्रांस में तेरह प्रान्तों में व्यापार पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न था, किन्तु अन्य प्रान्त एक-दूसरे से इस प्रकार पृथक् थे जैसे अलग-अलग देश होते हैं। एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त को माल भेजने पर कर देना पड़ता था।

फ्रांस में न्याय-व्यवस्था भी अत्यन्त पेचीदा व दोषपूर्ण थी। फ्रांस में लगभग 400 प्रकार के न्याय विभाग थे। एक कार्य जो कस्बे में उचित माना जाता था, दूसरे में गैर-कानूनी माना जाता था। लिखित कानूनों की भी अधिकांश स्थानों पर व्यवस्था नहीं थी, कानून परम्परावादी तथा सामन्तीय भावनाओं से ओत-प्रोत थे? एक ही अपराध के लिए भिन्न-भिन्न प्रान्तों में अलग-अलग दण्ड का प्रावधान था। न्याय-व्यवस्था के उपर्युक्त दोषों के अतिरिक्त सर्वाधिक दोषपूर्ण गैर-कानूनी गिरफ्तारियों तथा प्रतिबन्धों का प्रचलन था। राजा बिना किसी पूर्व सूचना के किसी भी व्यक्ति को बन्दी बनवा सकता था। राजा ही नहीं वरन् उसका कोई भी कृपापात्र 'लेत्रे दे शाशे' (Letter de chachet) की सहायता से किसी को भी गिरफ्तार कर सकता था। यदि उस व्यक्ति का कोई प्रभावशाली व्यक्ति परिचित न हो तो सम्भवत: उसकी मृत्यु के समय तक भी उस केस को अदालत में प्रस्तुत नहीं किया जाता था। वाल्टेयर तथा मिराब्यू को भी इसी कुप्रणाली के द्वारा कुछ समय के लिए बन्दी बनाया गया था। फ्रांस का मध्य वर्ग इस कुप्रणाली का घोर विरोधी था।

फ्रांस के शासक इस प्रशासनिक व्यवस्था में किसी प्रकार का परिवर्तन करना नहीं चाहते थे। राजा विलासिता में ही लिप्त रहते थे। राज्य की समस्याओं की ओर ध्यान देने का उनके पास समय ही नहीं था। लुई XV के शासनकाल में जब उनके कुछ योग्य परामर्शदाताओं ने उसे सुझाव दिया कि फ्रांस में सुधार किए जाने की अत्यधिक आवश्यकता है तो विलासी लुई XV ने सुधार करने के स्थान पर जवाब दिया कि वर्तमान व्यवस्था में भी उसका समय तो कट ही जाएगा। अत: स्पष्ट है कि फ्रांस के राजा अदूरदर्शी, विलासी एवं योग्य न थे। ऐसे शासकों के अधीन अक्षम व कार्यकुशलहीन प्रशासनिक-व्यवस्था का होना स्वाभाविक ही था।

प्र.2. फ्रांस की क्रांति से पूर्व सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति का परीक्षण कीजिए।

Examine the social and religious condition before the French revolution.

उत्तर

फ्रांस की क्रांति से पूर्व सामाजिक स्थिति
(Social Condition Before the French Revolution)

अठारहवीं शताब्दी में फ्रांस की राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक स्थिति समान ही सामाजिक ढाँचा (social structure) भी अत्यन्त दोषपूर्ण एवं कष्टप्रद था। ऐसी अनेक कुरीतियाँ तथा बुराइयाँ तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था में विद्यमान थीं, जिनका बुद्धि व जनहित से कोई सम्बन्ध न था। इनमें से अधिकांश प्रथाएँ सामन्तीय युग (feudal age) से चली आ रही परम्पराएँ थीं, जो 18वीं शताब्दी के अनुकूल नहीं थीं। तत्कालीन समाज में प्रत्येक व्यक्ति का व्यवसाय उसके जन्म के अनुसार बंटा हुआ था। जो जिस घराने में जन्म लेता था वह उन्हीं परिस्थितियों में रहता था, उसकी योग्यता अथवा अयोग्यता में कोई अन्तर नहीं पड़ता। इसी प्रकार के विचार व्यक्त करते हुए लिओ गर्शोय ने लिखा है, "फ्रांस का सामाजिक स्वरूप व्यक्ति के जीवन, स्वतन्त्रता व प्रसन्नता को बढ़ाने वाले सिद्धान्तों को प्रोन्नत करने वाला नहीं था। जब तक कि कोई व्यक्ति इतना भाग्यशाली न हो जो कि उसका जन्म उच्च वर्ग में हुआ हो।"

सामाजिक वर्गीकरण (Social Classification)

फ्रांसीसी समाज का वर्गीकरण अग्र प्रकार से किया जा सकता है—

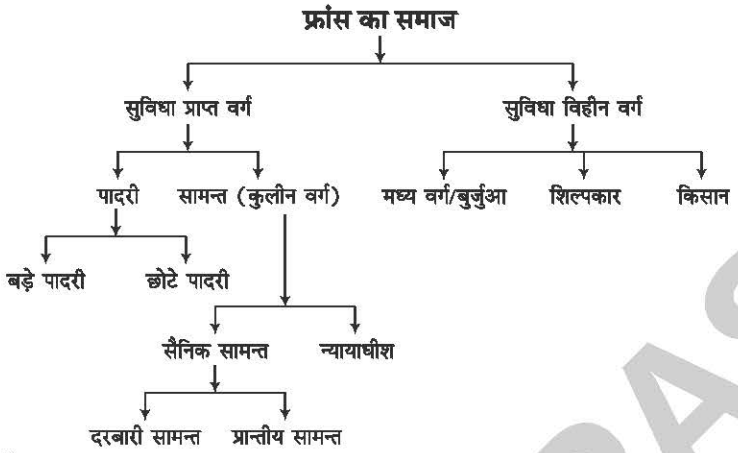

उपर्युक्त चार्ट से स्पष्ट है कि फ्रांस का समाज दो वर्गों में बंटा हुआ था। प्रथम, सुविधा प्राप्त वर्ग (Priviledged class), जिन्हें हर प्रकार के विशेषाधिकार प्राप्त थे। इस वर्ग में पादरी व कुलीन अथवा सामन्त आते थे। दूसरा, सुविधाविहीन वर्ग जिसके पास विशेषाधिकार अथवा सुविधाएँ न थीं, तथा इनका जीवन अत्यन्त कष्टप्रद था। इस वर्ग में जनसाधारण आता था। सुविधा प्राप्त वर्ग भी दो भागों—पादरियों व सामन्तों में बँटा हुआ था, अत: इस प्रकार फ्रांसीसी समाज में प्रमुखतया तीन वर्ग थे।
पादरी, सामन्त (कुलीन) तथा जनसाधारण, इनको क्रमश: प्रथम एस्टेट (First Estate) द्वितीय एस्टेट (Second Estate) तथा तृतीय एस्टेट (Third Estate), कहा जाता था।

1. **पादरी** (Clergy)—पादरी प्रथम एस्टेट के अन्तर्गत आने वाला वर्ग तथा इनका स्थान समाज में सर्वोच्च था। ये अत्यन्त शक्तिशाली तथा धनी थे। फ्रांस की कुल भूमि का लगभग 1/5वाँ भाग इनके अधीन था। इस भूमि से उन्हें अत्यधिक आय प्राप्त होती थी। इसके अतिरिक्त, वे किसानों से धार्मिक कर (Tithes) भी वसूल करते थे। यद्यपि यह वास्तविक अर्थों में राष्ट्रीय कर था, किन्तु इसका लाभ धर्माधिकारी उठाते थे। चर्च के अधिकारी अपने अधीन किसानों से जागीरदारी कर भी वसूल करते थे। चर्च की वार्षिक आय लगभग दस करोड़ डालर थी, जिसे धार्मिक भवनों के निर्माण व मरम्मत, धार्मिक सेवाओं, चिकित्सालयों तथा पाठशालाओं की सहायता के लिए खर्च किया जाना चाहिए था, किन्तु वास्तविक स्थिति ऐसी न थी। फ्रांस की अन्य संस्थाओं के समान ही चर्च में भी घोर भ्रष्टाचार व्याप्त था, जिससे देश की नैतिक भावना को आघात लगा था। चर्च की आय का प्रमुख भाग बड़े अधिकारियों के व्यक्तिगत खातों में चला जाता था। इन धर्माचारियों में से कुछ का नैतिक चरित्र अत्यन्त निन्दनीय और विचारधारा निम्नस्तरीय थी।
चर्च के अधिकारियों की स्थिति में भी भारी अन्तर था। उच्च धर्माधिकारियों की स्थिति बहुत अच्छी तथा चर्च धर्म के प्रत्येक मामले में सर्वेसर्वा था, किन्तु चर्च के छोटे अधिकारियों की स्थिति बहुत खराब थी। उनकी और साधारण जनता की स्थिति में विशेष फर्क न था। अन्यायपूर्ण व्यवस्था से वे पूर्णतया परिचित थे, इस कारण क्रांति के समय इन लोगों ने जनसाधारण की सहायता की।
2. **कुलीन वर्ग** (Nobles)—विशेषाधिकार प्राप्त दूसरा वर्ग कुलीनों का था, जो राजदरबारी तथा बड़े-बड़े सरकारी अधिकारी होते थे। क्रांति से पूर्व फ्रांस में इनकी संख्या लगभग चार लाख थी। यद्यपि रिशलू तथा लुई XIV ने सामन्तों की शक्ति में पर्याप्त ह्रास किया था, किन्तु फिर भी यह वर्ग अभी शक्तिशाली था। फ्रांस की कुल भूमि का चौथाई भाग उनके अधीन था, जिसकी आय से ये लोग विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। सामन्तों में भी दो वर्ग थे—सैनिक सामन्त तथा न्यायाधीश।
वे सामन्त जिनके सम्बन्ध पुराने सैनिक परिवारों से थे—'सैनिक सामन्त' (Nobles of the Sword) की श्रेणी में आते थे। सैनिक सामन्त भी दो प्रकार के थे—दरबारी सामन्त (Court nobles) तथा प्रान्तीय सामन्त (Provincial nobles)। दरबारी सामन्त संख्या में कम थे, किन्तु वे अत्यन्त शान-शौकत व विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। राजदरबार में रहने के कारण उन्हें राजा के निकट आने का अवसर मिलता था, जिससे वे अत्यन्त शक्तिशाली हो गए थे। राजा के अधिकांश उच्च पदों पर उनका एकाधिकार था। प्रान्तीय सामन्तों की संख्या बहुत अधिक थी, किन्तु ये इतने

TOUCH 'n PASS

प्रभावशाली न थे। अपने-अपने प्रान्तों में रहने के कारण उनका राजाओं से विशेष सम्बन्ध नहीं रहता था, अत: उनके प्रभावों में वृद्धि नहीं हो पाती थी। समाज में उन्हें न तो विशेष सम्मान ही प्राप्त था और न ही उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी। फ्रांस की जनता के हृदय में सामन्त वर्ग के प्रति जो घृणा थी वह वास्तव में स्वार्थी तथा लालची दरबारी सामन्तों के लिए ही थी।

सामन्तों का दूसरा वर्ग न्यायाधीशों (Nobles of the Robes) का था। फ्रांस की पुरातन व्यवस्था में पदों को खरीदा जा सकता था। ऐसा पद खरीदने पर सरकार से उन्हें सामन्त (Nobles) होने का प्रमाण-पत्र प्राप्त हो जाता था। इस प्रकार सामन्तों के इस वर्ग का उदय हुआ था। ये लोग मध्यकालीन सामन्तों के वंशज न थे। इनमें से अधिकांश न्यायाधीश अथवा न्यायाधिकरणों के सदस्य थे अत: इन्हें 'न्यायाधीश सामन्त' कहा जाता था। ये वर्ग, अन्य सामन्तों की तुलना में उदारवादी थे तथा समय-समय पर राजा व सरकार के कानून का विरोध इन्होंने किया था, किन्तु अपने विशेषाधिकारों से इन्हें विशेष लगाव था, उन्हें छोड़ने के लिए वे तैयार न थे।

3. **तीसरा वर्ग** (Third Estate)—पादरी व सामन्त वर्गों के अतिरिक्त फ्रांस की शेष जनता इसी वर्ग में आती थी, जिसे तृतीय वर्ग (Third Estate) कहा जाता था। इस वर्ग को किसी प्रकार के अधिकार प्राप्त न थे। इस वर्ग में भारी असमानता थी। धनी-से-धनी व्यक्ति अथवा प्रतिभाशाली साहित्यकार अथवा मजदूरी तथा किसान, जो भी पादरी व कुलीन वर्ग में न था, इसी तीसरे वर्ग का सदस्य था। यह वर्ग भी प्रमुखतया तीन भागों में विभक्त था—मध्यम वर्ग, शिल्पकार तथा किसान—

(i) **मध्यम वर्ग** (Bourgeoisie)—फ्रांस के मध्यम वर्ग को 'बुर्जुआ' कहते थे। इस वर्ग के लोग शहरों में रहते थे तथा धनी, शिक्षित, अध्यापक, साहित्यकार, इंजीनियर व अन्य बौद्धिक लोग थे, जिन्हें शारीरिक कार्य नहीं करना पड़ता था। इस वर्ग के लोग, अक्लमन्द, मेहनती, शिक्षित एवं आर्थिक रूप से सम्पन्न होने के कारण, पुरातन व्यवस्था के घोर विरोधी थे। पादरी एवं कुलीन वर्ग का इनके प्रति व्यवहार अच्छा न था, जिससे वे स्वयं को हीन महसूस करते थे। मध्यम वर्ग के अनेक धनी व्यापारियों ने सरकार को कर्ज दे रखा था, लेकिन सरकार की स्थिति को देखते हुए उन्हें अपने धन की चिन्ता होने लगी थी।

उल्लेखनीय है कि फ्रांस के सर्वाधिक बुद्धिमान धनी, सभ्य तथा प्रगतिवादी लोग मध्यमवर्गीय ही थे, किन्तु उनको कोई राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। मध्यम वर्ग राजनीतिक अधिकारों को प्राप्त करना चाहता था। पुरातन-व्यवस्था में समस्त राजनीतिक पदों पर कुलीन वर्ग का आधिपत्य था, अत: पुरातन-व्यवस्था की समाप्ति किए बिना मध्यम वर्ग को राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं हो सकते थे। राजनीतिक अधिकारों के अभाव में मध्यमवर्गीय व्यापारियों को अत्यधिक परेशानियों का सामना करना पड़ता था। राजा तथा कुलीन वर्ग स्वेच्छा से कर लगाते थे तथा नीतियों में परिवर्तन करते थे, जिसका परिणाम मध्यम वर्ग को भुगतना पड़ा था व उनके व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था।

मध्यम वर्ग मात्र राजनीतिक व्यवस्था में ही परिवर्तन का इच्छुक न था वरन् वे सामाजिक क्रांति भी चाहते थे। हैजन ने लिखा है, "वे सुरक्षित थे, उनके मस्तिष्क उस युग के साहित्य से, जिसका वे चाव से अध्ययन करते, ओत-प्रोत थे। वाल्टेयर, रूसो, मॉण्टेस्क्यू तथा अनेक अर्थशास्त्रियों के विचारों ने उन्हें आन्दोलित कर रखा था। व्यक्तिगत तुलना में वे उतने ही सुसंस्कृत थे जितना कुलीन वर्ग। वे सामाजिक समता चाहते थे, उनकी प्रबल इच्छा थी कि कानून इस बात को स्वीकार कर ले कि बुर्जुआ वर्ग के लोग कुलीन वर्ग के समान हैं।"

अत: मध्यम वर्ग के हितों के लिए फ्रांस की राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन होना आवश्यक था। मध्य वर्ग में अपने हितों की रक्षा करने की प्रवृत्ति बलवती होती जा रही थी। यही कारण था कि फ्रांस की क्रांति में मध्यम वर्ग का प्रमुख योगदान रहा।

(ii) **शिल्पकार** (Artisans)—तृतीय वर्ग (Third Estate) मध्यम वर्ग के समान ही शहरों में रहने वाला दूसरा वर्ग शिल्पकारों का था। फ्रांस में उस समय इनकी संख्या लगभग 25 लाख थी। फ्रांस में महान् क्रांति से पूर्व उद्योग-धन्धे पूर्णतया विकसित नहीं हो सके थे, अत: इनकी संख्या कम ही थी। शिल्पकार अनेक श्रेणियों में विभक्त थे तथा

TOUCH 'n' PASS

प्रत्येक श्रेणी के अपने-अपने नियम थे। श्रेणियों के पारस्परिक सम्बन्ध अत्यन्त खराब थे तथा उनमें आपस में अक्सर झगड़े होते रहते थे। सरकार की ओर से इन शिल्पकारों को किसी प्रकार की सुविधा प्रदान नहीं की जाती थी।

(iii) **किसान** (Peasants)—फ्रांस में तृतीय वर्ग में सर्वाधिक संख्या किसानों की थी। फ्रांस में कुल मिलाकर भी किसानों की संख्या सर्वाधिक थी। फ्रांस की कुल जनसंख्या का 9/10वाँ भाग किसान ही थे, किन्तु फिर भी सबसे शोचनीय स्थिति उन्हीं की थी। करों का सम्पूर्ण भाग भी इन्हीं गरीबों के कन्धों पर था। किसानों को अपनी कुल आय का आधे से भी अधिक भाग करों के रूप में देना पड़ता था। सामन्तों को उन्हें भूमि-कर तथा चर्च को धर्मांश कर (Tithes) देना पड़ता था। इन सबका परिणाम यह होता था कि किसान सदैव आर्थिक संकट से ग्रस्त रहते थे। यदि कभी प्रकृति का प्रकोप हो जाता तो किसान भूखे मरने लगते थे, किन्तु सरकार को इसकी कोई चिन्ता नहीं थी। भूख से परेशान हजारों किसान लुटेरे बन गए थे। किसानों को हर कदम पर कर देना पड़ता था। पुलों तथा सड़कों तक का प्रयोग करने पर उनसे कर लिए जाते थे। आटे की चक्की तथा शराब बनाने के लिए कोल्हू का प्रयोग करने के लिए भी उन पर प्रतिबन्ध था कि वे अपने ही सामन्त की चक्की अथवा कोल्हू का प्रयोग करें चाहे उसके लिए उन्हें 4-5 मील जाना पड़ता था। चक्की अथवा कोल्हू का प्रयोग करने पर कर तो उन्हें देना ही पड़ता था।

उपर्युक्त कारणों से किसानों में असन्तोष की भावना बढ़ती जा रही थी। उन्हें अनुभव होने लगा था कि उनकी स्थिति में तभी परिवर्तन हो सकता है जब पुरातन-व्यवस्था में आमूल परिवर्तन किया जाए। लिओ गर्शोय ने लिखा है, "किसान इतने दु:खी हो चुके थे कि वे स्वयं ही एक क्रांतिकारी तत्त्व के रूप में परिणित हो गए। उन्हें क्रांति करने के लिए मात्र एक संकेत की आवश्यकता थी, तथा उन्हीं की प्रमुख भूमिका ने 1789 ई० की क्रांति को सफल बनाया था।"

फ्रांस की क्रांति से पूर्व धार्मिक स्थिति
(Religious Condition Before the French Revolution)

फ्रांस में धार्मिक स्वतन्त्रता नहीं थी। बूर्बों वंश रोमन कैथोलिक चर्च का अनुयायी था, अत: इसी चर्च का फ्रांस में प्रभुत्व छाया हुआ था। कैथोलिक चर्च के पास अपार धन-सम्पदा थी तथा उसके अधिकारी अत्यन्त शान-शौकत एवं विलासिता से रहते थे। फ्रांस में बड़ी संख्या में प्रोटेस्टैण्ट (Protestant) भी रहते थे। फ्रांस में इन्हें ह्यूगनोट (Huguenots) कहा जाता था। हेनरी IV ने अपने शासनकाल में इन्हें धार्मिक स्वतन्त्रता दे दी थी, किन्तु मन्त्री रिशलू ने 'ह्यूगनोट्स' पर अत्यधिक अत्याचार किए। लुई XIV ने भी ह्यूगनोट्स को समाप्त करने के यथासम्भव प्रयास किए। 1685 ई० में ह्यूगनोट्स के सभी विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया गया तथा उनकी धार्मिक स्वतन्त्रता को छीन लिया गया। लुई XIV के समय में यद्यपि ह्यूगनोट्स पर अत्याचार नहीं किए गए, किन्तु उन पर प्रतिबन्धों को पूर्ववत् बनाए रखा गया। यहूदियों के साथ भी फ्रांस में दुर्व्यवहार किया जाता था।

प्र.3. फ्रांस की क्रांति (1789) में दार्शनिकों के योगदान का वर्णन कीजिए तथा क्रांति के परिणामों को बताइए।
Describe the contribution of the philosophers in the French revolution (1789) and state the results of the revolution.

उत्तर

फ्रांस की क्रांति में दार्शनिकों का योगदान
(Contribution of the Philosophers in the French Revolution)

पुनर्जागरण आन्दोलन ने फ्रांस में जागृति उत्पन्न कर दी थी। अनेक विद्वान तथा लेखक फ्रांस जन्म ले चुके थे। इन विद्वानों का प्रभाव मध्यम वर्ग पर सर्वाधिक हुआ। यह वर्ग राजनीति में भाग लेने की तीव्र इच्छा रखता था, इस इच्छा को बढ़ाने में दार्शनिकों का विशेष हाथ था। चैट्यूब्रिआंड के अनुसार, "भौतिक कठिनाइयों तथा बौद्धिक उफान के संयोग के कारण ही फ्रांस की क्रांति हुई।"

मॉण्टेस्क्यू, वल्टेयर और रूसो उस युग के तीन प्रमुख विद्वान थे। मॉण्टेस्क्यू एक प्रसिद्ध वकील था। वह अत्यन्त विद्वान और गम्भीर, पैनी बुद्धि वाला विद्यार्थी रहा था। उसकी लेखन-शैली अत्यन्त तीखी और प्रभावशाली थी। उनके लेख युक्तिसंगत, वैज्ञानिक और मध्यम मार्ग (Moderate in tone) के होते थे। उसने एक दार्शनिक आन्दोलन आरम्भ किया और समालोचना के व्यंग-बाण छोड़े जिन्होंने फ्रांस के पुराने राज्य (Ancient regime) की जड़ें हिला दीं। वह सांविधानिक शासन-पद्धति और कानून की सर्वोच्च सत्ता के पक्ष में था। माण्टेस्क्यू ने सरकार को चलाने वाले और नियमित करने वाले कानूनों और रीति-रिवाजों का विश्लेषण किया और इस प्रकार फ्रांस की पुरानी संस्थाओं के प्रति अन्धविश्वास को समाप्त किया।

वाल्टेयर ने गद्य, पद्य, इतिहास, नाटक आदि सभी प्रकार की रचनाओं में प्राचीन रूढ़िवादियों, अन्धविश्वासों और कुप्रथाओं पर आक्रमण किया। वाल्टेयर दुर्लभ सर्वतोमुखी प्रतिभा, उसका तीक्ष्ण सामान्य ज्ञान, उसकी युक्तिप्रियता ने उसके देश के लोगों को अत्यधिक प्रभावित किया। उसने इस दार्शनिक आन्दोलन को लोकप्रिय बनाया। उसकी आलोचना का मुख्य केन्द्र फ्रांस का चर्च था। वह उसको एक कुत्सित संस्था मानता था। उसने ईसाइयों की धार्मिक कट्टरता और धर्महठता की समालोचना की। वह धार्मिक सहिष्णुता का पक्षपाती था। उसका मानना था, 'क्योंकि हम सभी गलतियों और मूर्खताओं के शिकार हैं, इसलिए हमें आपस में एक-दूसरे की मूर्खताओं के लिए एक-दूसरे को क्षमा कर देना चाहिए।' अपने साहित्यिक गुणों और विशेषताओं के कारण वाल्टेयर के लेख बहुत लोगों के द्वारा पढ़े गए और इसमें आश्चर्य नहीं कि उसने अपने युग में जनता को अत्यधिक प्रोत्साहित किया।

फ्रांस के दार्शनिक विद्वानों में सबसे प्रभावपूर्ण रूसो था। उसने जनता के हाथों में राज्य की सर्वोच्च सत्ता होने (Sovereignty of the People) के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति राज्य की सर्वोच्च सत्ता का अभिन्न अंग था। देश के कानून केवल मात्र सर्वोच्च सत्ता की सामान्य इच्छा (General will) की अभिव्यक्ति थे। चूँकि राज्य की सर्वोच्च सत्ता जनता में निहित है इसलिए कोई भी राज्य या सरकार उसे जनता से छीन नहीं सकती। जनता को सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने का अधिकार है। रूसो ने तत्कालीन सभी संस्थाओं की समालोचना की और उनकी नींवें हिला दीं। उसकी रचनाओं का जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसने जनता में स्वतन्त्र होने के लिए उत्साह उत्पन्न किया। रूसो की पुस्तक 'The Social Contract' ने क्रांति की सामग्री प्रदान करने क्रांति की चिंगारी फूँकी। यह जैकोबिन पार्टी के लिए ईश्वर की आवाज बन गई और शैब्जबरी उस आवाज को जनता तक पहुँचाने के लिए धर्मोपदेशक (High priest) बन गया। लॉर्ड मार्ले न रूसो के प्रभाव का निम्न शब्दों में मूल्यांकन किया है, "सबसे पहली बात तो यह है कि रूसो ने वे शब्द कहे जिनका प्रभाव कभी भी समाप्त नहीं किया जा सकता और उसने ऐसी आशा पैदा कर दी जिसको मिटाया नहीं जा सकता। पहले तो उसने अपने पवित्र और सच्चे दृढ़ विश्वास से लोगों को तत्कालीन स्थिति की बुराइयों के विरुद्ध भड़काया और मानवता के एक भारी भाग के लिए सभ्यता को तुच्छ सिद्ध कर दिया। फिर उसने अपनी तीक्ष्ण वक्तव्य शक्ति (Fluid eloquence) और दृढ़ विश्वास के गुणों से, जो उसने लोगों को भारी संख्या में भी पैदा कर दिए थे, फ्रांस में उस मृत्यु जैसी जड़ता और सुस्ती (Torpor) से जो कि उस (फ्रांस) पर शीघ्रता से काबू पा रही थी, जागने के लिए पर्याप्त शक्ति पैदा कर दी।"

इन तीन दार्शनिक विद्वानों के साथ-साथ अन्य कई लेखकों ने जनता के सोचने के ढंग पर प्रभाव डाला। दिड्रौट (Diderot) एनसाइक्लोपीडिया का जिसमें बहुत-से लेखकों ने अपनी रचनाएँ दी थीं सम्पादक था। वह अपने आपको अभिव्यक्त करने में अत्यन्त जोशीला, तीक्ष्ण और विचार करने में अत्यन्त कल्पनाशील था। हैल्वेटियस (Helvetius) ने मनुष्य के विचारों और आचरण के स्वहित की भावना के द्वारा निश्चित किए जाने के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। **हालबैक** (Holbach) ने राजाओं के दुर्गुणों और मनुष्यों की शोचनीय स्थिति की ओर संकेत किया। वह क्रांति का पक्षपाती था। उसके अनुसार, 'धार्मिक और राजनीतिक भूलों ने ब्रह्माण्ड को अश्रुओं के घर के रूप में परिणत कर लिया है।'

मैलेट (Mallet) के अनुसार, इन आश्चर्यजनक लेखकों के द्वारा बोए गए बीज उपजाऊ भूमि पर पड़े। मैडलिन के अनुसार, 'पहले से तैयार हथियारों को लोगों से चलवाने का काम दार्शनिकता ने किया।'

इस प्रकार उपर्युक्त समस्त कारणों से क्रांति रूपी रेलगाड़ी को फ्रांस में बारूद से भरा गया और तीन घटनाओं ने उसमें चिंगारी उत्पन्न करने का कार्य किया—पहली घटना अमेरिका की बस्तियों का स्वतन्त्र होना, दूसरी, पेरिस की संसद द्वारा स्टेट्स जनरल की माँग, और तीसरी, 1788 ई० 89 ई० के जाड़ों में फ्रांस में भयंकर अकाल का पड़ना था।

1789 ई० में क्रांति हो गई और राजा को बन्दी बना लिया गया। 1793 ई० में राजा तथा रानी को मौत के घाट उतार दिया गया। राजवंशीय व्यक्तियों तथा दरबारियों की हत्या कर दी गई तथा फ्रांस में प्रजातन्त्र की स्थापना की गई।

फ्रांस की क्रांति के परिणाम (Results of the French Revolution)

फ्रांस की क्रांति एक युग परिवर्तनकारी घटना थी। इसकी उपलब्धियाँ एवं परिणामों के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मत प्रकट किए गए हैं। कुछ इतिहासकारों के अनुसार यह एक जनतन्त्र-विरोधी, अप्रगतिशील तथा अराजकतावादी आन्दोलन था। इसके विपरीत अन्य लेखक व इतिहासकारों ने फ्रांस की क्रांति को आधुनिक इतिहास की महानतम् घटना बताया है। इतिहासकार हैजन के अनुसार, "फ्रांस की क्रांति ने राज्य के सम्बन्ध में एक नई धारणा को जन्म दिया, राजनीतिक तथा समाज के विषय में नए सिद्धान्त प्रतिपादित किए, जीवन का एक नया दृष्टिकोण सामने रखा और एक नई आशा तथा विश्वास उत्पन्न किया। इन सबसे बहुसंख्यक

जनता की कल्पना और विचार प्रज्वलित हुए, उनमें एक अद्वितीय उत्साह का संचार हुआ तथा असीम आशाओं ने उन्हें अनुप्राणित किया।'' सामाजिक समानता, सामन्तीय विशेषाधिकारों का अन्त, निरंकुश तथा भ्रष्ट प्रशासन में सुधार, न्याय तथा करों में समानता इन्हीं उद्देश्यों को पाने के लिए क्रांति की शुरुआत हुई थी। इस क्रांति के क्या परिणाम हुए उनका अध्ययन निम्नवत् है—

1. **सामन्तशाही का अन्त** (End of Feudalism)—फ्रांसीसी क्रांति की महत्त्वपूर्ण देन सामन्तीय व्यवस्था का अन्त करना था। इस व्यवस्था के अन्तर्गत बहुत वर्षों तक सामान्य जनता का शोषण किया गया, आर्थिक शोषण तो इस व्यवस्था की चारित्रिक विशेषता थी। फ्रांस की क्रांति द्वारा विशेषाधिकारों का अन्त करके समानता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया। इस क्रांति का अन्य देशों पर भी प्रभाव पड़ा कि यूरोप के अन्य देशों में भी धीरे-धीरे सामन्तशाही का अन्त हो गया।
2. **धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना** (Foundation of Secular State)—इस क्रांति के परिणामस्वरूप यूरोपीय देशों में धार्मिक सहिष्णुता का प्रादुर्भाव हुआ एवं लोगों को धार्मिक उपासना की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई एवं धर्म के सम्बन्ध में राजा का कोई हस्तक्षेप नहीं रहा।
3. **राजनीतिक स्वतन्त्रता, सामाजिक समानता एवं राष्ट्रीय बन्धुत्व की भावना का विकास** (Growth of Liberty, Equality and Fraternity)—क्रांति के समय क्रांतिकारियों द्वारा इन्हीं तीन सिद्धान्तों के प्रसार को अपना ध्येय बनाया गया। क्रांति ने राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक दृष्टि से प्रत्येक नागरिक को पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता का अधिकार प्रदान किया। स्वतन्त्रता (Liberty), समानता (Equality) व बन्धुत्व (Fraternity) का प्रचार केवल फ्रांस में ही नहीं, अपितु समस्त यूरोप में किया गया।
4. **राष्ट्रीयता की भावना का विकास** (Growth of National Feeling)—इस क्रांति की एक महत्त्वपूर्ण देन नागरिकों के हृदय में अपने देश की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करना था, जब विदेशी सेनाओं ने राजतन्त्र की सुरक्षा के लिए फ्रांस पर आक्रमण किया तो उस समय किसान, मजदूर एवं अन्य लोगों ने सेना में भर्ती होकर अत्यन्त वीरता के साथ विदेशी सेनाओं का सामना किया तथा विजय प्राप्त की। वह राष्ट्रीयता की भावना का ही एक ज्वलन्त उदाहरण है। राष्ट्रीयता की यह भावना यूरोप के अन्य देशों में भी व्याप्त होती गई। 1830 ई० तथा 1848 ई० की व्यापक क्रांतियाँ तथा 1870-71 ई० में इटली व जर्मनी का एकीकरण इसके प्रमुख उदाहरण हैं।
5. **लोकप्रिय सम्प्रभुता के सिद्धान्त का प्रतिपादन** (Principles of Democracy)—इस क्रांति के द्वारा राजनीतिक दृष्टि से राजाओं के **'दैवीय अधिकार के सिद्धान्त'** का अन्त करके लोकप्रिय सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया। कानून अब एक व्यक्ति अर्थात् राजा की इच्छा का परिणाम न होकर राष्ट्र के निर्वाचित प्रतिनिधियों की इच्छा का परिणाम था। वंशानुगत एवं भ्रष्ट न्यायाधीशों के स्थान पर अब निर्वाचित न्यायपालिका एवं जूरी पद्धति का प्रारम्भ हुआ। सर्वसाधारण द्वारा देश की राजनीति में प्रत्यक्ष रूप से हिस्सा बँटाने से उनमें आत्मविश्वास की भावना का संचार हुआ।
6. **समाजवाद की स्थापना** (Establishment of Socialism)—कुछ इतिहासकारों के अनुसार फ्रांस की क्रांति समाजवादी विचारधारा का स्रोत थी। राष्ट्रीय सभा ने मनुष्यों के आधारभूत सिद्धान्तों की घोषणा की, जिसमें प्रजातन्त्र का शिलान्यास किया गया। इस घोषणा में स्पष्ट रूप से कहा गया कि, ''सभी मनुष्य समान हैं तथा उन्नति का अवसर प्रत्येक को समान रूप से दिया जाना चाहिए।' रूसो के सिद्धान्त के अनुसार सब मनुष्य समान रूप से स्वतन्त्र जन्म लेते हैं, किन्तु सामाजिक बन्धन उनको जकड़ लेते हैं। उन बन्धनों को तोड़ने के लिए नेशनल असेम्बली ने अधिक परिश्रम किया, सभी के लिए एकसमान कानून तथा कर की व्यवस्था की गई। विशेषाधिकार युक्त वर्ग का अन्त करने के लिए 4 अगस्त, 1789 ई० को एक प्रस्ताव पास किया गया जिसके द्वारा कुलीन वर्ग का अन्त हो गया। अब कुलीन लोग भी साधारण वर्ग के समान ही थे तथा अब वे दरिद्र किसानों पर अत्याचार नहीं कर सकते थे। दास प्रथा का भी अन्त हो गया। जागीरदारों ने जनता के रुख को देखकर स्वंय ही अपने विशेषाधिकार त्याग दिए तथा फ्रांस से सामाजिक असमानता समाप्त हो गई।
7. **शिक्षा एवं संस्कृति का विकास** (Growth of Education and Culture)—फ्रांस की क्रांति ने शिक्षा को चर्च के आधिपत्य से निकालकर उसे राष्ट्रीय, सार्वभौमिक तथा धर्मनिरपेक्ष बनाया साथ ही पुरातन-व्यवस्था के अन्धविश्वासों को नष्ट किया। यूरोपीय साहित्य में स्वच्छन्दतावादी आन्दोलन भी क्रांति का ही परिणाम था।

क्रांति के सम्बन्ध में लॉर्ड एल्टन का कथन है कि, ''सामाजिक समानता और व्यवस्था क्रांति के उद्देश्य थे, जो प्राप्त कर लिए गए। सैनिक गौरव तथा भूमि का कृषकों को हस्तान्तरण, क्रांति की अन्य उपलब्धियाँ थीं। आधुनिक फ्रांस की राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति की नींव भी क्रांति ने रखी।''

TOUCH 'n' PASS

क्रांति के स्थायी परिणाम (Permanent Results fo the Revolution)—क्रांति के समय होने वाले भीषण रक्तपात एवं अव्यवस्था से जनता थक चुकी थी, अत: अब वह शासन सुदृढ़ हाथों में देखना चाहती थी। इन परिस्थितियों ने नेपोलियन बोनापार्ट का मार्ग प्रशस्त कर दिया। कई वर्षों की क्रांति के पश्चात् नेपोलियन का एक डिक्टेटर के रूप में उदय हुआ। नेपोलियन ने सही अर्थों में अपने को क्रांति का उत्तराधिकारी सिद्ध कर दिखाया। यद्यपि उसके शासन में स्वतन्त्रता का स्थान नहीं था, किन्तु क्रांति की दो अन्य भावनाओं—समानता एवं बन्धुत्व का उसने पूर्णतया पालन किया। नेपोलियन ने इटली, जर्मनी, रूस, आस्ट्रिया व स्पेन आदि देशों में भी इन भावनाओं को फैलाया। नेपोलियन के पतन के पश्चात् 1815 ई० में वियना की कांग्रेस में प्रतिक्रियावादी लोगों ने सन्धि करते समय इन भावनाओं का ख्याल नहीं रखा, फलत: सन्धि अस्थायी सिद्ध हुई। यूरोपवासी उस सन्धि को तोड़कर क्रांतिकारी भावनाओं से प्रोत्साहित होकर अपने राष्ट्रों के निर्माण करने का प्रयत्न करने लगे। अन्त में सम्पूर्ण यूरोप में नवयुग का प्रारम्भ हुआ जिसका सम्पूर्ण श्रेय फ्रांस की क्रांति को दिया जा सकता है, क्योंकि सर्वप्रथम इसी के द्वारा नवयुगीन गणतन्त्रात्मक भावनाओं का विकास हुआ।

प्र.4. फ्रांस की क्रांति की प्रमुख घटनाओं का विस्तार से वर्णन कीजिए।

Describe in detail the main events of the French revolution.

उत्तर

फ्रांस की क्रांति की प्रमुख घटनाएँ
(Main Events of the French Revolution)

फ्रांस की आर्थिक स्थिति लुई XVIवें के शासनकाल तक बहुत खराब हो चुकी थी। सरकार दिवालियेपन की स्थिति में पहुँच गई। अत: विवशतावश 1789 ई० में लुई सोलहवें ने स्टेट्स जनरल का अधिवेशन बुलाया। स्टेट्स जनरल के तीन विभाग थे—1. कुलीन वर्ग, 2. पादरी वर्ग तथा 3. जनसाधारण वर्ग। इन वर्गों के प्रतिनिधियों की संख्या प्राय: एक-समान थी जिसके कारण अधिवेशन में कुलीन तथा पादरी मिलकर जनसाधारण के प्रतिनिधियों के हितों की अवहेलना किया करते थे जिससे जनसाधारण में असन्तोष की वृद्धि होती थी, इसलिए नेकर ने राजा से मिलकर जनसाधारण के प्रतिनिधियों की संख्या दुगनी कर दी, परन्तु यह निर्णय नहीं हो पाया कि तीनों वर्गों के प्रतिनिधि सम्मिलित रूप से एक भवन में बैठकर विचार करेंगे तथा भिन्न-भिन्न भवनों में बैठेंगे। तीसरा सदन 90 प्रतिशत जनता का प्रतिनिधित्व करता था, यदि तीनों सदनों की एक साथ बैठक न होती और मतदान में एक व्यक्ति का मत न मानकर एक सदन का एक मत माना जाता तो तीसरे सदन की संख्या को दोगुना करने से कोई लाभ नहीं था।

स्टेट्स जनरल के सदस्यों का निर्वाचन—1789 ई० में स्टेट्स जनरल के सदस्यों का चुनाव किया गया, इसके अन्तर्गत मत देने का अधिकार तृतीय श्रेणी के उन व्यक्तियों को भी दिया जिनकी अवस्था 25 वर्ष से अधिक थी तथा वे कोई प्रत्यक्ष कर देते थे। पेरिस में अनेक प्रतिबन्ध लगाकर निर्धनों को निर्वाचन से वंचित कर दिया गया। इस प्रकार तीनों वर्गों के प्रतिनिधियों का निर्वाचन हुआ। इन निर्वाचित सभाओं द्वारा स्टेट्स जनरल के सदस्यों का निर्वाचन किया गया। इन सभी सभाओं ने सुधारों तथा शिकायतों का एक मसविदा भी तैयार किया, जिसे इतिहास में **काहिया** (Cahieys) के नाम से जाना जाता है।

स्टेट्स जनरल के निर्वाचन में मिराब्यू ने नेकर से प्रार्थना की थी कि उसको कुलीन वर्ग का प्रतिनिधि स्वीकार कर लिया जाए, परन्तु नेकर सहमत न हुआ। फलस्वरूप मिराब्यू थर्ड स्टेट्स की ओर से चुनाव के लिए खड़ा हुआ तथा एक्स (Aix) एवं मार्साई (Marseiss) नामक दो नगरों में निर्वाचित हुआ।

स्टेट्स जनरल का अधिवेशन प्रारम्भ—5 मई, 1789 ई० को स्टेट्स जनरल की प्रथम बैठक वार्साय के विशाल भवन में हुई। इसके प्रतिनिधियों की संख्या 1200 के लगभग थी जिनमें से 600 से अधिक तीसरे सदन के सदस्य थे। सभा में निर्वाचन पुरानी पद्धति के अनुसार ही किया गया। तृतीय श्रेणी में अधिकांश व्यक्ति शिक्षित एवं मध्यम वर्ग के थे। कुछ विख्यात नेता भी इस वर्ग में थे; जैसे—मिराब्यू (Mirabeau), सिए (Sieyes), राब्सपियर (Robespierre), जॉसेफ मौनिएर (Joseph Mounier), बारनाव (Barnava), विक्टर मालों (Victor Malouet), बाई (Bailly) तथा काम (Camus) आदि। उस समय इस वर्ग के प्रतिनिधियों की संख्या पहले से दोगुनी कर दिए जाने के कारण उनके उत्साह में भी वृद्धि हुई थी।

6 मई, 1789 को सर्वप्रथम वोट के प्रकार के सम्बन्ध में विवाद का आरम्भ हुआ। कुलीन एवं पादरी वर्ग चाहते थे कि वोट भवन के अनुसार हो (Vote by order), जबकि जनसाधारण के प्रतिनिधियों की माँग थी कि प्रत्येक प्रतिनिधि के अनुसार वोट का आधार निश्चित हो (Vote by head)। जनसाधारण के प्रतिनिधियों की माँग को मान लेने से सामन्तों तथा पादरियों के विशेषाधिकारों की समाप्ति हो जाती इसलिए वे इसके लिए तैयार नहीं हुए। अधिवेशन में प्रथम दोनों वर्गों को अलग-अलग भवन दिए गए, किन्तु तृतीय श्रेणी को स्टेट्स जनरल का पुराना भवन दिया गया। इस प्रकार उपर्युक्त मतभेद के कारण कोई भी कार्य सुचारु रूप से चलना कठिन था। 12 जून, 1789 ई० को सिए ने प्रथम एवं द्वितीय वर्ग से जनसाधारण के वर्ग में अधिवेशन करने

के लिए सम्मिलित हो जाने को कहा, लेकिन सामन्तों ने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया, फलत: तृतीय श्रेणी के प्रतिनिधियों ने अकेले ही अधिवेशन करने का निर्णय लिया। इसी समय छोटे पादरी भी अपने नेता जैले (Jallet) के नेतृत्व में अपने वर्ग को छोड़कर जनसाधारण के वर्ग में प्रवेश करने लगे। वह क्रांति का प्रथम चरण था। 17 जून को सिए के आग्रह पर तृतीय श्रेणी द्वारा एक प्रस्ताव पास करके अपने को राष्ट्रीय सभा (National Assembly) घोषित कर दिया गया। एक-दूसरे के प्रस्ताव के अनुसार राष्ट्रीय सभा ने प्रस्ताव पास किया कि राष्ट्रीय सभा की अनुमति के बिना भविष्य में कोई भी कर नहीं लगेगा। इन परिस्थितियों में भी राजा ने कोई कदम नहीं उठाया। 17 जून को पादरियों द्वारा एक प्रस्ताव पास करके तृतीय श्रेणी में मिलने का निर्णय लिया गया जिसके कारण तृतीय श्रेणी के प्रतिनिधियों की स्थिति सुदृढ़ हो गई। अब उसके सदस्य राष्ट्रहित में राजा की आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए भी तैयार थे। मेरी आन्तनेत तथा काउण्ट आर्त्वा के आग्रह पर लुई सोलहवें द्वारा तीन श्रेणियों के सम्मिलित अधिवेशन में फिर से भाषण देने की घोषणा की लेकिन जनसाधारण के प्रतिनिधियों ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

टेनिस कोर्ट की शपथ—20 जून को राजा द्वारा तृतीय श्रेणी के प्रतिनिधियों के सभा भवन को बन्द करवा दिया गया और उनसे 23 जून को सम्पन्न होने वाले राजकीय समारोह तक अपना अधिवेशन स्थगित रखने को कहा गया, परन्तु 20 जून, 1789 ई० के प्रात: ही वे सभा भवन पहुँच गए वहाँ द्वार पर ताला मिलने एवं सुरक्षा के लिए पहरेदार तैनात होने के कारण वे समीप ही एक विशाल भवन में घुस गए जो टेनिस खेलने के काम आता था। वहाँ जनसाधारण के प्रतिनिधियों ने अपने अध्यक्ष बेयी को एक मेज पर खड़ा किया तथा मून्ये द्वारा प्रस्तावित ऐतिहासिक शपथ ग्रहण की जो इतिहास में 'टेनिस कोर्ट की शपथ' के नाम से विख्यात है। यहाँ पर नेताओं ने घोषणा की कि वे यहाँ से तब तक नहीं हटेंगे जब तक कि देश के लिए एक संविधान का निर्माण न कर लें, वास्तव में यह घोषणा एक क्रांतिकारी कदम थी।

टेनिस कोर्ट की शपथ की घटना एक महान घटना थी। डेविड टामसन ने लिखा है कि, इसने राजतन्त्रों की जड़ों को हिला दिया। इस घटना ने यह स्पष्ट कर दिया कि जनसाधारण के प्रतिनिधि अब राजा या उसके समर्थकों से भयभीत होने वाले नहीं हैं। इसी कारण हैज ने इस घटना के विषय में लिखा है—"यह फ्रांस की क्रांति का वास्तविक प्रारम्भ था।"

संयुक्त अधिवेशन—उपर्युक्त कार्यवाहियों से चिन्तित होकर राजा ने 23 जून को तीनों वर्गों का सम्मिलित अधिवेशन बुलाया। अपने भाषण के पश्चात् राजा ने घोषणा की कि तीनों वर्गों के प्रतिनिधि अपने-अपने भवनों में जाकर विचार-विमर्श करें, कुलीन एवं पादरी वर्ग उठकर चला गया, किन्तु साधारण वर्ग बैठा रहा, राजाज्ञा फिर दोहराई गई। मिराब्यू ने इसका उत्तर इस प्रकार दिया, "हम यहाँ राष्ट्र इच्छा से इकट्ठे हुए हैं, केवल ताकत ही हमें तितर-बितर कर सकती है।"

जनसाधारण की प्रथम विजय—आखिर विवश होकर राजा ने आदेश दिया कि कुलीन एवं पुरोहित वर्गीय सदन साधारण वर्ग के सदन के साथ सम्मिलित हो जाए तथा तीनों वर्गों का सम्मेलन एक साथ किया जाए, इस प्रकार राजा के हाथ से शक्ति निकलकर जनसाधारण के प्रतिनिधियों के हाथ में आ गई।

लुई सोलहवें द्वारा किए गए मूर्खतापूर्ण कार्यों के कारण विद्रोह—अभी भी क्रांतिकारी राजा को पद्च्युत नहीं करना चाहते थे, लेकिन राजा ने अपनी अयोग्यता के कारण क्रांतिकारी नेतृत्व करने की जगह उनको दबाने का प्रयास किया। इस समय विदेशी सैनिकों की कुल संख्या 50 हजार थी। उसने जनता को भयभीत करने के लिए इन्हें पेरिस और वार्साय में तैनात करना शुरू किया। 11 जुलाई को वित्त मन्त्री नेकर को उसके पद से हटाकर वारों द ब्रेतोल (Barone de Bretuil) नामक व्यक्ति को नियुक्त किया। नेकर सुधारों का समर्थक था तथा जनता में बहुत लोकप्रिय था, इसलिए उसके पदच्युत होने से बहुत असन्तोष व्याप्त हुआ। विदेशी सैनिकों की उपस्थिति के कारण जले पर नमक छिड़कना साबित हुआ। 12 जुलाई को पेरिस में एक मीनार पर चढ़कर देमूले ने इस प्रकार के जोशीले भाषण देने प्रारम्भ किए—"नेकर को पदच्युत कर दिया गया और शीघ्र ही राजा हमारे ऊपर आक्रमण करने की योजना बना रहा है, अत: हमको अपनी रक्षा के लिए शस्त्र ग्रहण करने चाहिए। यदि हम शीघ्र तैयार नहीं होंगे तो जर्मन तथा स्विस सेनाएँ हमारा विनाश कर देंगी।" देमूले का भाषण काफी प्रभावशाली रहा। लोग हथियार इकट्ठा करने लगे, शीघ्र ही 10 हजार की भीड़ इकट्ठी हो गई। इस समय तक सेना पर भी क्रांति का प्रभाव पड़ चुका था। अत: फ्रेंच गार्ड के असन्तुष्ट सैनिक भी इस भीड़ में सम्मिलित हो गए।

बास्तील का पतन—इस प्राचीन दुर्ग में यूरोप के समस्त प्रतिक्रियावादियों का गढ़ था। इसका अध्यक्ष दलाने (Delawney) था तथा इस समय इसमें केवल 7 बन्दी तथा 125 सैनिक थे। इस दुर्ग में हथियार प्राप्त करने के उद्देश्य से जनता ने 14 जुलाई को इस पर आक्रमण कर दिया, क्योंकि उन्हें इतने हथियार नहीं मिल पाए थे जितना कि उनका लक्ष्य था। 5 घण्टे तक होने वाले भयंकर युद्ध में जनता के 200 प्रतिनिधि मारे गए, घमासान लड़ाई के बाद भीड़ ने बास्तील पर अधिकार कर लिया, उत्तेजित भीड़

ने दुर्गपाल तथा उसके सैनिकों के सिर काटकर भालों पर टाँग लिए व किले की समस्त सामग्री लूट ली तथा बन्दियों को मुक्त कर दिया। इस घटना से जनता बहुत प्रसन्न हुई, क्योंकि यह निरंकुश राजाओं पर जनता की शानदार विजय थी।

बास्तील के पतन का अत्यधिक राजनीतिक महत्त्व है, क्योंकि यह प्रजातन्त्र की निरंकुशता के ऊपर विजय थी। इस घटना से यूरोप के समस्त निरंकुश राजाओं के सिंहासन हिल गए। बास्तील के पतन का समाचार सुनकर सम्पूर्ण विश्व में प्रजातन्त्र के समर्थकों ने खुशियाँ मनाईं। लन्दन के चार्ल्स जेम्स IV ने इसे विश्व इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना कहा। राजतन्त्रवादियों को यह समझते हुए देर न लगी कि अब शस्त्र द्वारा क्रांति का दमन नहीं किया जा सकता, इसलिए प्रतिक्रियावादियों का बेटा काउण्ट आर्त्वा (Count of Artois) फ्रांस छोड़कर भाग गया। बास्तील की घटना के महत्त्व के बारे में तत्कालीन अंग्रेज राजदूत डॉरसेट ने लिखा, "इसी क्षण से हम फ्रांस को एक स्वतन्त्र देश व राजा को एक सीमित शक्तियों वाला नरेश मान सकते हैं तथा कुलीन वर्ग जैसे अपने दर्जे से गिरकर शेष राष्ट्र के साथ मिल गया है।" प्रोफेसर गुडविन ने लिखा, "शान्तिकाल में बास्तील के पतन जैसी बहुमुखी एवं दूरगामी परिणामों वाली अन्य कोई अकेली घटना नहीं हुई। दुर्ग का पतन केवल फ्रांस में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में स्वतन्त्रता की उत्पत्ति का परिचायक माना गया।"

बास्तील के पतन का सम्राट पर प्रभाव—इस घटना से राजा भली-भाँति समझ गया कि क्रांति को अब और अधिक नहीं दबाया जा सकता तथा क्रांतिकारियों से मिल जाना ही हितकर है अत: उसने पेरिस तथा वार्साय से सेना की विदेशी टुकड़ियों को हटा दिया तथा नेकर को पुन: वापस बुला दिया। राजा स्वयं पेरिस गया तथा उसने स्थानीय शासन एवं रक्षा दल का समर्थन किया। उसने क्रांति के तिरंगे झण्डे को स्वीकार किया तथा क्रांतिकारियों के कार्य की बहुत प्रशंसा की। मुसीबतों का अन्त हो गया है, परन्तु रानी तथा दरबारी राजा के इस कार्य से प्रसन्न नहीं थे। उन्होंने क्रांतिकारियों को शक्ति द्वारा कुचलने के लिए राजा पर दबाव डालना प्रारम्भ किया।

सामन्ती व्यवस्था के विरुद्ध जनता का विद्रोह—14 जलाई को बास्तील का पतन हुआ, अत: क्रांतिकारी इसे अपनी स्वतन्त्रता की तिथि मानते थे। अब प्रत्येक प्रान्त में हत्याकाण्ड प्रारम्भ हो गए थे, ग्रामों में किसानों ने जमींदारों के मकानों, मठों तथा कागजों को जला दिया, उन्होंने बेगार करने से मना कर दिया तथा कर वसूल करने वालों को पीटा। बहुत-से जागीरदारों को मार डाला। इस घटना से भयभीत होकर अनेक जागीरदार नगरों में चले गए, कुछ विदेश भाग गए। इस परिस्थिति के सम्बन्ध में नेशनल असेम्बली के सभापति बाई (Bailly) ने कहा था, "प्रत्येक मनुष्य आदेश देना जानता है, परन्तु काई भी आज्ञापालन करना नहीं जानता।" इस अराजकता के विरोध में लाफायत ने त्याग-पत्र दे दिया लेकिन नेशनल असेम्बली के अन्य नेताओं के आग्रह करने पर उसने अपना त्याग-पत्र वापस ले लिया। सामन्ती व्यवस्था के विरुद्ध जनता द्वारा विद्रोह एवं हत्याकाण्ड किए जाने के फलस्वरूप सामन्तशाही प्रथा का अन्त हो गया।

पेरिस में स्थानीय शासन एवं राष्ट्रीय रक्षा दल स्थापित किया जाना—पेरिस में फैली अराजकता के कारण नगर में स्थानीय शासन (Commune) की स्थापना की गई। बाई (Bailly) को इस शासन का अध्यक्ष बनाया गया। इसके अतिरिक्त, शान्ति व्यवस्था कायम रखने के लिए तत्काल ही एक राष्ट्रीय रक्षा दल (National security guard) की स्थापना की गई। लाफायत को इसका अध्यक्ष बनाया गया। इसकी सदस्य संख्या 200 से बढ़ाकर शीघ्र ही 48,000 हो गई। पेरिस के समान अन्य नगरों में भी राष्ट्रीय रक्षा दल एवं स्थानीय शासन स्थापित होने लगे। इस प्रकार फ्रांस से राजतन्त्र समाप्ति के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे।

4 अगस्त की रात्रि का सत्र एवं विशेषाधिकारियों का अन्त—राष्ट्रीय सभा द्वारा कृषकों के इन कार्यों को नहीं रोका जा सकता इसलिए लाफायत के एक निर्धन साथी नोई ने प्रत्येक वर्ग पर समान रूप से कर लगाने का प्रस्ताव रखा। नेशनल असेम्बली में यह प्रस्ताव बहुमत से पारित हो गया, दो बजे रात तक चलने वाले इस अधिवेशन में सामन्तों एवं पादरियों ने एक-एक कर खड़े होकर अपने विशेषाधिकारों को त्यागने की घोषणा की। इस प्रकार केवल 10 घण्टे के अन्दर फ्रांस में सामन्त प्रथा का अन्त हो गया। इस सम्बन्ध में एक **डिप्टी** ने कहा था, "हमने कई महीनों का कार्य केवल 10 घण्टों में समाप्त कर दिया।" सामन्त प्रथा की समाप्ति के पश्चात् राष्ट्रीय असेम्बली के सदस्यों द्वारा सभा विसर्जित कर दी गई।

दरबार में पुन: कुचक्र—यद्यपि यह सारे प्रस्ताव पारित हो चुके थे, किन्तु इस बात की कोई सम्भावना नहीं थी कि सामन्त वर्ग हमेशा इन प्रस्तावों के पक्ष में ही रहेगा। इधर दरबार में भी कुचक्र चल रहा था। रानी एवं दरबारीगण इन प्रस्तावों से सहमत नहीं थे, वे चाहते थे कि सेना के बल से राष्ट्रीय सभा को कुचल दिया जाए। इसलिए वे राजा को हमेशा इनके विरुद्ध भड़काते रहते थे। 1 अक्टूबर, 1790 ई० की रात्रि में वर्साय में एक शानदार दावत दी गई। जब यह समाचार पेरिस पहुँचा तो इससे वहाँ बहुत असन्तोष फैल गया। जनता के समक्ष यही सन्देह था कि राजा किसी प्रकार का षड्यन्त्र रच रहा है। दूसरी बात यह थी कि पेरिस में अन्न की

बहुत कमी थी। सेनाओं के आने से यह कमी और बढ़ जाती। मारा तथा दांते ने भी राजा के विरुद्ध जनता को भड़काया। क्रांति की आग को सुलगाने के लिए ये बातें पर्याप्त थीं।

पेरिस की स्त्रियों का वर्साय अभियान एवं राजा का पेरिस भागना—राजा तथा उसके दरबारियों द्वारा क्रांति के झण्डे को कुचलने का समाचार मिलने से जनता उत्तेजित हो उठी। बेकारी और रोटी की कमी से पेरिसवासी पहले ही उत्तेजित थे, इसी समय कुछ सैनिकों द्वारा सार्वजनिक रूप से घोषणा की गई कि वे राजा के साथ हैं तथा क्रांति के दमन में राजा का साथ देंगे। इस बात से विद्रोही बहुत आतंकित हो गए। इस बार स्त्रियों ने मोर्चा सम्भाला। 15 अक्टूबर को पेरिस की 8-10 हजार स्त्रियाँ इकट्ठी होकर 'हमें रोटी दो' (We want bread) का नारा बुलन्द करते हुए राजा के सम्मुख प्रदर्शन करने के लिए वर्साय पहुँची। जुलूस के साथ बहुत-से क्रांतिकारी भी सम्मिलित हो गए। 6 अक्टूबर को प्रात: भीड़ ने शाही महल के फाटक तोड़ दिए, कुछ रक्षकों को मार डाला तथा महल पर अपना अधिकार कर लिया। राजा एवं उसके परिवार को पेरिस लौटने के लिए मजबूर किया, लौटते समय जनसमूह प्रसन्न था तथा उनका कहना था—"रोटी वाला, रोटी वाली और उनका पुत्र हमारे साथ है। अब हमें खाने की कमी नहीं रहेगी।" पेरिस में राज परिवार को 'ट्यूलरिज' के पुराने महल में रखा गया। राज परिवार के साथ राष्ट्रीय सभा भी पेरिस आ गई। अब राजा पेरिस की भीड़ का बन्दी बनकर रह गया था, क्रांति का नेतृत्व करना उसके बूते से बाहर हो गया।

20 जून को गुप्त रूप से भेष बदलकर राजा, रानी एवं उनका पुत्र पेरिस से मेज की तरफ चल दिए, लेकिन वारेन (Vernnes) नामक स्थान में राजा को गिरफ्तार करके 25 जून को पुन: पेरिस वापस लाया गया।

राजा के भागने पर पेरिस में हुई प्रतिक्रिया—राजा के भाग जाने पर पेरिस की जनता ने उसे गद्दार कहा तथा उसे राजसिंहासन से हटाने की माँग की। अधिकांश जनता राजा को दण्डित किए जाने की माँग करने लगी, जिससे राजा की प्रतिष्ठा को धक्का लगा। लियोपोल्ड द्वितीय एवं अन्य यूरोपीय राजा अब यह समझने लगे थे कि युद्ध के बिना लुई सोलहवें का उद्धार नहीं हो सकता। जुलाई में राष्ट्रीय सभा ने राजा को दण्ड न देकर उसके सहायकों को दण्ड देने का निर्णय लिया लेकिन इस निर्णय के लागू होने से पूर्व ही राजा के सारे सहायक देश छोड़कर भाग गए।

जनतन्त्र की स्थापना की माँग हेतु जनता का प्रदर्शन (1791 ई०)—जनता ने जनतन्त्र की स्थापना की माँग को लेकर 17 जुलाई, 1791 ई० को एकत्र होकर एक विशाल प्रदर्शन किया। इसमें लगभग 6 हजार व्यक्ति एकत्रित हुए। लाफायत एवं उसके समर्थकों द्वारा इस सभा को भंग करने की आज्ञा दी गई लेकिन जनता वहाँ से नहीं हटी। फलत: गोली चलाने का आदेश दे दिया गया, जिसके फलस्वरूप 12 व्यक्ति मारे गए तथा अनेक घायल हुए। अत: प्रजातन्त्र के समर्थक दांते, मारा तथा देमूले आदि फ्रांस छोड़कर भाग गए तथा प्रजातन्त्र समर्थक समाचार-पत्र भी बन्द हो गए। लाफायत के इस अनुचित कार्य से राष्ट्रीय विधानसभा की कटु आलोचना हुई, परन्तु राजा ने उसके कार्यों की प्रशंसा की। राजा ने नए संविधान का पालन करने की प्रतिज्ञा की, अत: राष्ट्रीय विधानसभा ने राजा को दण्ड से मुक्त कर दिया तथा देश छोड़कर बाहर जाने वाले कुलीनों को भी क्षमा कर दिया गया।

प्र.5. पुरातन शासन की समाप्ति के बाद वैधीकरण के नए सिद्धांत एवं थर्मीडोरियन गणतंत्र ने किस प्रकार के अधिकार का प्रयोग किया?

The new principles of legalization and what type of authority did use the thermodorian republic after the end of ancient regime?

उत्तर

वैधीकरण के सिद्धान्त
(Principle of Legalization)

फ्रांसीसी क्रांति पर हाल में जो लिखा गया है उससे यह संकेत मिलता है कि क्रांति की जड़ें उस राजनीतिक संस्कृति में थीं जिसने पुरातन शासन के अंतिम वर्षों में आकार लिया। निरंकुश शासन तथा प्रबोधन की राजनीति में जो अंतर्विरोध रहे उन्होंने ही इस संकट को जन्म दिया। निरंकुश राजतंत्र को जिस समाज के अंतर्गत काम करना था, इसका राजनीतिक संस्कृति के प्रगतिशील सिद्धांतों के साथ गहरा अंतर्विरोध था। इस नई संस्कृति ने एक क्रांतिकारी संवाद का आधार उपलब्ध किया तथा वैधता का मुद्दा उठाया।

डेनिस रीशे, गेनिफी जैसे अनेक इतिहासकारों ने इस बात का उल्लेख किया है कि तृतीय इस्टेट ने अपने आपको राष्ट्रीय असेम्बली का रूप देने के लिए 17 जून, 1789 को जिस प्रस्ताव को मतों के आधार पर पारित किया, वह सबसे पहला तथा सबसे गहन क्रांतिकारी कार्य था। इसमें क्रांतिकारी सरकार के लिए वैधता के नए सिद्धांत निहित थे। तृतीय इस्टेट की महत्ता पर जोर सियिस ने ही दिया था। सियिस ने दो क्रांतिकारी सिद्धांत रखे: राष्ट्र की एक मात्र तृतीय एस्टेट के साथ पहचान बनाना और यह दावा करना कि केवल राष्ट्र को ही फ्रांस का संविधान देने का अधिकार था। मई और अगस्त 1789 के बीच समूचा पुरातन शासन ही ध्वस्त हो

गया। फ्रांसीसियों ने अपने राष्ट्रीय अतीत को अस्वीकार कर क्रांति के सिद्धांतों को चुन लिया था। जब राष्ट्रीय असेम्बली ने सामंती विशेषाधिकारों को समाप्त कर फ्रांस के भावी संविधान को तैयार करने का बीड़ा उठाया तो वह संविधान सभा बन गई। 4 तथा 11 अगस्त के आदेशों ने तमाम व्यक्तिगत विशेषाधिकारों, दासता तथा दशमांश को समाप्त कर दिया और सभी के लिए मुफ्त तथा समान न्याय और रोजगार की स्वतंत्रता की स्थिति बनाई। इस प्रकार, फ्रांस में एक नया कानूनी समाज स्थापित हो चुका था।

संविधान सभा की दो बहसें वैधता के सिद्धांतों की दृष्टि से निर्णायक रहीं। ये थीं—(क) मनुष्य के अधिकारों की घोषणा, तथा (ख) सम्प्रभुता का विषय। सामंती शासन को समाप्त करके, संविधान सभा ने फ्रांसीसी जनता को ऐसे व्यक्तियों के रूप में नई परिभाषा दी थी जो स्वतंत्र और समान थे। जो बुनियादी अधिकार तय किए गए, उनमें कुछ थे स्वतंत्रता, सम्पत्ति, सुरक्षा तथा अत्याचार का प्रतिरोध। संक्षेप में, फ्रांसीसी शासक की प्रजा को राष्ट्र का नागरिक बना दिया गया। मनुष्य के अधिकारों की घोषणा ने समाज की एक क्रांतिकारी अवधारणा सामने रखी, और नए सरकारी अधिकारियों को संगठित किया कि वे क्रांतिकारी सिद्धांतों पर आधारित एक लिखित संविधान के माध्यम से इन अधिकारों की रक्षा करें।

सितम्बर में शुरू होने वाली दूसरी बहस सम्प्रभुता की प्रकृति तथा आरोपण के सवाल को लेकर थी। 'सम्प्रभुतासम्पन्न' का मुद्दा असाधारण रूप से कठिन साबित हुआ। वर्गों तथा विशेषाधिकारों पर आधारित समाज के ध्वंस ने प्रतिनिधित्व के एक नए मुद्दे को उठा दिया। नेताओं की समझ में यह आ गया कि राष्ट्र की सम्प्रभुता को राष्ट्र के सभी नागरिकों द्वारा इसके अधिकारों को प्रत्यक्ष उपयोग के अनुकूल बनाना असम्भव था। सियिस ने ही नई संस्थाओं की आवश्यकता और लोकतंत्र के दावों के बीच सम्प्रभुता के प्रयोग की समस्या का एक तर्कसंगत समाधान प्रस्तुत किया। एकसदनीय असेम्बली ऐसी एकमात्र जगह बन गई जहाँ जनता की सामान्य इच्छा व्यक्त हो सकती थी। कुछ लेखक यह तर्क देते हैं कि इस प्रकार की परिभाषाओं की परिणति यह हुई कि राजतंत्र के स्थान पर राष्ट्रीय असेम्बली की एक नई किस्म की निरंकुशता आ गई। आने वाले वर्षों में, लोकतंत्र की जन आधारित तथा संसदीय अवधारणाओं के बीच एक बुनियादी द्वंद्व की स्थिति बन गई, क्योंकि दोनों का ही दावा अभिन्न सम्प्रभुता का था।

जैकोबिन गणतंत्र और आतंक (1792-94)
[Jacobin Republic and Terrar (1792-94)]

लूई सोलहवें ने जून में भागने की कोशिश करके एक संविधान सम्मत सम्राट की हैसियत से फ्रांस पर शासन करने की वैधता और अधिकार खो दिए। मूलगामी सुधारवादियों (क्रांतिकारियों) ने क्रांति की सफलता सुनिश्चित करने के लिए कुलीन जन की प्रतिक्रिया के खतरे को हथियार बनाया। उन्होंने अप्रैल 1792 में आस्ट्रिया पर युद्ध की घोषणा कर दी क्योंकि ऑस्ट्रियाई सम्राट लीओपोल्ड द्वितीय ने पिलनित्स की घोषणा करके फ्रांसीसी सम्राट के सम्पूर्ण अधिकारों को यूरोपीय ताकतों की मदद से जबरन बहाल करने की धमकी प्रस्तुत कर दी थी। मूलगामी सुधारवादियों (क्रांतिकारियों) ने पेरिस के आम लोगों और कॉर्डलियर (एक क्रांतिकारी राजनीतिक क्लब) तथा जैकोबिन क्लब जैसे अतिवादी राजनीतिक समूहों से समर्थन लिया। उन्होंने सम्राट को गद्दी से उतार दिया और एक नए गणतंत्रवादी संविधान का लिखित प्रारूप तैयार करने के लिए अगस्त–सितम्बर 1792 में एक राष्ट्रीय कनवेंशन का गठन किया। इसका चुनाव सार्वभौमिक पुरुष मताधिकार के आधार पर किया गया।

जैकोबिन क्लब के सदस्यों और जन आंदोलन (विशेषकर पेरिस कम्यून के 'सांकूलॉत) के बीच जो गठबंधन हुआ उसने 'स्वतंत्रता' के शुत्रओं के विरुद्ध रॉबेसपियर के नेतृत्व में क्रांतिकारी तानाशाही के लिए एक अनिवार्य बुनियाद तैयार कर दी। पेरिस के लोकप्रिय मूलगामीयों ने 1792 के बाद कुछ सुसंगत विचारों तथा व्यवहारों को एक सही दिशा प्रदान की, जिसके परिणामस्वरूप एक प्रत्यक्ष सरकार तथा जनप्रिय लोकतंत्र की स्थापना हुई। यह सियिस की सभा की सामूहिक तानाशाही तथा मारा की सुझाई केंद्रीयकृत तानाशाही से भिन्न थी। जनता की सम्प्रभुता को निरपेक्ष मानते हुए, पेरिसवासियों ने स्वायत्ता के सिद्धांतों, कानूनों को स्वीकृत करने तथा निर्वाचित अधिकारों को नियंत्रित करने एवं चुने हुये अधिकारियों को वापस बुलाने के अधिकार को अपना लिया। इस प्रकार जैकोबिन तानाशाही के आधार प्रतिनिधिक लोकतंत्र का स्थान प्रत्यक्ष लोकतंत्र ने ले लिया। चुनाव का स्थान नियुक्ति ने ले लिया। यहां क्रांतिकारी समितियों का विकास महत्त्वपूर्ण है सर्वाधिक शक्तिशाली समिति थी जन सुरक्षा समिति। इसको समस्त अधिकार मिले हुए थे और यह स्वयं को 'सामान्य इच्छा' के प्रतिनिधि के रूप में पेश करती थी और यह कनवेंशन की सर्वाधिक शक्तिशाली कार्यकारी समिति बन गई। इसने 'सामान्य अधिकतम' के कानून को लागू किया। (पेरिस के क्रांतिकारी मजदूर वर्ग की मांग पर बने इस कानून में खाद्य तथा पेय से लेकर ईंधन तथा वस्त्र तक की कीमतों पर नियंत्रण लगाया गया)। स्वतंत्रता और गणतंत्र के शत्रुओं के प्रति जो युद्धोन्मुख होने की स्थिति बनी उस कारण नेता लोगों ने आतंक के शासनकाल (जनवरी से जुलाई 1794 तक) की स्थापना की। इस दौर में सम्राट, रानी, उनके गुप्त समर्थक, कट्टर कैथोलिक, अन्न सटोरियों

समेत 40,000 से भी अधिक लोगों को गिलोटिन द्वारा मौत के घाट उतार दिया गया। रॉबेसपियर को अत्याचारी तथा तानाशाह के साथ-साथ लोकतंत्र का संत भी माना जाता है जिसने समाजवाद का रास्ता दिखाया। क्रांतिकारी सरकार का जल्दी ही जनता से सम्पर्क टूट गया और उसका स्वभाव भी तानाशाहीपूर्ण हो गया और रॉबेसपियर की भी सरकार पर पकड़ ढीली हो गई।

थर्मीडोरियन प्रतिक्रिया
(Thermiderian Reaction)

रॉबेसपियर को मौत के घाट उतारे जाने के बाद के दो दिनों, लगभग साठ व्यक्तियों वाले समूचे पेरिस कम्यून को क्रांति स्थल से डेढ़ घंटे से भी कम समय में खत्म कर दिया गया और हालांकि मैं मृत्यु-दंड स्थल से सौ कदम से भी अधिक दूरी पर खड़ा था, फिर भी मृतकों का खून मेरे पांवों के नीचे बह रहा था। मुझे जिस बात ने चकित किया वह यह थी कि जैसे ही कोई सिर धड़ से अलग होकर गिरता था लोगों के मुंह से 'अ हैस ली मैकसीमम' कानून के बारे में ही आवाज निकलती थी। वास्तव में इस कानून को लागू करने में इतनी अधिक कठोरता बरती गई कि सभी तरह के सामान पर कुछ निश्चित कीमतें निर्धारित कर दी गई और इसके तले आम जनता को अभावों में पिसना पड़ा। और इसके लिए दोषी ठहराया गया रॉबसपियर को। अब जिन लोगों को कष्ट उठाना पड़ रहा था वे सभी अलग-अलग व्यवसाय के थे; और उनमें से अनेक ने तो वास्तव में उस कानून का फायदा उठाया, उसका दुरूपयोग किया था। उन्होंने किसानों को तथा पेरिस के बाजार में सामान देने वाले अन्य व्यापारियों को इस बात के लिए बाध्य किया था कि वे अधिकतम कीमत पर अपना माल बेंचे, और उन लोगों ने उन्हें मनमाने दामों पर खुदरा माल बेचा जो उसे खरीदने की औकात रखते थे। मैंने रॉबेसपियर को गिलोटिन पर जाते हुए नहीं देखा; किंतु मुझे लोगों ने बताया है कि वह उस अवसर पर जिस गाड़ी में वहां से निकला था उसके साथ चलने वाले लोगों ने गाड़ी के अंदर अपने छाते घुसेड़ कर उसके शरीर में घोंपे थे.....अब लोगों के लिए अपने आपको बचाने का यह उपाय बन गया था कि वे यह ऐलान करते थे कि उन्हें रॉबेसपियर के आतंक के दौर में जेल हुई थी। अब तो जैकोबिनों की वेशभूषा में निकलना भी खतरनाक हो गया था, क्योंकि 'ला जुनेस पेरिसियेन ने कई व्यक्तियों को पेरिस की गलियों में मात्र इसलिए मार डाला था क्योंकि वे लंबे कोट और छोटे बाल धारण किए हुए थे।

थर्मीडोरियन गणतंत्र (1795-99) Thermidorian Republic (1795-99)

रॉबेसपियर के पतन के बाद तमाम मूलभूत समस्याएं फिर उभर आई और कनवेंशन में अधिकारों की घोषणा, जनता की सम्प्रभुता तथा प्रतिनिधित्व के सिद्धांत पर नए सिरे से बहस शुरू हो गई। नई घोषणा में कानून की सर्वोच्चता को सामान्य इच्छा की अभिव्यक्ति के रूप में लिया गया, किंतु अत्याचार का प्रतिरोध करने (1789) अथवा विद्रोह (1793) के अधिकार गायब हो गए। समानता के अधिकार के साथ 'कर्त्तव्यों की घोषणा को रखा गया, जिसका लक्ष्य था अधिकारों की असीमित प्रकृति तथा कानून पर आधारित सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकता के बीच तनाव को टालना। सम्प्रभुता के लोकतांत्रिक विचार के अंदर छिपी अपार शक्ति के पिछले अनुभव ने इस विषय पर फिर से चिंतन करने की स्थिति पैदा कर दी। यहां से सम्प्रभुता की अवधारणा पर विचार विमर्श की एक लम्बी परम्परा की शुरुआत हुई जिसके प्रतिनिधि थे बेंजमन कांस्टैंट, मादाम द स्ताल, रोयेर-कॉला तथा गीजो। सियिस ने एक 'संवैधानिक जूरी' बनाकर सम्प्रभुता पर नियंत्रण लगाने का संकेत दिया। यह जूरी एक विशेष निकाय होता जिसका काम था प्रशासनिक विनियमों तथा कानूनों की संवैधानिकता पर नियंत्रण करना। फ्रांसीसी इतिहास में विधायिका की शक्ति के ऊपर एक न्यायक्षेत्र की श्रेष्ठता की अवधारणा यहां पहली बार दिखाई दी। नए संविधान में एक द्विसदनीय विधायिका की व्यवस्था की गई जिसमें सम्पत्ति की उच्च योग्यता के आधार पर सामान्य इच्छा का संकोच के साथ पालन करने का प्रावधान था। पांच निदेशकों वाले एक संचालक मंडल का भी प्रस्ताव रखा गया। इसे कार्यपालिका के रूप में काम करना था। व्यवहार में, संचालक मंडल वाले शासन ने फ्रांस, विशेषकर पेरिस, को राजनीति से मुक्त कर दिया। निम्न बूर्जुआ (मध्यम) वर्ग को कोई भी पद लेने से प्रतिबंधित कर दिया गया, वोटिंग नाम मात्र की रह गई और राजनीति पर अल्पतंत्र तथा पेशेवर प्रशासकों का वर्चस्व हो गया। इस शासन की शक्ति चुनाव के माध्यम से वैधीकरण में नहीं, अपितु पुलिस, सेना तथा नौकरशाही में निहित थी। संचालक मंडल ने विशिष्ट जन के सामाजिक तथा राजनीतिक राज्य की शुरुआत कर दी। विशिष्ट जन का यही वर्ग उन्नीसवीं शताब्दी में हावी रहा।

प्र.6. लुई पन्द्रहवें के शासनकाल का विवरण प्रस्तुत कीजिए।
Present the details of the reign of Louis (XV).

उत्तर

क्रान्ति से पूर्व फ्रांस
(France on the Eve of Revolution)

1715 ई. में लुई चौदहवें ने अपनी मृत्यु के समय जिस फ्रांस को उत्तराधिकार के रूप में अपने प्रपौत्र लुई पन्द्रहवें के लिए छोड़ा था वह लुई चौदहवें के अनवरत युद्ध की नीति के कारण आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त जर्जरित हो चुका था। फ्रांस का राजकोष रिक्त

था। फ्रांस भयंकर ऋण से ग्रस्त था। फ्रांस की सैन्य शक्ति का भी ह्रास हो चुका था। फ्रांस की इस दुरावस्था के कारण तो लुई चौदहवें ने अपने शासनकाल के अन्तिम वर्षों में समझ लिया था। अत: मृत्यु के समय उसने अपने प्रपौत्र लुई पन्द्रहवें को शान्तिप्रिय नीति के लिए कहा था।

लुई XV (1715 ई. से 1774 ई. तक)
(Louis XV)

लुई पन्द्रहवें पांच वर्ष की अल्प आयु में राजगद्दी पर आसीन हुआ था। अत: उसके वयस्क होने तक कुछ अन्य लोगों ने लुई पन्द्रहवें के नाम पर शासन किया। 1715 ई. से 1723 ई. तक शासन की वास्तविक सत्ता आर्लेआं के ड्यूक व 1723 ई. से 1743 ई. तक कार्डिनल फ्लेरी के हाथों में रही। उसके पश्चात् तब लुई पन्द्रहवें ने शासन-सत्ता पूर्णरूप में अपने हाथों में रखी और 1774 ई. तक अपनी मृत्यु-पर्यन्त उसने शासन किया। इस प्रकार लुई पन्द्रहवें के शासन काल को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम भाग वह जिसमें शासन की वास्तविक सत्ता आर्लेआं के ड्यूक के हाथों में रही। यह 1715 ई. से 1723 ई. तक का काल था। द्वितीय भाग वह था जबकि सत्ता कार्डिनल फ्लेरी के हाथों में केन्द्रित थी। यह काल 1723 ई. से 1743 ई. तक का था। तृतीय भाग वह था जबकि लुई पन्द्रहवें ने सत्ता अपने हाथों में केन्द्रित की थी, यह काल 1743 ई. से 1774 ई. तक का था। लुई पन्द्रहवें के शासन-काल के इन तीनों भागों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है—

आर्लेआं के ड्यूक का संरक्षण काल (1715 ई. से 1723 ई. तक)
(Protection Period of Duke of Orleans)

लुई चतुर्दश ने अपनी मृत्यु के समय अपने प्रपौत्र का रीजेण्ट आर्लेआं के ड्यूक (Duke of Orleans) को नियुक्त अवश्य किया था, किन्तु आर्लेआं के ड्यूक की शक्ति को सीमित करने के उद्देश्य से 15 सदस्यों वाली एक परिषद भी बनाई थी। उसकी इस व्यवस्था में बूर्बों वंश के इस सिद्धान्त की कि 'राज्य राजा की सम्पत्ति है' रक्षा हो गई, किन्तु लुई चतुर्दश की मृत्यु के पश्चात् ड्यूक ऑफ आर्लेआं ने स्वत: को सर्वसत्ता सम्पन्न रीजेण्ट बना लिया और फ्रांस की सत्ता पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया।

आर्लेआं के ड्यूक की गृह-नीति (Home Policy of the Duke of Orleans)

ड्यूक ने अपनी गृह-नीति के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य किए—

1. **लुई चतुर्दश द्वारा स्थापित व्यवस्था में परिवर्तन** (Change in Louis XIV's System)—अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने के लिए सर्वप्रथम आर्लेआं के ड्यूक ने पार्लियामेण्टों की शक्ति को सुदृढ़ करने का प्रयास किया। उसने पार्लियामेण्ट पर अपना प्रभाव स्थापित कर लुई चतुर्दश के वसीयतनामे में परिवर्तन कराकर स्वत: को सर्वसत्ता सम्पन्न रीजेण्ट बना लिया। परिषदों की स्थापना की गई। सैन्य शक्ति को सीमित करने के लिए सेना की संख्या में भारी कमी कर दी गई। इस प्रकार आर्लेआं के ड्यूक ने बूर्बों वंश के सिद्धान्त को कि 'राज्य राजा की सम्पत्ति है' अस्वीकृत कर लुई चतुर्दश की व्यवस्था में परिवर्तन कर दिया।
2. **आर्थिक कार्य** (Economic Works)—अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के पश्चात् आर्लेआं के ड्यूक के समक्ष सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण समस्या फ्रांस की जर्जरित आर्थिक स्थिति थी। इसका निराकरण करने के लिए उसके एडिनबरा के निवासी जान लॉ को अपना अर्थमन्त्री नियुक्त किया। जान लॉ ने आर्थिक व्यवस्था के इस सिद्धान्त को कि 'साख धन वृद्धि का कारण है'—अपनी अर्थ-नीति का मूल आधार बनाया। उसने उद्योग-धन्धों व कृषि की ओर विशेष ध्यान न देते हुए कागजी नोटों की भरमार द्वारा व्यापार को प्रोत्साहित करने का प्रयत्न किया। उसने एक बैंक (Banque Generale) की स्थापना कर इसे कागजी मुद्रा जारी करने का अधिकार प्रदान कर दिया। इसकी प्रारम्भिक सफलता से आकर्षित होकर इसे 'रायल बैंक' का नाम दे दिया गया, 1717 ई. में एक मिसीसिपी कम्पनी (Mississippi Company) की भी स्थापना की गई जिसे लूजियाना के व्यापार का अधिकार प्रदान कर दिया गया। कम्पनी ने शीघ्र ही अपनी स्थिति को इतना सुदृढ़ कर लिया कि इसके शेयर मुंह मांगे दामों में बिकने लगे, किन्तु स्थिति यथावत् नहीं रही। रायल बैंक के असीमित कागजी नोटों के उत्पादन से स्थिति भयावह हो गई। कम्पनी का दिवाला निकल गया। शीघ्र ही सम्पूर्ण फ्रांस आर्थिक विनाश के कगार की ओर अग्रसर हो उठा। इस प्रकार आर्लेआं के ड्यूक का शासन-काल असफलता का शासनकाल था। उसकी गृह-नीति पूर्णत: असफल रही।

TOUCH 'n PASS

असफलता के कारण (Causes of Failure)

आर्लेंआं के ड्यूक की गृह-नीति की असफलता के निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण कारण थे—

1. आर्लेंओ के ड्यूक ने प्रारम्भ से ही देश की शक्ति के स्थान पर अपनी शक्ति के उत्कर्ष पर विशेष ध्यान दिया। उसने व उसके चापलूस साथियों ने सरकारी धन का अपने हितों में पूर्णत: दुरुपयोग किया।
2. पार्लियामेण्ट, जो कि उनके इन कारनामों पर अंकुश लगा सकती थी, भी अपनी दुर्बलता के कारण कुछ न कर सकी।
3. फ्रांस में इसी समय जेसुइटों एवं जेन्सेनिस्टों के मध्य भीषण धर्म संघर्ष आरम्भ हो गया। आर्लेंआ के ड्यूक ने जेसुइटों के फ्रांस से निष्कासन की नीति अपनाई। उसकी इस नीति ने फ्रांस की शान्ति-व्यवस्था के लिए संकट उत्पन्न कर दिया।
4. आर्लेंआं के ड्यूक की गृह-नीति की असफलता का प्रमुख कारण सरदारों के ऐसे दल का शक्ति सम्पन्न हो जाना भी था जो कि उसकी नीति का घोर विरोधी था।
5. ड्यूक ऑफ आर्लेंआं ने अपने शासन की असफलता से दु:खी होकर लुई चतुर्दश की निरंकुशता की नीति का पालन करने का प्रयत्न किया, किन्तु 1723 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

कार्डिनल फ्लेरी का संरक्षण काल (1723 ई. से 1743 ई. तक)
(Protection Period of Cardinal Fleury)

ड्यूक ऑफ आर्लेंआं की मृत्यु के पश्चात् फ्रांसीसी शासन की वास्तविक सत्ता का संचालन 70-वर्षीय कार्डिनल फ्लेरी (Cardinal Fleury) के हाथों में केन्द्रित हो गया। इतिहासकार हेज के शब्दों में, 'कार्डिनल फ्लेरी प्रकृति से अत्यन्त नम्र एवं मितव्ययी था और उसने अत्यन्त निष्ठा व ईमानदारी के साथ शान्तिपूर्ण विदेश नीति एवं आन्तरिक सुधारों द्वारा फ्रांस की जर्जरित आर्थिक स्थिति को सुधारने का भरसक प्रयत्न किया।' संक्षेप में, कार्डिनल फ्लेरी की गृह व विदेश नीति का विवरण निम्नवत् है—

गृह-नीति (Home Policy)

कार्डिनल फ्लेरी के सम्मुख सबसे भयावह समस्या फ्रांस की आर्थिक स्थिति थी। अत: उसने आन्तरिक क्षेत्र में अपना पूर्ण ध्यान फ्रांस की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने की ओर केन्द्रित किया। उसने राष्ट्र को प्राप्त सम्पूर्ण उपलब्ध साधनों का प्रयोग करते हुए सरकारी व्यय को कम करने एवं फ्रांस से व्यापार एवं उद्योग-धन्धों के विकास के लिए भरसक प्रयत्न किया। सरकार बजट को सन्तुलित एवं नियन्त्रित किया गया। सड़कों का निर्माण किया गया, किन्तु कार्डिनल फ्लेरी को असफलताओं का ही सामना करना पड़ा। इसका सबसे प्रधान कारण यह था कि वह स्वयं इतना अधिक वृद्ध हो चुका था कि उसमें प्रतिकूल स्थिति का सामना करने की शक्ति नहीं रह गई थी। हेज के शब्दों में, 'वह कोई भी मूलभूत आन्तरिक सुधार न कर सका और उसने सड़कों के निर्माण में कृषकों से बेगार लेकर उन्हें अत्यन्त रुष्ट कर दिया।' इस प्रकार उसकी आन्तरिक नीति असफल रही।

विदेश नीति (Foreign Policy)

हैज के शब्दों में, 'विदेश नीति के क्षेत्र में अपनी शान्तिपूर्ण आन्तरिक इच्छा की अभिलाषा होते हुए भी वह अन्तत: बूर्बों राजवंश की महत्त्वाकांक्षी नीति का शिकार हुआ। फलस्वरूप उसे पोलैण्ड के उत्तराधिकार के युद्ध (1733 ई. से 1738 ई.) में सक्रिय भाग लेना पड़ा। यह युद्ध 1733 ई. की विएना की सन्धि से समाप्त हुआ। इस सन्धि से फ्रांस को महत्त्वपूर्ण लाभ प्राप्त हुए, उसके प्रत्याशी स्टैनिसलॉस को आजीवन लारेन की डची प्राप्त हो गई। उसकी मृत्यु के पश्चात् डची पर लुई पन्द्रहवें के अधिकार को आस्ट्रिया ने अपनी मान्यता दे दी।

लुई पन्द्रहवें का व्यक्तिगत शासन (1743 ई. से 1774 ई. तक)
(Personal Rule of the Louis XV)

कार्डिनल फ्लेरी की मृत्यु के पश्चात् 33 वर्ष की आयु में लुई पन्द्रहवें ने 1743 ई. में शासन की बागडोर पूर्णत: अपने हाथों में ले ली, किन्तु यह प्रदर्शन मात्र ही था क्योंकि लुई पन्द्रहवें पर सदा ही उसकी प्रेमिकाओं एवं मन्त्रियों का ही प्रभाव बना रहा। प्राय: कहा जाता है कि 'सत्य विचार कर लेने के पश्चात् भी उसने सदा ही अपने मन्त्रियों या प्रेमिकाओं के परामर्श के अनुसार गलत मार्ग का अवलम्बन किया।' यह ठीक है कि उसमें सद्गुण विद्यमान थे और इसी कारण उसकी प्रजा ने उसे 'सर्वप्रिय लुई' भी कहा, किन्तु उसमें चपलता, चंचलता एवं अकर्मण्यता इतनी अधिक थी कि उसके सद्गुण आच्छादित हो गए। महत्त्वपूर्ण राजकीय कार्यों के लिए वह एक दिन भी निकाल नहीं पाता था क्योंकि वह आनन्द एवं क्रीड़ा में अत्यधिक व्यस्त रहता था। हैज के अनुसार, 'वार्साय के आडम्बरपूर्ण शिष्टाचार एवं राजनीति के दांव-पेंचों से बचने के लिए वह अपना समय आमोद-प्रमोद, आखेट व उत्सवों में व्यतीत करता था।'

TOUCH 'n' PASS

यही कारण था कि अपने शासनकाल के उत्तरार्द्ध में उसने जनता के स्नेह को खो दिया। जनता व राजा के बीच दूरी बढ़ती गई। वह अपनी प्रेमिकाओं–विशेष रूप से शातोरु (Chateauroux), पोंपादूर (Pompandour) एवं बारी (Barry) से घिरा रहता था। हैज ने तो यहां तक लिखा है कि 'पोंपादूर केवल उसकी प्रेमिका ही नहीं थी अपितु प्राय: बीस वर्षों तक (1745 ई. से 1764 ई. तक) वह ही फ्रांस की प्रधानमन्त्री बनी रही। उसका प्रभाव इतना व्यापक था कि राज्य में राजा एकदम नगण्य हो गया। उसके संकेत पर ही मन्त्रियों की नियुक्ति व पदच्युति निर्भर हो गई। 1756 ई. की फ्रांस व आस्ट्रिया के मध्य होने वाली सन्धि में उसका ही हाथ था। आस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध' (1740 ई. से 1768 ई. तक) एवं सप्तवर्षीय युद्ध (1756 ई. से 1763 ई. तक) में फ्रांस की नीति का संचालन उसी की बुद्धि पर आधारित था। कुल मिलाकर देश की आन्तरिक एवं बाह्य नीति का संचालन उसी के हाथ में केन्द्रित था। यही कारण था कि विदेशी राजदूत उसके प्रति सम्मान व्यक्त करते थे।

इस प्रकार फ्रांस आन्तरिक रूप से तो खोखला हो चुका था, किन्तु यूरोप में फ्रांस की प्रभुता अभी भी छाई हुई थी, किन्तु यह प्रभुता प्रदर्शन मात्र थी। वास्तविक स्थिति को लुई पन्द्रहवें ने भी स्वीकार करते हुए कहा था कि मेरे पश्चात् प्रलय होगा' लुई पन्द्रहवें का वह कथन नितान्त सत्य सिद्ध हुआ और लुई सोलहवें के शासनकाल में तो क्रान्ति के द्वार तक फ्रांस ही पहुँच गया।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. फ्रांसीसी क्रांति कब हुई थी?
(क) 14 जुलाई, 1759 (ख) 14 जुलाई, 1789 (ग) 14 जुलाई, 1779 (घ) 14 जुलाई, 1769
उत्तर (ख) 14 जुलाई, 1789

प्र.2. फ्रांसीसी क्रांति के समय फ्रांस के शासक कौन थे?
(क) लुई 16 (ख) लुई 14 (ग) लुई 15 (घ) लुई 13
उत्तर (क) लुई 16

प्र.3. लुई 16वें की पत्नी का क्या नाम था?
(क) मैडम विटो (ख) मैडम डेफिसिट (ग) मेरी आंत्वानेत (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.4. 'क्रांति की बाईबिल' क्या कहलाती है?
(क) द प्रिंस (ख) द पॉलिटिक्स (ग) सोशल कॉन्ट्रैक्ट (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ग) सोशल कॉन्ट्रैक्ट

प्र.5. फ्रांस की राष्ट्रीय सेवक सेना का सेनापति कौन था?
(क) रूसो (ख) तुर्गो (ग) नेकर (घ) वाल्टेअर
उत्तर (घ) वाल्टेअर

प्र.6. फ्रांसीसी क्रांति किसलिए हुई थी?
(क) हत्या के लिए (ख) आजादी के लिए (ग) युद्ध की तैयारी के लिए (घ) ये सभी
उत्तर (ख) आजादी के लिए

प्र.7. ''सौ चूहों की अपेक्षा एक सिंह का शासन उत्तम है'' यह कथन किसने कहा है?
(क) वाल्टेअर (ख) नेपोलियन (ग) हर्डर (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) वाल्टेअर

प्र.8. वाल्टेअर कौन थे?
(क) फ्रांस के लेखक और दार्शनिक (ख) नेपोलियन
(ग) (क) एवं (ख) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) फ्रांस के लेखक और दार्शनिक

प्र.9. ''लेटर्स ऑन इंग्लिश'' किसने लिखी है?
(क) रूसो (ख) वाल्टेअर (ग) नेपोलियन (घ) हर्डर
उत्तर (ख) वाल्टेअर

TOUCH 'n' PASS

प्र.10. ''कानून की आत्मा'' की रचना किसने की?
(क) रूसो (ख) नेपोलियन (ग) मॉनटेशक्यू (घ) वाल्टेअर
उत्तर (ग) मॉनटेशक्यू

प्र.11. ''मैं ही राज्य हूँ और मेरे शब्द ही कानून हैं।'' यह कथन किसका है?
(क) नेपोलियन (ख) रूसो (ग) वाल्टेअर (घ) लुई 16वाँ
उत्तर (घ) लुई 16वाँ

प्र.12. 'यदि परमात्मा विद्धमान नहीं है तो उसका आविष्कार करना पड़ेगा' यह कथन किसका है?
(क) रोबसपियर (ख) रूसो (ग) नेपोलियन (घ) लुई 16वाँ
उत्तर (क) रोबसपियर

प्र.13. फ्रांस की क्रांति में मानव अधिकार की घोषणा कब की गई थी?
(क) 17 जून, 1789 (ख) 26 अगस्त, 1789
(ग) 5 जुलाई, 1790 (घ) 5 अक्टूबर, 1760
उत्तर (ख) 26 अगस्त, 1789

प्र.14. लिब्रे क्या था?
(क) फ्रांस की मुद्रा (ख) फ्रांस के राज महल का नाम
(ग) फ्रांस के शासक का प्रधानमंत्री (घ) फ्रांस का झंडा
उत्तर (क) फ्रांस की मुद्रा

प्र.15. लिब्रे की समाप्ति कब हुई?
(क) 1750 (ख) 1650 (ग) 1794 (घ) 1795
उत्तर (ग) 1794

प्र.16. एस्टेट से क्या अभिप्राय है?
(क) सीधे राज्य को दिया जाने वाला कर (ख) फ्रांस का सामाजिक वर्ग का विभाजन
(ग) धार्मिक केंद्रों को एस्टेट कहा जाता है (घ) अलग-अलग राज्य को एस्टेट कहा जाता है
उत्तर (ख) फ्रांस का सामाजिक वर्ग का विभाजन

प्र.17. द्वितीय एस्टेट में कौन आते हैं?
(क) व्यापारी (ख) किसान (ग) पादरी (घ) कुलीन वर्ग
उत्तर (घ) कुलीन वर्ग

प्र.18. इनमें से कौन-सा तृतीय एस्टेट में शामिल नहीं है?
(क) अदालती कर्मचारी (ख) कुलीन वर्ग (ग) किसान (घ) बड़े व्यापारी
उत्तर (ख) कुलीन वर्ग

प्र.19. पादरी वर्ग किस एस्टेट के अंतर्गत आता है?
(क) प्रथम (ख) द्वितीय (ग) तृतीय (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (क) प्रथम

प्र.20. फ्रांसीसी समाज में किसानों की जनसंख्या कितने प्रतिशत थी?
(क) 50% (ख) 60% (ग) 80% (घ) 90%
उत्तर (घ) 90%

प्र.21. इनमें से कौन-सा प्रत्यक्ष कर है?
(क) टाइल (ख) लिब्रे (ग) एस्टेट (घ) टाइद
उत्तर (क) टाइल

TOUCH 'n PASS

❑

UNIT-VIII

नेपोलियन बोनापार्ट
Napoleon Bonaparte

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. नेपोलियन बोनापार्ट कौन था?

Who was Napoleon Bonaparte?

उत्तर नेपोलियन बोनापार्ट का जन्म 15 अगस्त, 1769 मृत्यु 5 मई, 1821 (जन्म नाम नेपोलियोनि दि बोनापार्टे) तक फ्रांस की क्रांति में सेनापति, 11 नवम्बर, 1799 से 18 मई, 1804 तक प्रथम कांसल के रूप में शासक रहा और 18 मई, 1804 से 6 अप्रैल, 1814 तक नेपोलियन के नाम से सम्राट रहा। वह पुन: 20 मार्च से 22 जून 1815 में सम्राट बना।

प्र.2. नेपोलियन बोनापार्ट का उदय कैसे हुआ?

How did Napoleon Bonaparte rise?

उत्तर 1804 ई० में नेपोलियन ने सीनेट के द्वारा स्वयं को फ्रांस का सम्राट घोषित करा दिया। तत्कालीन फ्रांस में नेपोलियन का उदय एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटना थी। नेपोलियन का जन्म कोर्सिका द्वीप के एक साधारण परिवार में हुआ था परन्तु अपनी योग्यता के बल पर वह एक मामूली सैनिक से ऊपर उठकर फ्रांस की गृह-सेना का सेनापति बन गया।

प्र.3. नेपोलियन बोनापार्ट किस कारण वाटरलू युद्ध में पराजित हुआ?

Why was Napoleon Bonaparte defeated in the battle of Waterloo?

उत्तर वर्ष 1812 में कई कारणों के चलते नेपोलियन रूस पर विजय प्राप्त करने में विफल रहा, इस विफलता का कारण—दोषपूर्ण रसद, खराब अनुशासन, बीमारी, और प्रतिकूल मौसम था तथा बहुत बड़ी संख्या में उसके सैनिकों के मारे जाने के कारण उसकी सेना दुर्बल हो गयी। वर्ष 1814 में नेपोलियन को सम्राट पद का त्याग कर एल्बा द्वीप पर निर्वासित कर दिया गया, इन्हीं विफलताओं के परिणामस्वरूप अंतत: 1815 में वाटरलू के युद्ध में वह पराजित हो गया।

प्र.4. नेपोलियन बोनापार्ट का पतन कब हुआ?

When did Napoleon Bonaparte decline?

उत्तर नेपोलियन ने पूरे अपने 20 वर्ष के सैन्य जीवन में लगभग 60 युद्ध लड़े, जिनमें से केवल सात युद्ध में उसे हार का सामना करना पड़ा था। यह युद्ध नेपोलियन के पतन के आखरी वर्षों के समय के थे। 1815 में वाटरलू के युद्ध में नेपोलियन आखिरी युद्ध हार गया और नेपोलियन का पतन हो गया।

प्र.5. नेपोलियन बोनापार्ट का उद्देश्य क्या था?

What was the objective of Napoleon Bonaparte?

उत्तर फ्रांस में शक्तिशाली शासन स्थापित करने तथा शान्ति व्यवस्था बनाए रखने के लिए नेपोलियन ने शासन की सम्पूर्ण शक्ति को अपने हाथों में केन्द्रित कर लिया। प्रान्तीय एवं स्थानीय स्तर पर अधिकारियों को नियुक्त करके प्रशासनिक अराजकता को समाप्त कर दिया, जो उसका प्रमुख उद्देश्य था।

प्र.6. नेपोलियन ने क्या सुधार किए थे?

What reforms had done by Napoleon?

उत्तर नेपोलियन ने फ्रांस की तरह अपने नियंत्रण वाले हर इलाके में प्रशासनिक सुधार किए। उसने सामंती व्यवस्था को खत्म किया। किसानों को दासता और जागीर को अदा होने वाले शुल्कों से मुक्त किया। उसने शहरों में प्रचलित शिल्प मंडलियों द्वारा लगाई गई पाबंदियों को भी समाप्त किया।

TOUCH 'n PASS

प्र.7. नेपोलियन से पहले कौन राजा था?

Who was king before Napoleon?

उत्तर नेपोलियन से पहले लुई 16वें (1774-93) का शासन था। इनके समय में राजकोष का अपव्यय बढ़ता गया। जनता में असन्तोष फैलने लगा, यहीं से फ्रांसीसी क्रान्ति की शुरुआत हुई। 21 जनवरी, 1793 को लुई 16वें को फाँसी दी गयी और अन्त में सत्ता नैपोलियन के हाथ में आ गयी थी।

प्र.8. 1814 में नेपोलियन को किसने हराया था?

Who had defeated Napoleon in 1814?

उत्तर वाटरलू की लड़ाई 18 जून, 1815 को नेपोलियन की फ्रांसीसी सेना और ड्यूक ऑफ वेलिंगटन और मार्शल ब्लूचर के नेतृत्व वाले गठबंधन के बीच लड़ी गई थी। अपने युग की निर्णायक लड़ाई, इसने एक युद्ध का समापन किया जो 23 वर्षों तक चला था, यूरोप पर हावी होने के फ्रांसीसी प्रयासों को समाप्त कर दिया और नेपोलियन की शाही शक्ति को हमेशा के लिए नष्ट कर दिया।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. ''नेपोलियन क्रांति का पुत्र था।'' व्याख्या कीजिए।

"Napoleon was the son of revolution." Explain.

उत्तर

नेपोलियन : क्रांति का पुत्र
(Napoleon : The Son of Revolution)

नेपोलियन स्वयं को क्रांति का पुत्र कहता था। वह स्वयं को क्रांति भी कहता था। इतिहासकारों में इस विषय में मतभेद है कि नेपोलियन क्रांति का पुत्र था अथवा नहीं।

नेपोलियन क्रांति का पुत्र था, इस मत के पक्ष में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए जा सकते हैं—

1. नेपोलियन का आविर्भाव क्रांति के समय ही हुआ था।
2. फ्रांसीसी क्रांति ने ही ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न की थीं जिनका लाभ उठाकर वह उच्चतम शिखर तक जा पहुँचा।
3. उसने सामाजिक भेदभावों को मिटाकर सामाजिक समानता (Social equality) की स्थापना की।
4. फ्रांसीसी क्रांति के पश्चात् उत्पन्न दुर्व्यवस्था को समाप्त कर एक सुदृढ़ शासन की स्थापना की।
5. नेपोलियन ने सामन्ती प्रथा (Feudal System) को समाप्त किया।
6. विजित प्रदेशों में प्राचीन संस्थाओं को समाप्त कर नवीन संस्थाओं की स्थापना की।
7. फ्रांस में सामाजिक व आर्थिक सुधार करके क्रांति की माँग को उसने पूरा किया।
8. अपनी विजयों से उसने फ्रांस को यूरोप का प्रमुख देश बना दिया।

उपरोक्त तर्कों के पश्चात् भी अनेक इतिहासकार नेपोलियन को क्रांति का पुत्र स्वीकार नहीं करते, तथा अपने मत के पक्ष में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत करते हैं—

1. नेपोलियन ने क्रांति के सिद्धान्तों के विरुद्ध कार्य किए।
2. नेपोलियन ने राष्ट्रीयता (Nationality) के सिद्धान्त की पूर्णतया अवहेलना की।
3. विजित देशों में उसने अपने रिश्तेदारों को शासक नियुक्त किया। प्रजा की इच्छा के विरुद्ध शासक नियुक्त करना नि:सन्देह क्रांति के सिद्धान्तों के विपरीत था।
4. अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए उसने फ्रांस को निरन्तर युद्धों में रत रखा।
5. नेपोलियन ने महाद्वीपीय नीति के द्वारा अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अन्य देशों के लिए अनेक समस्याएँ उत्पन्न की व अन्य देशों के मामलों में हस्तक्षेप किया।
6. केन्द्रीकरण की नीति अपनाकर सम्पूर्ण शक्ति अपने हाथों में ले ली।
7. प्रेस की स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध लगाना नि:सन्देह क्रांति के सिद्धान्तों के विरुद्ध था।
8. उसने कई पुरानी परम्पराओं को पुन: अपना लिया। उदाहरणार्थ, सम्राट की उपाधि धारण करना, लिजियन का सम्मान (Honour of Legion) इत्यादि।

अत: नेपोलियन को क्रांति का पुत्र स्वीकार करना कठिन है। इस विषय में ग्रांड एण्ड टेम्परले का कथन उल्लेखनीय है। उन्होंने लिखा है, ''नेपोलियन क्रांति का पुत्र था, किन्तु उसने उन सिद्धान्तों व उद्देश्यों को उलट दिया, जिनसे उसका आविर्भाव हुआ था।''

TOUCH 'n PASS

प्र.2. नेपोलियन की क्रांति का मूल्यांकन कीजिए।
Evaluate Napoleon's revolution.

उत्तर

नेपोलियन की क्रांति का मूल्यांकन
(Evaluation of Napoleon's Revolution)

नेपोलियन को आधुनिक युग का सबसे महान् व्यक्ति माना जाता है। अत्यन्त साधारण घर में जन्मे नेपोलियन ने अपनी असाधारण योग्यता के बल पर एक सैनिक के पद से उन्नति प्राप्त करते हुए फ्रांस के सम्राट का पद ग्रहण किया। ग्रांट टेम्परले (Grant and Temperley) ने लिखा है, "नेपोलियन एक असाधारण चरित्र व योग्यता वाला व्यक्ति था जो किसी भी देश में, किन्हीं भी परिस्थितियों में उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच सकता था।" नेपोलियन ने जितनी भी सफलताएँ प्राप्त की अपनी योग्यता के बल पर ही प्राप्त की थीं। नेपोलियन ने अपनी असाधारण विजयों से लगभग सम्पूर्ण यूरोप को प्रभाव क्षेत्र में ला दिया था। इस प्रकार फ्रांस के सम्मान को उसने उन्नति की चरम सीमा पर पहुँचा दिया। नेपोलियन ने पेरिस को यूरोप का केन्द्र बना दिया। यद्यपि नेपोलियन द्वारा स्थापित विशाल साम्राज्य स्थिर न रह सका, किन्तु इससे पूर्व फ्रांस की राजनीतिक सीमाओं का विस्तार इतना अधिक कभी नहीं हुआ था। उसने समानता की भावनाओं का सम्पूर्ण विश्व में प्रचार किया।

नेपोलियन एक कुशल सेनानायक ही नहीं अपितु एक कुशल प्रशासक भी था। नेपोलियन ने प्रथम कान्सल के रूप में तथा उसके बाद सम्राट के रूप में अत्यधिक सुधार किए। नेपोलियन ने फ्रांस में वर्गविहीन समाज की स्थापना की। उसने सामाजिक समानता पर अत्यधिक बल दिया। 'नेपोलियन विधि संहिता' (Napoleon Code) की स्थापना नेपोलियन की फ्रांस को एक अमूल्य भेंट थी। नेपोलियन फ्रांस में अत्यधिक लोकप्रिय था जिसका प्रमाण यह है कि अकेले नेपोलियन के विषय में इतना अधिक साहित्य रचा गया है जितना अन्य किसी व्यक्ति के विषय में नहीं लिखा गया। ग्रांट एण्ड टेम्परले ने लिखा है, "वह ईश्वर प्रतीत होता था जो मार भी सकता था व जीवित भी कर सकता था।"

अपने कार्यों से नेपोलियन ने केवल फ्रांस को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण यूरोप को प्रभावित किया। इसी कारण 1799 ई० से 1814 ई० के समय को 'नेपोलियन युग' (Napoleon Era) कहा जाता है। अपने कार्यों के कारण वह अपने शत्रुओं में अत्यधिक अलोकप्रिय था। इसी कारण फिशर ने लिखा है, "सम्भवत: सम्पूर्ण मानव इतिहास में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ जिसको अपने समय में इतनी प्रशंसा, विरोध व घृणा प्राप्त हुई हो।"

नेपोलियन असाधारण प्रतिभा व व्यक्तित्व वाला व्यक्ति था। जनसमूह पर अपने भाषणों की ओजता से प्रभाव डालने में उसे दक्षता प्राप्त थी। उसके सैनिक भी उससे अत्यधिक प्रभावित रहते थे, जिसका प्रमाण एल्बा (Elba) द्वीप से लौटने पर सैनिकों द्वारा उसका स्वागत करना व साथ देना है। नेपोलियन अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति था जिसने अपनी अभिलाषाओं को पूर्ण करने के लिए निरन्तर युद्ध किए। इन युद्धों में उसके सैनिकों ने सदैव उसका साथ दिया। अन्तत: यही महत्त्वाकांक्षाएँ ही उसके पतन का कारण भी बन गयीं। इस तरह 1815 में नेपोलियन का पतन हो गया, किन्तु नेपोलियन युग का यश स्थायी था। नेपोलियन के विषय में तालीरां का कथन उल्लेखनीय है, "नेपोलियन जैसा व्यक्तित्व न किसी ने देखा है और न ही आने वाली कई शताब्दियों में ऐसा असाधारण व्यक्ति जन्म ले सकेगा।"

प्र.3. नेपोलियन बोनापार्ट के प्रारम्भिक जीवन का उल्लेख कीजिए।
Explain the early life of Napoleon Bonaparte.

उत्तर

नेपोलियन बोनापार्ट का प्रारम्भिक जीवन
(Early Life of Napoleon Bonaparte)

नेपोलियन का जन्म 15 अगस्त, 1769 ई. को कार्सिका (Carcica) द्वीप के **अजाकियो** (Ajaccio) नामक नगर में एक निर्धन, किन्तु कुलीन वकील के घर हुआ था। उसके पिता का नाम चार्ल्स बोनापार्ट था जो मूलत: फ्लोरेंस का निवासी था। नेपोलियन की माँ मेरी लिटिजिया रामोलिनो (Merie Litizia Ramolino) थी जो कार्सिका की निवासिनी थी। नेपोलियन के पिता की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण नेपोलियन का प्रारम्भिक जीवन सुखद नहीं था, किन्तु उसकी माँ ने सदैव उसे महान् बनने की प्रेरणा दी। नेपोलियन ने फ्रांस में **ब्रीन** (Brienne) में अपनी शिक्षा प्रारम्भ की। स्कूल में अन्य विद्यार्थी उसकी गरीबी व नाम का मजाक उड़ाते थे। नेपोलियन अत्यन्त मेधावी छात्र था। उसके एक शिक्षक ने उसके विषय में कहा था, "यह बालक ग्रेनाइट का बना हुआ है, लेकिन इसके भीतर एक ज्वालामुखी है।" नेपोलियन ने अपने विद्यार्थी जीवन के दौरान इतिहास, भूगोल, राजनीति व गणित आदि विषयों का गहन अध्ययन किया। नेपोलियन ने वाल्टेयर, रूसी, मॉण्टेस्क्यू, आदि विचारकों की रचनाओं का भी अध्ययन किया तथा वह उनसे अत्यधिक प्रभावित हुआ।

मात्र 16 वर्ष की ही आयु में वह सेना में द्वितीय लेफ्टिनेण्ट के पद पर नियुक्त हो गया। नेपोलियन बहुत अनुशासनप्रिय था तथा फ्रांस की क्रांति के समय उत्पन्न हुई अव्यवस्था का विरोधी था।

फ्रांसीसी क्रांति ने नेपोलियन के उन्नति करने के मार्ग को प्रशस्त कर दिया। 1789 ई० में कार्सिका द्वीप ने फ्रांस के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। नेपोलियन जो बचपन में कार्सिका द्वीप की स्वतन्त्रता का स्वप्न देखता आ रहा था, को अपनी इच्छा पूर्ण करने का अवसर मिल गया। नेपोलियन, जो काफी समय से कार्सिका में ही रह रहा था। (इसी कारण उसकी नौकरी भी छूट गयी थी) ने इस युद्ध में सक्रिय भाग लिया तथा कार्सिका द्वीप को राष्ट्रीय सभा ने फ्रांस के अन्य प्रान्तों जैसी समानता प्रदान कर दी। नेपोलियन 1793 ई० में अपने परिवार के साथ फ्रांस आ गया तथा उसने **जैकोबिन दल** (Jacobin Party) की सदस्यता ग्रहण कर ली। जैकोबिन दल के सदस्य बन जाने से उसे अपनी नौकरी पुन: प्राप्त हो गयी।

नेपोलियन को उन्नति करने का वास्तविक अवसर तूलों (Toulon) में मिला। 28 अगस्त, 1793 ई० को अंग्रेजी जहाजी बेड़े ने फ्रांस पर आक्रमण किया व तूलों पर अधिकार कर लिया, किन्तु इसी समय नेपोलियन ने अंग्रेजी सेना पर आक्रमण करके उसे परास्त किया। नेपोलियन के जीवन की यह प्रथम महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी। इस विजय के परिणामस्वरूप नेपोलियन को बिगेडियर जनरल का पद प्रदान किया गया।

नेपोलियन को अपनी योग्यता प्रदर्शित करने का दूसरा अवसर 1795 ई० में मिला। 5 अक्टूबर, 1795 ई० को प्रजातन्त्रवादियों ने राजतन्त्रवादियों व संविधान से असन्तुष्ट होकर पेरिस की भीड़ को संगठित किया तथा राष्ट्रीय सभा (National Convention) के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। राष्ट्रीय सभा की सुरक्षा का कार्य नेपोलियन को सौंप दिया गया। नेपोलियन ने 40 तोपों से भीषण गोलाबारी करके दो घण्टे के अन्दर ही विद्रोहियों को भागने पर विवश कर दिया। इस संघर्ष में 400 विद्रोही मारे गए। यद्यपि 200 सैनिक नेपोलियन के भी हताहत हुए, किन्तु नेपोलियन ने विद्रोहियों का पूर्णरूप से दमन करके फ्रांस को गृह युद्ध (Civil War) से बचा लिया व राष्ट्रीय सभा की रक्षा की। इस सफलता के परिणामस्वरूप नेपोलियन को **समस्त आन्तरिक सेना** (Army of the interior) का सेनापति नियुक्त किया गया। इस घटना के बाद से उसे 'प्रजातन्त्र का रक्षक' (Defender of the Democracy) भी कहा जाने लगा।

प्र.4. प्रथम कान्सल के रूप में नेपोलियन की विदेश नीति को बताइए।
State the foreign policy of Napoleon as the first consul.

उत्तर

प्रथम कान्सल के रूप में नेपोलियन की विदेश नीति
(Foreign Policy of Napoleon as First Consul)

नेपोलियन ने प्रथम कान्सल के रूप में गृह नीति में ही सफलता प्राप्त नहीं की वरन् वैदेशिक नीति में भी वह सफल रहा। उसकी कार्य-प्रणाली इस प्रकार से थी—

1. **इटली का द्वितीय अभियान** (Second Campaign against Italy)—नेपोलियन ने प्रथम कान्सल बनने के बाद आस्ट्रिया पर दोनों ओर से आक्रमण करने की योजना बनायी। उसने एक सेना प्रसिद्ध सेनापति मोरो (Moreau) के नेतृत्व में दक्षिण जर्मनी की ओर से आस्ट्रिया पर आक्रमण करने के लिए भेजी। दूसरी सेना का नेतृत्व स्वयं नेपोलियन ने किया। उसने इस बार इटली पर आक्रमण करने के लिए आल्पस की दुर्गम पहाड़ियों को पार करने का निर्णय किया। नेपोलियन ने **बर्नार्ड के दर्रे** (Great St. Bernard Pass) को पार करके इटली में प्रवेश किया। मोरेंगो (Morrengo) नामक स्थान पर नेपोलियन व ऑस्ट्रियन सेनाओं के मध्य भीषण युद्ध हुआ। नेपोलियन की इस युद्ध से विजय हुई। दूसरी ओर से मोरो निरन्तर सफलता प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ रहा था। मोरो ने 3 दिसम्बर, 1800 ई० को होहेनलिण्डन (Hohenlinden) नामक स्थान पर आस्ट्रिया की सेना को परास्त किया। आस्ट्रिया का सम्राट फ्रांसिस II (Francis II) नेपोलियन व मोरो की निरन्तर सफलताओं से भयभीत हो उठा व विवश होकर उसने फ्रांस के साथ 1801 ई० में **ल्यूनेविले की सन्धि** (Treaty of Luneville) कर ली।
   इस सन्धि से फ्रांस को बहुत लाभ हुआ। इस सन्धि की प्रमुख धाराएँ निम्नवत् थीं—
   (i) आस्ट्रिया हैल्वेटिक (Halvetic), बेटेवियन (Batavian) तथा सिस-अल्पाइन (Cis-alpine) गणराज्यों को मान्यता प्रदान करने के लिए तैयार हो गया।
   (ii) इटली के गणराज्यों को मान्यता प्रदान कर दी गयी।
   (iii) बेल्जियम पर फ्रांस का अधिकार मान लिया गया।
   (iv) केम्पोफोमिया की सन्धि को पुन: स्वीकार किया गया।
2. **इंग्लैण्ड से समझौता** (Agreement with England)—फ्रांस और इंग्लैण्ड परस्पर लम्बे समय से युद्ध करते-करते ऊब चुके थे। नेपोलियन यह समझ चुका था कि शक्तिशाली नौ-सेना के बिना इंग्लैण्ड को परास्त करना सम्भव न था। दूसरी ओर इंग्लैण्ड को भी आभास हो गया था कि शक्तिशाली थल सेना के अभाव में फ्रांस पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती थी। अत: 27 मार्च, 1802 ई० को दोनों देशों के मध्य आमियाँ की सन्धि (Treaty of Amines) हो गई।

इस सन्धि की प्रमुख धाराएँ निम्नलिखित थीं—

(i) इंग्लैण्ड ने फ्रांस की कान्स्यूलेट (Consulate) सरकार को मान्यता प्रदान की।

(ii) इंग्लैण्ड ने श्रीलंका व ट्रिनिडाड को छोड़कर शेष सभी उपनिवेश जिन्हें उसने पिछले युद्धों में फ्रांस से जीता था, फ्रांस को लौटा दिए।

(iii) इंग्लैण्ड ने ल्यूनेविले की सन्धि (Treaty of Luneville) को मान्यता प्रदान की।

इस प्रकार कुछ समय के लिए दोनों प्रमुख प्रतिद्वन्द्वियों के मध्य युद्ध विराम हो गया, किन्तु दुर्भाग्यवश यह सन्धि स्थाई प्रमाणित नहीं हुई। एक वर्ष के पश्चात् ही यह सन्धि टूट गई, किन्तु यह सन्धि नि:सन्देह नेपोलियन के लिए एक कूटनीतिक विजय थी क्योंकि इसके द्वारा फ्रांस की सरकार को मान्यता प्रदान की थी।

प्र.5. प्रायद्वीपीय युद्ध में नेपोलियन की पराजय के कारणों का उल्लेख कीजिए।
Mention the causes for the defeat of Napoleon in the peninsular war.

उत्तर

प्रायद्वीपीय युद्ध में नेपोलियन की पराजय के कारण
(Causes for the Defeat of Napoleon in the Peninsular War)

स्पेन पर आक्रमण करना नेपोलियन की एक ऐसी भूल थी जो उसे ले डूबी। यह युद्ध नेपोलियन द्वारा लड़ा गया सबसे लम्बे समय तक चलने वाला युद्ध था। इस युद्ध में नेपोलियन की पराजय के निम्नलिखित कारण थे—

1. स्पेन एक पर्वतीय देश है। फ्रांस के सैनिकों को इस युद्ध में भौगोलिक परिस्थितियों के कारण अपार कष्ट का सामना करना पड़ा।
2. स्पेन के सैनिकों में देश के प्रति श्रद्धा व प्रेम कूट-कूट कर भरा था। वे इस युद्ध में अपने देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे थे, जबकि फ्रांसीसी सैनिकों के साथ ऐसा न था।
3. नेपोलियन का विचार था कि स्पेन एक धार्मिक देश है, अत: उसे आसानी से जीता जा सकता है। वह स्पेन की शक्ति का सही अनुमान न लगा सका।
4. स्पेन की विजय का मुख्य श्रेय अंग्रेजी सहायता को है। यदि स्पेन की सहायता इंग्लैण्ड न करता तो स्पेन नेपोलियन को पराजित नहीं कर सकता था। इंग्लैण्ड ने लार्ड वेलिंग्टन व वेलेसली जैसे योग्य सेनापति स्पेन की सहायतार्थ भेजे जिन्होंने फ्रांसीसी सेना के छक्के छुड़ा दिए।
5. नेपोलियन ने पोप के साथ दुर्व्यवहार किया था, अत: सम्पूर्ण कैथोलिक सम्प्रदाय नेपोलियन के विरुद्ध हो गया था। कैथोलिक पादरियों ने लोगों से धर्म रक्षा के लिए नेपोलियन के विरुद्ध एक जुट होने के लिए कहा।
6. जिस समय फ्रांस व स्पेन के मध्य संघर्ष चल रहा था उसी समय नेपोलियन को यूरोप में अन्यत्र भी युद्धों में व्यस्त होना पड़ा, अत: नेपोलियन इस युद्ध में अपनी सम्पूर्ण शक्ति न लगा सका।
7. नेपोलियन द्वारा स्पेन को राजपरिवार के साथ दुर्व्यवहार करने व जोसेफ बोनापार्ट को बलपूर्वक स्पेन का सम्राट बनाने के कारण स्पेन की जनता की राष्ट्रीय भावनाओं पर आघात हुआ जिसने "भिक्षुओं के देश को सैनिक देश में बदल दिया।"
8. स्पेन की सेना ने फ्रांसीसी सेना के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध प्रणाली अपनाई, अत: फ्रांसीसी सेना को अपार कष्ट का सामना करना पड़ा।

उपरोक्त कारणों ने सम्मिलित रूप से इस युद्ध में नेपोलियन की पराजय में सहयोग दिया।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. नेपोलियन की विजयों का विस्तार से वर्णन कीजिए।
Describe in detail the victories of Napoleon.

उत्तर

नेपोलियन की प्रारम्भिक सैनिक विजय
(Napoleon's Early Military Victory)

26 अक्टूबर, 1797 ई० को फ्रांस में राष्ट्रीय सभा (National Convention) का पतन हो गया तथा 'डाइरेक्टरी' का शासन प्रारम्भ हुआ। डाइरेक्टरी के शासन के दौरान आस्ट्रिया पर दो ओर से आक्रमण करने की योजना बनायी। आस्ट्रिया पर एक ओर से

TOUCH n PASS

आक्रमण करने का उत्तरदायित्व नेपोलियन को सौंपा गया। नेपोलियन ने आस्ट्रिया पर आक्रमण करने की योजना अत्यन्त उत्साह से बनायी। आस्ट्रिया पर आक्रमण करने से पूर्व उसने अपने सैनिकों का नैतिक बल (Moral force) बढ़ाने के लिए महत्त्वपूर्ण भाषण दिया। नेपोलियन ने कहा, "मैं तुम्हें विश्व के सबसे उपजाऊ प्रदेश में ले चलूँगा। धनी प्रदेश तथा महान् शहर आप लोगों के अधीन होंगे। वहाँ आपको गौरव, सम्मान तथा अपार सम्पत्ति मिलेगी। क्या आप लोग साहस तथा दृढ़ता में असफल हो जाएँगे"

1. **इटली का अभियान** (Invasion of Italy)—आस्ट्रिया पर आक्रमण करने से पूर्व नेपोलियन ने इटली के विभिन्न राज्यों का अभियान किया। सर्वप्रथम, नेपोलियन ने अपनी सेना के साथ आल्पस पर्वत पार करके सार्डीनिया पर आक्रमण किया तथा उसकी सेना को परास्त किया। 28 अप्रैल, 1796 ई० को पीडमाण्ट के राजा ने नेपोलियन से सन्धि कर ली। इस सन्धि के परिणामस्वरूप सेवाएँ (Savay) तथा नीस (Nice) पर फ्रांस का अधिकार स्थापित हो गया। इसके साथ ही उसने नेपोलियन को आगे बढ़ने का मार्ग भी दे दिया। 10 मई, 1796 ई० को नेपोलियन ने मिलान (Milan) पर आक्रमण करके उस पर भी अधिकार कर लिया। मिलान में अनेक सम्मानित व्यक्तियों द्वारा उसे अमूल्य भेंट प्रदान की गयीं जो उसने डाइरेक्टरी के पास भिजवा दीं। तत्पश्चात्, नेपोलियन ने माण्टुआ (Mantua) का घेरा डाला। आस्ट्रिया द्वारा इस घेरे को तोड़ने के लिए सेना भेजी गयी, परन्तु नेपोलियन ने अनेक स्थानों पर आस्ट्रिया की सेना को परास्त किया। नेपोलियन की इन विजयों में आरकोला (Arcola) तथा रिवोली (Revoli) की विजयों का विशेष महत्त्व है। अन्ततः 2 फरवरी, 1797 ई० को माण्टुला पर नेपोलियन ने अधिकार कर लिया। नेपोलियन ने मोडेना, रेग्गियो (Reggio), बोलोन (Boulogne) तथा फरारा (Ferrara) को मिलाकर एक गणतन्त्र की स्थापना की जिसे **ट्रांसपोडेन गणराज्य** (Transpodane Republic) कहा गया।

   पोप से समझौता (Agreement with Pope)—उपरोक्त विजयों के पश्चात् नेपोलियन ने पोप को शक्ति का भय प्रदर्शित कर उसे समझौता करने के लिए विवश किया। पोप ने नेपोलियन से **टोलेण्टिनो** (Tolentino) नामक स्थान पर समझौता कर लिया। इस समझौते की प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत् थीं—

   (i) पोप ने नेपोलियन द्वारा स्थापित **ट्रांसपोडेन गणतन्त्र** (Transpodance Republic) को मान्यता प्रदान कर दी।

   (ii) पोप ने तीन करोड़ फ्रैंक, 500 हस्तलिखित ग्रन्थ तथा अनेक महत्त्वपूर्ण कलाकृतियाँ नेपोलियन को प्रदान की।

   (iii) आवीनयो (Avignon) पर फ्रांस का अधिकार पोप द्वारा स्वीकार कर लिया गया।

   इस प्रकार इटली में महत्त्वपूर्ण सफलताएँ अर्जित करने के पश्चात् नेपोलियन ने आस्ट्रिया की ओर प्रस्थान किया।

2. **आस्ट्रिया का अभियान** (Expedition to Austria)—नेपोलियन ने आस्ट्रिया की ओर प्रस्थान करते हुए वेनिस (Venice) पर विजय प्राप्त की तथा ल्योबेन (Leoben) पर भी अधिकार कर लिया। नेपोलियन ने उत्तरी इटली के राज्यों को मिलाकर सिस-अल्पाइन (Cis-Alpine) गणतन्त्र व लगुरियन गणराज्य (Ligurian Republic) की स्थापना की। नेपोलियन के इन कार्यों का वहाँ की जनता द्वारा स्वागत किया गया। नेपोलियन ने आस्ट्रिया के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि यदि वह लोम्बार्डी (Lombardi) पर फ्रांस का अधिकार स्वीकार कर लेगा तो युद्ध समाप्त कर दिया जाएगा। अन्ततः आस्ट्रिया ने नेपोलियन के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया व 17 अक्टूबर, 1797 ई० को सन्धि कर ली, जिसे कैम्पोफार्मिया की सन्धि (Treaty of Campoformia) कहा जाता है। इस सन्धि की प्रमुख धाराएँ निम्नलिखित थीं—

   (i) आस्ट्रिया द्वारा फ्रांस को बेल्जियम प्रदान किया गया।

   (ii) लोम्बार्डी पर फ्रांस का अधिकार स्वीकार कर लिया गया।

   (iii) राइन का प्रदेश भी फ्रांस को दे दिया गया।

   (iv) फ्रांस द्वारा वेनिस के इस्ट्रिया तथा डालमेशिया प्रदेश आस्ट्रिया को दे दिए गए तथा वेनिस का पश्चिमी भाग सिस-अल्पाइन गणतन्त्र (Cis-Alpine Republic) में मिला दिया गया।

   केम्पोफार्मिया की सन्धि का अत्यधिक राजनीतिक महत्त्व है। इस सन्धि ने नेपोलियन की ख्याति में चार चाँद लगा दिए। नेपोलियन, इस सन्धि के द्वारा इटली से आस्ट्रिया के प्रभाव को कम करने में सफल हो गया। इस सन्धि ने यूरोप के राजनीतिक मानचित्र में भी परिवर्तन किया। फ्रांस की राजनीतिक सीमा उसकी प्राकृतिक सीमा तक पहुँच गयी। इस सन्धि से इटली पर फ्रांस के प्रभाव में वृद्धि हुई। इस सन्धि के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए प्रो० मार्खम ने लिया है, "यह सन्धि फ्रांस तथा नेपोलियन के लिए महत्त्वपूर्ण थी, किन्तु इसने भविष्य में युद्ध के बीज बो दिए।"

TOUCH 'n' PASS

3. **नेपोलियन का फ्रांस लौटना** (Return of Napoleon to France)—आस्ट्रिया से केम्पोफार्मिया की सन्धि करने के पश्चात् नेपोलियन 5 दिसम्बर, 1797 ई० को लौटकर पेरिस पहुँचा। फ्रांस में नेपोलियन का भव्य स्वागत किया गया तथा उसे **'राष्ट्रीय नायक'** (National Hero) माना जाने लगा। नेपोलियन ने आस्ट्रिया के अभियान के दौरान अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की थी। उसने केवल युद्ध के सम्पूर्ण खर्च को वसूला अपितु अनेक महत्त्वपूर्ण कलाकृतियाँ भी वह इटली से फ्रांस लाया। इसके साथ ही उसने फ्रांस की राजनीतिक सीमाओं में परिवर्तन करके फ्रांस के सम्मान में वृद्धि की। अत: नेपोलियन का 'राष्ट्रीय नायक' के रूप में सम्मान किया जाना स्वाभाविक ही था।
4. **मिस्र का अभियान** (Campaign to Egypt)—नेपोलियन द्वारा इटली व आस्ट्रिया में प्राप्त सफलताओं व उसकी फ्रांस में बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखकर डाइरेक्टरी के सदस्य उससे भयभीत होने लगे। डाइरेक्टरी के सदस्यों को अपना अस्तित्व संकट में दिखाई देने लगा। अत: उन्होंने नेपोलियन को फ्रांस से दूर ही रखने का प्रयत्न किया। इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध करने के लिए प्रेरित किया। डाइरेक्टरी के सदस्य बारा ने नेपोलियन ने कहा, "जाओ और उस समुद्री डाकू को पकड़ लो जो समुद्र में उत्पात मचाता है।" नेपोलियन ने इस चुनौती को स्वीकार किया। नेपोलियन जानता था कि इंग्लैण्ड को एक द्वीप के रूप में परास्त करना कठिन था, इसलिए उसने इंग्लैण्ड को एक साम्राज्य के रूप में परास्त करने की योजना बनाई। इसी उद्देश्य से उसने मिस्र पर आक्रमण करने का निर्णय किया, क्योंकि मिस्र पर अधिकार कर लेने से भारत के लिए फ्रांस का मार्ग प्रशस्त हो सकता था तथा नेपोलियन जानता था कि भारत इंग्लैण्ड का एक महत्त्वपूर्ण उपनिवेश था। नेपोलियन की इस योजना को डाइरेक्टरी ने स्वीकृति प्रदान कर दी।

   नेपोलियन 19 मई, 1797 ई० को टूलों (Tonlon) गया तथा वहाँ से अपने साथ अड़तीस हजार सैनिक व चार सौ जहाजों को लेकर उसने मिस्र के लिए प्रस्थान किया। नेपोलियन इस अभियान में अपने साथ मार्मा (Marmont), क्लेबर (Claber), लान (Lannes), मूरा (Murat), देसे (Desaix) तथा बर्तिए (Berthier) जैसे योग्य सेनापतियों को भी ले गया था। मिस्र पहुँचकर नेपोलियन ने 'पिरामिडों के देश' (Country of Pyramids) पर विजय प्राप्त करने के लिए अपने सैनिकों को उत्साहित किया। नेपोलियन ने आक्रमण करके माल्टा तथा सिकन्दरिया (Alexandria) पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् उसने काहिरा की ओर प्रस्थान किया। 21 जुलाई, 1798 को मिस्र व नेपोलियन की सेनाओं के मध्य युद्ध हुआ, जिसे पिरामिडों का युद्ध (Battle of Pyramids) कहा जाता है। इस युद्ध के कुछ समय पश्चात् ही काहिरा पर भी नेपोलियन ने अधिकार कर लिया। मिस्र पर अधिकार करना उतना कठिन नहीं था जितना कि उस अधिकार को बनाए रखना कठिन था। नेपोलियन ने वहाँ कूटनीति का प्रयोग किया। नेपोलियन ने वहाँ स्वयं को मुसलमान घोषित किया तथा कुरान के प्रति श्रद्धा व्यक्त की। मिस्र के लोगों को प्रभावित करने के लिए नेपोलियन ने मस्जिदों का निर्माण कराया। नेपोलियन के इन कार्यों से उसे कोई सफलता नहीं मिली तथा मिस्र में विद्रोह होते रहे।
5. **नील नदी का युद्ध** (Battle of Nile)—जिस समय नेपोलियन काहिरा में था अंग्रेजी सेनापति नेल्सन (Nelson) उसका पीछा करते हुए सिकन्दरिया (Alexandria) तक पहुँच गया। नेल्सन व नेपोलियन की सेनाओं के मध्य अबूकर की खाड़ी (Bay of Abukir) में भीषण युद्ध हुआ। अंग्रेजों की नौ-सेना अत्यन्त शक्तिशाली थी। नेल्सन ने नेपोलियन की सेना को तहस-नहस कर दिया। नेपोलियन के 400 जहाजों में से 396 जहाज इस युद्ध में नष्ट हो गए व केवल चार जहाज शेष बचे। नेल्सन व नेपोलियन के मध्य हुआ यह युद्ध नील नदी के युद्ध (Battle of Nile) के नाम से प्रसिद्ध है। इस युद्ध में अपार हानि के पश्चात् भी नेपोलियन निराश नहीं हुआ व कुशल सेनानायक का परिचय देते हुए उसने अपने बचे हुए सैनिकों में अपने भाषण से उत्साह का संचार किया। नेपोलियन ने कहा, "तूफानों की बाढ़ से अपने मस्तकों को ऊपर रखना चाहिए। तूफान स्वत: शान्त हो जाएँगे।"
6. **सीरिया पर विजय** (Conquest of Syria)—नील के युद्ध में नेल्सन के हाथों पराजित हो जाने व उसके जहाजी बेड़े के नष्ट हो जाने के कारण नेपोलियन को अपार कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जहाजी बेड़ा नष्ट हो जाने के कारण नेपोलियन के लिए समुद्र मार्ग से फ्रांस लौटना सम्भव न था। अत: उसने सीरिया होते हुए फ्रांस लौटने का निर्णय लिया। इसी समय टर्की ने भी फ्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी जिससे नेपोलियन की कठिनाइयाँ और बढ़ गयीं। अन्य कोई और रास्ता न देखकर नेपोलियन ने फरवरी, 1799 ई० में सीरिया पर आक्रमण कर दिया। सीरिया भी टर्की-साम्राज्य का ही अंग था। प्रारम्भ में इस युद्ध में नेपोलियन को सफलता मिली व उसने गाजा व जाफा पर अधिकार कर लिया, किन्तु एकरे (Acre) में उसे पराजित होना पड़ा तथा विवश होकर वह पुन: काहिरा लौटा। काहिरा पहुँचने पर उसे ज्ञात हुआ कि

TOUCH 'n PASS

यूरोप में पुन: संघर्ष प्रारम्भ हो गया है व इटली से फ्रांस की सेना को निष्कासित कर दिया गया है। उसे यह भी सूचना मिली कि फ्रांस के विरुद्ध आस्ट्रिया, रूस व इंग्लैण्ड मिल गए हैं। अत: नेपोलियन ने ऐसी परिस्थिति में वापस फ्रांस लौटना ही उचित समझा व 21 अगस्त, 1799 ई० को अपनी सेना के साथ एक जहाज में बैठकर उसने गुप्त रूप से फ्रांस की ओर प्रस्थान किया।

इस प्रकार नेपोलियन का मिस्र का अभियान असफल ही रहा। केटेलबी ने इस विषय में लिखा है, "एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक कार्य के रूप में मिस्र का अभियान असफल रहा।" असफल होकर लौटने के पश्चात् भी फ्रांस की जनता ने नेपोलियन का स्वागत किया। जनता में सर्वत्र यह चर्चा थी कि 'फ्रांस का रक्षक' (Defender of France) आ गया है।

डाइरेक्टरी का शासन समाप्त (End of Directory Rule)

इस समय तक फ्रांस की जनता डाइरेक्टरी के शासन से तंग आ चुकी थी। सम्पूर्ण देश में घूसखोरी व अशान्ति का वातावरण था। इसी कारण नेपोलियन के मिस्र से लौटने पर जनता द्वारा उसका स्वागत किया गया था। जनता को नेपोलियन से आशा थी कि यह स्थिति में परिवर्तन करेगा। इस प्रकार नेपोलियन बचपन से जिस अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था, वह उसे मिल गया। उसने घोषणा की, "ऐसा प्रतीत होता है कि सब मेरा ही इन्तजार कर रहे थे। एक क्षण भी पहले आना उचित नहीं था और एक दिन बाद आने से बहुत देर हो जाती। मैं एकदम सही क्षण पर आया हूँ" नेपोलियन ने सिये (Sieyes) व ड्यूको (Ducos) नामक दो डाइरेक्टरों (डाइरेक्टरी के सदस्य) से गुप्त समझौता किया तथा 10 नवम्बर, 1799 ई० को उसने 500 सदस्यों की सभा पर सैनिकों की सहायता से आक्रमण किया। इस प्रकार नेपोलियन के समर्थक सदस्यों को छोड़ कर अन्य भाग गए। इस प्रकार डाइरेक्टरी का पतन हो गया।

10 नवम्बर, 1799 ई० को डाइरेक्टरी के शासन का अन्त करके शासन की बागडोर तीन व्यक्तियों—नेपोलियन, सिये तथा ड्यूको के हाथ में दे दी गयी। इस प्रकार फ्रांस में कान्स्यूलेट शासन (Consulate Rule) की स्थापना हुई। नेपोलियन को प्रधान कान्सल बनाया गया। कान्सल ने देश के लिए एक नवीन संविधान की रचना की। फ्रांस के इतिहास में इस घटना को 'रक्तहीन क्रांति' (Bloodless Revolution) कहा जाता है। इस घटना ने नेपोलियन की उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर दिया। नेपोलियन ने स्वयं ही अत्यन्त हर्ष के साथ कहा था, "यह मेरे जीवन की एक प्रमुख घटना है जिसमें मैंने अभूतपूर्व योग्यता का परिचय दिया।"

कान्स्यूलेट का संविधान (Constitution of the Consulate)

डाइरेक्टरी के शासन की समाप्ति के पश्चात् कान्स्यूलेट शासन की स्थापना हुई। इस शासन के लिए नवीन संविधान की रचना की गई जिसे आठवें वर्ष का संविधान (Constitution of the VIII year) भी कहा जाता है। इस नवीन संविधान के अनुसार, कार्यकारिणी के सभी अधिकार तीन सदस्यों की कान्स्यूलेट (Consulate) को दिए गए। कान्स्यूलेट के सदस्यों का चुनाव 10 वर्ष के लिए होना था। कान्स्यूलेट से तीन सदस्यों के प्रथम कान्सल (First Consul) को सम्पूर्ण अधिकार प्रदान किए गए थे। **द्वितीय** तथा **तृतीय** कान्सल (II and III consul) का कार्य प्रथम कान्सल को परामर्श देना था। प्रथम कान्सल कानून बना सकता तथा सिविल एवं सैनिक उच्चाधिकारियों की नियुक्ति कर सकता था। कान्स्यूलेट शासन के अन्तर्गत नेपोलियन को प्रथम कान्सल नियुक्त किया गया था, इस प्रकार नेपोलियन के हाथों में ही सम्पूर्ण अधिकार आ गए।

नवीन संविधान के अन्तर्गत चार वैधानिक संस्थाओं की स्थापना की गयी। ये चार संस्थाएँ निम्नवत् थीं—

1. **काउन्सिल ऑफ स्टेट** (Council of State)—काउन्सिल ऑफ स्टेट के सदस्यों को प्रथम काउन्सल द्वारा नियुक्त किया जाता था। कानून का खाका (Draft) तैयार करने का कार्य इन्हीं का था।
2. **ट्रिब्यूनेट** (Tribunate)—ट्रिब्यूनेट के सदस्यों की संख्या 100 होती थी जिसका कार्य काउन्सिल ऑफ स्टेट द्वारा तैयार कानून के ड्राफ्ट पर बहस करना होता था।
3. **व्यवस्थापिका सभा** (Legislative body)—इसके सदस्यों को बहस करने का अधिकार नहीं था, परन्तु काउन्सिल ऑफ स्टेट द्वारा तैयार कानून के मसविदे पर मतदान करती थी।
4. **सीनेट** (Senate)—सीनेट के सदस्यों की संख्या 60 होती थी। इसका कार्य यह निर्णय देना था कि कोई भी कानून संविधान की दृष्टि से उचित है अथवा नहीं। इसके अतिरिक्त ट्रिब्यूनेट तथा लेजिस्लेटिव सभा के सदस्यों को चुनती थी।

नवीन संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को जिसकी आयु 21 वर्ष हो मताधिकार प्रदान किया गया। मतदान का तरीका अप्रत्यक्ष (Indiret Election System) था।

TOUCH 'n' PASS

संविधान की समीक्षा (Criticism of Constitution)—कान्स्यूलेट शासन के अन्तर्गत सम्पूर्ण शक्ति प्रथम कान्सल में निहित कर दी गयी थी, अत: सम्पूर्ण शक्ति नेपोलियन के हाथों में केन्द्रित हो गयी। इस प्रकार नेपोलियन ने एक निरंकुश शासन की स्थापना की। इस संविधान ने गणतान्त्रिक प्रणाली को पूर्णतया समाप्त कर दिया। इसी कारण हैजन ने लिखा है—"नामक के लिए फ्रांस अब भी गणतन्त्र था, किन्तु वास्तव में उसने एक प्रच्छन्न राजतन्त्र का रूप धारण कर लिया था।" इस विषय में लिओ गर्शोय का कथन भी उल्लेखनीय है "इसने (नवीन संविधान ने) नेपोलियन को फ्रांस में अनुशासन रखने वाला 'ड्रिल मास्टर' बना दिया जिसका कार्य अपने आदेशों का तत्काल पालन करवाना था।" फिशर का कथन भी इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है। फिशर के शब्दों में, "कान्स्यूलेट और 'साम्राज्य' के शासन को हम क्रूर शासन कह सकते हैं, किन्तु उनसे पूर्व के शासन की तुलना में यह स्वतन्त्र था।"
सम्भवत: फ्रांस में व्याप्त भ्रष्टाचार व अव्यवस्था को देखते हुए निरंकुश शासन की स्थापना समय के अनुकूल ही भी। इसी कारण फ्रांस की जनता ने नेपोलियन के निरंशुक शासन को स्वीकार कर लिया।

प्र.2. प्रथम कान्सल के रूप में नेपोलियन द्वारा किए गए सुधारों का विवरण दीजिए।
Describe the reforms introduced by Napoleon as the first consul.

उत्तर

प्रथम कान्सल के रूप में नेपोलियन
(Napoleon as the First Consul)

नेपोलियन ने जिस समय फ्रांस में प्रथम कान्सल का पद ग्रहण किया, उसके समक्ष अनेक समस्याएँ विद्यमान थीं। फ्रांस की क्रांति तथा उसके बाद के दस वर्षों में उत्पन्न अराजकता एवं अव्यवस्था के कारण फ्रांस की स्थिति दयनीय थी। फ्रांस की पूरानी सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक व्यवस्था नष्ट हो गयी थी, अत: नेपोलियन के लिए यह आवश्यक था कि वह एक नवीन एवं सुदृढ़ व्यवस्था की स्थापना की स्थापना करे ताकि फ्रांस की स्थिति को सुधारा जा सके। नेपोलियन ने ऐसी विषय परिस्थिति में एक कुशल प्रशासक होने का परिचय दिया तथा अनेक सुधारों के द्वारा उसने फ्रांस की स्थिति में सुधार किया। नेपोलियन की सुधारवादी नीति में चार तथ्यों पर विशेष बल दिया गया था। ये थे केन्द्रीकरण (Centralization), आर्थिक स्थिति को दृढ़ करना (Strong Economic Condition), समझौता करना (Conciliation) तथा सक्षम प्रशासन (Efficient Administrative System)।
नेपोलियन ने प्रथम कान्सल के रूप में निम्नलिखित सुधार किए—

1. **सामाजिक समानता** (Social Equality)—नेपोलियन ने स्वतन्त्रता (Liberty) की अपेक्षा समानता (Equality) को अधिक महत्त्व दिया। नेपोलियन ने उच्च व निम्न वर्गों के भेद को समाप्त कर दिया। अपनी योग्यता के बल पर कोई भी व्यक्ति शासन के समस्त पदों को प्राप्त कर सकता था। इसके अतिरिक्त नेपोलियन ने फ्रांस से भागे हुए कुलीनों एवं पादरियों के विरुद्ध पारित किए गए कानूनों का अन्त करके उन्हें क्षमा प्रदान कर दी जिससे 40 हजार से भी अधिक परिवार फ्रांस में पुन: आ गए।
2. **सार्वजनिक कार्य** (Public Works)—नेपोलियन ने प्रथम कान्सल के रूप में अनेक सार्वजनिक कार्य करवाए। नवीन सड़कों का निर्माण किया गया तथा पुरानी सड़कों को सुधारा गया। सिंचाई के उद्देश्य से नहरों की भी व्यवस्था की गयी। इसके अतिरिक्त, पेरिस के सौन्दर्यीकरण का कार्य भी इन वर्षों में नेपोलियन ने कराया। अनेक सुन्दर भवनों का निर्माण, मार्गों के किनारे वृक्षारोपण व सुन्दर सड़कें इसी उद्देश्य से बनवायी गयीं। राजमहलों को भी सुसज्जित किया गया तथा विभिन्न देशों से लायी गयी कलाकृतियों का संग्रह भी फ्रांस में नेपोलियन के द्वारा कराया गया।
3. **प्रशासन में सुधार** (Reforms in the Administration)—नेपोलियन ने प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारु रूप प्रदान करने के उद्देश्य से अनेक सुधार किए। उसका मानना था कि, "फ्रांस के लोग स्वतन्त्रता के नहीं, बल्कि समानता के इच्छुक हैं।" अत: उसने 1800 ई० में प्रशासन की सम्पूर्ण शक्ति को उसने अपने हाथों में केन्द्रित कर लिया। इस प्रकार वह प्रशासन में कोई भी सुधार कर सकता था। उसने एक नवीन कानून बनाया जिसके द्वारा स्थानीय संस्थाओं (Local Institutions) को केन्द्र के अधीन कर दिया गया। अब प्रत्येक विभाग प्रीफेक्ट (Prefact) के, जिला (Arrondisement) उप-प्रीफेक्ट (Sub-Prefect) तथा कम्यून 'मेयर' (Mayor) के अधीन होता था। इन सभी अधिकारियों की नियुक्ति नेपोलियन ने स्वयं की तथा उन्हें केन्द्र के अधीन ही कार्य करना था। इन अधिकारियों की सहायता के लिए, 'निर्वाचित परिषदों' (Elective Councils) की स्थापना भी की गयी जिनका कार्य प्रमुखतया अपने स्थानों के लिए राष्ट्रीय करों को तय करना था। इस प्रकार नेपोलियन ने केन्द्रीय कानून को लागू कर प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारु एवं समान बनाया। नेपोलियन की इस नीति के विषय

TOUCH 'n' PASS

में हाल तथा रोज ने लिखा है, "इस प्रकार फ्रांस में स्थानीय स्वशासन के स्थान पर प्रशासनिक निरंकुशता की स्थापना हुई जिसने राजनीतिक निरंकुशवाद के मार्ग को प्रशस्त किया।"

4. **न्याय एवं दण्ड व्यवस्था** (Judiciary and the Punishments)—नेपोलियन ने न्याय एवं दण्ड व्यवस्था को सुधारने के भी व्यापक प्रयास किए। अनेक सिविल एवं दण्ड (Criminal) न्यायालयों की स्थापना की गयी। न्यायाधीशों की नियुक्ति का कार्य नेपोलियन स्वयं करता था। इस प्रकार न्याय व्यवस्था को भी केन्द्र के ही अधीन किया गया। नेपोलियन का दण्ड विधान बहुत कठोर था। साधारण अपराधों के लिए भी मृत्युदण्ड की व्यवस्था थी। नेपोलियन ने क्रांतिकारियों को पकड़ने के लिए मुद्रित पत्रों (Letters de Catchet) का पुन: प्रचलन किया। नेपोलियन ने जूरी की प्रथा भी प्रारम्भ की। नवीन दण्ड व्यवस्था में यह भी व्यवस्था की गयी कि कोई भी मुकदमा गुप्त रूप से नहीं हो सकता था। इस व्यवस्था की एक कमी यह थी कि अवैध कारावास को रोकने के लिए कोई प्रबन्ध नहीं किया गया था।
5. **प्रतिष्ठा मण्डल की स्थापना** (Legion of Honour Established)—इसके अन्तर्गत योग्यता के आधार पर इस मण्डल में कुलीनों को सम्मिलित किया जाता था। यह कार्य नेपोलियन ने फ्रांसीसियों में स्वयं के प्रति आदर की भावना जाग्रत करने के उद्देश्य से किया था। यह उपाधि केवल उन्हीं लोगों को दी जाती थी जिन्होंने कोई असाधारण अथवा वीरतापूर्ण कार्य किया हो। किसी अयोग्य व्यक्ति को चाहे वह किसी भी परिवार अथवा वंश का क्यों न हो, यह सम्मान प्रदान नहीं किया जाता था। इसी प्रकार भूमिखण्डों के पुरस्कार द्वारा उसने एक नवीन कुलीनता का विकास किया।
6. **प्रेस पर प्रतिबन्ध** (Press Censorship)—नेपोलियन ने प्रेस की स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध लगा दिया। प्रेस अपनी इच्छा से कुछ भी छापने के लिए स्वतन्त्र नहीं थी। प्रेस पर नियन्त्रण रखने के लिए दो सेन्सर बोर्ड नियुक्त किए गए थे। इस कारण अनेक अखबारों का प्रकाशन बन्द हो गया।
7. **सैन्य व्यवस्था** (Military Organization)—नेपोलियन ने सैन्य व्यवस्था में भी पर्याप्त सुधार किए। उसने सैनिक सेवा को अनिवार्य बना दिया तथा अनेक देशों में उन्हीं के खर्चे पर सेना रखकर फ्रांस की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया।
8. **शिक्षा के क्षेत्र में सुधार** (Educational Reforms)—नेपोलियन शिक्षा के महत्त्व से अच्छी तरह परिचित था। अत: उसने शिक्षा का राष्ट्रीयकरण कर दिया। नेपोलियन का मानना था कि शिक्षा पर राज्य का पूर्ण नियन्त्रण परिवर्तन के लिए आवश्यक है। अत: 1802 ई० में नेपोलियन ने शिक्षा को चर्च के हाथों से निकालकर राज्य के अधीन कर दिया। तत्पश्चात् नेपोलियन ने चार प्रकार की शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की—
   (i) **प्राइमरी स्कूल** (Primary School)—प्रत्येक कम्यून में प्राइमरी स्कूल खोले गए जिनका उत्तरदायित्व प्रीफेक्ट अथवा उप-प्रीफेक्ट पर होता था।
   (ii) **माध्यमिक अथवा ग्रामर स्कूल** (Grammar School)—माध्यमिक विद्यालयों की संख्या बहुत अधिक थी। इनमें कला, भाषा, विज्ञान व फ्रेंच भाषा की शिक्षा दी जाती थी।
   (iii) **हाई स्कूल** (High School)—इन स्कूलों को लेसी (Lecees) कहा जाता था तथा इन्हें बड़े नगरों में खोला गया था। इन स्कूलों के अध्यापकों की नियुक्ति व वेतन सरकार देती थी।
   (iv) **विशेष स्कूल** (Speical Schools)—विशेष स्कूलों की व्यवस्था की गयी थी। प्रथम, जिनमें कला तथा विज्ञान की शिक्षा दी जाती थी; द्वितीय, जिनमें व्यावसायिक शिक्षा का प्रबन्ध था उदाहरणार्थ सैनिक स्कूल, सिविल सेवा स्कूल, इत्यादि।

   उपर्युक्त सुधारों के अतिरिक्त अध्यापकों को अध्ययन कार्य में शिक्षित बनाने के लिए प्रशिक्षण केन्द्र की भी स्थापना की गयी। 1808 ई० में पेरिस में एक विश्वविद्यालय (University of France) की स्थापना की गयी थी जिसमें लैटिन, फ्रेंच, साधारण विज्ञान तथा गणित इत्यादि की शिक्षा दी जाती थी। नेपोलियन ने सभी विद्यालयों में राष्ट्रप्रेम व देशभक्ति की शिक्षा अनिवार्य कर दी। नेपोलियन ने राजनीति एवं नैतिक विज्ञान विषयों को बन्द करवा दिया।
9. **आर्थिक सुधार** (Economic Reforms)—फ्रांस की आर्थिक स्थिति लुई सोलहवें के शासनकाल से खराब हो चुकी थी तथा वह निरन्तर बिगड़ती जा रही थी। डाइरेक्टरी के शासन में फ्रांस की आर्थिक स्थिति में किसी प्रकार का सुधार नहीं हुआ था। प्रथम कान्सल बनने के बाद नेपोलियन ने इस ओर विशेष ध्यान दिया। सर्वप्रथम, कर वसूलने का कार्य केन्द्रीय सरकार को सौंप कर बेकारों को कार्य दिलाने का प्रबन्ध किया गया। फ्रांस की साख दृढ़ करने के उद्देश्य से बैंक ऑफ फ्रांस की स्थापना की गयी। बैंक ऑफ फ्रांस के संगठन व कार्यप्रणाली को प्रसिद्ध बैंक शास्त्री (Banker) परेगो

TOUCH 'n PASS

(Perregaux) से तैयार करवाया गया। 1803 ई० में बैंक ऑफ फ्रांस को नोट छापने का कार्य भी दे दिया। नेपोलियन द्वारा बैंक ऑफ फ्रांस की स्थापना करना आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण था। हैज ने नेपोलियन के इस कार्य की प्रशंसा करते हुए लिखा है, "नेपोलियन की वित्तीय पुनर्संगठन की सर्वप्रमुख सफलता बैंक ऑफ फ्रांस की स्थापना थी जो उसी समय से विश्व की सबसे सुदृढ़ वित्तीय संस्था रही है।"

नेपोलियन ने फ्रांस के व्यय को भी कम किया। अनावश्यक खर्चों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। व्यापार एवं वाणिज्य के विकास के लिए भी नेपोलियन ने प्रयत्न किए। 1802 ई० में 'चैम्बर ऑफ कॉमर्स' (Chamber of Commerce) की स्थापना की गयी। नेपोलियन ने फ्रांस के सभी नागरिकों पर कर भी लगाया। भ्रष्ट अधिकारियों को दण्डित किया गया। इस प्रकार नेपोलियन के निरन्तर प्रयासों से फ्रांस की आर्थिक स्थिति आश्चर्यजनक ढंग से सुधरी। हेजन ने नेपोलियन की प्रशंसा करते हुए लिखा है, "महत्त्वाकांक्षी बोनापार्ट ने उद्योगों तथा वाणिज्य की ओर विशेष ध्यान दिया। सड़कों का सुधार किया, नहरें खोदी गयीं और बन्दरगाहों का उद्धार किया गया। देश का आर्थिक विकास इतनी तेजी से हुआ कि इंग्लैण्ड भी चिन्तित हो उठा।"

10. **धार्मिक सुधार** (Religious Reforms)—फ्रांस की जनता चर्च की विरोधी थी। उनका विचार था कि चर्च का कार्य जनसाधारण का शोषण करना ही है। चर्च में सुधार करने की दृष्टि से 'पादरी-विधान' (Constitution of the Clergy) पारित किया गया था, किन्तु अधिकांश जनता इस विधान के विरुद्ध थी। अत: प्रथम कान्सल बनने के पश्चात् नेपोलियन ने पोप से जुलाई 1801 ई० में समझौता कर लिया। इस समझौते को कांकाडर्ट (Concodart) कहा जाता है। हैजन ने लिखा है, "उसका (नेपोलियन का) विचार था कि धर्म की बागडोर भी शासक के हाथों में ही होनी चाहिए। एक बार उसने कहा था, 'बिना इसके शासन करना असम्भव है।' इसलिए उसने पोप के साथ सन्धि कर ली। उसका कहना था कि यदि पोप पहले से न होता तो इस अवसर के लिए मुझे पोप बनना पड़ता।"

अत: समझौते के अनुसार निम्नवत् निर्णय लिए गए—

(i) पोप ने चर्च की जब्त की गयी सम्पत्ति तथा भूमि पर से अपना अधिकार त्याग दिया।
(ii) शिक्षा संस्थाओं पर राज्य का नियन्त्रण स्वीकार किया गया।
(iii) राज्य की आज्ञा के बिना कोई पादरी देश से बाहर आ-जा नहीं सकता था। बिशप परस्पर अथवा पोप से पत्र-व्यवहार नहीं कर सकते थे।
(iv) पादरियों को राज्य के प्रति भक्ति की शपथ लेना आवश्यक था। देश के सभी गिरजाघरों पर राज्य का अधिकार हो गया।
(v) क्रांति के समय गिरफ्तार सभी पादरियों को मुक्त कर दिया गया तथा देश छोड़कर भागे हुए पादरियों को पुन: फ्रांस लौटने की अनुमति दे दी गयी।
(vi) कैथोलिक धर्म को राजधर्म स्वीकार कर लिया गया तथा कैथोलिक चर्च को सार्वजनिक पूजा का अधिकार दे दिया गया। इस प्रकार चर्च राज्य का एक अंग बन गया।

इस समझौते से जनसाधारण को बहुत सन्तोष हुआ। इसके दो मुख्य कारण थे। एक तो लोगों को अपने धर्म पर निर्विघ्न आचरण करने का अधिकार मिल गया तथा दूसरे क्रांति के दिनों में चर्च की जो भूमि उन्होंने खरीद ली थी। उस पर उनका अधिकार विधिवत् हो गया।

इस समझौते की हैजन ने आलोचना की है। हैजन ने लिखा है कि इस समझौतो को नेपोलियन की एक महान् भूल समझना चाहिए। फ्रांस ने चर्च और राज्य के पूर्ण पृथक्करण की नीति अपना ली थी। यदि उसको जारी रहने दिया जाता तो इससे बड़ा देश का कल्याण होता। जनता को धीरे-धीरे सहिष्णुता के सिद्धान्त पर चलने का अभ्यास हो जाता, किन्तु इस समझौते ने इस आशा पर पानी फेर दिया तथा चर्च और राजा का पुन: गठबन्धन करके एक खतरनाक समस्या उत्पन्न कर दी जो 19वीं शताब्दी में भय व विक्षोभ का कारण बनी रही। शीघ्र ही दोनों सन्धि से भी उकता गए। नेपोलियन तथा पोप के बीच भी बहुत दिनों तक अच्छे सम्बन्ध न रह सके। कुछ ही वर्षों में दोनों के मध्य झगड़ा इतना बढ़ गया कि पोप ने नेपोलियन को धर्म से बहिष्कृत कर दिया तथा नेपोलिन ने पोप को बन्दी बना लिया। नेपोलियन स्वयं भी यह अनुभव करने लगा था कि यह समझौता करके उसने भारी भूल की थी, किन्तु फिर भी इस समझौते से तात्कालिक लाभ हुए।

11. **सिविल कोड की स्थापना** (Establishment of Civil Code)—इस समय फ्रांस में अनेक कानून थे, किन्तु कोई एक सुनिश्चित संहिता (Code) नहीं थी। नेपोलियन ने इस कार्य में व्यक्तिगत रुचि ली तथा 1894 ई० में 'सिविल कोड'

तैयार करवाया। नेपोलियन का यह कार्य उसकी महान् उपलब्धि थी। इसी कारण इसे नेपोलियन संहिता (Napoleon Code) भी कहा जाता है। स्वयं नेपोलियन ने इस संहिता के विषय में घोषणा की थी, "मेरे कानूनों का संग्रह मेरी विजयों से अधिक स्थायी रहेगा।"

नेपोलियन ने सिविल कोड तैयार कराने के लिए 1804 ई० में एक समिति नियुक्त की जिसका नेतृत्व प्रसिद्ध विधि-विशेषज्ञ कैम्बासेरेस (Cambaceres) ने किया। इस समिति ने चार माह के कठोर परिश्रम के पश्चात् एक सिविल कोड तैयार किया। फिशर ने इस कोड की अत्यन्त प्रशंसा की है। उन्होंने लिखा है—"जिस कार्य के लिए आधुनिक सरकारें 15 वर्षों का समय लेती हैं, नेपोलियन ने वह चार महीनों में कर दिखाया।"

यह संहिता फ्रांस के लिए वरदान प्रमाणित हुई।

इस सिविल कोड के पाँच भाग थे—

(i) **व्यावहारिक संहिता** (Civil Code)—इस संहिता के अन्तर्गत व्यक्तियों, वस्तुओं व सम्पत्ति आदि के विषय में कानून थे।

(ii) **व्यावहारिक प्रक्रिया संहिता** (Code of Civil Procedure)—इसमें 1737-38 ई० के अध्यादेशों का संग्रह था।

(iii) **दण्ड संहिता** (Penal Code)—इसमें विभिन्न प्रकार के अपराधों के लिए विभिन्न दण्ड देने का प्रावधान था।

(iv) **दण्ड प्रक्रिया संहिता** (Code of Criminal Procedure)—इसके अन्तर्गत अपराधी को न्यायालयों में अपने पक्ष में वकील आदि करने का अधिकार दिया।

(v) **वाणिज्य संहिता** (Commercial Code)—इस संहिता के अन्तर्गत व्यापार सम्बन्धी नियम थे। उल्लेखनीय है कि इस सिविल कोड के निर्माण में नेपोलियन का निजी हाथ भी बहुत अधिक था। नेपोलियन स्वयं विधिविज्ञ नहीं था और न ही उसे कानून का विशेष ज्ञान था, किन्तु उसकी बौद्धिक प्रतिभा अत्यन्त प्रखर, सूझ-बूझ और विचार शक्ति तथ्यगम्य थी, इसलिए उसने जो अनेक सुझाव, आलोचनाएँ और प्रश्न प्रस्तुत किए उससे पूरी संहिता का रूप भी परिष्कृत होकर निखर उठा। हैजन ने लिखा है, "धर्म सम्बन्धी अपनी शब्दावली और अभिव्यंजना के कारण पादरियों ने उसे (नेपोलियन को) 'कान्सेण्टाइन' की उपाधि दी और विधिविज्ञों ने उसे नया 'जस्टीनियन' कहा, किन्तु सत्य यह है कि अनेक बातों में वह दोनों से बढ़कर था।"

प्र.3. नेपोलियन की महाद्वीपीय योजना का वर्णन कीजिए। महाद्वीपीय योजना के परिणामों एवं इसकी असफलता के कारणों को भी लिखिए।

Describe Napoleon's continental system. Also, write the results of the continental system and the causes for its failure.

उत्तर

नेपोलियन की महाद्वीपीय योजना
(Napoleon's Continental System)

1807 ई० में हुई टिलसिट (Tilsit) की सन्धि के समय नेपोलियन अपने उत्कर्ष की चरम सीमा पर पहुँच गया था। थॉमसन ने लिखा है, "टिलसिट की सन्धि के समय नेपोलियन का साम्राज्य न केवल अपने चरम उत्कर्ष पर था वरन् अत्यन्त सुदृढ़ भी था।" लगभग सम्पूर्ण यूरोप पर इस समय तक नेपोलियन का प्रभाव स्थापित हो चुका था। यूरोप के प्रमुख राष्ट्रों आस्ट्रिया, प्रशा व रूस को वह क्रमश: 1805 ई० 1806 ई० व 1807 ई० में परास्त कर चुका था। यूरोप में केवल इंग्लैण्ड ही एक ऐसा देश था जो फ्रांस को निरन्तर चुनौती दे रहा था। ट्राफल्गर के युद्ध के पश्चात् नेपोलियन समझ चुका था कि शक्तिशाली नौसेना के रहते इंग्लैण्ड को पराजित करना सम्भव न था। इसी कारण नेपोलियन स्वयं कहा करता था—"बालोन से फॉल्कस्टोन तक सेना भेजने की तुलना में पेरिस से दिल्ली सेना भेजना सरल है।" ऐसी स्थिति में इंग्लैण्ड को परास्त करना अत्यन्त कठिन था। इसी समय नेपोलियन को माण्टगैलार्ड ने परामर्श दिया कि इंग्लैण्ड एक व्यापारिक देश था, अत: उसे आर्थिक युद्ध के द्वारा परास्त किया जा सकता था। नेपोलियन ने इस परामर्श को स्वीकार किया व इंग्लैण्ड पर जलमार्ग पर विजय करने के विचार को त्याग दिया। नेपोलियन ने इंग्लैण्ड से आर्थिक युद्ध करने के लिए नवीन एवं विशाल योजना द्वारा इंग्लैण्ड के आयात एवं निर्यात को बन्द करने का निश्चय दिया। उसकी इस योजना को इतिहास में महाद्वीपीय योजना (Continental System) अथवा महाद्वीपीय अवरोध (Continental Blockade) कहा जाता है। नेपोलियन जानता था कि इंग्लैण्ड एक व्यापारिक देश था तथा अपने यहाँ निर्मित

TOUCH 'n' PASS

माल को अन्य देशों को निर्यात करता था। अन्न इत्यादि खाने की वस्तुएँ इंग्लैण्ड अन्य देशों से आयात करता था। अत: नेपोलियन का विचार था कि यदि इंग्लैण्ड के आयात निर्यात को बन्द कर दिया जाए तो आर्थिक स्थिति के खराब होने व खाने-पीने की वस्तुओं के अभाव के कारण इंग्लैण्ड को घुटने टेकने के लिए विवश होना पड़ेगा। इसके साथ ही नेपोलियन यूरोप में ऐसी अर्थव्यवस्था को लागू करना चाहता था जिसका केन्द्र लन्दन में न होकर पेरिस में हो। जैसा कि पामर ने भी लिखा है, "महाद्वीपीय व्यवस्था इंग्लैण्ड के निर्यात को नष्ट करने की योजना थी। इसका उद्देश्य यूरोप में ऐसी अर्थव्यवस्था को विकसित करना भी था जिसका मुख्य केन्द्र फ्रांस हो।"

महाद्वीपीय योजना का प्रारम्भ (Beginning of Continental System)

नेपोलियन ने महाद्वीपीय योजना को कार्यान्वित करने के लिए अनेक आदेश जारी किए। वे आदेश निम्नवत् थे—

1. **बर्लिन आदेश** (Berlin Decree)—इसको नेपोलियन ने 21 नवम्बर, 1806 ई० को घोषित किया। इस प्रकार महाद्वीपीय प्रणाली प्रारम्भ हो गई। इस आदेश में उसने कहा कि "ब्रिटिश द्वीप समूह तथा अंग्रेजी उपनिवेशों का घेरा प्रारम्भ किया जाता है। अब यदि ब्रिटिश द्वीप समूह अंग्रेजी उपनिवेशों का कोई जहाज फ्रांस अथवा उसके मित्र राष्ट्रों के किसी बन्दरगाह में प्रवेश करेगा तो उसे जब्त कर लिया जाएगा।" इस आदेश में यह भी कहा गया था कि यूरोप का कोई भी राज्य इंग्लैण्ड से व्यापार नहीं करेगा। इंग्लैण्ड के जितने भी लोग उन देशों में हों उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाए व उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली जाए।
2. **वार्सा आदेश** (Warsaw Decree)—25 जनवरी, 1807 ई० को नेपोलियन ने वार्सा आदेश (Warsaw Decree) जारी किए। इसके द्वारा प्रशा तथा हेनोवर के समुद्र तटों पर भी अंग्रेजी व्यापार के विरुद्ध प्रतिबन्ध लगा दिया गया। टिलसिट सन्धि के पश्चात् रूस, प्रशा तथा डेनमार्क ने भी ब्रिटिश माल का बहिष्कार कर दिया। इससे इंग्लैण्ड को अत्यधिक आर्थिक हानि का सामना करना पड़ा।

   इंग्लैण्ड द्वारा इन आदेशों का प्रत्युत्तर (The British Reply)—नेपोलियन के आदेशों का जवाब देने के लिए इंग्लैण्ड ने 'आर्डर इन कौंसिल' (Order in Council) पारित किया। इसके द्वारा घोषित किया गया कि—
   (i) यदि किसी जहाज में फ्रांस अथवा उसके उपनिवेशों का बना हुआ सामान पाया जाएगा तो उसे जब्त कर लिया जाएगा।
   (ii) अपने विदेशी व्यापार को बनाए रखने के लिए अंग्रेजों ने तटस्थ राज्यों को कम करों पर सामान देना घोषित किया।
   (iii) कोई भी तटस्थ राज्य फ्रांस के किसी जहाज को न खरीदे।
   (iv) इंग्लैण्ड की ओर से व्यापार करने वाले तटस्थ देशों के जहाजों को प्रत्येक सुविधा प्रदान की जाएगी।
   (v) प्रशा तथा पुर्तगाल आदि देशों द्वारा विवशता में महाद्वीपीय योजना स्वीकार की गई अत: उनके जहाजों को छोड़ दिया जाएगा।

   इस प्रकार 'आर्डर इन कौंसिल' के द्वारा इंग्लैण्ड ने अपने व्यापार को सजीव बनाए रखने की चेष्टा की।
3. **मिलान आदेश** (Milan Decree)—17 दिसम्बर, 1807 ई० को नेपोलियन ने मिलान आदेश जारी किए। इसके अनुसार यह घोषणा की गई कि अंग्रेजी बन्दरगाहों में उपस्थित अथवा अंग्रेजों को तलाशी देने वाले जहाज को जब्त कर लिया जाएगा चाहे वह किसी भी देश का क्यों न हो।

   इस समय इंग्लैण्ड ने भी दूसरा 'आर्डर इन कौंसिल' (Order in Council) पारित किया। इसमें कहा गया था कि जो देश अंग्रेजी माल स्वीकार नहीं करेगा, इंग्लैण्ड उसका अवरोध करेगा। तटस्थ देशों से कहा गया कि वे इंग्लैण्ड के जहाजों को सुविधा प्रदान कराएँ।
4. **फाण्टेंब्ल्यू आदेश** (Fontainebleau Decree)—18 अक्टूबर, 1810 ई० को नेपोलियन ने सबसे कठोर आदेश जारी किए, जिन्हें फाण्टेंब्ल्यू आदेश कहा जाता है। इन आदेशों में कहा गया कि जब्त अंग्रेजी सामान को जला दिया जाए। अवैध ढंग से व्यापार करने वालों के लिए कठोर दण्ड व पृथक् न्यायालय की स्थापना की गयी।

   उपरोक्त आदेशों का इंग्लैण्ड के अंग्रेजी व्यापार पर गहरा प्रभाव हुआ, किन्तु इसके पश्चात् भी तटस्थ देशों के जहाज छिपकर अवैध रूप से उत्तरी सागर तथा मध्य सागर के देशों में माल पहुँचा रहे थे तथा वहाँ से यह माल स्थल मार्ग से यूरोप के विभिन्न देशों में पहुँचाया जाता था। इसके अतिरिक्त, फर्जी लाइसेन्सों के द्वारा भी व्यापार किया जा रहा था। इसको रोकने के लिए नेपोलियन ने अंग्रेजी वस्तुओं पर चुंगी लगा दी। इस प्रकार अंग्रेजी व्यापार को बहुत हानि हुई।

TOUCH 'n PASS

उपर्युक्त आदेश जारी करने के अतिरिक्त भी नेपोलियन ने महाद्वीपीय व्यवस्था को प्रभावशाली बनाने के लिए अनेक प्रयास किए जिनमें प्रमुख निम्नलिखित थे—

(i) **रूस के साथ समझौता** (Agreement with Russia)—टिलसिट की सन्धि में रूस के जार के द्वारा इस योजना को स्वीकार कराने के लिए नेपोलियन ने उसे फिनलैण्ड तथा तुर्की का कुछ भाग देने का लालच दिया।

(ii) **आस्ट्रिया पर दबाव** (Austria Pressurized)—28 फरवरी, 1808 ई० को नेपोलियन ने आस्ट्रिया को महाद्वीपीय योजना को स्वीकार करने के लिए विवश किया।

(iii) **स्पेन पर अधिकार** (Spain Captured)—नेपोलियन ने स्पेन के अधिकांश भाग पर अधिकार कर लिया था, अत: स्पेन ने स्वत: ही इस योजना को स्वीकारा।

(iv) **पुर्तगाल पर अधिकार** (Portugal Captured)—नेपोलियन ने पुर्तगाल से इस योजना को स्वीकार करने के लिए कहा, किन्तु पुर्तगाल ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। अत: नेपोलियन ने पुर्तगाल पर आक्रमण किया। पुर्तगाल का राजा राज्य छोड़कर ब्राजील भाग गया। यही से प्रायद्वीपीय युद्ध (Peninsular war) प्रारम्भ हुआ, जिसके घातक परिणाम हुए।

(v) **पोप को बन्दी बनाना** (Pope was arrested)—पोप ने महाद्वीपीय योजना में भाग न लेते हुए स्वयं को तटस्थ (Neutral) घोषित कर दिया, अत: क्रोधित होकर नेपोलियन ने पोप पर आक्रमण किया व उसे बन्दी बना लिया। नेपोलियन द्वारा ऐसा करना उसकी एक राजनीतिक भूल (Political blunder) थी क्योंकि इस प्रकार उसने कैथोलिकों को नाराज कर दिया।

(vi) **प्रशा से सन्धि** (Treaty with Prussia)—महाद्वीपीय योजना में प्रशा को सम्मिलित करने के लिए नेपोलियन ने उससे सन्धि की।

(vii) **स्वीडन को पराजित** (Sweden Conquered)—1808 ई० में नेपोलियन ने स्वीडन पर विजय प्राप्त करके उसे भी महाद्वीपीय योजना में शामिल किया।

(viii) **हॉलैण्ड का फ्रांस में विलय** (Holland annexed with France)—हॉलैण्ड का शासक नेपोलियन का भाई लुई बोनापार्ट था, किन्तु फिर भी वह वहाँ महाद्वीपीय व्यवस्था लागू न कर सका, अत: 9 जुलाई, 1810 ई० को नेपोलियन ने हॉलैण्ड को फ्रांस में मिला दिया।

महाद्वीपीय योजना के परिणाम (Results of the Continental System)

नेपोलियन द्वारा प्रारम्भ की गयी महाद्वीपीय योजना के दूरगामी परिणाम हुए। इस नीति से हॉलैण्ड को उतनी हानि नहीं हुई जितनी कि नेपोलियन ने अपेक्षा की थी। इस योजना के निम्नलिखित परिणाम हुए—

1. इंग्लैण्ड से व्यापार बन्द होने से फ्रांस तथा उसके मित्र देशों में दैनिक वस्तुओं का अभाव होने लगा। इससे वे नेपोलियन के विरोधी हो गए।
2. इस योजना को लागू करने के लिए नेपोलियन ने अनेक देशों से युद्ध किए, जिससे उसके शत्रुओं की संख्या बढ़ी। अन्तत: यही युद्ध नेपोलियन के पतन के कारण बने।
3. इस योजना का इंग्लैण्ड पर प्रभाव होना स्वाभाविक था। देश में अनाज महँगा हो गया व अंग्रेजी वस्तुओं के दामों में भारी कमी आयी। अत: आर्थिक सन्तुलन बनाए रखने के उद्देश्य से इंग्लैण्ड की सरकार को जनता पर लगे हुए करों में वृद्धि करनी पड़ी व अन्य देशों से ऋण लेना पड़ा, किन्तु नेपोलियन ने जितना सोचा था उतना प्रभाव इस व्यवस्था का इंग्लैण्ड पर नहीं हुआ। यूरोप के साथ इंग्लैण्ड का व्यापार 1805 ई० में (महाद्वीपीय व्यवस्था लागू होने से पहले) 37.8%, 1806 ई० में 30.9%, 1807 ई० में 25.5%, 1808 ई० में 25.7% तथा 1809 ई० 35.3% रहा। इसी प्रकार विदेशों में जो माल इंग्लैण्ड के द्वार बेचा गया उसकी कुल कीमत 1805 ई० में 41 लाख पौंड, 1806 ई० में 44 लाख पौंड, 1807 ई० 40 लाख पौंड, 1808 ई० में 40 लाख पौंड व 1809 में 50 लाख पौंड थी। उपरोक्त आँकड़ों से स्पष्ट है कि इस योजना का प्रभाव सर्वाधिक 1807 ई० में रहा। अन्य वर्षों में कोई विशेष प्रभाव नहीं रहा था। सम्भवत: इसी कारण स्टीफेन्स ने लिखा है—"इस व्यवस्था ने इंग्लैण्ड की सम्पन्नता को कम करने के स्थान पर उसमें वृद्धि की।"

TOUCH 'n' PASS

4. इस व्यवस्था का आर्थिक प्रभाव फ्रांस पर भी पड़ा। वहाँ हजारों मजदूर बेकार हो गए। फ्रांस का मध्यवर्ग भी नेपोलियन का विरोधी हो गया।
5. इस व्यवस्था ने भविष्य में अनेक युद्धों (प्रायद्वीपीय युद्ध इत्यादि) को जन्म दिया।
6. कैथोलिक जनता नेपोलियन की विरोधी हो गयी क्योंकि उसने पोप को बन्दी बनाया था।
7. इंग्लैण्ड ने अपने यहाँ बना माल अनेक ऐसे देशों को भेजा जो प्रत्यक्षत: उसके पक्ष में न थे। इस प्रकार इंग्लैण्ड को अपने सम्बन्ध सुधारने का अवसर मिल गया।
8. टिलसिट की सन्धि के पश्चात् जो देश फ्रांस के मित्र बन गए थे वे भी इस महाद्वीपीय व्यवस्था के कारण नेपोलियन के विरुद्ध हो गए। नेपोलियन इस व्यवस्था के कारण ऐसे व्यूह-जाल में फंस गया जिससे वह कभी बाहर न निकल सका। इस प्रकार स्पष्ट है कि इस व्यवस्था के व्यापक परिणाम हुए।

महाद्वीपीय योजना की असफलता के कारण (Causes of the Failure of Continental System)

नेपोलियन ने इस व्यवस्था को सफल बनाने के लिए अत्यधिक प्रयत्न किए थे, किन्तु फिर भी इस कार्य में वह सफल न हो सका। तत्कालीन परिस्थितियों के अतिरिक्त इस योजना में अनेक मूलभूत दोष थे जिनके कारण यह व्यवस्था असफल प्रमाणित हुई। इस योजना के असफल प्रमाणित हुई। इस योजना के असफल होने के कारण निम्नलिखित थे—

1. इंग्लैण्ड में अन्न की बहुत कमी थी। नेपोलियन को चाहिए था कि यह अन्न का आयात इंग्लैण्ड में न होने देता, किन्तु नेपोलियन ऐसा न कर सका। रोज ने लिखा है, "महाद्वीपीय योजना तभी सफल हो सकती थी जबकि नेपोलियन वहाँ अनाज को भेजा जाना बन्द कर देता, परन्तु नेपोलियन यह अमानवीय कार्य न कर सका और इसलिए यह योजना भी सफल न हुई।"
2. इंग्लैण्ड से चोरी-छिपे होने वाले व्यापार को भी नेपोलियन रोक नहीं सका।
3. अनेक राज्यों ने किन्हीं विवशताओं के कारण इस व्यवस्था को स्वीकार किया था, उन्होंने अवसर मिलते ही इंग्लैण्ड से व्यापारिक सम्बन्ध पुन: कायम कर लिए।
4. यूरोप के राज्यों की जनता को दैनिक उपयोग की वस्तुएँ न मिल पाने के कारण जनता नेपोलियन व उसकी इस नीति का विरोध करने लगी। स्वयं फ्रांस की जनता इस महाद्वीपीय व्यवस्था से तंग आ गयी थी।
5. तटस्थ देश में नेपोलियन के विरोधी हो गए, क्योंकि नेपोलियन ने उन पर भी इस व्यवस्था को लागू करने का प्रयास किया।
6. नेपोलियन ने पोप पर आक्रमण करके उसे बन्दी बना लिया था। इससे कैथोलिक जनता नेपोलियन की विरोधी हो गयी।
7. स्पेन व पुर्तगाल ने इंग्लैण्ड का ही समर्थन किया।
8. महाद्वीपीय योजना एक अव्यावहारिक योजना थी। सम्पूर्ण यूरोप के विशाल क्षेत्र पर किसी भी एक देश के लिए नियन्त्रण व निगरानी रखना सम्भव न था। इसके अतिरिक्त नेपोलियन का यह विचार कि यूरोप के लोग इंग्लैण्ड को परास्त करने के लिए अपना सब कुछ त्याग देंगे व अपार कष्ट सहन कर लेंगे, तर्क संगत नहीं था, यह नि:सन्देह नेपोलियन की एक महान् भूल थी।
9. महाद्वीपीय व्यवस्था शक्तिशाली नौसेना के अभाव में सफल नहीं हो सकती थी। फ्रांस की नौसेना शक्तिशाली नहीं थी, अत: इस योजना का असफल होना स्वाभाविक ही था।

प्र.4. नेपोलियन के पतन के कारणों का सविस्तार विवेचन कीजिए।
Discuss in detail the causes for the downfall of Napoleon.

उत्तर

नेपोलियन के पतन के कारण
(Causes of Napoleon's Donwfall)

नेपोलियन न केवल यूरोप अपितु विश्व-इतिहास का एक महान् व्यक्तित्व था। यूरोप के राजनीतिक पटल पर अचानक व तेजी से उसका पदार्पण हुआ, किन्तु उतनी ही शीघ्रता से वह विलुप्त भी हो गया। 1799 ई० से 1814 ई० तक वह यूरोप पर छाया रहा तथा अपने कार्यों, विजयों व व्यक्तित्व से न केवल फ्रांस अपितु सम्पूर्ण विश्व को उसने प्रभावित किया। एक साधारण परिवार में

TOUCH 'n' PASS

जन्मा, एक सिपाही के रूप में अपना जीवन प्रारम्भ करने वाला नेपोलियन असाधारण योग्यता एवं प्रतिभा का स्वामी था जिसके द्वारा ही वह फ्रांस के सम्राट के पद तक जा पहुँचा। 1807 ई० में वह अपने उत्कर्ष की चरम सीमा पर था। ग्रांट एण्ड टेम्परले ने लिखा है—"1807 ई० में नेपोलियन अपनी शक्ति की चरम सीमा पर था। यदि वह उसी वर्ष मर जाता तो उसका जीवन यूरोप के सैन्य इतिहास एवं सम्भवत: विश्व के इतिहास में सबसे चमत्कारपूर्ण बन जाता।" उल्लेखनीय है कि 1807 ई० से पहले के 7 वर्ष में नेपोलियन ने जिस तेजी के साथ उन्नति की थी, 1807 ई० के बाद उतनी ही तीव्रता से वह पतन की ओर अग्रसर हुआ।

इतिहास साक्षी है कि प्रत्येक साम्राज्य अथवा सम्राट का चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो एक निश्चित अवधि के पश्चात् पतन होने लगता है। नेपोलियन भी इस ऐतिहासिक सत्य का अपवाद न था। 'असम्भव' शब्द को न मानने वाला नेपोलियन भी अन्ततोगत्वा पतन के गर्भ में समा गया। नेपोलियन के पतन में अनेक प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष कारणों ने सहयोग दिया, जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित थे—

1. **एक व्यक्ति की योग्यता पर आधारित राज्य** (Empire based on only one Person)—नेपोलियन अपनी योग्यता के आधार पर शासक बना था। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि नेपोलियन प्रतिभा का स्वामी था, किन्तु फिर भी राज्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए परामर्शदाताओं की आवश्यकता होती है। नेपोलियन किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप को पसन्द नहीं करता था और न ही किसी से परामर्श लेता था यहाँ तक तालीराँ (Talleyrand), फूशे (Fouche) जैसे योग्य व्यक्तियों से परामर्श लेना भी उसने छोड़ दिया। नेपोलियन यह भूल गया था कि वह ईश्वर नहीं वरन् एक मनुष्य है और मनुष्य की क्षमताएँ सीमित होती हैं, चाहे वह कितना भी योग्य क्यों न हो।
2. **असीमित महत्त्वाकांक्षी होना** (Over Ambitious)—उन्नति करने क लिए मनुष्य का महत्त्वाकांक्षी होना आवश्यक है, किन्तु जब महत्त्वाकांक्षाएँ मनुष्य की क्षमता से अधिक होने लगती हैं तो उसका पतन होने लगता है। नेपोलियन के साथ भी यही हुआ था। नेपोलियन के पतन के लिए अन्य बाहरी कारणों से अधिक उसकी अपनी महत्त्वाकांक्षाएँ अधिक उत्तरदायी थी। नेपोलियन अपनी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति में किसी भी प्राकृतिक बाधा को स्वीकार करने के लिए तैयार न था। वह एक साधारण सिपाही से फ्रांस का सम्राट बन गया था, किन्तु फिर भी उसकी अभिलाषाएँ समाप्त न हुईं। फ्रांस का सम्राट बनने के पश्चात् वह विश्व विजय के स्वप्न देखने लगा। यही उसके पतन का कारण बन गया, क्योंकि यूरोप के राष्ट्रों ने उसके विरुद्ध संगठन बनाकर उसके पतन के बीज बो दिए।
3. **नेपोलियन का खराब स्वास्थ्य** (Ill health of Napoleon)—बढ़ती आयु के साथ-साथ नेपोलियन का स्वास्थ्य भी खराब होने लगा था। यद्यपि रोज इत्यादि कुछ इतिहासकारों का मानना था कि वाटरलू के युद्ध के समय नेपोलियन पूर्णतया स्वस्थ था। केवल उसकी निर्णय शक्ति कमजोर हो गई थी, किन्तु इस बात को स्वीकार करना कठिन है। रूस के अभियान के पश्चात् उसका स्वास्थ्य गिरा था, इसके अतिरिक्त यदि रोज की बात को भी मानें तो यदि सम्राट की निर्णय शक्ति ही कमजोर हो जाएगी तो उसका पतन होना स्वाभाविक ही है। सम्भवत: इसी कारण उसने लिप्जिग व वाटरलू के युद्ध में अनेक भूलें की। डॉ० स्लोन ने लिखा है, "नेपोलियन के पतन के समस्त कारण एक ही शब्द 'थकान' में निहित हैं।" नि:सन्देह, निरन्तर युद्धों में रत रहने से नेपोलियन थक चुका होगा, जिससे उसकी कार्यक्षमता व युद्ध क्षमता पर असर हुआ।
4. **सैनिकवादी नीति** (Policy of Militarism)—नेपोलियन ने अपने जीवनकाल में जो उन्नति की थी उसका आधार सैनिकवादी नीति ही थी। अत: नेपोलियन का विचार था कि सैन्य बल के द्वारा ही सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। उसने एक बार कहा था, "यदि मैं और अधिक यश व विजय नहीं करूँगा तो मेरी सत्ता समाप्त हो जाएगी। जो मैं हूँ वह मुझे विजयों ने ही बनाया है तथा विजय ही मुझे इस स्थान पर बनाए रख सकती हैं" नेपोलियन का विचार था कि उसका सम्मान व यश विजयों द्वारा ही सुरक्षित रह सकता है। उसका कहना था कि "ईश्वर महानतम् सेनाओं का साथ देता है।" इस प्रकार नेपोलियन ने फ्रांस की राष्ट्रीय भावनाओं को सैन्यवाद में परिवर्तित कर दिया। नेपोलियन यह भूल गया कि सैन्यवादी नीति किसी एक सीमित उद्देश्य की पूर्ति के लिए उचित हो सकती है, किन्तु प्रत्येक अवसर पर सेना का प्रयोग करना उचित नहीं होता और न ही सैनिक शक्ति के द्वारा राज्य को अधिक दिनों तक सुरक्षित रखा जा सकता है। शीघ्र ही यह स्थिति उत्पन्न हो गयी। नेपोलियन की सैन्य आवश्यकताएँ इतनी अधिक बढ़ गयी जिनको पूरा करना कठिन हो गया।

TOUCH 'n PASS

परिणामस्वरूप उसे अन्य देशों के सैनिक भी अपनी सेना में लेने पड़े जिसका परिणाम उसके हित में नहीं हुआ। नेपोलियन को सम्राट पद प्राप्त कर लेने के पश्चात् अपना देश शान्ति के सिद्धान्तों पर आधारित करना चाहिए था, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया, अत: वह पतन की ओर अग्रसर हो गया।

5. **नेपोलियन के सम्बन्धी** (Relatives of Napoleon)—नेपोलियन का व्यवहार अपने सम्बन्धियों के प्रति अत्यन्त उदार था। उसने अपने सम्बन्धियों की अत्यधिक सहायता की तथा उच्च पद प्रदान किए। उसने अपने भाइयों—लुई नेपोलियन जोसेफ, जेरोम (Jerome) को क्रमश: हॉलैण्ड, स्पेन व बेस्टफेलिया का शासक नियुक्त किया, किन्तु संकट के समय में किसी भी सम्बन्धी ने उसकी सहायता नहीं की। नेपोलियन ने स्वयं भी इस बात को महसूस करते हुए मैटरनिख को लिखा था, "मैंने अपने सम्बन्धियों का जितना भला किया, उन्होंने उससे अधिक मेरा नुकसान किया।"
6. **पोप के साथ दुर्व्यवहार** (Misbehaviour with Pope)—प्रारम्भ में नेपोलियन के पोप के साथ सम्बन्ध ठीक थे, किन्तु महाद्वीपीय व्यवस्था (Continental System) के प्रश्न पर पोप व नेपोलियन के सम्बन्धों में कटुता आ गई। नेपोलियन ने अपनी शक्ति के मद में पोप को बन्दी बना लिया। नेपोलियन द्वारा पोप को बन्दी बनाना उसकी भारी भूल थी। रोज ने लिखा है, "पोप के साथ दुर्व्यवहार करना नेपोलियन की भयंकर भूल थी।" पोप को बन्दी बनाए जाने से सम्पूर्ण कैथोलिक वर्ग नेपोलियन के विरुद्ध हो गया जिसका भारी मूल्य नेपोलियन को चुकाना पड़ा।
7. **महाद्वीपीय व्यवस्था** (Continental System)—नेपोलियन ने इंग्लैण्ड को परास्त करने के लिए आर्थिक युद्ध का सहारा लिया। इसी के अन्तर्गत नेपोलियन ने महाद्वीपीय व्यवस्था लागू करने की घोषणा की। नेपोलियन इंग्लैण्ड को व्यापारियों का देश (Nation of Shopkeepers) कहता था। उसका विचार था कि यदि इंग्लैण्ड के व्यापार को बन्द कर दिया जाए तो इंग्लैण्ड आर्थिक रूप से टूट जाएगा तथा फ्रांस के समक्ष घुटने टेक देगा। नेपोलियन की योजना पूर्णतया असफल हो गई। इंग्लैण्ड यूरोप के प्रत्येक देश को आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति करता था। अत: इस व्यवस्था से प्रत्येक देश में आवश्यक वस्तुओं की कमी हो गयी तथा अन्य देशों ने इस व्यवस्था का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। जब नेपोलियन ने अन्य देशों पर दबाव डाला तो उनके पारस्परिक सम्बन्ध खराब होने लगे इससे नेपोलियन को अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा। महाद्वीपीय व्यवस्था नेपोलियन के पतन का एक प्रमुख कारण थी। हैजन ने लिखा है, "अन्तत: इस नीति (महाद्वीपीय नीति) ने उसे अनिवार्य रूप से आक्रामक युद्धों की नीति में उलझा दिया.....जिसके परिणाम नाशकारी हुए और उसे भारी कीमत चुकानी पड़ी।"
8. **स्पेन से युद्ध** (War against Spain)—नेपोलियन द्वारा स्पेन पर आक्रमण करना उसकी भारी भूल थी। इस युद्ध के कारण नेपोलियन को अत्यधिक हानि का सामना करना पड़ा। नेपोलियन के जीवन का यह सबसे लम्बा युद्ध था। नेपोलियन ने स्वयं इस युद्ध के विषय में कहा था, "स्पेनी नासूर ने मेरा विनाश कर दिया।"
9. **रूसी अभियान** (Russian Campaign)—स्पेन के अभियान के समान ही नेपोलियन का रूसी अभियान भी उसके लिए विनाशकारी प्रमाणित हुआ। यद्यपि 1807 ई० की टिलसिट की सन्धि (Treaty of Tilsit) से दोनों देशों के सम्बन्ध सुधार गए थे, किन्तु महाद्वीपीय व्यवस्था (Continental System) के कारण दोनों के सम्बन्ध पुन: खराब हो गए। 1812 ई० में नेपोलियन ने 5 लाख सैनिकों के साथ रूस के लिए प्रस्थान किया व जब वह वापस फ्रांस पहुँचा तो मात्र 20 हजार सैनिक बचे थे। इन आँकड़ों से इस अभियान में नेपोलियन को कितनी क्षति हुई, अनुमान किया जा सकता है। इस अभियान ने नेपोलियन की शक्ति को बहुत धक्का पहुँचाया तथा उसकी छवि को खराब किया। इस युद्ध ने फ्रांस की सेना की कमजोरियों को यूरोप के राष्ट्रों के समक्ष स्पष्ट कर दिया तथा वे भी अपनी स्वतन्त्रता का प्रयास करने लगे।
10. **राष्ट्रीयता की भावनाएँ जाग्रत** (Rise of Nationalism)—नेपोलियन ने अपने अधीनस्थ राज्यों पर अत्यधिक अत्याचार किया तथा भीषण कर लगाए थे। उन राज्यों में नेपोलियन के विरुद्ध भावनाएँ प्रबल हो रही थीं। स्पेन व रूस के अभियानों में नेपोलियन की असफलता को देखकर इन राष्ट्रों में राष्ट्रीय भावना की लहर दौड़ गयी। प्रशा प्रतिरोध लेने के लिए व्याकुल हो रहा था। इटली में भी राष्ट्रवाद प्रबल हो रहा था। नेपोलियन इस राष्ट्रवाद का सामना न कर सका।
11. **नेपोलियन का स्वभाव** (Nature of Napoleon)—नेपोलियन के पतन में उसके स्वभाव का भी प्रमुख हाथ था। नेपोलियन अत्यन्त हठी स्वभाव का व्यक्ति था तथा अपने विचारों के अतिरिक्त किसी की बात मानने को वह कदापि

तैयार नहीं होता था। इसी कारण तालीरों (Talleyrand) जैसे व्यक्तियों ने उसका साथ छोड़ दिया था। वह जानता था कि महाद्वीपीय व्यवस्था असम्भव थी, किन्तु फिर भी उसने उसे लागू किया। राइन संघ को भी वह स्वयं गलत (a bad calculation) मानता था, किन्तु फिर भी उसे बनाए रखा। नेपोलियन जानता था कि उसे इतने युद्ध नहीं करने चाहिए थे, किन्तु फिर भी उसने किये। नेपोलियन ने 1814 ई० में स्वयं यह बात स्वीकार करते हुए कहा था, "मैं डरता हूँ इस तथ्य को स्वीकार करने से कि मैंने बहुत ज्यादा युद्ध किए हैं, मैं विश्व पर फ्रांस का प्रभुत्व स्थापित करना चाहता था" प्रो० मारखम ने लिखा है, अपने कार्यों में वह एक दैवीय भूल कर रहा था।" नेपोलियन को मिली प्रारम्भिक सफलताओं से उसे घमण्ड भी हो गया था। इसी कारण आस्ट्रिया के प्रधानमन्त्री मैटरनिख ने नेपोलियन से कहा था, "आपका पतन निश्चित है, यह मुझे लगा था जब मैं यहाँ आया था, अब जबकि मैं जा रहा हूँ मुझे यह निश्चित हो गया है।" 26 जून, 1813 ई० को मैटरनिख ने जब ड्रेस्डन (Dresden) में समझाने का प्रयास किया था तो नेपोलियन ने जवाब दिया, "क्या तुम यह चाहते हो कि मैं अपने आपको स्वयं अपमानित करूँ। मैं ऐसा कदापि नहीं करूँगा। मैं जानता हूँ कि कैसे मरा जाता है, किन्तु मैं एक इंच भी भूमि न दूँगा..... तुम एक सैनिक नहीं हो, अत: तुम्हें यह ज्ञात नहीं है कि एक सैनिक की आत्मा में क्या होता है। मैं बड़ा ही युद्ध क्षेत्र में हुआ हूँ, अत: मैं लाखों लोगों की जिन्दगी की परवाह नहीं करता।" इसी प्रकार अपने अहं के कारण उसने शत्रु को सदैव कमजोर समझा। उसने अपने सेनापति सॉल्ट (Soult) से अंग्रेजी जनरल के विषय में कहा था, "वेलिंग्टन एक अयोग्य जनरल है तथा अंग्रेज अच्छे योद्धा नहीं है।" नेपोलियन के इस प्रकार के स्वभाव के कारण इसका पतन होना स्वाभाविक ही थी।

12. **नेपोलियन की भूलें** (Blunders of Napoleon)—नेपोलियन ने अपने राजनीतिक एवं सैन्य जीवन के दौरान अनेक भयंकर भूलें की जिनका परिणाम उसे भुगतना पड़ा। उसके द्वारा की गयी कुछ प्रमुख गलतियाँ निम्नवत् थीं—
   (i) महाद्वीपीय व्यवस्था लागू करना।
   (ii) महाद्वीपीय व्यवस्था के दौरान इंग्लैण्ड के लिए अनाज जाने देना।
   (iii) स्पेन पर आक्रमण करना।
   (iv) रूस के अभियान के दौरान मास्को में एक माह से अधिक समय तक रुके रहना।
   (v) 4 जून, 1813 ई० को 'प्लेसविज का युद्ध विराम' (Armistice of Pleswitz) करना।
   (vi) शत्रु सेना को कमजोर समझना।
   (vii) वाटरलू के युद्ध (Battle of Waterloo) के समय आक्रमण में देर करना।
   नेपोलियन की उपरोक्त भूलें उसके पतन का प्रमुख कारण बनीं।

13. **इंग्लैण्ड से दुश्मनी** (Enemity with England)—यह नेपोलियन का दुर्भाग्य था कि उसका प्रमुख शत्रु इंग्लैण्ड था। इंग्लैण्ड अत्यन्त शक्तिशाली था तथा चारों ओर समुद्र से घिरा होने के कारण सुरक्षित था। इंग्लैण्ड की नौसेना अत्यधिक शक्तिशाली थी, अत: फ्रांस तमाम प्रयत्नों के पश्चात् भी उसे परास्त करने में असफल रहा। इंग्लैण्ड ने राजनीतिक एवं कूटनीतिक श्रेष्ठता का परिचय देते हुए फ्रांस के विरुद्ध अन्य राष्ट्रों के साथ चार संगठन (four Coalitions) बनाए तथा अन्तत: वाटरलू के युद्ध में परास्त कर उसके राजनीतिक जीवन का अन्त कर दिया।

इस प्रकार उपर्युक्त समस्त कारण प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से नेपोलियन के पतन के लिए उत्तरदायी थे। नेपोलियन ने जिन मूल्यों पर अपने साम्राज्य की नींव रखी थी वे मूल्य ही उसे ले डूबे। उसने युद्ध के द्वारा ही साम्राज्य का निर्माण किया था तथा युद्धों ने ही उसका पतन कर दिया। इसी कारण थामसन ने लिखा है, "जिन तत्त्वों ने नेपोलियन के साम्राज्य का निर्माण किया था उन्हीं तत्त्वों ने उसका विनाश भी कर दिया।" इसी कारण फिशर ने लिखा है—"नेपोलियन के पतन के नाटक में तीन दृश्य मास्को, लिप्जिग तथा फाउण्टेनब्ल्यू प्रमुख हैं। वाटरलू इस नाटक का उपसंहार है। यह कहना उचित ही है कि निरंकुश सत्ता पर राष्ट्रीय भावना की विजय ही इस नाटक का मूल उद्देश्य है।

TOUCH 'n' PASS

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. वाटर लू का युद्ध कब हुआ?
(क) 1814 (ख) 1815 (ग) 1816 (घ) 1817
उत्तर (ख) 1815

प्र.2. नेपोलियन का किया कौन-सा कार्य था?
(क) सामन्ती प्रथा की समाप्ति (ख) सामाजिक समानता की स्थापना
(ग) नवीन संस्थाओं की स्थापना (घ) ये सभी
उत्तर (घ) ये सभी

प्र.3. नेपोलियन को एल्बा द्वीप पर कब निर्वासित कर दिया गया?
(क) 1813 (ख) 1814 (ग) 1815 (घ) 1815
उत्तर (ख) 1814

प्र.4. यह कथन किसका है ''नेपोलियन क्रांति का पुत्र था किन्तु उसने उन सिद्धान्तों व उद्देश्यों को उलट दिया जिनसे उसका आविर्भाव हुआ था।''
(क) रैम्जेम्योर (ख) कैटलवी
(ग) ग्रांड एण्ड टेम्परले (घ) लास्की
उत्तर (ग) ग्रांड एण्ड टेम्परले

प्र.5. नैपोलियन युग कहलाता है?
(क) 1799-1805 (ख) 1799-1807
(ग) 1799-1712 (घ) 1799-1814
उत्तर (घ) 1799-1814

प्र.6. नेपोलियन कितनी वर्ष की आयु में द्वितीय लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्त हुआ?
(क) 14 (ख) 15 (ग) 16 (घ) 17
उत्तर (ग) 16

प्र.7. नेपोलियन ने आस्ट्रिया को होहेनलिण्डन के युद्ध में हरा दिया?
(क) 1800 (ख) 1801 (ग) 1802 (घ) 1803
उत्तर (क) 1800

प्र.8. ऑस्ट्रिया के सम्राट फ्रांसिस II ने ल्यूनेविले की संधि 1801 में की। इसमें कौन-सी बात सही है?
1. इटली के गणराज्यों को मान्यता
2. बेल्जियम पर फ्रांस का अधिकार मान लिया गया
3. केम्पोकोमिया की संधि को पुन: स्वीकार किया गया
(क) 1, 2 (ख) 2, 3 (ग) केवल 1 (घ) 1, 2, 3
उत्तर (घ) 1, 2, 3

प्र.9. 1802 में हुई इंग्लैण्ड और फ्रांस के मध्य हुई आमियाँ की संधि में कौन-सी बात शामिल थी?
1. इंग्लैण्ड ने फ्रांस की कांस्यूलेट सरकार को मान्यता दी।
2. इंग्लैण्ड ने श्रीलंका व ट्रिनिडाड को छोड़कर शेष सभी उपनिवेश जिन्हें फ्रांस से जीता था, लौटा दिए।
3. इंग्लैण्ड ने ल्यूनविले की संधि को मान्यता प्रदान की।
4. इंग्लैण्ड ने फ्रांस की सर्वोच्चता स्वीकार कर ली।
(क) 1, 2, 4 (ख) 1, 2, 3 (ग) 1, 3, 4 (घ) 1, 2, 3, 4
उत्तर (ख) 1, 2, 3

TOUCH 'n PASS

प्र.10. यह कथन किसका है ''स्पेनी नासूर ने मेरा विनाश कर दिया''?
(क) फ्रांसिस II (ख) नेपोलियन (ग) कमाल पाशा (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर (ख) नेपोलियन

प्र.11. पीडमाण्ट के राजा ने नेपोलियन से कब संधि कर ली? सेवाए और नीस फ्रांस को मिले।
(क) 27 अप्रैल, 1796 (ख) 28 अप्रैल, 1796 (ग) 29 अप्रैल, 1796 (घ) 30 अप्रैल, 1796
उत्तर (ख) 28 अप्रैल, 1796

प्र.12. मिलान पर नेपोलियन ने कब अधिकार कर लिया?
(क) 10 मई, 1796 (ख) 11 मई, 1796 (ग) 12 मई, 1796 (घ) 13 मई, 1796
उत्तर (क) 10 मई, 1796

प्र.13. पोप ने नेपोलियन से टोलोण्टिनो नामक स्थान पर समझौता किया। समझौते में कौन-सी बात नहीं थी?
1. पोप ने ट्रांसपोडेन गणतंत्र को मान्यता दी।
2. पोप ने 3 करोड़ फ्रैंक नेपोलियन को दिए।
3. अवीनयो पर फ्रांस का अधिकार पोप द्वारा स्वीकार कर लिया गया।
4. पोप पर आक्रमण की दशा में नेपोलियन ने सहायता का वचन दिया।

(क) 1, 2 (ख) 1, 2, 3, 4 (ग) 1, 2, 3 (घ) 2, 4
उत्तर (ग) 1, 2, 3

प्र.14. फ्रांस और आस्ट्रिया के मध्य कैम्पोफार्मिया की संधि कब हुई?
(क) 15 अक्टूबर, 1797 (ख) 16 अक्टूबर, 1797 (ग) 17 अक्टूबर, 1797 (घ) 19 अक्टूबर, 1797
उत्तर (ग) 17 अक्टूबर, 1797

प्र.15. कैम्पोफार्मिया की संधि में कौन-सी बात शामिल थी?
(क) आस्ट्रिया द्वारा फ्रांस को बेल्जियम दिया गया।
(ख) लोम्बार्डी पर फ्रांस का अधिकार स्वीकार कर लिया गया।
(ग) राइन का प्रदेश भी फ्रांस को दे दिया गया।
(घ) उपर्युक्त सभी
उत्तर (घ) उपर्युक्त सभी

प्र.16. कैम्पोफार्मिया की संधि के बाद नेपोलियन पेरिस कब लौटा?
(क) 4 दिसम्बर, 1797 (ख) 5 दिसम्बर, 1797
(ग) 6 दिसम्बर, 1797 (घ) 7 दिसम्बर, 1797
उत्तर (ख) 5 दिसम्बर, 1797

प्र.17. पिरामिडो का युद्ध कब हुआ?
(क) 20 जुलाई, 1798 (ख) 21 जुलाई, 1798
(ग) 22 जुलाई, 1798 (घ) 23 जुलाई, 1798
उत्तर (ख) 21 जुलाई, 1798

प्र.18. नेपोलियन ने सीरिया पर कब आक्रमण किया?
(क) 1797 (ख) 1798 (ग) 1794 (घ) 1800
उत्तर (ग) 1794

प्र.19. कब डायरेक्टरी का शासन का अंत करके शासन की बागडोर नेपोलियन, सिये तथा ड्यूको के हाथ में आ गई?
(क) 7 नवम्बर, 1799 (ख) 8 नवम्बर, 1799 (ग) 9 नवम्बर, 1799 (घ) 10 नवम्बर, 1799
उत्तर (घ) 10 नवम्बर, 1799

TOUCH 'n PASS

प्र.20. सीनेट के सदस्यों की संख्या कितनी थी?

(क) 57 (ख) 58 (ग) 59 (घ) 60

उत्तर (घ) 60

प्र.21. कब नेपोलियन ने प्रशासन की सम्पूर्ण शक्ति को अपने हाथों में ले लिया?

(क) 1800 (ख) 1801 (ग) 1802 (घ) 1803

उत्तर (क) 1800

प्र.22. निम्न में कौन-सा सुधार नेपोलियन ने किया?

1. प्रेस पर प्रतिबंध
2. सैनिक सेवा को अनिवार्य किया
3. प्रतिष्ठा मण्डल की स्थापना
4. शिक्षा में सुधार

(क) 1, 2, 3 (ख) 2, 3, 4 (ग) 1, 2, 3, 4 (घ) 1, 3, 4

उत्तर (ग) 1, 2, 3, 4

प्र.23. पेरिस में एक विश्वविद्यालय की स्थापना कब की गई?

(क) 1806 (ख) 1807 (ग) 1808 (घ) 1809

उत्तर (ग) 1808

प्र.24. बैंक ऑफ फ्रांस को नोट छापने का कार्य कब दिया गया?

(क) 1801 (ख) 1802 (ग) 1803 (घ) 1804

उत्तर (ग) 1803

प्र.25. निम्न में कौन-सा आर्थिक सुधार नेपोलियन ने नहीं किया?

1. अनावश्यक खर्चों पर प्रतिबंध
2. भ्रष्ट अधिकारियों को दण्डित किया
3. विदेशों से कर्ज लिया
4. सड़कों का सुधार, नहरें खोदी गई, बंदरगाहों का उद्धार किया

(क) 1, 2, 3 (ख) 2, 3, 4 (ग) 1, 2, 4 (घ) 1, 2, 3, 4

उत्तर (ग) 1, 2, 4

❑

TOUCH 'n PASS

- यद्यपि इस पुस्तक को यथासम्भव शुद्ध एवं त्रुटिरहित प्रस्तुत करने का भरसक प्रयास किया गया है, तथापि इसमें कोई कमी अथवा त्रुटि अनिच्छाकृत ढंग से रह गई हो तो उससे कारित क्षति अथवा सन्ताप के लिए लेखक, प्रकाशक तथा मुद्रक का कोई दायित्व नहीं होगा। सभी विवादित मामलों का न्यायक्षेत्र मेरठ न्यायालय के अधीन होगा।
- इस पुस्तक में समाहित सम्पूर्ण पाठ्य-सामग्री (रेखा व छायाचित्रों सहित) के सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन हैं। अतः कोई भी व्यक्ति इस पुस्तक का नाम, टाइटिल-डिजाइन तथा पाठ्य-सामग्री आदि को आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मरोड़कर प्रकाशित करने का प्रयास न करें, अन्यथा कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार होंगे।
- इस पुस्तक में रह गई तथ्यात्मक त्रुटियों तथा अन्य किसी भी कमी के लिए विद्वत् पाठकगण से भूल-सुधार/सुझाव एवं टिप्पणियाँ सादर आमन्त्रित हैं। प्राप्त सुझावों अथवा त्रुटियों का समायोजन आगामी संस्करण में कर दिया जाएगा। किसी भी प्रकार के भूल-सुधार/सुझाव आप info@vidyauniversitypress.com पर भी ई-मेल कर सकते हैं।